प्रकाशक

विद्यामंदिर, चौक, लखनऊ

प्रथम संस्करण १०००

अप्रैल १९५४

मूल्य [illegible]

मुद्रक

विपिनविहारी कपूर

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

१९५४

प्रांतीय हिं० सा० सम्मेलन, सागर अधिवेशन के सभापति १९३२ ; 'लोकमत' के जन्म-दाता और मासिक 'श्री-शारदा', साप्ता० 'सारथी' के भूत० संपा० ; राष्ट्रीय आंदोलनों में उत्साह से भाग लिया ; कई बार जेल गए ; रच०—हिंदुओं का स्वातंत्र्य-प्रेम ; अप्र०—कृष्णायन (भगवान् कृष्ण का सप्रमाण गवेषणात्मक चरित, अवधी भाषा-कविता में) ; प०—'लोकमत'-कार्यालय, जबलपुर।

दामोदर, आचार्य, गोस्वामी—श्री गौरांग महाप्रभु के उपदेशों के प्रचारक, अध्ययनशील विद्वान् और प्रसिद्ध पौराणिक ; जा०—संस्कृत, बँगला, गुजराती ; रच०—श्रीगौरप्रेमामृत, श्री-चैतन्यचरणामृत, तत्त्व-संदर्भ, भगवत्-संदर्भ ; अप्र०—सर्व-संवादिनी नामक ठक्क संप्रदाय के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का अनुवाद तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे धार्मिक एवं दार्शनिक लेख-संग्रह ; वि०—आपके संरक्षण में भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र के प्रिय मित्र श्रीगोस्वामी राधाचरणजी का पुस्तकालय है ; प०—वृंदावन।

दिनेश दत्त झा, बी० ए०—कटिहार, पूर्णिया-निवासी विद्वान् लेखक और सफल पत्रकार; दैनिक 'आज' काशी के भू० संयुक्त और दैनिक 'आर्यावर्त्त', पटना के वर्तमान प्रधान संपादक ; अप्र० रच०—पत्र-पत्रिकाओं में छपे सुंदर लेखों के संग्रह ; प०—'आर्यावर्त्त' - कार्यालय, पटना।

दिनेशनारायण उपाध्याय, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी-लेखक और साहित्य-प्रेमी ; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उत्साही सहायक ; 'प्रेमघन-सर्वस्व' के संपादक ; प०—प्रयाग।

दिनेशनंदिनी चोरड़िया

निवेदन

'हिंदी-सेवी-संसार' आपके सामने है। इस प्रकार के एक ग्रंथ की आवश्यकता थी और इसीलिए कई प्रकाशकों और व्यक्तियों ने इसे तैयार करने का प्रयत्न भी पिछले वर्षों में किया था। परंतु इसके प्रकाशन में हमें ही जो थोड़ी-बहुत सफलता मिल सकी, उसका सभी श्रेय हमारे उन कृपालु सहायकों और हिंदी-सेवियों को है जिन्होंने समय-समय पर सामग्री भेजकर हमारी सहायता की। इस कृपापूर्ण सहयोग के लिए हम उनके अत्यंत कृतज्ञ हैं।

इस ग्रंथ के संपादन-प्रकाशन में आनेवाली कठिनाइयों का जिक्र यहाँ करने की जरूरत नहीं जान पड़ती। निवेदन केवल इतना करना है कि पंद्रह विज्ञप्तियाँ प्रकाशित कराने और लग-भग पाँच हजार पत्र लिखने पर भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों की हिंदी-प्रचारिणी समितियों की पचासों रिपोर्टों और तरह-तरह के हस्तलेखों में विविध शैलियों और ढंगों से लिखे, निजी और पारिवारिक बातों से आदि से अंत तक भरे सैकड़ों परिचयों, पत्र-पत्रिकाओं की अनेक फुटकर प्रतियों और प्रकाशकों के तमाम छोटे-बड़े सूचीपत्रों का जो विशाल ढेर सामने इकट्ठा हो गया, उसे देखकर बारबार मन में विचार आता था कि यह श्रम-साध्य, समय-साध्य और व्यय-साध्य काम दो-एक व्यक्तियों का नहीं, उत्साही सदस्योंवाली किसी उन्नत संस्था का है। परंतु अनेकानेक हिंदीप्रेमियों के शुभाशीर्वाद और उत्साहवर्धक संदेशों ने मानसिक

तद्भवकोप तथा हिंदी-रत्न आदि; प०—सेंट एंड्रूज कालेज, गोरखपूर।

राजबहादुरसिंह—प्रसिद्ध लेखक और कुशल पत्रकार; रच०—लेनिन और गांधी (जब्त), टाल्सराय की डायरी, श्रीरामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, समर्थ गुरुरामदास, संत तुकाराम, संसार के महान् साहित्यिक, प्रवासी की कहानी आदि जीवन-चरित्र; जीवनपथ, सोफिया, पितृभूमि, देहात की सुंदरी, चार क्रांतिकार; विफल विद्रोह, रानी की अँगूठी, यौवन की आँधी, आदि उपन्यास; बाल ब्रह्मचारी भीष्म, भारत-केसरी, विनाश की घड़ी, सभ्यता का शाप, आदि नाटक; रूस का पंच वर्षीय आयोजन, हमारा देश, स्वराज्यसोपान, विश्व-विहार, पल्लीपथ-प्रदर्शक, युवकपथ-प्रदर्शक; अप्र०—राजर्षि जड़ भरत, संघ, राजपूत जीवन, समाज का न्याय, सौंदर्य का दहन, तलवार; वि०—आजकल हिंदी के सब से पुराने साप्ताहिक 'वेंकटेश्वर समाचार' के संपादकीय विभाग में काम कर रहे हैं; प्रि०वि०—इतिहास; प०— बंबई।

राजवल्लभ सहाय—विद्वान् लेखक और पत्रकार, काशी विद्यापीठ में अध्यापक; 'हिंदी शब्द-संग्रह' कोष के संयुक्त संपादक; इस समय साप्ताहिक 'आज' का संपादन कर रहे हैं; प०—'आज'-कार्यालय, बनारस।

राजेंद्रनाथ शास्त्री—साहित्य-प्रेमी लेखक और अध्ययनशील विद्वान्; शि०—ज्वालापुर देहली, लाहौर; सा०—श्रीदयानंद वेदविद्यालय नई देहली में स्थापित किया; आचार्यजी विद्यालय की व्यवस्थादि अवैतनिक; रच०—सरल पत्र प्रबोध, सिद्धांतकौमुदी की

दुर्बलता की ऐसी स्थिति में बारबार हमारा साहस बढ़ाया। इसके लिए हम सभी महानुभावों के अत्यंत अनुगृहीत हैं।

पुस्तक का सबसे अधिक भाग साहित्यसेवियों के परिचयों से भरा है। छोटे-बड़े ११८७ परिचय इसमें प्रकाशित हैं। इस संबंध में हम कुछ गर्व से यह कहना चाहते हैं कि सभी परिचयों को हमने पक्षपात-रहित होकर लिखा है, किसी को घटाने-बढ़ाने का कोई प्रयत्न अपनी ओर से नहीं किया। जो परिचय छोटे या अपूर्ण प्रकाशित हैं वे सामग्री के अभाव में अधिकतर ऐसे ही महानुभावों के हैं जिन तक हमारी पहुँच नहीं हो सकी अथवा जिन्होंने हमारे चार-चार, पाँच-पाँच पत्रों को टोकरी में डाल दिया।

'ख' खंड में ११६ सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं के परिचय छपे हैं। कुछ सरकारी संस्थाओं के परिचय कई बार लिखने पर भी प्राप्त नहीं हो सके और कुछ की कार्यवाही गुप्त रखी जाती है। गैरसरकारी संस्थाओं में कदाचित् कोई मुख्य संस्था नहीं छूटी है।

'ग' खंड में १०६ प्रकाशकों के और 'घ' में ८५ प्रमुख पत्रों के नाम हैं। अधिक परिश्रम हमें इन विभागों की सामग्री के लिए इस कारण करना पड़ा कि इस वर्ग से संबंधित व्यक्तियों ने सामग्री भेजने की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। कुछ प्रकाशकों और संपादकों की निश्चित नीति ही नहीं है। संभव है, इससे उन्हें परिचय भेजने में संकोच हुआ हो।

(ङ) खंड में हिंदी के प्रमुख पुरस्कारों और पदकों का परिचय है। (च) खंड में हिंदी जगत् की कुछ सामयिक समस्याओं पर विचार किया गया है। (छ) खंड के दो भाग हैं।

डा० राजेंद्रप्रसादजी को इसी वर्ष उनकी स्वर्णजयंती के शुभ अवसर पर दिए जानेवाले अभिनंदन ग्रंथ का संपादन कर रहे हैं ; स्वर्गीय पिताजी की पुण्य स्मृति में उन्हीं के नाम पर अपने जन्मस्थान (उनवाँस,इटाढ़ी, शाहाबाद) श्रीवागीश्वरी पुस्तकालय स्थापित किया ; इसमें बड़े परिश्रम से आवश्यक सामग्री का संग्रह किया ; १६४१ में बिहार प्रादेशिक हिं० सा० सम्मे० के सत्रहवें महाधिवेशन (पटना) के सभापति ; लेख०—१६१० ; रच०—मौलिक—देहाती-दुनिया—उप०, विभूति-कहा०, संसार के पहलवान, भीष्म, अर्जुन, बिहार का बिहार, हिंदी अनुवाद ; संपा०—द्विवेदी-अभिनंदन-ग्रंथ, जयंती-स्मारक-ग्रंथ, प्रेमवल्ली, प्रेमपुष्पांजलि, सेवाधर्म, त्रिवेणी ; वि०—विश्व-विद्यालय की डिगरी न होने पर भी १६३६ में बिहार के इन विद्वान् को छपरा के राजेंद्र (डिगरी) कालेज ने हिंदी-विभाग में अध्यापक नियुक्त करके अपना गौरव बढ़ाया है; प०—अध्यापक, राजेंद्र कालेज, छपरा।

शिवप्रताप पांडेय—उदीयमान कहानी एवं नाटककार, कवि और समालोचक ; ज०—१६१६ ; चर्खे के विशेषज्ञ नवयुवकसंघ सुधारक संघ, हिंदी साहित्य-मंडल, श्रीभगवान धर्मार्थ औषधालय, साहित्य सदन आदि की स्थापना की ; रच०—प्रताप कहानी कुंज, युक्तिसाधन, मधु का भारतीय आंदोलन, झाँसीवाली रानी, विद्युल्लता, हिंदी छंद शास्त्र; प०—साहित्यसदन, खोल, जिला गुड़गावाँ, पंजाब।

शिवप्रसाद गुप्त, बी० ए०—प्रसिद्ध दानवीर, देशभक्त तथा विद्वान् हिंदी लेखक ; काशी विद्यापीठ के मुख्य संस्थापक ज्ञानमंडल

परिशिष्ट एक में हिंदी साहित्य-सम्मेलन के पिछले अधिवेशन में स्वीकृत मुख्य प्रस्ताव और सम्मेलन के भूतपूर्व अधिवेशनों तथा प्रधान मंत्रियों के नाम दिए गए हैं। परिशिष्ट दो में अवशिष्ट परिचय हैं। इनमें एकाध पहले ही आ गए थे। भूल से इधर हो जाने के कारण यथास्थान न दिए जा सके।

अपने इस रूप में 'संसार' एक संदर्भ ग्रंथ का काम दे, ऐसा हमारा प्रयत्न रहा है। इसमें सफलता कितनी मिल सकी है, इसका निर्णय पाठक ही करें।

अंत में हम अपने सभी कृपालु सहायकों को एक बार पुनः धन्यवाद देते हैं। उनकी नामावली यहाँ देने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती, क्योंकि लगभग ३०० महानुभावों ने किसी न किसी रूप में हमारी सहायता की है और कुछ के नाम दे देने का अर्थ होगा शेष की सहायता का मूल्य घटाना। इसलिए हम सभी के हृदय से कृतज्ञ हैं और सभी के प्रति क्षमा प्रार्थी भी।

२० अप्रैल, १९४४]

—संपादक

विद्याभास्कर बुकडिपो, बनारस—सामयिक साहित्य के प्रकाशक ; १९३० से प्रकाशन प्रारंभ किया ; अब तक लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ; श्रीदेवेंद्रचंद्र विद्याभास्कर व्यवस्थापक हैं।

√**विद्यामंदिर, चौक, लखनऊ**—हिंदी-सेवी-संसार के प्रकाशक ; १९४१ में साहित्यरत्न श्रीप्रेमनारायण टंडन, एम० ए० द्वारा स्थापित कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनमें नंददास का भँवरगीत, स्कंदगुप्तः एक परिचय, अजातशत्रु : एक परिचय, मुख्य हैं ; श्रीतेजनारायण टंडन व्यवस्थापक हैं।

विद्यामंदिर लिमिटेड, दिल्ली—प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था ; लगभग पाँच पुस्तकें प्रकाशित जिनमें स्वाधीनता के पथ पर, तपस्विनी प्रसिद्ध हैं ; लगभग तीन वर्ष तक मासिक 'हिंदी पत्रिका' का प्रकाशन हुआ ; श्रीरामप्रताप गोंडल अध्यक्ष हैं।

विनय प्रकाशन मंदिर, इंदौर—प्रसिद्ध प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में उग्रजी का ताजा उपन्यास 'जीजी जी' काफी समादृत है; श्रीरामकृष्ण भार्गव अध्यक्ष हैं।

विप्लव कार्यालय, लखनऊ—राजनैतिक पुस्तक-प्रकाशक ; १९३६ से प्रारंभ ; अब तक लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें दादा कामरेड, पिंजड़े की उड़ान, ज्ञानदान, देशद्रोही काफी प्रसिद्ध हैं ; कई वर्षों तक मासिक 'विप्लव' और 'विप्लवी ट्रैक्ट' का प्रकाशन किया ; श्रीमती प्रकाशवती पाल व्यवस्थापिका हैं।

विशालभारत बुकडिपो, कलकत्ता—अभिनव-साहित्य-प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में शुकपिक, भेड़ियाधसान, कुमुदिनी आदि विशेष प्रसिद्ध हैं ; अनेक साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है।

संकेत-सूची

शब्द		संकेत	शब्द		संकेत
जन्म	...	ज०	विशेष बातें	...	वि०
शिक्षा	....	शि०	अनुवादित, अनुवाद या, अनुवादक	...	अनु०
संस्थापक, स्थापना, स्थापक	....	स्था० या संस्था०	उपन्यास	....	उप०
प्रकाशित रचनाएँ	....	रच० या र०	कहानी	...	कहा०
अप्रकाशित रचना	....	अप्र०	कविता	....	कवि०
भूतपूर्व	....	भू० या भूत०	नाटक	....	ना०
वर्तमान	...	वर्त०	आलोचना	...	आलो०
भाषाओं की जानकारी	...	जा०	व्यवस्थापक	...	व्य०
सभापति	....	सभा०	साहित्यरत्न		सा० र०
संपादन या संपादक	...	संपा०	विशारद		सा० वि०
संचालक	....	संचा०	महामहोपाध्याय		म० म०
सहायक	....	सहा०	साहित्याचार्य		सा० आ०
सहकारी	...	सह०	साहित्यालंकार		सा० लं०
सार्वजनिक या साहित्यिक कार्य		सा०	हिंदी-साहित्य		हि० सा०
संयोजक	...	संयो०	जीवनी	...	जी०
सदस्य	...	सद०	मासिक	....	मा०
संकलन या संकलित	....	संक०	साप्ताहिक		साप्ता०
			लेखनकाल	...	लेख०
			सम्मेलन	...	सम्मे०
			काव्य	...	का०
			पता	....	प०

विषय-सूची

(क) खंड—हिंदी-सेवियों का परिचय

(ख) खंड—सरकारी संस्थाओं का परिचय

गैरसरकारी संस्थाओं का परिचय

(ग) खंड—हिंदी-प्रकाशकों का परिचय

(घ) खंड—हिंदीपत्र-पत्रिकाओं का परिचय

(ङ) खंड—हिंदी के पुरस्कार और पदक

(i) काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से दिए जानेवाले पुरस्कार और पदक—

(ii) सम्मेलन की ओर से दिये जानेवाले पुरस्कार

(च) खंड—सामयिक समस्याएँ

(छ) खंड—परिशिष्ट एक

परिशिष्ट दो

सरकारी संस्थाएँ

गैरसरकारी संस्थाएँ

प्रकाशक

पुरस्कार

व्रजभाषा का व्याकरण

यह पं० किशोरीदास वाजपेयी की नवीन रचना है। इस महत्त्व-पूर्ण पुस्तक की गवेषणात्मक भूमिका १०३ पृष्ठों में समाप्त हुई है, जिसमें पं० कामताप्रसाद गुरु और डाक्टर धीरेन्द्र वर्मा आदि की व्याकरण-सम्बन्धी धारणाओं का विस्तृत रूप में खंडन किया गया है, और डाक्टर बाबूराम सक्सेना आदि के भाषाविज्ञान-सम्बन्धी गलत मन्तव्यों का निराकरण किया गया है। साथ ही व्याकरण और भाषा का स्वरूप समझाया गया है।

पुस्तक में व्रजभाषा का ऐसी सरल भाषा में सुन्दर विवेचन है कि मैट्रिक के छात्र भी सब प्रमेय आसानी से समझ सकते हैं। क्रिया-प्रकरण में और कृदन्त में ऐसी मौलिक विवेचना है, जिसे देखकर भाषा-विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित भी मुग्ध हो गये हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भू० पू० सभापति और युक्त प्रान्त के शिक्षा-सचिव, बाबू सम्पूर्णानन्द जी अपनी सम्मति प्रकट करते हुए लिखते हैं—

यह पुस्तक उन लोगों के लिए तो उपयोगी है ही, जो व्रजभाषा के वाङ्मय का अध्ययन करना चाहते हैं; परन्तु ऐसे लोगों के लिए तो और भी उपादेय है, जो व्रजभाषा में रचना करना चाहते हैं। पुस्तक के संग्रह योग्य होने में कोई सन्देह नहीं।"

कठिन विषय का भी विवेचन ऐसी सरल भाषा में और इस मोहक ढंग से किया गया है कि पुस्तक हाथ में लेकर छोड़ने को जी नहीं करता।

हिंदी-सेवी-संसार

(क) खंड

हिंदी-सेवियों
का
परिचय

अच्युतानंद, परमहंस, स्वामी, सरस्वती—प्रसिद्ध वेदांती, सुवक्ता और लेखक; ज०—१८७० ; शि०—काशी ; स्था०—'परिव्राजक - मंडल', काशी, जो आज 'नीति-वर्धक सभा' है और 'वनिता-आश्रम'; रच०—शांति-साधन, मृत्यु-पथ-प्रदर्शक, उपकार-महत्त्व, भक्तियोग-रसामृत ; अप्र०—कर्म-रहस्य, दिनचर्या, अच्युत-ज्ञान-अमृत सागर; प०—आनंदाश्रम, नर्मदातीर, बड़वाहा, मध्यभारत।

अच्युतानंदसिंह—अतरसन, सारन-निवासी प्रसिद्ध साहित्य-सेवी, लेखक और अनेक साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशक ; ज०—१९१४; साहित्य-प्रेस के स्वामी और संचालक;अप्र०रच०—'गंगा' इत्यादि विविध पत्रिकाओं में बिखरे लेख - संग्रह; प०—'साहित्य - सेवक' - कार्यालय, छपरा, बिहार।

अन्नपूर्णानंद—शिष्ट और सज्जनोचित हास्यरस के सुप्रसिद्ध लेखक, गंभीर विद्वान् और विचारक ; अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित; रच०—मेरी हजामत, महाकवि चच्चा ; अप्र०—अनेक सुंदर संग्रह; प०—बनारस।

अनिरुद्ध अग्रवाल, शास्त्री, एम० ए०, खड़ीबोली और ब्रजभाषा के सुकवि, साहित्य-प्रेमी और विद्वान् ; ज०—१९१२; रच०—वीणापाणि, ज्योतिर्मयी, अभिनवमेघ (अनु०); अप्र० रच०—अभिनवशकुंतला;प०—झाँसी।

अनुसूयाप्रसाद, बहुगुण, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, एम० एल० ए० (१९३७ से) प्रसिद्ध लेखक, देश-सेवक और अध्ययनशील विद्वान्, गढ़वाल में काँग्रेस-आंदोलन के जन्मदाता ; असहयोग - आंदोलन में अनेक बार जेल-यात्रा; स्थानीय डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सभापति (१९२१–२९); संस्था०—'उत्तर भारत'

नामक हिंदी-मासिक पत्रिका; अप्र० रच०—सामयिक निबंध-संग्रह; प०—नंदप्रयाग, गढ़वाल।

अनूपलाल मंडल, सा० र०—सुप्रसिद्ध बिहारी कहानी-उपन्यास-लेखक; ज०—१९००; सर्वप्रथम बिहारी कथाकार जिनके उपन्यास (मीमांसा) का फिल्म 'बहूरानी' बनाया गया; शि०—प्रयाग, बिहार; सेठिया कालेज बीकानेर के भूतपूर्व अध्यापक; अब युगांतर साहित्य-मंदिर के संचालक; भू० संपा०—'कैवर्त्तकौमुदी'; रच०—समाज की वेदी पर, सविता, निर्वासिता, साकी, रूपरेखा, ज्योतिर्मयी, मीमांसा, गरीबी के दिन, ज्वाला, वे अभागे, अभिशाप, दर्द की तसवीरें, रहिमनसुधा, अलंकारदीपिका, मुसोलिनी का बचपन, नारी—एक समस्या, दस बीघे जमीन, आवारों की दुनिया आदि; प०—युगांतर साहित्य-मंदिर, भागलपुर, बिहार।

अनूप शर्मा, एम० ए०, एल० टी०—खड़ी बोली के सुप्रसिद्ध कवि; वीररस की रचना के लिए प्रसिद्ध, साहित्य-प्रेमी हिंदी विद्वान्; ज०—१९००; रच०—सुनालकाव्य, सिद्धार्थ महाकाव्य; अप्र० रच०—दो कविता-संग्रह; प०—हेडमास्टर, के० ई० एम० हाई स्कूल, धामपुर, जि० बिजनौर।

अभिराम शर्मा—राष्ट्रीयता के पुजारी, प्रसिद्ध छायावादी कवि; ज०—१९०३; अभिराम पुस्तकमाला के व्यवस्थापक; रच०—मुक्त संगीत (जब्त थी, रोक हटा ली गई) अचल, अंबर, विजयविलास; अप्र० रच०—दो-तीन कविता-संग्रह; प०—अभिराम-निवास, बादशाही नाका, कानपुर।

अंबिकादत्त त्रिपाठी 'दत्त' खेमीपुरी—प्रसिद्ध कवि और साहित्य-सेवक; ज०—१८६५

आजमगढ़ ; रच०—चर्खा, सीय-स्वयंवर नाटक, भंग में रंग, कृष्णकुमारी, बाल-गीतावली, सत्संग-महिमा, स्वराज्यसीढ़ी; स्था०—साहित्य-सागर; वि०—इन दिनों श्रीमद्भगवद्गीता का हिंदी अनुवाद कर रहे हैं; प०—ठि० रामनारायण मिश्र, शेख-पुरी, पो० सुरापुर, सुलतानपुर।

अंबिकाप्रसाद वाजपेयी सुप्रसिद्ध पत्रकार, व्याकरण के अध्ययनशील विद्वान् और प्रकांड पंडित ; ज०—३० दिसंबर १८८० ; शि०—कानपुर ; ज्ञा०—अँगरेज़ी, संस्कृत, प्राकृत, उर्दू ; भू० संपा०—'हिंदी बंगवासी', कलकत्ता, 'नृसिंह', 'भारत-मित्र', कलकत्ता (१९११–१९) 'स्वतंत्र', काशी (१९२०–३०); रच०—हिंदी-कौमुदी, हिंदी पर फारसी का प्रभाव, अभिनव हिंदी-व्याकरण, शिक्षा (अनु०), हिंदुओं की राजकल्पना, भारतीय शासन-पद्धति ; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक और सामयिक निबंध-संग्रह ; वि०—काशी में २६ वें अखिल भारतीय हिं० सा० सम्मेलन के सभापति ; प०—कलकत्ता।

अंबिकाप्रसाद वर्मा 'दिव्य'—ब्रजभाषा और खड़ी बोली के सुकवि, साहित्य-प्रेमी और विद्वान् ; ज०—१९०७; रच०—दिव्य दोहावली, चित्तौड़-चरित्र, कनक दिव्यदृष्टि नाटक, निकुंज, उमर खैयाम की रुबाइयाँ (अनु०); प०—अजयगढ़, बुंदेलखंड।

अंबिकालाल श्रीवास्तव, एम०ए०, सा० र०, वि० लं०—साहित्य-प्रेमी और कवि ; ज०—१९०७; शि०—आगरा; नागरी-प्रचारिणी सभा, हरदोई के साहित्य-मंत्री; प०—अध्यापक, बी० के० इंटर कालेज, हरदोई।

अमरनाथ झा, एम० ए०—

सरिसव-पाहिटोल (दरभंगा) निवासी, भारतविख्यात स्वनामधन्य विद्वान्, हिंदी के अनन्य उपासक, सुवक्ता; ज०—१५ फरवरी १८८७; स्व० सर गंगानाथ झा के ज्येष्ठ सुपुत्र; अखिल भारतीय हिं० सा० सम्मेलन के तीसवें अधिवेशन, अबोहर (पंजाब) के सभापति, प्रयाग म्युनिसिपल बोर्ड के भूत० सीनियर वाइस चेयरमैन; प्रयाग सार्वजनिक पुस्तकालय के अवैतनिक मंत्री; यू० पी० ओलेंपिक एसोसिएशन के सभापति; अखिल भारतीय ओरियंटल कॉन्फ्रेंस के हिंदी-विभाग के सभापति (१९२९); चेयरमैन इंटर-यूनिवर्सिटी बोर्ड (१९३६–३७); लीग आव नेशंस ऐडवाइजरी कमेटी के सदस्य (१९३४); लंदन पोएट्री सुसाइटी के उपसभापति; यू० पी० शाखा इँगलिश एसोसिएशन के सभापति; प्रयाग-विश्वविद्यालय के वाइस चैंसलर १९३८ से, रच०—शेक्सपीरियन कमेडी, लिटरेरी रीडिंग्ज, ऐंथॉलोजी आव माडर्न वर्स, पद्मपराग, संस्कृतटीका दशकुमारचरित, हिंदी-साहित्य-संग्रह, हिंदी-साहित्य-रत्न तथा अनेक स्फुट लेख और भाषण; प०—माया, जार्ज टाउन, प्रयाग।

अमरनारायण माथुर—उदीयमान पत्रकार; ज०—१९११; भूत० संपा०—'जयपुर समाचार'; वर्तमान स्थानापन्न संपा०—राष्ट्रीय पत्र 'जयभूमि'; अप्र० रच०—जीवनज्वाला, हृदय-उत्पीड़न; प०—'जयभूमि'-कार्यालय, जयपुर।

अमृतलाल नागर—हास्य रस के प्रसिद्ध लेखक और कहानीकार; ज०—१९१२; ज्ञा०—अँगरेजी, बँगला; भू०सं०—साप्ताहिक 'सिनेमा-समाचार', और 'चकल्लस' लखनऊ; आजकल बंबई में सिनेमा-संबंधी कहानियाँ

लिख रहे हैं; रच०—वाटिका, नवाबी मसनद, अवशेष, तुलाराम शास्त्री; प०—चौक, लखनऊ।

अमृतलाल नाणावटी—प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक और साहित्य-सेवक; राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य और सन् १९३९ से ४२ तक परीक्षा तथा संयुक्त मंत्री; गुजरात प्रांतीय राष्ट्रभाषा-प्रचार-सभा के संचालक; अप्र० रच०—विविध विषयों पर भाषण और लेख-संग्रह; प०—राष्ट्रभाषाप्रचार समिति, वर्धा।

अमरेंद्रनारायण, एम० एस-सी०—मुजफ्फरपुर-निवासी वैज्ञानिक निबंधों के लेखक; अप्र० रच०—विज्ञान-विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण लेख-संग्रह; प०—अध्यापक, साइंस कालेज, पटना।

अयोध्यानाथ शर्मा, एम० ए०—हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और साहित्य-मर्मज्ञ; ज०—८ दिसंबर १८९७; संयो०—हिंदी बोर्ड आव स्टडीज (आगरा-विश्वविद्यालय); सद०—फैकल्टी आव आर्ट्स अनेक हिंदीप्रचारक समितियों के सहायक और परामर्शदाता; 'शब्दसागर' के सहायक संपादक; अध्यक्ष हिंदी-विभाग, सनातनधर्म कालेज, कानपुर; रच०—उज्ज्वल तारे, गद्य-मुक्तावली, गद्य-मुक्ताहार, प्रभावती, साहित्यकुसुम, बाल-व्याकरण; प०—आर्यनगर, नवाबगंज, कानपुर।

अयोध्याप्रसाद झा—प्रसिद्ध बिहारी लेखक और विज्ञान-प्रेमी; ज०—१९१०; प्रिय वि०—विज्ञान; ज्ञा०—बँगला और अँग्रेजी के धुरंधर विद्वान्; रच०—हवाई जहाज, विचित्र दुनिया; अप्र० रच०—पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अनेक सामयिक और वैज्ञानिक लेख; प०—चंपानगर, भागलपुर, बिहार।

अयोध्याप्रसाद तिवारी, सा० वि०—प्रसिद्ध हिंदी-लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८६४ ; भूतपूर्व डिप्टी इंस-पेक्टर आव स्कूल्स, बीकानेर स्टेट; रच०-मौलिक—माडर्न ज्याग्रेफी आव बीकानेर, भूगोल राजपूताना, बीकानेर की ऐतिहासिक गाथाएँ, इनफैंट क्लास अरिथमेटिक, सरल बही खाता; संपा०—रहिमन-विनोद, गोरावादल की कथा, करणी-महिमा, आदि-संग्रह ; वि०—इनके अतिरिक्त अनेक पाठ-पुस्तकों का संकलन और संपादन किया जो बीकानेर तथा अन्य राज्यों में पढाई जाती हैं; प०—त्रिपाठी-भवन, औरैया, इटावा, यू० पी० ।

अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध'—मंगलाप्रसाद-पारितोपिक-विजेता हिंदी के गिने-चुने वर्तमान महाकवियों में एक, प्रसिद्ध साहित्य-भापा-मर्मज्ञ, अधिकारी और वयो-वृद्ध हिंदी-सेवी; ज०—१८६५ निजामाबाद, आजमगढ़ ; शि०—काशी ; ज्ञा०—अँग-रेजी, फारसी, गुरुमुखी, बँगला; लेख०—१८८९ ; सा०—दो वार हिं० सा० सम्मे० के सभा-पति—(१) १९२३ (२) १९३४ ; भूतपूर्व हिंदी-अध्या-पक, काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय, संस्कृतपाठशाला और सना-तनधर्मसभा के संचालक ; रच०, अनु०—वेनिस का बाँका, कृष्णकांत का दानपत्र, नीति-निबंध, उपदेश-कुसुम, विनोद-वाटिका, चरितावली, रिपवान विंकल, उप०—ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल, संपा०—कबीर - वचना-वली, चारु चयन, ऋतुमुकुर, काव्य—प्रियप्रवास, रस-कलस, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, वैदेही-वनवास, पारि-जात, प्रेम-प्रपंच, प्रेमांबुवा-रिधि, प्रेमांबु-प्रवाह, प्रेमांबुप्रस्र-वण, काव्योपवन, प्रेमपुष्पोपहार, बाल-विलास, बाल-विभव, पद्य-प्रमोद, पद्य-प्रसून, फूल-

पत्ते, कल्पलता, बोलचाल, अच्छे गीत, उपहार, ग्राम-गीत, पवित्र पर्व, संदर्भ सर्वस्व, विभूतिमयी ब्रजभाषा, आलो०—पटना यूनिवर्सिटी की रामदीन लेक्चरारशिप के भाषण 'हिंदी और उसके साहित्य का विकास' नाम से प्रकाशित हैं ; व्याख्यान—उद्बोधन, सम्मेलन-संदर्भ, सनाढ्य-सभा-संभाषण, गोरक्षा-गौरव, प्रदर्शनी-प्रवचन, अन्य—अंकगणित, बाल-पोथी (५ भाग), वर्ना-क्यूलर रीडर (४ भाग), मध्य हिंदी रीडर (५ भाग) ; प०—आजमगढ़ ।

अलखमुरारी हजेला एम० ए०, एल-एल० बी०—गद्य-काव्य और कहानी-लेखक; ज०—अक्टूबर १६१८ ; शि०—कानपुर ; अप्र० रच०—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अनेक सामयिक लेखों, गद्य-काव्यों और कहानियों के संग्रह ; प०—सीसामऊ, कानपुर ।

अवधनारायण—कहानी-उपन्यास-लेखक ; रच०—विमाता (उप०) झलक (कहा०) सेकेंडहैंड लेडी (उप०) । प०—शुभंकरपुर, दरभंगा ।

अवधविहारी मालवीय 'अवधेश'—प्रसिद्ध हिंदी कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८८१; रच०—राष्ट्रीय अष्टक, अवधेशपचासा, हिंदू-संगठन, कृष्णाष्टक, शिवाष्टक, अवधेश-कुसुमांजलि ; प०—गणेशनगर, नागपुर ।

अवधविहारीलाल 'अवध', बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० वि०—साहित्य-सेवी और हिंदी-प्रेमी ; ज०—१८६४, जमानिया, गाजीपूर, शि०—गाजीपूर, प्रयाग ; ज्ञा०—संस्कृत, बँगला, उर्दू, फारसी ; ना० प्र० स० काशी के सभासद्, हिं० सा० सम्मेलन के परीक्षक और आर्यविद्या-लय, काशी के अंतरंग सभा-

सद् ; रच०—हमारे इतिहास-निर्माता, चिपटी खोपड़ी ; प०—वकील, ६१।३६१ बड़ी पियरी, काशी।

अवधविहारीशरण, एम० ए०, बी० एल०—स्वाध्याय-निरत, गंभीर विद्वान् और इतिहासज्ञ; रच०—मेगास्थनीज का भारत-विवरण। अप्र०—शिक्षा-संबंधी और साहित्यिक लेखों के संग्रह। प०—वकील, आरा, विहार।

अवधेश्वरप्रसादसिंह—प्रसिद्ध देश-सेवक, ग्राम-सुधारक और साहित्य-सेवी; 'युवक' के सहकारी संपा० ; किसान-महासभा के अध्यक्ष ; अप्र० रच०—विविध प्रचारात्मक निबंधों के संग्रह ; प०—दहिला, विहार।

अशरफी मिश्र, बी० ए०—प्रसिद्ध विहारी पत्रकार और अध्ययनशील लेखक ; भू० संपा०—दैनिक 'शांति', भागलपुर और दैनिक 'जनक', पटना ; रच०—धनकुबेर कार-नेगी। प०—गोसाईंगाँव, भागलपुर, विहार।

अशोक, सा० लं०—बाल-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और संपादक; भू० संपा०—'किशोर' (३८-३९) 'गौतम' और पाक्षिक 'बच्चों की दुनिया' सागर ; रच०—फुलझड़ी, बाल-गीतांजलि, अलकावली, गीतों की दुनियाँ, खेल-खिलौना, घुनघुना, राजाभैया; प०—शांतिकुटीर, कांग्रीस-दान, नागपुर।

अक्षयलाल झा, आयुर्वेदाचार्य—आयुर्वेद-संबंधी अनेक प्रसिद्ध और उपयोगी लेखों के लेखक ; रच०—ओषधि के उपयुक्त फलों के प्रयोग, सूखे फलों के प्रयोग, त्रिफला के प्रयोग, ताजे फलों के प्रयोग, व्यंजनों के प्रयोग, फूलों के चुटकुले ; प०—जागढ़, मुजफ्फरपुर।

आत्माराम उपाध्याय, पुरानी शैली के हिंदी-सेवी जैन भिक्षुक ; प्राकृत के अनेक जैन-

ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया ; अनेक स्वतंत्र ग्रंथों के रचयिता ; विजयानंद सूरि के पश्चात् पंजाब में हिंदी जैन-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ निर्माता ; प०—लाहौर ।

आत्माराम देवकर—सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक और वयोवृद्ध साहित्य - सेवी ; रच०—पानी का बुदबुदा, माया-मरीचिका, आदर्श मित्र, त्रैलोकसंतरी ; वि०—शिक्षा-विभाग से पेंशन लेकर विश्राम कर रहे हैं ; प०—एटा, दमोह ।

आद्यादत्त ठाकुर, एम० ए०—माधोपुर, दरभंगा-निवासी अध्ययनशील विद्वान् और आलोचक ; 'माधुरी' में अनेक लेख और समालोचनाएँ लिखी हैं ; प०—संस्कृत अध्यापक, विश्वविद्यालय, लखनऊ ।

आदित्यनारायणसिंह—द्विवेदी-युग के साहित्य-मर्मज्ञ विद्वान् और प्रतिष्ठित आलोचक । अनेक उत्तम पुस्तकों के रचयिता ; प०—मोकामा, विहार ।

आनंदीलाल जैन, सा० र०, न्यायतीर्थ, दर्शनशास्त्री, सा० शास्त्री—संगीतज्ञ और सामयिक निबंध-लेखक ; ज०—१५ सितंबर, १९१६, जयपुर ; शि०—इंदौर; अप्र० रच०—विश्वसंगीत (पाँच भाग), सामयिक और दार्शनिक निबंध-संग्रह ; प०—संस्कृताध्यापक, एस-एस० जैन सुबोध ए० वी० मिडिल स्कूल, जयपुर ।

आरसीप्रसादसिंह—विहार के प्रसिद्ध कवि और कहानी-लेखक ; ज०—दरभंगा ; रच०—आजकल, कलापी, संचयिता, आरसी, पंचपल्लव, खोटा सिक्का ; अप्र० रच०—अनेक कविता और कहानीसंग्रह, कुछ उपन्यास और खंडकाव्य । प०—तारामंडल, रोसड़ा, दरभंगा ।

आशुप्रसाद—प्रसिद्ध कवि; ज०—१९०६ ; अप्र० रच०—अनेक सरस काव्य-संग्रह; वि०—कई कविताओं पर पुरस्कार प्राप्त ; प०—मोतिहारी, बिहार।

इंद्रदेवसिंह, एम० एस-सी०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध सेवी और हिंदी-प्रेमी ; मध्य प्रांत के सबसे पुराने पत्र पाक्षिक 'आर्यसेवक' के भू० प्रका० और व्य०, और अब प्रधान संपा०; अप्र० रच०—अनेक सामयिक और सांस्कृतिक विषयों पर लिखे निबंध-संग्रह; प०—अकोला, बरार।

इंद्रदेव शर्मा—हिंदी के निष्काम सेवक, प्रचारक और साहित्य-प्रेमी; सिंधी सारस्वत ब्राह्मण ; सिंधप्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रमुख कार्यकर्त्ता ; प०—हैदराबाद, सिंध।

इंद्रनाथ मदान, डाक्टर, एम० ए०, पी-एच० डी०—लाहौर के सुप्रसिद्ध विद्वान्, हिंदी-साहित्य के मर्मज्ञ और कुशल आलोचक ; हिंदी की आधुनिक प्रगति का विशेष अध्ययन करके आपने डाक्टरेट की उपाधि पाई है ; कुशल लेखक हैं ; प०—अध्यापक, दयालसिंह कालेज, लाहौर।

इंद्रराज पारूराम शर्मा—हिंदी के अच्छे लेखक, प्रचारक और साहित्य-प्रेमी ; सिंधी सारस्वत ब्राह्मण ; हिंदी-लेखन-कला में पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी के शिष्य ; हिंदू-महासभा के परिपोषक, हैदराबाद में म्यूनिसिपल कमिश्नर, प०—मुखी की गली, हैदराबाद, सिंध।

इंदिरादेवी गुप्त, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध कवयित्री; ज०—१९१२, इंदौर ; रच०—पुष्पांजलि ; अप्र०—दो-तीन सरस काव्य-संग्रह ; वि०—आपके पिताजी दीवाने-खास बहादुर लाला मानसिंहजी, भूतपूर्व गृह-सचिव इंदौर राज्य, हैं और पति

श्रीवीरेश्वरप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी० ; प०—दिलपसंद, इंदौर।

इंद्र, विद्यावाचस्पति—प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार ; स्व० श्रद्धानंदजी के सुपुत्र ; ज०-१८८९ ; प्रधान, स्थानीय जिला काँग्रेस कमेटी (१९२५-२६) प्रांतीय काँग्रेस कमेटी, (१९३७) दिल्ली, स्वागत-कारिणी सभा आल इंडिया कनवेंशन, दिल्ली, और दलितोद्धार सभा, दिल्ली ; कई बार जेलयात्री ; संपा०—'सद्धर्मप्रचारक', 'सत्यवादी', 'विजय', 'वीर अर्जुन', आदि; गुरुकुल विद्यालय काँगड़ी के व्यवस्थापक ; रच०—अपराधी कौन (उप०) स्वर्ण देश का उद्धार (ना०) नैपोलियन बोनापार्ट, प्रिंस बिसमार्क, गैरीवाल्डी, जवाहरलाल (जी०), मुगल-साम्राज्य का पतन ; प०—दिल्ली।

इलाचंद्र जोशी—प्रसिद्ध कहानी - उपन्यास - लेखक, सुकवि और साहित्यालोचक ; ज०-नवंबर, १९०२, अल्मोड़ा; ज्ञा०—प्रायः सभी आर्य-भाषाओं के साथ अँग्रेजी और फ्रेंच ; लेख०—१९१५ ; हस्त-लिखित मासिक पत्रिका का संपा०, १९१५ ; १९२७ से प्रसिद्धि मिली ; अँग्रेजी के 'माडर्न रिव्यू' में भी लिखा ; अनेक पत्र-पत्रिकाओं के संपादक और उपसंपादक रहे ; भू०संपा०—'विश्वमित्र' और 'विश्ववाणी'; रच०—घृणामयी, संन्यासी, चार उपन्यास (उप०) धूपलता (कहा०) विजनवती (कवि०) साहित्य-सर्जना (आलो०) दैनिक जीवन और मनोविज्ञान ; अप्र०—परदेशी (उप०) और दो-एक कविता, कहानी, निबंध-संग्रह ; प०—ठि० 'भारत', इलाहाबाद।

ईश्वरलाल शर्मा 'रत्नाकर', सा० र०—साहित्य-प्रेमी और सुवक्ता ; ज०—१९१२, झालरापाटन ; शि०—इंदौर;

रच०—मनोवीणा (कवि०) रश्मि मधु (उमर खैयाम का अनु०), शोक-संगीत, सती; वि०—आप हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक और वयोवृद्ध साहित्य-सेवी पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न के सुपुत्र हैं; प०—ठि० श्रीनवरत्नजी, झालरापाटन सिटी।

ईश्वरीप्रसाद गुप्त—कथाकार, कहानी-उपन्यास-लेखक; ज०—जून १९१६; रच०—कमला (उप०) विदुषी (कहा०) प०—मोतिहारी, बिहार।

ईश्वरीप्रसादसिंह—प्रसिद्ध बिहारी हिंदी-लेखक और सफल पत्रकार; हिंदी-प्रचार-प्रसार का उद्देश्य लेकर छोटा नागपुर से निकलनेवाले 'झारखंड' के भूतपूर्व संपादक; प०—पो० गुमला, राँची, बिहार।

ईशदत्त शास्त्री, 'श्रीश', साहित्य-दर्शनाचार्य, काव्यतीर्थ, विद्यावाचस्पति, सा० र०—सुप्रसिद्ध कवि, दार्शनिक-निबंधकार और संस्कृत के अध्ययनशील विद्वान्; गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के पोस्टग्रेजुएट-रूप में 'प्रिंस आफ वेल्स'-सरस्वती-भवन में कालिदास पर रिसर्च तीन वर्ष तक की; महामना मालवीयजी के प्राइवेट सेक्रेटरी १९४०-४५; विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि; आशुकवि और सुवक्ता; भू० संपा०—संस्कृत की तीन पत्रिकाएँ काशी से 'सुप्रभातम्', 'ज्योतिष्मयी', 'भारतश्री' और 'आदेश', मेरठ; वर्त० संपा०—'राजहंस', काशी; रच०—प्रताप विजय, झाँसी की रानी, कंठहार, रामवनगमन, शंखनाद, आदर्श गोसेवक दिलीप, अद्वैत-दर्प-दलनम्, ध्रुव, सम्राट् विक्रमादित्य और उनके नवरत्न, कालिदास, कुमारसंभव; अप्र० रच०—भारत-अभ्युदयम्, विद्रोही, संगीत-रत्नाकर, मेरे गीत; प०—

आचार्य, शिवकुमार गोविंद सांगवेद महाविद्यालय, काशी।

ईशनारायण जोशी 'महान्'—प्रसिद्ध ज्योतिषी और साहित्य-सेवी ; ज०—१९१० ; रच०—मुखाकृति-रहस्य (सामुद्रिक शास्त्र) साकोरी का संत (महात्मा-जी की जीवनी) गोहरे ताज जंत्री, स्था०—ज्योतिष-निकेतन, अप्र० रच०—त्योहार-चित्रावली, स्पंदन, सामुद्रिक विज्ञान, प०—ज्योतिष-निकेतन, चौक, भोपाल।

उदयनारायण तिवारी, एम० ए० (अर्थशास्त्र, हिंदी, पाली), सा० र०—सुप्रसिद्ध समालोचक, गंभीर विद्वान् और उत्साही साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९०४, पीपरपातीग्राम बलिया; शि०—प्रयाग, आगरा और कलकत्ता ; सन् १९२८ से हिं० सा० सम्मे० की स्थायी समिति के सदस्य; भोजपुरी पर डाक्टरेट के लिए अनुसंधानात्मक निबंध लिखने में संलग्न ; रच०—कविता-वली रामायण की भूमिका, रासपंचाध्यायी और भँवर-गीत, भूषण-संग्रह—दो भाग, वीरकाव्य-संग्रह, कहानी-कुंज; अं०—'ए डाइलेक्ट आव भोजपुरी', भोजपुरी लोकोक्तियाँ और भोजपुरी मुहावरे इत्यादि आपके अनुसंधानात्मक निबंधों की प्रशंसा सर जार्ज ग्रियर्सन, जूलूब्लाश (पैरिस) आर० एल० टर्नर (लंदन) आदि विद्वानों ने की ; प०—हिंदी अध्यापक, दारागंज हाई स्कूल, प्रयाग।

उदयशंकर भट्ट, सा० आ० काव्यतीर्थ, शास्त्री—सुप्रसिद्ध रोमैंटिक कवि, नाटककार और गीत-नाट्य-लेखक; ज०—१८९७, इटावा ; शि०—अजमेर, बड़ौदा, लाहौर, काशी और कलकत्ता ; लेख०—१९२८ ; संस्कृत के भूतपूर्व अध्यापक, वियोगांत नाटक रचना में विशेष रुचि ; रच०: काव्य—तक्षशिला, राका,

मानसी, बिसर्जन; नाटक—विक्रमादित्य, दाहर अथवा सिंध-पतन, अंबा, सगर-विजय, कमला, अंतहीन अंत, अभिनव एकांकी नाटकों का संग्रह; गीति-नाट्य—मत्स्य-गंधा, विश्वामित्र, राधा; संपा०—कृष्णचंद्रिका, गुमान मिश्र-कृत शकुंतला; अप्र० रच०—अनेक एकांकी नाटक और कविता-संग्रह; वि०—कुछ रचनाएँ पंजाब, दिल्ली, राजपूताना, पटना, कलकत्ता, नागपुर और मद्रास के विद्यालयों में स्वीकृत हैं; प०—लाहौर।

उपेंद्रनाथ 'अश्क', बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध कहानी, उपन्यास और नाटक-लेखक; ज०—१४ दिसंबर, १९१०, जालंधर; शि०—लाहौर; लेख०—उर्दू में १९२७ से पर हिंदी में १९३९ से; लाला लाजपत-राय के 'वंदे मातरम्' और 'वीरभारत' पत्रों के उपसंपादक; रच०: कहानियाँ—नौरत्न, औरत की फितरत, डाची, कोंपल, सितारों के खेल (उप०) नाटक—जय-पराजय, स्वर्ग की झलक, देवताओं की छाया में, छै बेटे, अन्य—उर्दू काव्य की एक नई धारा, प्रातप्रदीप, बाव-रोले; प०—प्रीतनगर, अमृत सर।

उपेंद्रनाथमिश्र 'मंजुल'—प्रसिद्ध कवि और अध्यापक; रच०—कविताकदंब, राष्ट्रीय गीतगुच्छ, धनंजय-मान-मर्दन; अप्र० रच०—सुंदर कविताओं के दो-तीन सरस संग्रह; प०—सीतामढ़ी।

उमादत्त सारस्वत, 'दत्त'—सुप्रसिद्ध कवि, साम-यिक निबंध-लेखक और साहि-त्य-सेवी; ज०—१९०९, सीतापुर; भू० स्थानीय संपा०—'काव्य - कलाधर' (परिचयांक) कलकत्ता; रच०—किरण (कवि०) अप्र० रच०—विभिन्न पत्र-

पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं, कहानियों और निबंधों के कोयल, मिलन-मंदिर, मस्तराम का सोंटा, मस्तराम का चिट्ठा, लेख-लतिका और रंपा नामक संग्रह ; प०—अध्यापक, एस० जे० डी० हाई स्कूल, विसवाँ, सीतापुर।

उमानाथ, एम० ए०—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और आलोचक ; रच०—सूर-माधुरी ; अप्र० रच०—पत्र-पत्रिकाओं में छपे लेखों के दो-तीन संग्रह ; प०—छपरा, बिहार।

उमाशंकर द्विवेदी 'विरही', सा० र०—प्रसिद्ध कवि, पुराने साहित्यप्रेमी, हिंदी-प्रचारक और राष्ट्रीय विचारक ; ज०—जनवरी १८६२ ; शि०—इंदौर ; स्थानीय सभी साहित्यिक संस्थाओं से संबंध ; हिं० सा० सम्मे० के स्थानीय केंद्र के जन्मदाता ; अप्र० रच०—अनेक सरस काव्य ; प०—विरही-सदन, उदयपुर।

उमाशंकरप्रसाद, बी० एस-सी०—प्रसिद्ध संगीताचार्य और अनेक वैज्ञानिक लेखों के लेखक, प्रतिष्ठित रईस ; ज०—१६०३ ; अप्र० रच०—विज्ञान-विषयक निबंधों के दो-तीन संग्रह ; प०—मुजफ्फरपुर।

उमाशंकरलाल, सा० र०—कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—२० दिसंबर, १६१४ ; शि०—प्रयाग ; रच०—अवगुंठन (का०) परिमल, आत्मकहानी ; प०—ठि० मुंशी नारायणलालजी, अमीन और सब-ओवरसियर, बनारस स्टेट।

उमाशंकर त्रिवेदी, एम० ए०—उदीयमान कवि और आलोचक ; ज०—१६१७ ; शि०—सनातनधर्म कालेज, कानपुर ; 'सामयिक साहित्य-सदन', लाहौर के संस्थापकों में एक और उसके संचा० तथा व्यवस्थापक ; प०—चेंबरलेन रोड, लाहौर।

उमेशचंद्र देव, सा० र०,

आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री, विद्यावाचस्पति, संस्कृतरत्न—प्रसिद्ध आलोचक, सामयिक निबंध-लेखक और पत्रकार ; ज०—१६०४, भटपुरा ग्राम, फर्रुखाबाद ; शि०—प्रयाग, दिल्ली, मेरठ; भू० अध्यक्ष, श्रीसावित्री रामभवन, छिबरामऊ; लेख०—१६३० ; भू० संपा०—'आयुर्वेद सिद्धांत' और 'अनुभूत योगमाला' ; वर्त० संपा०—'सरस्वती', प्रयाग ; रच०—नीरोग, इत्यादि ; अप्र० रच०—पुरातत्त्व विषय, पांचाल साम्राज्य, महाकवि सूरदास ; प०—इंडियन प्रेस, इलाहाबाद ।

उमेश मिश्र, काव्यतीर्थ, एम० ए०, डी० लिट्—गजहरा, दरभंगा - निवासी, प्राकृत, पाली, मैथिली, अँगरेजी आदि देशी विदेशी भाषाओं के सुप्रसिद्ध अध्ययनशील विद्वान्, ख्यातिप्राप्त भाषा-वैज्ञानिक ; ज०—१८६६ ; मैथिली-साहित्य-परिषद् की घोंघड़िया (दरभंगा) वाली सभा (१६२२) के अध्यक्ष ; मैथिली रच०—गद्यकुसुममाला, गद्यकुसुमांजलि, साहित्य-दर्पण (अनु०) शंकरमिश्र (जी०) भवभूति (जी०) नलोपाख्यान, यक्ष - पांडव-संवाद ; हिंदी में अनेक स्फुट आलोचनात्मक, साहित्यिक लेख ; प०—संस्कृतविभाग के अध्यक्ष, विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

उषादेवी मित्रा—सुप्रसिद्ध कहानी-उपन्यास लेखिका, साहित्य-प्रेमिका और कवियित्री ; ज०—१८६८, जबलपुर ; स्वर्गीय श्रीक्षितीशचंद्र मित्र, इंजीनियर की पत्नी ; 'नारी - मंगल - समिति' की संस्था० और संचा० ; आरंभ में बँगला में रचना की ; हिंदी लेख०—सन् १६३३ से; 'हंस', काशी में पहली कहानी 'मातृत्व'; रच०—उप०—वचन का मोल, पिया, जीवन की मुसकान और

पथचारी ; कहा०—आँधी के छंद, महावर, सांध्य पूरबीले; अप्र० रच०—आवाज (उप०) और कई कहानी-संग्रह ; प०—गलगला ताल, जबलपुर।

ए० चंद्रहासन, एम० ए०—दक्षिण भारत के अत्यंत उत्साही हिंदी प्रचारक, साहित्य-प्रेमी और अध्ययनशील विद्वान् ; १६२० से दक्षिण में हिंदी-सेवा और प्रचार ; आठ साल तक दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा के अंतर्गत काम किया—दो साल तक केरल के संगठक, तीन साल तक कोचिन - मलाबार - कानरा शाखा के मंत्री और तीन साल तक केरल हिंदी महा-विद्यालय के प्रिंसिपल; दक्षिण भारत में सर्वप्रथम हिंदी-विभाग-युक्त महाराजा कालेज (सरकारी) के सर्वप्रथम हिंदी - अध्यापक ; कोचिन रियासत के तीनों कालेजों और अधिकांश हाईस्कूलों में हिंदी-शिक्षा आरंभ कराने के श्रेय-पात्र ; उत्तरी भारत की यात्रा करनेवाले दक्षिणी यात्रियों के नेता, १६३५ ; भारतीय साहित्य - परिषद् के मुखपत्र 'हंस' के मलयालम विभाग के भू० संपा० ; केरल के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'मातृभूमि' के हिंदी-विभाग के वर्त० संपा०; मैसूर, कलकत्ता और मद्रास विश्वविद्यालयों की सभी हिंदी परीक्षाओं के परीक्षक ; दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा की कार्यकारिणी, अंतरंग और परीक्षा-समिति के भू० सद०; मद्रास विश्वविद्यालय की ओर से कई बार 'इंस्पेक्शन' कमि-श्नर ; अब इसकी 'अकेडेमिक काउंसिल', हिंदी, बँगाली, मराठी, उड़िया, आसामी और बर्मी की 'बोर्ड आव स्टडीज' तथा 'फैकल्टी आव ओरियंटल स्टडीज' के वर्त० सद० ; मद्रास सरकार की 'टेक्स्ट बुक कमेटी' और त्रावनकोड़ की 'हिंदी सिलेबस कमेटी' के भू० सद०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-

सभा के अंतर्गत कोचिन स्टेट हिंदी समिति के प्रधान मंत्री; प०—हिंदी अध्यापक, महाराजा कालेज, इरनाकुलम, कोचिन राज्य, दक्षिण।

प० पद्मिनी कुमारी, एम० ए०—कोचिन स्टेट के प्रसिद्ध हिंदी विद्वान् ए० चंद्रहासन, एम० ए० की सहोदरा और दक्षिण भारत की पहली महिला जिन्होंने हिंदी में एम० ए० पास किया; केरल के हिंदी प्रचार-कार्य में महत्त्वपूर्ण भाग लिया; मद्रास विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रमुख स्थान रखती हैं; भूतपूर्व अध्यापिका कन्या गुरुकुल, देहरादून; प०—हिंदी अध्यापिका, संत तेरीसस कालेज, त्रिचूर, दक्षिण भारत।

प० सावित्री, एम० ए०—श्री ए० चंद्रहासन की दूसरी सहोदरा जिन्होंने हिंदी में एम० ए० किया है; प०—अध्यापिका, आर्यकन्या महाविद्यालय, बड़ौदा।

ओमप्रकाशसिंह 'व्यग्र', एम० ए०, सा० र०, सा० भू०, सिद्धांतशास्त्री—प्रसिद्ध कहानीकार; अप्र० रच०—अनेक कहानी और सामयिक निबंध-संग्रह; प०—हिंदू स्कूल स्ट्रीट, बदायूँ।

ओमप्रकाश शर्मा, एम० ए० (हिंदी, अँगरेजी) हास्यरस के प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी; ज०—१६१५; भू० सं०—हास्यरस के मासिक 'नोकझोंक'; प०—बाग़-मुजफ्फरखाँ, आगरा।

ओंकारनाथ मिश्र, सा० र०, सा० शास्त्री,—प्रसिद्ध लेखक, टीकाकार और साहित्य-प्रचारक; ज०—१६१०, सिरसा, प्रयाग; स्था०—हिंदी-साहित्य विद्यालय, दारागंज, प्रयाग; तुलसी-साहित्य-परीक्षा-समिति के सहायक; रच०—सत्यहरिश्चंद्र नाटक, विनयपत्रिका की टीका; अप्र० रच०—सूरज-मंजरी-हस्तलिखित प्राचीन

प्रति की टीका, ग्वाल कवि-कृत साहित्यानंद की संपादित प्रति, सूर-विहार—आलो० ; प०—हिंदी अध्यापक, अग्रवाल विद्यालय इंटर कालेज, इलाहाबाद।

कन्हैयाप्रसादसिंह, एम० ए०—वँगरहटा, दरभंगा-निवासी प्रसिद्ध आलोचक और कहानीकार ; 'विशाल-भारत' के नियमित लेखक, रच०—चित्रकथा ; प०—अध्यापक, नालंदा कालेज, नालंदा।

कन्हैयालाल पोद्दार सेठ, हिंदी के सर्वमान्य काव्य-शास्त्रज्ञ, साहित्य के प्रकांड पंडित और पुराने ढर्रे के समस्यापूरक कवि; ज०—१८७१, मथुरा ; लेखन कार्य समस्या-पूर्ति से आरंभ ; रच०—अलंकार-प्रकाश, गंगालहरी (अनु० का०) श्रीमद्भागवत के पंचगीतों का समश्लोकी अनु०, मेघदूत-विमर्श, काव्य-कल्पद्रुम, संस्कृत-साहित्य का इतिहास ; वि०—अंतिम दो रचनाएँ असाधारण विद्वत्ता की परिचायक हैं ; प०—रामगढ़।

कन्हैलाल भिंडा 'शांतेश', हिं० भू०—सुकवि और सुलेखक, हिंदी-प्रेमी और उसके प्रचारक ; सहकारी संपा०—'ग्रामसेवक'; अप्र०—अनेक स्फुट रचनाएँ; प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

कन्हैलाल मानिकलाल मुंशी, बी० ए०, एल-एल० बी०—राष्ट्रभाषा हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रेमी और गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ लेखक; ज०—१८८७ ; शि०—बड़ौदा और बंबई ; संपा०—'यंग इंडिया' १९१५ ; बंबई होमरूल लीग के मंत्री, १९२० ; गुजराती साहित्य-कोष के संपादक ; बंबई विश्व-विद्यालय की सिनेट और सिंडीकेट के सदस्य; सत्याग्रह आंदोलन में सपत्नीक भाग लिया ; जेल गए ; अखिल भारतीय काँग्रेस

कमेटी के सदस्य; बंबई सरकार के काँग्रेसी होम मिनिस्टर, १९३७ ; राष्ट्रभाषा - प्रचार समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता ; वर्त० संपा०—'सोशल वेलफेयर'; प०—ऐडवोकेट, रिज रोड, मलाबार हिल, बंबई ।

कन्हैयालाल मुंशी, एम० ए०, एल-एल० बी०, ऐडवोकेट हाईकोर्ट—हिंदी-अँगरेजी के प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्वान् ; ज०—१९०१; भूत० सं०—चाँद (उर्दू); अनेक हिंदी कहानियाँ और कहानी-कला के लेखक; अँगरेजी (ब्रिटिश) अमेरिकन और योरोपीय पत्रों में बराबर लिखते रहते हैं; अनेक प्रसिद्ध विदेशी पत्रों के संवाददाता ; प०—कृष्णकुंज, इलाहाबाद।

कन्हैयालाल सहल. एम० ए० (हिं०) एम० ए०—प्रि० (संस्कृत) ज०—१९११;शि० जयपूर, आगरा ; मंत्री श्रीसूर्यकरण पारीक स्मारक सा० समिति; र०—श्रीपतराम गौड़ 'विशद' एम्० ए० के साथ 'चौबोली' नामक राज० कथा-पुस्तक का संपा० ; समीक्षांजलि (प्रथम भाग, आलो० लेख), गुंजन-गरिमा (अप्रा०); प्रि० वि०—आलोचना और दर्शन ; प०—हिंदी अध्यापक, बिरला कालेज, पिलानी, जयपुर ।

कन्हैयालाल सिंह भाटी, ठाकुर—अनेक राजा - महाराजाओं के निकट संपर्क में रहकर हिंदी की सेवा में संलग्न ; यादववंश के इतिहास का संग्रह करनेवाले प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी ; प०—ठि० राजस्थान क्षत्रिय महासभा, अजमेर ।

कनकमल अग्रवाल 'मधुकर'—निर्भीक पत्रकार और सहृदय लेखक ; ज०—१२ जुलाई, १९१२ ; शि०—उदयपुर ; राजस्थान हिंदी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के मान्य सदस्य ; साहित्य-कुल, अजमेर के भूत०

मंत्री ; भारतीय विद्वत्-परिषद् के साहित्याचार्य और वहाँ से 'साहित्य महोपाध्याय' उपाधि-प्राप्त ; भूत० संपा०—हस्त-लिखित 'लव', 'रोवर मैगजीन', 'नवज्योति', 'राजस्थान', 'रियासती' ; प्रकाशक और संपादक—'नवजीवन' ; (१६४०) ; रच०—उद्गार (गद्य का०) अप्र०—अनेक निबंध, कविता और गद्य-काव्य-संग्रह ; वि०—इस समय गुरुकुल, चित्तौरगढ़ में अवैतनिक सेवक हैं ; प०—बनेड़ा, मेवाड़।

कपिलेश्वर झा, प्रसिद्ध कवि और साहित्य-सेवक ; ज०—१६०७; शि०—पटना; जिला हिं० सा० सम्मेलन के संयुक्त मंत्री ; चंपारन जिला कवि सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष रहे ; धमौरा में हिं० सा०-सम्मेलन की परीक्षाओं के केंद्र के संस्था० ; अप्र० रच०—गीतिका तथा अन्य कविता-संग्रह; प०—चंपारन, विहार।

कपिलेश्वर मिश्र, वैयाकरण शिरोमणि—स्वाध्यायी, सभाचतुर, वाग्विलासी और प्रसिद्ध लेखक ; कानपुर और शांतिनिकेतन में भूतपूर्व संस्कृत अध्यापक ; अत्यंत परिश्रम से हिंदी का एक बृहत् कोष तैयार किया है; अप्र० रच०—अनेक महत्त्वपूर्ण लेख-संग्रह ; प०—सोती, सलीमपुर, दरभंगा।

कपिलदेव नारायणसिंह 'सुहृद्'—प्रसिद्ध विहारी साहित्य-सेवी ; रच०—वंदी, प्रेमालाप ; अप्र० रच०—स्फुट रचना-संग्रह ; प०—सिताव-दियरा, विहार।

कमलदेव नारायण, बी० ए०, बी० एल०—बालसाहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक ; ज०—१६००; रच०—ईश्वरचंद्र विद्यासागर, युगल कुसुम, अर्द्धांगिनी, झरना, विखरे फूल, प्रेमनगर की सैर, वैज्ञानिक वार्तालाप, बच्चों के

खेल ; प०—बखरा, बिहार।

कमलधारीसिंह 'कमलेश' सा० र०—लेखक, कवि, सुधारक और अध्यापक ; ज०—१९१२, बलिया जिला में कसवा छाता के निकट शेर ग्राम ; शि०—प्रयाग ; हिंदी-विद्यापीठ प्रयाग, काशी विद्यापीठ, अचलपुर रियासत ; जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी में अध्यापक रहे, महिलाविद्यापीठ कालेज, प्रयाग में भी काम किया ; रच०—मुसलमानों की हिंदी-सेवा, बालपंचरत्न, स्त्रीपंचरत्न, गंगागीत, भारत की प्रमुख महिलाएँ ; प०—माहेश्वरी हाई स्कूल, कलकत्ता।

कमलनारायण झा 'कमलेश'—प्रसिद्ध सुधारवादी, कवि, समाज - सेवक और जीवनी-लेखक; ज०—१९१०; विहार प्रां० हिंदू महासभा के संयुक्त मंत्री; रच०—महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह, महाराज रमेश्वरसिंह, मंडन मिश्र, विहार के विद्यासागर, रामायण के पूर्वकाल की कहानियाँ, पंडित योगानंद कुमर, धनकुबेर कारनेगी, सर वाल्टर स्काट, छोटी-छोटी बेटियाँ, लार्ड किचनर, विलियम शेक्सपियर, ज्ञान की खोज में ; प०—कैना, दरभंगा, विहार।

कमलनारायण देव, आचार्य 'सत्यकाम', सा० लं० (हिंदी), सा० आ० (संस्कृत); ज०—१९१६; ज्ञा०—बँगला, असमीया, संस्कृत, पाली, गुजराती, मराठी, उर्दू ; सा०—काँग्रेस - कार्यकर्त्ता ; संचा०—प्रांतीय रा० भा० प्र० समिति, वर्धा ; मं०—असमीया हिं० सा० परिषद् ; र०—असमीया सा० की रूपरेखा, बंग सा० की रूपरेखा, वरगीत (असमीय गीतों का हिंदी में संपादन), महापुरुष शंकरदेव, कुहकिनी (गद्य गीत-संग्रह), चिरंतनी (कहानी-संग्रह), सामंतनी (उप०), प्रि० वि०—भाषाविज्ञान, दर्शन, मनोविज्ञान ; प०—

आचार्य रा० भापा अध्यापन-मंदिर, गुवाहाटी, आसाम।

कमलाकांत पाठक, बी० ए०, एल-एल० बी०,सा० र०—हिंदी-प्रेमी उदीयमान आलोचक और साहित्य-सेवी ; ज०— १६ फरवरी, १६२१ ; शि०—होल्कर कालेज, इंदौर; लेख०—१६३८ ; 'किशोर', पटना के संपादकीय विभाग में रहे ; इंदौर साहित्य-समिति के भूत० अधिष्ठाता ; प० ठि० भुवनेश्वरी प्रेस, रतलाम रियासत।

कमलाकांत वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०—आरा-निवासी प्रसिद्ध कहानी-लेखक, संगीत-विद्या - विशारद और पत्रकार ; 'विशाल भारत' के भू० सहकारी संपा० ; अप्र० र०—अनेक सुंदर कहानी संग्रह ; प०—वकील, शाहाबाद, विहार।

कमलापति त्रिपाठी, शास्त्री—प्रसिद्ध पत्रकार और इतिहास-प्रेमी; ज०—१६०२; शि०—काशीविद्यापीठ ; कॉंग्रेस-कार्यकर्त्ता, असहयोग-आंदोलन में तीन बार (१६२१, ३०,३२) जेलयात्रा ; कॉंग्रेसी मेंबर यू० पी० असेंबली ; संपा०—दैनिक 'आज' ; प०—'आज' कार्यालय, काशी।

कमलाप्रसाद वर्मा—प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक ; ज०—१८८२ ; र०—कुल-कलंकिनी, भयानक भूल, परलोक की बातें, रोम का इतिहास आदि ; प०—मुख्तार, पटना।

कमलाशंकर मिश्र, एम० ए०, सा० र०—सुप्रसिद्ध विद्वान्, काव्य-मर्मज्ञ, तुलसी-साहित्य के विशेपज्ञ और अध्ययनशील समालोचक ; ज०—१६००, अहिल्यापुर, इंदौर ; शि०—इंदौर, आगरा; स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं के संस्थापक और कार्यकर्त्ता ; राजपूताना अजमेर के हाई स्कूल इंटरमीडिएट बोर्ड के सदस्य; हिंदी-कमेटी के संयो-

जक ; अब होलकर कालेज, इंदौर में हिंदी-अध्यापक ; अप्र० रच०—विविध विषयों पर लिखे साहित्यिक और आलोचनात्मक लेखों के संग्रह; प०—२७, अहिल्यापुर, इंदौर।

करुणाशंकर शुक्ल, 'करुणेश'—प्रसिद्ध कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९०७; रच०—हिलोर ; अप्र० रच०—दो-तीन काव्य-संग्रह; प०—चौक, कानपुर।

कलक्टरसिंह 'केसरी' एम० ए०—एकौना-निवासी सुप्रसिद्ध कवि और अध्ययन-शील विद्वान् ; विहार प्रा० कवि सम्मे०, पटना के सभापति (१९४१) ; अप्र० रच०—अनेक कविता-संग्रह ; प०—अँगरेजी अध्यापक, सीवान कालेज, सारन, विहार।

काका कालेलकर—सुप्रसिद्ध देश और राष्ट्रभाषा-प्रेमी, हिंदी-प्रचारक और साहित्य-सेवी; राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा की कार्यकारिणी के भूतपूर्व सदस्य ; सन् १९३७ से ४० तक उपाध्यक्ष ; समिति की मुखपत्रिका 'सबकी बोली' के आरंभ से ही संपादक ; रच०—जीवन-साहित्य (दो भाग, निबंध) तथा अनेक ग्रंथों के अनुवाद; प०—ठि० राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा।

कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय—सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी, कुशल पत्रकार और ख्यातिप्राप्त लेखक ; ज०—१८९७ ; कुटीर-शिल्प-कला-विशेषज्ञ; भू० सहकारी अथवा प्रधान संपा०—'भारतमित्र', 'हिंदू पंच', 'विजय', 'बाँसुरी', 'हलधर', 'दारोगा दफ्तर' ; रच०—मुस्तफा कमालपाशा, सती सुभद्रा, मणिपुर का इतिहास, सावित्री-सत्यवान, नल-दमयंती, सती पार्वती, सीता-देवी, शैव्या हरिश्चंद्र, सती शकुंतला, देवी द्रौपदी, श्रीराम-कथा (बँगला), बाग-बगीचा, साग-सब्जी, कृषि और कृषक;

इनके अतिरिक्त जासूसी, सामाजिक और रहस्यपूर्ण बँगला के अनेक उपन्यासों और गल्पों के सफल अनुवादक ; प०—काली बाड़ी, छपरा, बिहार।

कामताप्रसाद गुरु—व्याकरणाचार्य और अध्ययनशील वयोवृद्ध विद्वान् ; ज०—२४ दिसंबर १८७५ ; शि०—सागर, मध्यप्रांत ; अवसर प्राप्त डिप्टी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स ; नागपुर विश्वविद्यालय के हिंदी बोर्ड के भूत० सद० ; मध्यप्रांतीय लिटरेरी एकेडमी के मेंबर ; प्रांतीय हिं० सा० सम्मे० (कटनी, १९३५) के सभापति; भारत धर्म-महामंडल, काशी से 'व्याकरण-रत्न' की उपाधि-प्राप्त ; भूत० संपा०—'सरस्वती' और 'बालसखा' ; रच०—सत्य-प्रेम, भौमासुर-वध, पार्वती और यशोदा, पद्य-पुष्पावली, सुदर्शन, हिंदुस्थानी शिष्टाचार, देशोद्धार, भाषा-वाक्य-पृथक्करण, सहज हिंदी-रचना, हिंदी-व्याकरण; वि०—अंतिम ग्रंथ पर मध्यप्रदेश की सरकार से स्वर्णपदक प्राप्त ; इस व्याकरण के संक्षिप्त, मध्यम और बाल, तीन छोटे संस्करण छपे हैं ; प०—दीक्षितपुरा, जबलपुर, मध्यप्रांत।

कामेश्वरनाथ, प्रसिद्ध ब्रजभाषाप्रेमी और लेखक; भूतपूर्व संपादक—'ब्रजभूमि', मथुरा और प्रकाशक 'आकाशवाणी', लखनऊ ; प०—मथुरा।

कामेश्वरनारायणसिंह—नरहन-निवासी संस्कृत और हिंदी-साहित्य के अध्ययनशील व्युत्पन्न विद्वान्; साहित्यिक ग्रंथों के तुलनात्मक पारायण में निरत अध्यवसायी ; 'धर्म' पर 'मिथिलामिहिर' में पांडित्यपूर्ण लेखमाला ; प०—जमींदार और रईस, नरहन, दरभंगा।

कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर'—सुप्रसिद्ध कुशल संपादक, आलोचक और

कवि ; शि०—कानपूर ; भू० संपा०—'महारथी', दिल्ली, 'वीणा', इंदौर ; स्था०—कानपूर, हि० सा० मंडल; पत्रकार-संघ की कार्यकारिणी समिति के सदस्य ; विज्ञापन और प्रचार-क्षेत्र से बाहर रहनेवाले साहित्यिक ; 'वीणा', इंदौर के लगभग पंद्रह वर्ष तक यशस्वी संपादक; रच०—गद्य-सुधा, गल्परत्न ; अप्र०—रुनझुन(कवि०);प०—इंदौर।

कालिकुमार मुखोपाध्याय—एम० ए० (त्रितय) मननशील विद्वान् और प्रसिद्ध आलोचक ; अप्र० रच०—'सरस्वती', 'माधुरी' आदि मासिक पत्रिकाओं में बिखरे विद्वत्तापूर्ण साहित्यिक और आलोचनात्मक लेखों के अनेक संग्रह ; प०—भागलपुर ।

कालिचरण शर्मा 'मिश्र', हिं० र०—संस्कृतनिष्ठ हिंदी के उपासक, आर्यसंस्कृति के पुजारी और आध्यात्मिक विषयों के लेखक ; ज०—१९१४ ; शि०—पंजाब ; भूत० संपा०—दैनिक और साप्ताहिक 'हिंदू', नई दिल्ली ; रच०—वीर का विराट् आंदोलन (प्रथम खंड) ; अप्र०—इसी का दूसरा खंड ; प०—भुसारामार्ग, खामगाँव, बरार ।

कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी०—ज०—११ अगस्त, १८९२ ; यू० पी० सेकंडरी एजुकेशन एसोसिएशन के सभापति (१९२५-२६) व प्रधानमंत्री (१९३४-३५); अँगरेजी मासिक 'एजुकेशन' के संपादक (१९२२-२४) और १९३८ से अब तक ; बोर्ड आव हाई स्कूल और इंटरमीडिएट एजुकेशन में प्रांतीय हेडमास्टरों के प्रतिनिधि (१९२५-३७); इस बोर्ड की हिंदीकमेटी के सभापति (१९३१-३७) ; जापानयात्रा (१९३६) ; संयुक्त प्रांतीय टीचर्स कोआपरेटिव सोसाइटी के सभापति, १९२२ से १९४२; 'हिंदी-सेवी-संसार' के संचा-

लक और संपादक ; रच०—भारतवर्ष का प्रारंभिक इतिहास, भारतीय इतिहास की कहानियाँ, हिंदी-सार-संग्रह (चार भाग), आधुनिक पद्यावली, साहित्य-समीक्षा, शिक्षा-समीक्षा, भारतीय सभ्यता का विकास, काश्मीर, 'टुवर्ड्स ए बेटर आर्डर'; प०—हेडमास्टर, कालीचरण हाई स्कूल, लखनऊ।

कालूराम अमोलकचंद्र शर्मा व्यास, काव्यतीर्थ, सा० वि०—हिंदी-लेखक, कवि और हिंदी-प्रचारक ; मारवाड़ी थे अब सिंध में रहते हैं ; प०—हिंदी अध्यापक, मीरा स्कूल, हैदराबाद, सिंध।

काशीदत्त पांडेय, एम० ए०—सुप्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी विद्वान्, गंभीर अध्ययनशील आलोचक और प्रमुख हिंदी-सेवी ; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के रजिस्ट्रार ; अनेक हिंदी-प्रचारक संस्थाओं के सक्रिय सहयोगी और उत्साही कार्यकर्ता ; प०—क्रास्थवेट रोड, प्रयाग।

काशीनाथराम शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—प्रसिद्ध राजनीति-विशारद और साहित्य-सेवक ; ज०—१९०१, नुहुवल, गाजीपुर ; शि०—प्रयाग ; अप्र० रच०—जीवन-संग्राम तथा विविध-विषयक निबंध-संग्रह ; प०—क्लर्क, जजी अदालत गाजीपुर।

काशीनाथ त्रिवेदी—अध्ययनशील पत्रकार, समालोचक और सामयिक साहित्य के विद्वान् ; अप्र० रच०—अनेक स्फुट निबंध-संग्रह ; प०—'नवजीवन'-कार्यालय, अहमदाबाद।

काशीराम शास्त्री 'पथिक', सा० र०, प्रभाकर—उदीयमान कवि; ज०—१९२१; सनातन धर्म कन्यामहाविद्यालय में अध्यापक हैं ; रच०—मुक्ति-भान ; अप्र०—वीरभारत ; प०—पोखरी ग्राम, पो० केन्यूर,

गढ़वाल।

कासिमअली सैयद, सा० लं०—प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार; ज०—२२ अप्रैल, १६००, साईंखेड़ा, होशंगाबाद; ज्ञा०—उर्दू, अँगरेजी, फ़ारसी, अरबी, गौंडी, मराठी; अनेक संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी; टेक्स्ट बुक कमेटी के सदस्य; सम्मेलन के परीक्षक; प्रांतीय सरकारी शिक्षण के सेंटर; लेख०—१६१८; भू० संपा०—दैनिक 'स्वदेशी', इलाहाबाद, साप्ता० 'इत्तेहाद', सागर, साप्ता० 'महाकोशल', नागपुर, मा० 'दीपक', अबोहर; मा० 'संगीत', हाथरस; रेडियो में प्रोग्राम, फिल्म स्टोरी, हिज मास्टर्स के रिकर्ड; मुसलिम साहित्य के हिंदी में अनुवादक; रच० : ना०—संयोगिता, ग्राम-सुधार, मुहब्बत इसलाम; प्रह०—अष्टाचार्य, शराब की बोतल; कहा०—हमारी परिशिष्ट, नूरजहाँ, बालकहानी; पद्य—सरलगीत, राष्ट्रीय दर्पण, आजाद वतन (जप्त); जी०—सर सैयद अहमदखाँ, महर्षि मुहम्मद, हजरत मुहम्मद, हजरत उमर; अन्य—गद्य-गरिमा, उर्दू के हिंदू सेवक, नवीन संततिशास्त्र आदि; प०—पत्रकार, नरसिंहपुर, सी० पी०।

किशनलाल श्रीवास्तव, 'कुसुमाकर', सा० र०—कवि और साहित्य-प्रेमी हिंदी-प्रचारक; ज०—१६१२, फीरोजाबाद; हिंदी-साहित्य-विद्यालय के अध्यक्ष; हि० सा० सम्मे० के स्थायी सदस्य; रच०—चिता की चिनगारी, भयंकर भूल, ग्राम्य-गीतांजलि, नवबाला; प०—साहित्याध्यापक श्रीमद्दयानंद विद्यालय, फीरोजाबाद, आगरा।

किशोरसिंह ठाकुर 'किशोर'—कहानी लेखक और कवि; ज०—१६०८; रच०—मध्यप्रांतीय कहानियाँ (दो भाग); प०—ठि० श्री

भाई पटेल, शिवतला, भारकच, भोपाल।

किशोरीदास वाजपेयी, प्रसिद्ध विद्वान्, स्व० द्विवेदीजी के अनन्य भक्त और निर्भीक आलोचक; भूत० संपा०—मासिक 'मराल', आगरा; रच०—द्वापर की राज्यक्रांति (नाटक), लेखन-कला (दो संस्करण—पूर्ण और संक्षिप्त); अप्र०—निबंधों के दो-तीन संग्रह; प०—कनखल, हरद्वार।

किशोरीलाल त्रिवेदी—हिंदी-प्रेमी, कवि और लेखक; ज०—१६०७; अनेक वाचनालयों और साहित्य-संस्थाओं के संस्थापक; प०—प्रधानाध्यापक, मिडिल स्कूल, बड़वाहा, होल्कर राज्य।

किशोरीशरण लिटौरिया 'किशोर', सा० र०—लेखक और कवि; ज०—जून १६१२; रच०—मेरी रानी, स्वर्णकण, मेरा स्वप्न, जसवंत-जस; वि० इनकी पत्नी सुश्री मिथिलेश्वरी देवी 'लोकेंद्र' की संपादिका हैं। प०—मुख्याध्यापक, कैंट ब्वायज स्कूल, सदर बाजार, झाँसी।

कुंदनलाल खत्री—भक्ति और हास्यरस की कविताओं के रचयिता; ज०—१८६६; अप्र०—अनेक स्फुट कविता-संग्रह, प०—तालबहेट, झाँसी।

कुमुद, विद्यालंकार—प्रसिद्ध बिहारी कवि; ज०—१६१४, मुंगेर; भू० संपा०—'नवसंदेश' और 'नौनिहाल'; रच०—संगम-निर्वाण और राजर्षि काव्य; प०—मुंगेर, बिहार।

केदारनाथ गुप्त, एम० ए०—स्वास्थ्य-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक, अध्ययनशील विद्वान् और साहित्य-प्रेमी; ज०—१८६३, राजापुर, बाँदा; शि०—गवर्नमेंट हाई स्कूल, मिरजापुर, इविंग क्रिश्चियन कालेज, प्रयाग, आगरा; हेडमास्टर दारागंज हाई स्कूल, प्रयाग (१६२३-२६);

स्था०—छात्रहितकारी पुस्तक-माला (१९१८) ; रच०—हम सौ वर्ष कैसे जीवें, प्राकृतिक चिकित्सा, स्वास्थ्य और जलचिकित्सा, आदर्श भोजन, ईश्वरीय बोध, मनुष्य-जीवन की उपयोगिता, सफलता की कुंजी, स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, गुरु गोविंद, मन की अपार शक्ति ; वि०—प्रत्येक भारतीय में सौ वर्ष जीने की भावना उत्पन्न करने के लिए प्रयत्नशील ; प०—प्रिंसिपल, अग्रवाल विद्यालय इंटर कालेज, प्रयाग।

केदारनाथ गुप्त, बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—प्रसिद्ध आलोचक और निबंध-लेखक ; ज०—१९१२ ; शि०प्रयाग ; अनेक सार्वजनिक संस्थाओं से संबंधित ; केसरवानी वैश्य पाठशाला, और त्रिवेणी संस्कृत पाठशाला, दारागंज के मंत्री ; रच०—प्रियप्रवास की आलोचना और टीका, पद्माकर के जगद्विनोद की आलोचना और टीका ; भू० संपा०—'केसरवानी समाचार' (१९३०-३४), प०—वकील, ठि० गुप्ता ट्रेडिंग कंपनी, चौक, प्रयाग।

केदारनाथ भट्ट, एम० ए० एल-एल० बी०—हास्य-रस के कुशल लेखक, आगरे के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी ; स्वनामधन्य स्वर्गीय पंडित रामेश्वरजी भट्ट के सुपुत्र एवं पंडित बद्रीनाथ भट्ट के भ्राता; भू० संपा०—'नोकझोंक', मासिक ; अप्र० रच०—अनेक हास्य-रस-सने रोचक लेख-संग्रह ; प०—बाग मुजफ्फरखां, आगरा।

केदारनाथ मिश्र 'प्रभात', एम० ए०, बी० एल०, सा० आ० ; आधुनिक हिंदी-कविता के प्रेमी और प्रसिद्ध कवि ; ज०—१९०४; रच०—श्वेत-नील, कलापिनी, कलेजे के टुकड़े ; प०—छपरा।

के० भुजबली, शास्त्री—जैनधर्म और जैनदर्शन के

मर्मज्ञ, संस्कृत के प्रकांड पंडित, अनेक भारतीय भाषाओं के विद्वान् और प्रसिद्ध पुरातत्त्व-वेत्ता ; ज०—फरवरी, १८६७, मद्रास प्रांतस्थ दक्षिण कन्नड़ जिलांतर्गत काशिपट्टण में ; लगभग २० साल से हिंदी-सेवा में संलग्न ; संपा०—'जैनसिद्धांत-भास्कर', 'जैन एंटिक्वेरी' और 'वीरवाणि' ; अनेक प्राचीन जैनग्रंथों के उद्धारक, हस्तलिखित ग्रंथों के लिपिकार; राजकीय परीक्षा-संस्थाओं के परीक्षक; रच०—जैनधर्म, जैनदर्शन; अनु०—श्रीमुनिसुव्रतकाव्य, कन्नडकवि-चरिते ; प०—पुस्तकालया-ध्यक्ष, जैनसिद्धांतभवन, आरा, बिहार ।

के० वासुदेवन पिल्ले, बी० एस० एल० सी०, सा० र०—सुप्रसिद्ध हिंदीप्रचारक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९०७, त्रावनकोड़ ; शि०—मद्रास ; त्रावनकोड़ के सर्वप्रथम हिंदी-प्रेमी जिन्होंने सम्मेलन की साहित्यरत्न परीक्षा पास की है ; अनेक संस्थाओं के कार्य-कर्त्ता ; आपकी पुस्तकें सरकार द्वारा स्वीकृत हैं ; हिंदी-सेवा के उपलक्ष में अनेक अभिनंदन-पत्र प्राप्त प्रचारक ; तिरुवि-तांकूर सांस्थानिक हिंदी प्रचार-समिति के प्रधान मंत्री और संगठक; दक्षिण भारत हिं० प्र० सभा के अधीन तथा स्वतंत्र रूप से केरल प्रांत में पंद्रह वर्ष से सफल और कुशल हिंदी प्रचा-रक ; माडल स्कूल त्रिवंद्रम्, त्रावनकोड़ स्टेट में हिंदी-अध्यापक; रच०—हिंदी स्वयं शिक्षक, हिंदी-पाठावली, हिंदी-ग्रामर ; प०—प्रधानाध्यापक, तंपानूर हिंदी-महाविद्यालय; त्रावनकोड़ ।

केशरीकिशोरशरण, एम० ए०—प्रसिद्ध बिहारी लेखक, समालोचक और विचा-रक; प्रेमचंद-साहित्य के विशिष्ट प्रेमी ; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक लेख-संग्रह ; प०—अध्यापक, पटना ।

केसरीनारायण शुक्ल, डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्०—गंभीर अध्ययनशील समालोचक, साहित्य - प्रेमी विद्वान् और प्रसिद्ध लेखक; भूतपूर्व हिंदी-अध्यापक काशी-हिंदू-विश्वविद्यालय ; रच० आधुनिक काव्यधारा ; अप्र० रच०—अनेक मौलिक आलोचनात्मक लेख-संग्रह; भारतेंदु पर विशिष्ट ग्रंथ; प०—अध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

केशवप्रसाद पाठक, एम० ए०—उत्कृष्ट कवि और आलोचक; भूत० संपा०—मासिक 'प्रेमा', संस्था०—उद्योग-मंदिर नामक प्रकाशन-संस्था; रच०—रूबाइयात उमर खैयाम का सुंदर पद्यात्मक अनुवाद, त्रिधारा ; अप्र० रच०—अनेक स्फुट कविता-संग्रह ; प०—केशवकुटीर, मालदारपुरा, जबलपुर।

केशवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, सुप्रसिद्ध लेखक और समालोचक ; काशी-नागरी-प्रचारिणी पत्रिका के अनेक वर्षों से संपादक ; रच०—मेघदूत—पद्यात्मक अनुवाद और आलोचनात्मक भूमिका; प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी।

केशवलाल झा 'अमल'—प्रसिद्ध विहारी कवि, ज०—१८६२; रच०—काव्यप्रबोध, प्रेमपुष्पमालिका, ललित-मालती प्रलाप; प० सोन्हौली, मुँगेर, विहार।

केशवानंद, स्वामी—पंजाब के साहित्य-तीर्थ साहित्य - सदन, अबोहर के प्राण, हिंदी-प्रेमी और विद्वान् लेखक; अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के अबोहर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष ; प०—साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब।

केसरीमल अग्रवाल 'हितैषी', सेठ—प्रसिद्ध यात्री और लेखक ; ज०—

१८९०; ज्ञा०—अँगरेजी, गुजराती, उर्दू ; स्था०—सर्वहितैषिणी सभा, मह्; रच०—दक्षिण-पश्चिम के तीर्थस्थान; प०—रत्नपाल-भवन स्टेशन रोड, बड़वाहा, इंदौर, मध्य भारत।

कैलाशचंद्र चतुर्वेदी, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी-साहित्य-सेवी ; ज०–१९०५ जबलपूर; अप्र० रच०—हिंदी-साहित्य-रश्मि, संपादकत्व; प०—हिंदी-अध्यापक, मँझगवाँ मिडिल स्कूल, जबलपुर।

कैलाशनाथ भटनागर, डाक्टर, एम० ए०, पी-एच० डी०—सुप्रसिद्ध विद्वान्, कुशल नाटककार और हिंदी-साहित्य-मर्मज्ञ ; ज०—२१ जुलाई, १९०६ ; एम० ए० १९२८ में और पी-एच० डी० १९४१ में; अब हिंदी-अध्यापक, सनातन-धर्म कालेज, लाहौर ; पंजाब की प्रत्येक हिंदी-प्रचारिणी सभा के सहयोगी और सहायक ; पंजाब-विश्वविद्यालय के हिंदी-संस्कृत बोर्ड के सदस्य ; रच०—मौलिक—नाट्य-सुधा (पंजाब टेक्स्टबुक कमेटी से पारितोषिक प्राप्त), भीम-प्रतिज्ञा, कुणाल, एकांकी नाटक-निकुंज, श्रीवत्स ; संगृहीत—गल्प - विनोद, गद्य-प्रसून, नवसतसईसार, गद्य-चयनिका ; संस्कृत रच० : संपा०— मालविकाग्निमित्र, आख्यानरत्न, नाट्यकथामंजरी, ऊरुभंग, कुमारसंभव सर्ग पाँच, निदानसूत्र (सामवेदीय) अप्र० रच०—कल्पानुपदसूत्र (सामवेदीय), मृच्छकटिक (अनु०), मिहिरकुल तथा अन्य अनेक स्वतंत्र और संपादित पुस्तकें ; प०—कृष्णनगर, युधिष्ठिर रोड, लाहौर।

कोवले माडभूषि कृष्णमाचारी, सा० र०, हिं० सा० शिरोमणि, काव्यालंकार—सुप्रसिद्ध हिंदी - प्रचारक, साहित्यानुरागी और सफल अनुवादक ; ज०—२४ मई

१८९२, कांचीपुरी, मद्रास; शि०—प्रयाग, अलीगढ़; १९२० से हिंदी-प्रचार-कार्य में संलग्न; हिंदी-कुटीर के संचालक; रच०—श्रीवेंकटाचल-वैभव-द्राविड़ (तामिल) से अनु०, पुराण चित्र—तेलुगू अनु०; प०—दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार-सभा, त्यागरायनगर, मद्रास।

कंचर्ल वेंकट कृष्णया, सा० र०, हिं० कोविद, प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक और साहित्यानुरागी; ज०—१९०७, कृष्णपुरम्, कृष्णा; शि०—प्रयाग, मद्रास, काशी; अप्र० रच०—विविध विषयों पर लिखे लेख-संग्रह; वि०—मद्रास और आंध्र विश्वविद्यालयों के लिए परीक्षार्थियों की शिक्षा में संलग्न; प०—प्रधानाध्यापक, आंध्र हिंदी-विद्यापीठ, दक्षिण।

कंठमणि, शास्त्री—अध्ययनशील, साहित्य-प्रेमी और सुलेखक; ज०—दतिया; शि०—नाथद्वार, मेवाड़; काँकरोली महाराज के यहाँ दशाब्दी महोत्सव और बृहत् कवि-सम्मेलन के आयोजक; रच०—काँकरोली का इतिहास (चार भाग), प्राचीन वार्त्ता-रहस्य (दो भाग); प०—विद्या-विभाग के संचालक, काँकरोली, मेवाड़।

कृपानाथ मिश्र, एम० ए०—चंपानगर-निवासी सुप्रसिद्ध लेखक और विद्वान्; संपा०—'रोशनी'; रच०—मणिगोस्वामी (ना०) देश की बात, बालकों का योरप, साहित्यिक प्रबंध-संग्रह, हिंदुस्तान की कहानियाँ, प्यास, अँगरेजी उच्चारण-विधि, प०—अँगरेजी अध्यापक, साइंस कालेज, पटना।

कृष्णकुमार शास्त्री—हिंदी-संस्कृत के उदीयमान लेखक और विद्वान्; ज०—१९१०; हिसार की संस्थाओं के सहायक; हिंदी-प्रेमी और प्रचारक; प०—भिवानी,

हिसार, पंजाब।

कृष्णचंद्र, वि० ल०—राजनीति और इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् और हिंदी-लेखक ; ज०—१६०४, बमौरा मुजफ्फरगढ़ (पंजाब); शि०—गुरुकुल मुलतान और गुरुकुल काँगड़ी; सा०—दैनिक 'अर्जुन' के संयुक्त और साप्ताहिक 'अर्जुन' के प्रधान संपादक र०—चीन की स्वाधीनता, श्रद्धा, हमारे अधिकार और कर्तव्य, वर्तमान जगत्, हिंदी-व्याकरण, काँग्रेस का इतिहास, नवीन तुर्की का जनक कमाल, तथा कई बालोपयोगी पुस्तकें; प्रि० वि०—इतिहास और राजनीति; वि०—श्रीगौरीशंकर हीराचंद्र ओझा के पास तीन साल तक इतिहास-संशोधन तथा भारत की मध्यकालीन संस्कृति का लेखन ; प०—चिरंजीलाल बिल्डिंग्स, रोशनारा रोड, देहली।

कृष्णचंद्र टोपणलाल शर्मा, काव्यतीर्थ, सा० शास्त्री, आयुर्वेद म० मं०, सा० वि०, पुरातत्त्वान्वेषक, हिंदी-प्रेमी विद्वान् ; ज०—जुलाई, १६१० ; स्था०—सरस्वती-परिषद्; अप्र० र०—अनेक स्फुट लेख और कविता-संग्रह ; प्रि० वि०—आयुर्वेद और पुरातत्त्वान्वेषण ; प०—मुन्नी की गली, हैदराबाद, सिंध।

कृष्णचंद्र शर्मा 'चंद्र', बी० ए०—प्रसिद्ध कवि, कहानी और आलोचनात्मक निबंध-लेखक ; ज०—१६१०, बुलंदशहर ; शि०—आगरा ; ज्ञा०—अँगरेजी, उर्दू, फारसी; ले०—१६२७ ; र०—मदशाला (कविवर 'बच्चन' के अनुकरण पर), मरीचिका, प्रतिच्छाया ; अप्र० र०—अनेक कविता, कहानी और निबंध-संग्रह ; प०—अध्यापक, बी० ए० बी० हाई स्कूल, मेरठ।

कृष्णदत्त खांडल, सा० र०, सा० आ०—साहित्य-प्रेमी, हिंदी-लेखक ; ज०—

२७ अप्रेल १६१२ ; शि०—इंदौर ; भूत० संपा०—मासिक 'मकरंद' ; रच०—प्राकृतप्रकाश की संस्कृत टीका (प्राकृत व्याकरण), भर्तृहरि के नीतिशतक की हिंदी टीका, प०—हिंदी-अध्यापक, ऋषिकुल संस्कृतकालेज, लक्ष्मणगढ़, सीकर।

कृष्णदत्त पालीवाल, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध गद्य-लेखक और देशप्रेमी ; ज०—१८६४, तनौरा, आगरा; शि०—इलाहाबाद ; नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के सभापति ; आपके प्रसिद्ध लेख पालीवाल ब्रह्मोदय, प्रताप, प्रभा, सैनिक, विशाल भारत, वर्तमान आदि में प्रकाशित; भू० सं०—'पालीवाल','ब्रह्मोदय','प्रताप,''प्रभा' और 'सैनिक'; रच०—सेवा-मार्ग, अभयापुरी, साम्यवाद, मेरी कहानी, दीनभारत, तीन करोड़ की तकदीर आदि ; वि०—संयुक्त प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर (सन् १६२३–२६) और आगरा जिला बोर्ड के मेम्बर (सन् १६२८–३१) तथा उपरांत चेयरमैन ; सन् १६३५ में अखिल भारतवर्षीय एसेंबली के सदस्य ; इसके अतिरिक्त प्रांतीय पोस्टमैन कानफ्रेंस, रेलवे यूनियन आदि के सभापति, काँग्रेस से आपका विशेष सहयोग है ; प०—आगरा।

कृष्णदत्त भारद्वाज, एम० ए० पुराणशास्त्राचार्य, शास्त्री—सुप्रसिद्ध विद्वान्, हिंदी-साहित्य-प्रेमी और लेखक ; ज०—१६ अगस्त, १६०८; शि०—दिल्ली, पटना, पंजाब ; भा०—संस्कृत, अँगरेजी; भू० संपा०—'गौड़-ब्राह्मण-समाचार ; रच०—हिंदी-गद्य-कुसुमावली, प्रारंभिक संस्कृत पुस्तकम् ; वि०—रेडियो पर अनेक व्याख्यान ; प०—अध्यापक, माडर्न हाई स्कूल, नई दिल्ली।

कृष्णदेव उपाध्याय, एम०

ए० (हिंदी-संस्कृत), सा० शास्त्री, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी, विद्वान् और सुलेखक; ज०—१११०, सोनवर्सा, बलिया; भोजपुरी-ग्रामगीतों के संकलन-संपादन में व्यस्त; र०—चारुचरितावली (जी०), आसाम (विस्तृत गजेटियर) भोजपुरी ग्राम-गीत (प्रथम भाग); वि०—आप काशी विश्वविद्यालय के संस्कृत अध्यापक, 'भारतीय दर्शन' के अमर लेखक पं० बलदेव उपाध्याय, एम० ए०, सा० आ० के कनिष्ट भ्राता हैं; प०—अध्यापक, गवर्नमेंट स्कूल, बलिया।

कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए० (अँगरेजी, राजनीति), एल० टी०, सा० वि०, शिष्ट हास्य के सुप्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी और अध्ययनशील विद्वान्; ज०—१८६४; शि०—प्रयाग, काशी; हिंदी-साहित्य सम्मेलन के दो वर्ष तक मंत्री रहे; अब स्थायी समिति के सदस्य; काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के तीन वर्ष तक प्रधान मंत्री रहे, अब साहित्य मंत्री हैं; प्रसाद-परिषद्, काशी के तीन वर्ष तक उपसभापति और यू० पी० सेकंडरी एजुकेशन एसोसियेशन के दो वर्ष तक सहकारी मंत्री रहे तथा हिंदुस्तानी एकेडमी के भी सदस्य; हास्यरस के विशेष प्रसिद्ध कवि; हिं० सा० सम्मे० के काशी-अधिवेशन में स्वागत-कारिणी समिति के प्रधान मंत्री; र०—शिवाजी की जीवनी, साहित्य संचय, जापान वृत्तांत, बेढब की बहक, बनारसी एक्का, मसूरी वाली, हिंदी खड़ी बोली कविता की प्रगति तथा बाल-पद्यावली; हास्य की अनेक पत्रिकाओं तथा 'तरंग' का संपादन; प०—वाइस प्रिंसिपल, डी० ए० वी० कालेज, बनारस।

कृष्णलाल शरसोदे 'हंस',

सा० र०—आलोचक और साहित्य-सेवक; ज०—१६०५; ज्ञा०—अँगरेजी, मराठी; लेख०—१६२२; भू० संपा०—मासिक 'ज्योति'; रच०—समाज-सुधार-संबंधी १२ पुस्तिकाएँ; जलियानवाला बाग (पद्य—जप्त), व्यावहारिक स्वास्थ्य-ज्ञान (चार भाग); अप्र०—सूरदर्शन (आलो०), सावित्री, राज्यकर, मंगलप्रभात (क०) सिनेमा कहा०—परदेशी प्रीतम, मजिस्ट्रेट की बेटी। प०—अध्यापकहिंदी-गुजराती हाई स्कूल, अकोला, वरार।

कृष्णवल्लभ द्विवेदी, बी० ए०—प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक; 'हिंदी-विश्वभारती' के ख्यातनामा संपादक; ज०—१० जनवरी, १६१०, बड़नगर, मालवा; शि०—इंदौर क्रिश्चियन कालेज और प्रयाग विश्वविद्यालय; लेख—१६३२; भूत० सहकारी संपा०—सुप्रसिद्ध साप्ताहिक 'अभ्युदय', प्रयाग, १६३४-३५; सितंबर १६३६ में 'हिंदी-विश्वभारती' को जन्म दिया; आरंभ से उसके संपादक; रच०—तीन रूसी उपन्यासों के अनुवाद—बंदी, संघर्ष, बहिष्कार; मौलिक—भारत-निर्माता; प०—चारबाग, लखनऊ।

कृष्णवल्लभ सहाय, एम० ए०, बी० एल०—प्रसिद्ध लेखक, विचारक और पत्रकार; बिहार की काँग्रेसी सरकार के पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी, 'छोटा नागपुर-संवादपत्र' के संपा०; अप्र० रच०—अनेक निबंध-संग्रह; प०—हजारीबाग, छोटानागपुर।

कृष्णविहारी मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०—द्विवेदीयुग के प्रतिष्ठित साहित्य-सेवी, ब्रजभाषा-काव्य के मर्मज्ञ और विद्वान् समालोचक; ज०—१८६०; शि०—गवर्नमेंट हाई स्कूल सीतापुर और कैनिंग कालेज, लखनऊ; भूत०

संपा०—मासिक 'माधुरी', त्रैमासिक (बाद में द्वैमासिक) 'साहित्य-समालोचक, लखनऊ और 'आज', काशी; साहित्य-परिषद्, मौरावाँ के सभापति १९२६; अब स्पेशल मैजिस्ट्रेट; रच० : मौ०—चीन का इतिहास, देव और बिहारी; संपा०—गंगाभरण, नवरस-तरंग, मतिराम-ग्रंथावली, नट-नागर-विनोद, मोहन-विनोद; वि०—अंतिम दो ग्रंथों का संपादन करने के उपलक्ष में सीतामऊ राज्य के श्रीमान् राजा रामसिंहजी ने अत्यंत सम्मानपूर्वक आपको खिलत दी; प०—सिधौली, सीतापुर।

कृष्णप्रकाश अग्रवाल, बी० एस-सी०, एल-एल०बी०—प्रसिद्ध कहानी, निबंध, गद्य-काव्य और एकांकी नाटक-लेखक; ज०—१९११; लेख०—१९२७; अप्र० रच०—अनेक संग्रह; प०—वकील, मुरादाबाद।

कृष्णशंकर शुक्ल, एम०, ए०—सुप्रसिद्ध आलोचक, साहित्य-प्रेमी, विद्वान् और प्राचीन कविता-मर्मज्ञ; स्व० पंडित रामचंद्र शुक्ल के प्रशंसित प्रिय शिष्य; रच०—आधुनिक हिंदी-साहित्य का इतिहास, कविवर रत्नाकर, केशव की काव्यकला; प०—हिंदी-अध्यापक, कान्यकुब्ज इंटर-कालेज, कानपुर।

कृष्णस्वामी मुदीराज—प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक; कन्या-पाठशाला की स्था० और संचा०; स्थानीय म्यु० कार्पो० के गतवर्ष तक सदस्य; 'चित्रमय हैदराबाद' के संपा०; प०—चंद्रकांत प्रेस, हैदराबाद, दक्षिण।

कृष्णानंद—सुप्रसिद्ध विद्वान्, समालोचक और मनन-शील लेखक; काशी-नागरी प्रचारिणी पत्रिका के अनेक वर्षों से प्रधान संपादक; प०—ठि० नागरी-प्रचारिणी सभा, बनारस।

कृष्णानंद, स्वामी—

पंजाब-निवासी हिंदी के प्रसिद्ध लेखक ; रच०—आसवपरीक्षा नामक आयुर्वेदिक ग्रंथ ; प०—अमृतसर; लाहौर ।

खड्गसिंह गोप 'हिमकर', सा० र०—पटना के नवोदित लेखक ; ज०–१९२१; रच०—जीवन की झाँकी ; अप्र०—हृदयोद्गार, आँसू के घूँट, सुलभ हिंदी-व्याकरण; प०—हिंदी अध्यापक, हरनौत हा० इं० स्कूल, पटना ।

खुशालचंद खुरशंद—स्थानीय प्रतिष्ठित आर्य-नेता हिंदी-प्रेमी और पत्रकार ; ज०—१८८८ ; संस्था०—और संपा०—'मिलाप', सेक्रेटरी आर्य सार्वदेशिक सभा; उपसभापति पंजाब नेशनलिस्टपार्टी, लाहौर ; रच०—'अमृतपान' इत्यादि बारह पुस्तकें ; प०—दैनिक 'मिलाप'-कार्यालय, लाहौर ।

खुशीराम शर्मा, सा० भू०, कविरत्न, काव्यमनीषी—पंजाब के एक कोने में प्रचार से दूर साहित्य-साधना में संलग्न कवि ; ज०—१९१६; स्था०—हिंदू रीडिंग रूम ; आर्यसमाज के कई वर्ष तक मंत्री ; हिं० सा० सम्मे० के अबोहर अधिवेशन में स्वागतकारिणी के सहायक; रच०—प्रेमोपहार, बुद्धचरित, गुरुगोविंदसिंह, गुरुनानक, मीरा; अप्र०—रण-निमंत्रण; प०—अध्यापक सेवा-समिति हाई स्कूल, जैतो, नाभा स्टेट ।

खेदहरण शर्मा 'प्राणेश', सा० र०—संस्कृत और हिंदी के विद्वान्, कुशल कवि और राष्ट्रीय कथावाचक ; ज०—१९०९ ; शि०—अयोध्या, प्रयाग ; अयोध्या की विद्वत् परिषद् से 'काव्यालंकार' उपाधि-प्राप्त; लेख०—१९२४; भूत० सहकारी संपा०—मासिक 'गृहस्थ' ; वर्त० संपा० पाक्षिक 'गोशुभचिंतक', गया ; हिंदी-साहित्य विद्यालय, गया में अध्यापक

हैं ; अप्र० रच०—वनफूल (गद्य का०) मंदार (क०) शृंगार-दर्शन, हमारा कलात्मक दृष्टिकोण, कर्णवध ; प०—साहित्याश्रम, गया, बिहार।

गजराजसिंह गौतम, एम० ए०, एल-एल० बी०—साहित्य के अध्ययनशील लेखक और विद्वान्; वर्षों तक जातीय सभा में काम किया ; अप्र० रच०—ईश्वरदर्शन, अनेक निबंध-संग्रह ; प०—वकील, होशंगाबाद, सी० पी०।

गणपति शर्मा, वैद्य आयुर्वेदोपाध्याय —प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि ; शि०—बनारस, जयपुर ; गुरुकुल और कई संस्कृत-विद्यालयों के भूत० अध्यापक ; 'भास्कर औषधालय' बदायूँ के सफल चिकित्सक ; वीर और करुण रस-रचना में सिद्धहस्त ; अनेक राष्ट्रीय विभूतियों पर इतिहासात्मक खंड-काव्य-रचयिता ; प०—भास्कर औषधालय, पुराना बाजार, बदायूँ।

गणेश चौबे—साहित्य-प्रेमी और बिहारी-लेखक ; ज०—१९१२ ; भारतेंदु साहित्य-संघ, मोतिहारी और चंपारन जिला-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व कार्यकर्ता ; अप्र० रच०—अनेक स्फुट गद्य-पद्य-संग्रह ; वि०—ग्राम-गीतों, दंतकथाओं, ग्रामीण शब्दों और मुहावरों, रीति-रिवाज आदि का बड़ा संग्रह आपके पास है ; प०—बँगरी, पिपराकोठी, चंपारन।

गणेशदत्त शर्मा 'इंदु'—मध्यभारत के सुप्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्वान् ; ज०—२६ अक्टूबर, १८९४, गुना ; ज्ञा०—अँगरेजी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, बँगला, गुरुमुखी ; लेख०—१९१२ ; भूत० संपा०—'बालमनोरंजन', 'हिंदी-सर्वस्व', 'गौड़ हितकारी', मैनपुरी, मासिक 'चंद्रप्रभा', नीमाड़, 'अनाथ रक्षक', अजमेर, 'ब्राह्मण-समाचार', दिल्ली, साप्ताहिक

'जीवन', मथुरा ; रच०—वैदिक पताका, उपदेश कुसुमांजलि, गड़ा धन, नागरी पूजा, रूपसुंदरी, लवकुश भीम चरित्र, राणा संग्रामसिंह, व्यावहारिक सभ्यता, शुद्ध नामावली, वीर कर्ण, वीर अभिमन्यु, भारत में दुर्भिक्ष, खादी का इतिहास, वीर अर्जुन, स्वप्न-दीप, गुजराती-हिंदी शब्दकोष; आर्यसमाज महत्ता, संतान-शास्त्र, हिंदूपति प्रताप, यशवंतराय होल्कर, लेखराम, गुरु नानक, यौवन के आँसू, गो-रक्षा, हारमोनियम-तबला, बेला-मास्टर, जगद्गुरु शंकराचार्य, अमरज्योति श्रीकृष्ण, देहाती कहावतें आदि-आदि ; अप्र०—अनेक सुंदर गद्य-पद्य-संग्रह ; वि०—मालवा और ग्वालियर में संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक पुस्तकें लिखने-वाले ; 'गुजराती-हिंदी-कोष' पर बड़ौदा में होनेवाले हिं० सा० सम्मेलन से और 'गोरक्षा' पर दरभंगा-नरेश से रजतपदक प्राप्त ; प०—आगर, मालवा।

गणेशप्रसाद मिश्र 'श्री-इंदु'—प्रसिद्ध कवि और रसिक साहित्यिक ; ज०—१४ अप्रैल, १९११, गोरखपुर; अनेक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया ; रच०—मातृभूमि, प्रताप-शतक, प्यारे प्रेम, विद्रोही, समाधि-गीत, प्रेमांत ; अप्र०—अनेक काव्य-संग्रह ; प०—संपादकीय विभाग, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, वर्धा।

गणेशप्रसाद शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—हिंदी-प्रेमी विद्वान् और लेखक ; शि०—आगरा ; अहिंदी-भाषियों को हिंदी-शिक्षा-प्रदान ; प०—हिंदी-अध्यापक, रामपुरिया हाई स्कूल, बीकानेर।

गणेशलाल वर्मा, सा० र०, सा० लं०, आलोचक और प्रसिद्ध हिंदी-सेवक ; ज०—१९०२, गुणमंती, पूर्णिया ; शि०—प्रयाग ;

पूर्णिया के विभिन्न स्थानों में सम्मे० और विद्यापीठ, देवघर की परीक्षाओं के केंद्र स्थापित किए; रच०—औपन्यासिक प्रसाद (आलो०) और पूर्णिया के पुस्तकालय; प०—बनमनखी ग्राम, पूर्णिया।

गदाधरप्रसाद अम्बष्ठ—सुप्रसिद्ध बिहारी-लेखक और राजनीति के विद्वान्; ज०—१९०२; भारतीय इतिहास-परिषद् के कार्यालय (काशी) में राष्ट्रीय इतिहास के सहकारी कार्यकर्त्ता; रच०—देशरत्न राजेंद्रप्रसाद, बिहार-दर्पण, बिहार के दर्शनीय स्थान, अर्थशास्त्र, राजनीति का पारिभाषिक कोष; प०—ठि० पुस्तकभंडार, लहरियासराय।

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'—प्रतिष्ठित कवि और साहित्य-प्रेमी विद्वान्; ज०—१८८३; कानपुर के साहित्य समाज में गुरुवत् सम्मानित; अनेक कवि-सम्मेलनों के सभापति; अनेक पुरस्कारों के विजेता; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के भरतपुर-अधिवेशन में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन के सभापति; 'सुकवि'; नामक कविता-संबंधी मासिक के संचालक और संपादक; 'त्रिशूल' उपनाम से राष्ट्रीयता-प्रधान कविताओं के रचयिता; संपा०—मासिक 'सुकवि'; रच०—प्रेम-पचीसी, कुसुमांजलि, कृपककंदन, मानस-तरंग, करुण भारती; 'संजीवनी' नामक काव्य-संग्रह के संपादक; प०—सुकवि-प्रेस, कानपूर।

गिरिजाकुमार माथुर, एम० ए०, एल-एल० बी०—खड़ीबोली के प्रसिद्ध कवि; रेडियो पर कविता-पाठ; ज०—१९१७; प०—पछार, ग्वालियर।

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश', बी० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध आलोचक, लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार, काव्य-प्रेमी, विद्वान् और हिंदी-

लेखक ; अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित ; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उत्साही कार्यकर्ता ; रच०—सूर पदावली (संपा०), गुप्तजी की काव्यधारा (आलो०), बाबू साहब और जगद्गुरु का विचित्र चरित्र (उप०); प०—दारागंज, प्रयाग ।

गिरिजादत्त त्रिपाठी, सा० र०, कवि और हिंदी-प्रेमी; ज०—१ जनवरी १९१६, रीवाँ राज्य ; शि०—प्रयाग ; अप्र० रच०—बांधवीय साहित्य के अमररत्न, बघेलखंड के हिंदी कवियों का इतिहास, बालचर्य-शिक्षण; प०—रीवाँ राज्य ।

गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, म० म०, व्याकरणाचार्य शास्त्री, प्रिंसिपल महाराज-संस्कृत-कालेज जयपुर—सुप्रसिद्ध विद्वान्, मननशील विचारक और लब्धप्रतिष्ठ लेखक ; ज०—१८८४ ; मंत्री हिं० सा० सम्मे० की स्वागत समिति, लाहौर ; हिं० सा० सम्मे० की स्थायी समिति, नागरी-प्रचारिणी सभा काशी और हिंदू-यूनीवर्सिटी, बनारस के सदस्य; हिं० सा० सम्मेलन, दिल्ली में दर्शन परिषद्, हिंदी-साहित्य-पाठशाला के सभापति ; अखिल भारतीय संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री ; हरिद्वार ऋषिकुल के व्यवस्थापक ; संपा०—ब्रह्मचारी ; रच०—धर्मपारिजात तथा अनेक निबंध-संग्रह ; अप्र०—महाकाव्य-संग्रह प्रि०-वि०—दर्शनशास्त्र, हिंदू-संस्कृति सनातनधर्म ; प०—पानों का दरीबा, जयपुर ।

गिरिधर शर्मा, नवरत्न—सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान्, साहित्य-प्रेमी और सुवक्ता ; ज०—१८८१ ; जा०—बँगला, गुजराती, मराठी, उर्दू, फारसी, प्राकृत, पाली, अँगरेजी, संस्कृत; 'साहित्य-शिरोमणि', 'काव्यालंकार', 'प्राच्यविद्या महार्णव' आदि उपाधियाँ-प्राप्त ; मध्य-

भारत हिंदी-साहित्य-समिति के जन्मदाता ; राजपूताना हिंदी साहित्य सभा के संस्थापक ; भरतपुर हिंदी-साहित्य-समिति के निर्माता ; राजपूताना, मध्यभारत ; गुजरात, काठियावाड़ में हिंदी-प्रचारक ; भारतेंदु-समिति, कोटा और अखिल भारतीय विद्वत् परिषद् के सभापति ; रच०—कठिनाई में विद्याभ्यास, जयाजयंत, भीष्म-प्रतिज्ञा, सुकन्या, सावित्री (ब्लैंकवर्स), सांख्य-दोहावली, वेद-स्तुति, स्वदेशाष्टकम्, योगी, जापान-विजय, अमर-सूक्तसुधाकर (संस्कृत), गीतांजलि, बागवान, फलसंचय, चित्रांगदा ; प्रि० वि०—साहित्य और दर्शन ; प०—झालरापाटन, राजपूताना।

गिरिधारीलाल वैश्य 'ब्रजेश', बी० ए०, एल-एल० बी०—कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८८६ ; पहले आप केवल उर्दू में लिखा करते थे ; सन् १६३० से हिंदी में भी रचना करने लगे; रच०—पौन पूत पचासा; अप्र०—अनेक प्रकाशित रचनाएँ; प्रि० वि०—राजनीति तथा धर्मशास्त्र ; प०—वकील रकाबगंज, फैजाबाद।

गिरिधारीलाल शर्मा 'गर्ग' बी० ए० (आनर्स) प्रतिभाशाली, उत्साही, उदीयमान लेखक; रच०—विमान, कहानी-कला, आकाश की सैर ; अप्र०—अनेक वैज्ञानिक और स्फुट लेख-संग्रह ; प०—मिरचाई गली, पटना।

गिरींद्रमोहन मिश्र, एम० ए०, बी० एल०—'सरस्वती' के प्रसिद्ध लेखक, कई पुस्तकों के सफल संपादक और सुधारवादी विचारक; रच०—बाल-विवाह, भूकंप, बाणभट्ट, धर्मद्वारा, प्रेमसंस्कार, कम पूँजी बहुत काम आदि पुस्तकें और लेख मालाएँ ; प०—असिस्टैंट मैनेजर, दरभंगा राज।

गुणानंद ज्वाल, एम० ए० (हिंदी, संस्कृत)—गढ़वाल-निवासी, गंभीर अध्ययनशील विद्वान्, हिंदी के प्रेमी प्रचारक और आलोचक ; ज०—१६१० ; स्थानीय हिंदी सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता ; अप्र० रच०—अनेक स्फुट आलोचनात्मक निबंध-संग्रह, प०—अध्यापक, हिंदी विभाग, बरेली कालेज; बरेली।

गुर्ती सुब्रह्मण्य, एम० ए० (अँगरेजी, राजनीति), सा० र०—बालसाहित्य के प्रसिद्ध लेखक, अध्ययन-प्रेमी और मातृभाषा तेलगू होने पर भी हिंदी-प्रचारक; ज०—सितंबर १६१७, प्रयाग ; शि०—प्रयाग, नागपुर; ज्ञा०—अँगरेजी, तेलगू ; रच०—विचित्र देश, भोंपू, छत्रपति शिवाजी, हिंदी-साहित्य-समीक्षा, आधुनिक काव्य, प०—दारागंज, प्रयाग।

गुरुदयालसिंह 'प्रेमपुष्प' एम० ए०, बी० टी०—ज० १६०६, बलिया ; फर्स्ट असिस्टेंट, किंग जार्ज सिल्वर जुबली स्कूल, र०—प्रेमवीणा, पुष्पांजलि (क०) सुधा (कहा०) छात्राभिनय (एकां०), प०—शारदा-सदन, रसड़ा, बलिया।

गुरुप्रकाश गुप्त 'मुकुल', एम० ए०—प्रसिद्ध कवि और सहृदय साहित्य-प्रेमी; ज०—१६१२ ; रच०—नई कहानियाँ ; अप्र० अनेक साहित्यिक लेख-संग्रह ; प्रि० वि०—कविता और कानून, प०—मुंसिफ सदर, बीकानेर।

गुरुप्रसाद पाण्डेय 'प्रभात', बी० ए०, सा० र०—हिंदी साहित्य-सेवी और सुप्रसिद्ध लेखक, शि०—फैजाबाद, प्रयाग, बनारस ; ज्ञा०—उर्दू, संस्कृत; फैजाबाद के वकील एवं अवध चीफ कोर्ट के ऐडवोकेट; माधुरी, वीणा, मनोरमा, शारदा आदि में कविता तथा लेख ; नवयुवक संघ, कवि-

सम्मेलन और साहित्यगोष्ठी द्वारा हिंदी-प्रचार कार्य; प०—वकील फैजाबाद।

गुरुभक्तसिंह 'भक्त', बी० ए०, एल-एल० बी०—नवोदित कवियों में विशेष प्रतिष्ठित, साहित्य-प्रेमी सहृदय लेखक; रच०—सरस सुमन, कुसुमकुंज, नूरजहाँ; प०—आजमगढ़।

गुराँदित्तामल—हिंदी और पंजाबी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और विद्वान्; अप्र० रच०—विभिन्न साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अनेक निबंध-संग्रह; प०—अमृतसर, पंजाब।

गुलशनराय, एम० ए०—पंजाब-निवासी इतिहास-प्रेमी हिंदी-लेखक और विद्वान्; रच०—भारतवर्ष का इतिहास; प०—लाहौर, पंजाब।

गुलाबराय, एम० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध दर्शनशास्त्र-वेत्ता, गंभीर आलोचक, शिष्ट हास्य-लेखक और निबंधकार; ज०—१८८७, इटावा; शि०—मैनपुरी मिशन हाई स्कूल, आगरा कालेज और सेंट जांस कालेज, आगरा; प्रोफेसर सेंट जांस कालेज १९१२, छतरपुर महाराज के यहाँ दार्शनिक अध्ययन में सहायक १९१३; वकील १९१७; महाराज के प्राइवेट सेक्रेटरी १९१७; अब आंशिक समय देकर सेंट जांस कालेज में अध्यापक; मासिक 'साहित्य-संदेश' के संपादक; इंदौर और पूना के साहित्य-सम्मेलनों में दर्शन-परिषद् के सभापति; लेख०—१९१५; रच०—शांतिधर्म, फिर निराशा क्यों? मैत्री धर्म, नवरस (छोटा, बड़ा-संस्करण), कर्तव्यशास्त्र, तर्कशास्त्र—तीन भाग (हिंदुस्तानी एकेडमी से पुरस्कृत), पाश्चात्य दर्शनों का इतिहास, प्रबंध-प्रभाकर, निबंध-रत्नाकर, भाषा-भूषण, सत्य-हरिश्चंद्र (संपा०), हिंदी-साहित्य का सुबोध इतिहास,

मेरी असफलताएँ (आत्म-कथात्मक साहित्यिक हास्य-पूर्ण निबंध), ठलुआ-क्लब, विज्ञान-विनोद, हिंदी-नाट्य-विमर्श, बौद्ध-धर्म ; प०—गोमती-निवास, दिल्ली दर-वाजा, आगरा।

गोकुलचंद दीक्षित 'चंद्र', सिद्धांतवाचस्पति — संस्कृत और हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वान्, लेखक और सुवक्ता ; ज०—१८८७, लक्षमणपुर, इटावा ; भूत० संपा०—'कृषि', 'शौंडिक क्षत्रिय-चंद्रिका', 'सुदर्शन-चक्र', 'आर्यमित्र', 'वैद्य-राज', 'भरतपुर राज्य पत्र' ; रच०—छंदसूत्रम् (अनु०), दर्शनानंद ग्रंथ - संग्रह—दो भाग, भगवती-शिक्षा-समुच्चय, सांख्यकारिका-प्रकाश, भारत-संजीवनी, पं० लेखराम, श्री-पथ-प्रदर्शन, श्रीमद्भगवद्-गीता-सिद्धांत, रससुस्वादम् (पद्य), षडोपनिषद्, योग-विधि, वेदांत-दर्शन, व्रजेंद्र-वंश-भास्कर (भरतपुर का विशद इतिहास), बयाना का इतिहास, अलंकार-बोधिनी, न्याय-दर्शनम्, नवीन नायिका-भेद, मीमांसादर्शनम्, रस-मंजरी इत्यादि चालीस ग्रंथ ; प०—नए लक्ष्मण के पास, भरतपुर, राजपूताना।

गोकुलचंद शास्त्री, संत, बी० ए०—पंजाब के सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी विद्वान्, संस्कृत के प्रकांड पंडित, कुशल नाटक-कार और सफल हिंदी-प्रचा-रक; ज०—२८ मार्च, १८८८; शि०—पंजाब - विश्वविद्या-लय और क्वींस कालेज, काशी; चौंतीस साल तक डी० ए० वी० स्कूल, लाहौर में मुख्य संस्कृताध्यापक रहकर अब विश्राम कर रहे हैं ; १९१२ से पंजाब - विश्वविद्यालय क ओरियंटल फैकल्टी के निर्वा-चित सदस्य हैं ; दस वर्ष तक संस्कृत-हिंदी बोर्ड के सदस्य रहे हैं ; पंजाबी स्कूलों में हिंदी प्रवेश और प्रचार कराने में बड़ा सहयोग दिया ; हिंदी

पाठ-पुस्तकों की रचना का मार्ग-प्रदर्शन किया; अँगरेजी के स्थान पर हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का सफल आंदोलन किया ; रच० ; पाठ्य ग्रंथ—मेरी सहेली—चार भाग, बालसखा—चार भाग, हिंदी-पुष्पमाला—चार भाग, हिंदी-व्याकरण-सार ; नाटक—सारथी से महारथी, चंद्रप्रतिज्ञा, देश-द्रोही, मीरा; अन्य—हिंदी माध्यम से संस्कृत व्याकरण; प०—संत आश्रम, गांधी स्कैयर, लाहौर।

गोकुलानंद तैलंग, सा० भू०—हिंदी - प्रेमी - लेखक ; ज०—वृंदावन ; 'दिव्यादर्श' पत्र के संपादकीय विभाग में हैं ; प०—काँकरोली।

गोपालचंद—पंजाब-निवासी हिंदी के नाटककार ; आप 'व्रतीभ्राता' नाम से विख्यात हैं ; रच०—हिंदी-व्याकरण की कुछ पुस्तकें और सरजा शिवाजी, (सुंदर छोटा नाटक) ; प०—अमृतसर।

गोपालचंद्र पांडेय, बी० ए०, डिप० एड०—प्रसिद्ध विद्वान्, मनोवैज्ञानिक साहित्य-प्रेमी और सुलेखक ; ज०—१६०६ ; ज्ञा०—अँगरेजी, फ्रेंच, पाली. बँगला ; अँगरेजी और बँगला में भी लिखते हैं; स्थानीय हाई स्कूल में शिक्षक हैं; अप्र० रच०—अनेक स्फुट निबंध-संग्रह ; प०—चंपानगर, भागलपुर।

गोकुलचंद शर्मा, एम० ए०—हिंदी-साहित्य के प्रेमी, प्रसिद्ध लेखक और विद्वान् ; रच०—निबंध-निकुंज ; प०—हिंदी-अध्यापक, अलीगढ़।

गोपालचंद सुगंधी, एम० ए०—इतिहास-प्रेमी, लेखक और हिंदी-प्रचारक ; ज०—१२ दिसंबर, १६१०; शि०—आगरा ; धार-शिक्षा-विभाग के डिप्टी इंस्पेक्टर ; स्थानीय हिंदी-साहित्य समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता; रच०—धार राज्य का भूगोल ; चि०—डाक्टरेट के लिए मालवा के इतिहास

पर थीसिस लिख रहे हैं ; प०—बनियावाड़ी, धार।

गोपालदामोदर तामस्कर—विविध विषयों के प्रसिद्ध लेखक, इतिहासज्ञ और अध्ययनशील विद्वान्; ज०—१८७६ ; रच०—शिक्षा-मीमांसा, योरप में राजनीतिक आदर्शों का विकास, कौटिल्य अर्थ-शास्त्र-मीमांसा, राजा दिलीप (ना०) मराठों का उत्थान और पतन ; राधा-माधव अथवा कर्मयोग नाटक, बैर का बदला, शिवाजी की योग्यता, संक्षिप्त कर्मयोग, राज्य-विज्ञान, मौलिकता, इँगलैंड का संक्षिप्त इतिहास, नीति-निबंधावली, अफलातून की सामाजिक व्यवस्था आदि; विशेष०—शाहजी और शिवाजी के इतिहास-काल को लेकर आपने अनुसंधान किया है ; चार भागों में यह ग्रंथ तैयार है ; विविध सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक विषयों पर पचास के लगभग निबंध प्रकाशित हुए हैं ; प०—गोलबाजार, जबलपुर।

गोपालदास गंजा, एम० ए०, सा० र०, काव्य कोविद—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी और लेखक; ज०—१० जून १९०६, जोधपुर; शि०—प्रयाग, नागपुर, अजमेर; रच०—उपदेश-गुच्छ (दो भाग); अप्र० रच०—संस्कृत रीडर, बाल-विवाह-मीमांसा, विविध निबंध-संग्रह; प०—नथावतों, कल्लों की गली, जोधपुर।

गोपालदेवी, प्रभाकर—पंजाब निवासिनी हिंदी की उदीयमान निबंध-लेखिका ; अप्र० रच०—दो मौलिक निबंध-संग्रह ; प०—अमृतसर, पंजाब।

गोपालनारायण शिरोमणि—प्रसिद्ध हिंदी-लेखक और पत्रकार ; अनेक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया ; अप्र० रच०—विभिन्न लेख-संग्रह ; प०—संपादकीय विभाग, सैनिक

कार्यालय, आगरा।

गोपालप्रसाद कौशिक, आयुर्वेदाचार्य—हिंदी - प्रेमी साहित्यकार; क्षय तथा गुप्त रोगों के विशेष चिकित्सक; काँग्रेस कार्यकर्ता; संपा०—स्वास्थ्य; चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट के भाष्य और भावप्रकाश के हिंदी अनुवादक; प०—गोवर्धन, मथुरा।

गोपालप्रसाद व्यास, सा० र०—ठेठ ब्रजवासी, प्राचीन कविता के प्रेमी और सहृदय आलोचक; शि०—मथुरा; १६३०-३१ के आंदोलन में पढ़ना छोड़ दिया; तीन वर्ष तक मासिक 'साहित्य संदेश' आगरा के सहायक संपा०; ब्रजभाषा कोष में श्री-चतुर्वेदी द्वारिकाप्रसादजी शर्मा के सहकारी; कुछ समय तक श्रीजैनेंद्रकुमार के साथ रहे; 'हिंदुस्तान' में हास-परिहास के वर्तमान लेखक; प०—'मानवधर्म'-कार्यालय, पीपल महादेव, दिल्ली।

गोपालप्रसाद शर्मा—भारतेंदु युग के वयोवृद्ध एकांत साहित्य-सेवी और विद्वान् लेखक; ज०—१८६४; ज्ञा०—बँगला, मराठी, गुजराती, उर्दू, संस्कृत; भूत० संपा०—मासिक 'सत्यवक्ता'; र०—जुगललीलामृत, रमणीपंच-रत्न, बालपंच-रत्न, सुमन-माला, भ्रमोच्छेदन, श्रीहित-चरित्र; अप्र०—गीता की टीका; प्रि० वि०—भक्ति और प्रेम; प०—ठि० दौलत-राम टीकाराम, होशंगाबाद।

गोपालराम गहमरी—जासूसी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक, हिंदी के वयोवृद्ध साहित्यिक और विद्वान्; ज०—१८७६; 'हिंदुस्तान', कालाकाँकर के सहायक, (१८६१), 'भारतमित्र', कलकत्ता के स्थानापन्न (१८६१) और 'वेंकटेश्वर-समाचार', बंबई के प्रधान (१६०१) संपा०; मासिक 'जासूस' के संस्था० और

संपा०; कलकत्ते की साहित्य-परिषद् से 'साहित्य-सरस्वती', और 'विद्याविनोद' की उपाधि प्राप्त ; रच०—चतुर चंचला, नए बाबू, बाकी बेबाक, आदमी बना, ननद भौजाई, संकट में शिक्षा, खून, अमरसिंह, संदेहभंजन, देश-दर्शी, विद्या-विनोद,बभ्रुवाहन, जन्म-भूमि, इच्छाशक्ति, वसंत-विकाश—का०, इत्यादि-इत्यादि; वि०—आपने दो सौ से ऊपर ग्रंथों की रचना की है ; इनमें मौलिक, अनुवादित और आधारित जासूसी और सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक और सामाजिक नाटक, मेस्मेरिजम-संबंधी ग्रंथ, मौलिक काव्य और व्यंग्य सभी कुछ है ; प०—जासूस-आफिस, बनारस।

गोपाललाल खन्ना—, एम० ए०, बी० टी०—नागरी प्रचारिणी सभा के जन्मदाता और हिंदी के वयोवृद्ध साहित्य-सेवी डाक्टर श्यामसुंदर दास के विद्वान् सुपुत्र ; क्रिश्चियन कॉलेज के अंतर्गत टीचर्स ट्रेनिंग कालेज में हिंदी अध्यापक ; जातीय मासिक 'खत्री-हितैषी' के प्रधान संपादक ; डाक्टरेट के लिए अनुसंधानात्मक अध्ययन में संलग्न ; रच०—हिंदी भाषा और साहित्य, काव्य-कलाप, काव्यालोचन ; प०—अमीनाबाद, लखनऊ।

गोपाल व्यास, एम० ए०, सा० र०—अध्ययनशील विद्वान्, मननशील आलोचक और सुलेखक ; ज०—१९१६, धर्मगढ़, ग्वालियर ; शि०—विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर, सनातन धर्म कालेज, कानपुर; अप्र० अनु०—कालिदास प्रेरित मूर्तिकला ; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक निबंध-संग्रह ; प०—अध्यापक, माधव कालेज, उज्जैन।

गोपालशरणसिंह ठाकुर—सुप्रसिद्ध कवि,

साहित्य-मर्मज्ञ और विद्वान्; ज०—१८६१; शि०—रीवाँ, प्रयाग; लेख०—१६११; गूँगों-बहरों के स्कूल, प्रयाग के संस्था० ; सभापति—श्रीरघुराजसाहित्य-परिषद्‌रीवाँ कवि-समाज प्रयाग, हिं० सा० सम्मे० के अंतर्गत कवि-सम्मे० (१६२७), मध्यभारतीय साहित्य समिति, इंदौर—१६२६, ओरियंटल कांफ्रेंस मैसूर के अंतर्गत बहुभाषा-कवि-सम्मेलन (१६३५); प्रयाग के द्विवेदी-मेले के स्वागताध्यक्ष, १६३३; सद०—रीवाँ राज्य मंत्री-मंडल (१६३२-३४); रच०—माधवी (का०), कादंबिनी (गीत का०), मानवी (नारी जीवन-संबंधी का०), सुमना (गीत), ज्योतिष्मती (गीत), संचिता (क०), अप्र०—विश्वगीत; प०—नई गढ़ी, रीवाँ, मध्य भारत।

गोपालशास्त्री, दर्शन-केसरी—सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी, धर्मशास्त्रज्ञ और विद्वान् वक्ता; अप्र० रच०—पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अनेक धर्मशास्त्र-संबंधी स्फुट लेख-संग्रह; प०—अध्यापक, काशी विद्यापीठ, बनारस।

गोपालसिंह ठाकुर, सा० वि०—हिंदी प्रचारक और साहित्य-प्रेमी, ज०—१६११; अल्मोड़े की 'शक्ति' के प्रसिद्ध लेखक; वि०—आपकी दो पत्नियाँ, श्रीमती राधा देवी और श्रीमती रुक्मिणी देवी भी हिंदी-सेवा में संलग्न हैं; प०—अध्यापक, कुमुद ग्राम, काँडा, अल्मोड़ा।

गोपालसिंह नैपाली—प्रसिद्ध कवि, हिंदी और अंगरेजी के विद्वान्, सफल पत्रकार, विनोदी और स्पोर्ट्समैन; ज०—१६१२; शि०—बेतिया; पत्रकार जीवन १६३३ से आरंभ; भूत०—संयुक्त संपा०—'सुधा', लखनऊ, 'चित्रपट', देहली, 'रतलाम-टाइम्स' (पीछे 'पुण्य भूमि'),

मालवा, 'योगी', पटना और 'उदय', बनारस; रच०—पंछी, रिमझिम, रागिनी, हमारी राष्ट्रवाणी, उमंग, पीपल का पेड़, कल्पना, नील पंचमी और नवीन ; अप्र०—बावर-संग्राम-युद्ध (पद्य), पीपल का पेड—कहानी, आदि ; प०—ठि० विक्टोरिया मेमोरियल पब्लिक लाइब्रेरी, वेतिया।

गोपीकृष्ण शास्त्री द्विवेदी, व्याकरणाचार्य, सा० शास्त्री, काव्यतीर्थ—मध्य भारत के साहित्य-प्रेमी लेखक और विद्वान् ; ज०—१७ अप्रैल, १९०३ ; शि०—उज्जैन और काशी ; रच०—भूषणसार टीका (संस्कृत गद्य) श्रीनारायणचरितम् (संस्कृत पद्य) हिंदी राजतरंगिणी ; प०—सराफा बाजार, मदनमोहन मंदिर के सामने, उज्जैन।

गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०, विद्योदधि—बाल-साहित्य के कुशल लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९१३; रच०—भूतों की डिबिया, वृक्षों की सभा, प्रभापुंज, उड़न-छू ; संपा० रच०—सरल संकलन, केशव-काव्य; प०—हिंदी-अध्यापक, एम०-एम० हाई स्कूल, बीकानेर।

गोपीनाथ वर्मा, नौंद-निवासी सामयिक विषयों के प्रसिद्ध निबंध-लेखक ; ज०—१८९९ ; प्रका० रच०—संयोगिता ; अप्र० रच०—मासिक पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित विभिन्न सामयिक विषयों के अनेक निबंध-संग्रह; प०—नौंद, बिहार।

गोपीनाथ 'व्यथित' गोस्वामी—पंजाब-निवासी हिंदी के उदीयमान कवि ; अप्र० रच०—दो काव्य-संग्रह ; प०—लाहौर, पंजाब।

गोपीवल्लभ—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी विद्वान् और लेखक ; ज०—१४ मार्च, १८९८ ; रच०—लघु भारत,

भारतीय कहानियाँ, जब सूर्योदय होगा, बंगविजेता, स्वप्न-विज्ञान, मुद्रण-प्रवेश, श्यामू की माँ ; अप्र०—मराठों का साम्राज्य, भास्करानंद सरस्वती, सभा-संचालन, भारतीय-विद्यापीठ, प्रभु के पथ पर, भाग्यरेखा ; प०—ठि० नागरी भवन आगर, मालवा।

गोवर्द्धनदास त्रिपाठी, सा० र०—कवि और हिंदी-प्रचारक; ज०—२ जून १९११; रच०—संगम (कवि०); अप्र० रच०—स्पंदन (कवि०), विविध-निबंध-संग्रह ; प०—कुर्क असीन, तहसील बाँदा।

गोवर्द्धनलाल गुप्त, एम० ए०, बी० एल० ; प्रसिद्ध विद्वान्, नीतिज्ञ और निबंधकार ; ज०—१९०८ ; बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मेलन के अट्ठाइसवें अधिवेशन (गया) के स्वागताध्यक्ष; रच०—नीति-विज्ञान; प०—गया, बिहार।

गोवर्द्धनलाल गुप्त—प्रसिद्ध बिहारी लेखक और साहित्य-सेवी, ज०—१९०८ 'साहु-मित्र' के संपादक, १९३२-३३; हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद द्वारा निबंध-पाठ के लिए आमंत्रित, १९३६-३७ ; 'स्वाध्याय-मित्र-मंडल' के संस्थापक; अब 'गो-शुभ-चिंतक' के संपादक; अप्र० रच०—धर्म-विज्ञान, प्राचीन ग्रीस का शासन - विज्ञान, विकास-विज्ञान, युद्ध क्यों ?, संस्मरण; प०—पुरानी गोदाम. गया।

गोवर्द्धनलाल 'श्याम'—साहित्य-प्रेमी पुराने ढंग के सुप्रसिद्ध कवि और समस्या-पूरक ; कवींद्र सभा, प्रयाग से 'श्याम' उपाधि-प्राप्त ; अड़तीस वर्ष अध्यापकी करने के पश्चात् अब शांतिमय जीवन बिताते हैं ; प०—भवसार-भवन, भेलसा, ग्वालियर।

गोविंददास पुरोहित 'हृदय'—खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि ; ज०—१९१३; अप्र० रच०—स्फुट काव्य-

संग्रह ; प०—तालबहेट, झाँसी।

गोविंददास व्यास 'विनीत'—सुप्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी विद्वान् और हिंदी-सेवक ; ज०—१६०० ; शि०—आगरा ; संचा०—सेवा-समिति ; गीता-प्रसारिणी समिति स्थापित की ; रच०—शिव-शिवा - स्तवन, बाल-स्वास्थ्य, गोविंद-गीता, महाभारत, श्रीमद्भागवत, रामायण, ऐतिहासिक ड्रामा, संवाद-सौरभ, बाल-साहित्य (चार भाग), प्रिया या प्रजा, ऐतिहासिक कहानियाँ, आपत्ति यौवना, जीवन द्वंद्व इत्यादि अनेक सरल काव्य, नाटक और उपन्यास ; प्रि० वि०—देश-भक्ति, वीर और करुण रस की कविता; प०—दीन कुटीर, तालबहेट, झाँसी।

गोविंददास सेठ, एम० एल० ए०—प्रसिद्ध नाटककार, जबलपुर के प्रतिष्ठित नेता, राजपुत्र परंतु देश-सेवक ; १६२१ से काँग्रेसी काम ; दैनिक 'लोकमत' और मासिक 'शारदा' की संस्थापना की ; स्वराज्य-पार्टी की ओर से कौंसिल आव स्टेट में (१६२४-३०); असहयोग के कारण कई बार जेल-यात्रा ; काँग्रेस-पार्लियामेंटरी बोर्ड की ओर से केंद्रिय व्यवस्थापक सभा के सदस्य (१६२५); राष्ट्रीय हिंदी मंदिर के संस्थापक ; रच०—हर्ष, कर्तव्य, प्रकाश, स्पर्धा, सप्तरश्मि, शशिगुप्त आदि ; प०—जबलपुर।

गोविंदनारायण शर्मा आसोपा, बी० ए०, एम० आर० ए० एस०, विद्याभूषण, सा० भू०, विद्यानिधि—जोधपुर के अत्यंत प्रसिद्ध साहित्यिक, देश और जातिसेवक ; ज०—२६ नवंबर, १८७६ ; शि०—इलाहाबाद-विश्वविद्यालय ; ज्ञा०—संस्कृत, मारवाड़ी, उर्दू, अँगरेजी—इन सभी में ग्रंथ लिखे हैं ; चालीस वर्ष तक जोधपुर-दरबार की सेवा;

अवसर प्राप्त सुपरिंटेंडेंट आव कस्टम्स ; वर्तमान आनरेरी मैजिस्ट्रेट ; अखिल भारतीय दधिमती ब्राह्मण महासभा के अवैतनिक मंत्री ; 'दधिमती' के सफल संपादक ; हिं० सा० सम्मे० के जोधपुर-परीक्षाकेंद्र के व्यवस्थापक और निरीक्षक; ब्राह्मण प्रांतीय महासभा और दधीचि-जयंती - महोत्सव के अनेक वार सभापति; अनेकानेक प्रसिद्ध संस्थाओं के सम्मानित सदस्य; संस्कृत, अँगरेजी, उर्दू और मारवाड़ी के अनेक गद्य-पद्य ग्रंथों के अतिरिक्त हिंदी-ग्रंथ ; पद्य—गोविंद-भक्ति-शतक, कृष्ण-राम अवतार, समता-पचीसा, दधीचि-नाटक, फुटकर कविता; गद्य — भगवत्प्राप्ति के साधन, ईश्वर-सिद्धि, सनातनधर्म - प्रदीप, प्रश्नोत्तर-प्रबोध, सनातनधर्म का महत्त्व, धर्म - मीमांसा, वर्णाश्रम-सदाचार, त्रैमासिक गीता (पृ० सं० १२००), गीता की प्रस्तावना, संस्कृत-स्तोत्रों का अनुवाद, दधीचि-वंश-वर्णन, श्रीरामकर्ण (जी०), सप्तशती, चमत्कार-चिंतामणि, रासपंचाध्यायी आदि-आदि; प०—दधिमती दीवान, गोविंदभवन, जोधपुर, ।

गोविंदप्रसाद शर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी ; ज०—सितंबर १९०९, जबलपुर, हरिजन-सेवक-संघ के भू० सभापति ; मध्यभारतीय हिं० सा० सम्मे० के प्रधान मंत्री; अप्र० रच०—सामयिक निबंध संग्रह ; प०—वकील, कटनी, जबलपुर ।

गोविंदलाल व्यास—हिंदी-साहित्य-प्रेमी लेखक और विद्वान् ; अप्र० रच०—साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे अनेक सामयिक लेख ; प०—अध्यापक हिंदी गुजराती हाई स्कूल, अकोला, बरार ।

गोविंदवल्लभ पंत—प्रसिद्ध नाटककार, सहृदय विद्वान् लेखक ; रच०—वरमाला,

अंगूर की बेटी, राजमुकुट ; अप्र० रच०—दो-तीन नाटक; प०—लखनऊ ।

गौरीनाथ झा, व्याकरण-तीर्थ—महरैल, दरभंगा-निवासी सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी और पत्रकार; 'गंगा' और 'हलधर' के जन्मदाता तथा संपादक ; मिथिलाप्रेस, भागलपुर के संस्थापक ; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक और साहित्यिक लेखों के संग्रह ; प०—कुमार कृष्णानंदसिंह बहादुर (बनैली राज्य) के प्राइवेट सेक्रेटरी, सुलतानपुर, भागलपुर, बिहार ।

गौरीशंकर घनश्याम शर्मा—हिंदी-प्रेमी राष्ट्रभाषा प्रचारक और लेखक ; राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति वर्धा की ओर से मारवाड़ी होते हुए भी सिंध प्रांत में हिंदी प्रचार प्रसार में संलग्न हैं ; अप्र० रच०—विविध विषयों पर लिखे निबंध-संग्रह ; प०—सजामदास ठालामल पुस्तकालय के अध्यक्ष; हैदराबाद, सिंध ।

गौरीशंकर चतुर्वेदी एम० ए०, एल०-एल० बी०, सा० र०, विद्याभूषण—लेखक, संपादक और अध्यापक ; ज० सन् १८६६ टकल ग्राम, जिला नेमाड़; शि०—काशी, प्रयाग, दरभंगा ; सं०—श्रीनामदेव ब्राह्मण; सन् १६३२—३२ तक हिंदी साहित्य समिति के विद्यापीठ में उत्तमा कक्षा के अध्यापक ; रच०—अलंकार प्रवेशिका; प०—शिवाजीराव हाई स्कूल, इंदौर ।

गौरीशंकर तिवारी, सा० वि०—मध्यप्रांत के साहित्य-प्रेमी लेखक ; ज०—१६०१; शि०—जबलपुर ; रच०—मेवाड़ का जीवन-संग्राम, सीताजी का आदर्श चरित्र, रामायण में रसवर्णन, कहानी और गीत (दो भाग) तथा कई बालोपयोगी पुस्तकें ; प०—सोहागपुर, होशंगाबाद ।

गौरीशंकर द्विवेदी

'शंकर'—खड़ी बोली के सुकवि, अध्ययनशील विद्वान् और बुंदेलखंड के प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी; ज०—१८६६; श्रीवीरेंद्रकेशव साहित्य-परिषद् के संस्थापक ; र०—गीत-गौरव, बुंदेल-वैभव (प्रथम भाग), सुकवि सरोज—बुंदेलखंड के कवियों का इतिहास (दो भाग), सावित्री; अप्र०—द्वितीय और तृतीय रचना के कई भाग ; प०—तालबहेट, झाँसी ।

गौरीशंकरसिंह सेंगर, शास्त्राचार्य, सं० वि०, आयुर्वेदाचार्य, सा० र०—प्रसिद्ध संगीतज्ञ और हिंदी लेखक ; ज०—१६०८, रसड़ा, बलिया ; शंकर औषधालय के अध्यक्ष, हिं० सा० सम्मे० की परीक्षाओं के लिए जौनपुर केंद्र के संस्थापक ; अप्र० र०—विविध विषयों पर छपे लेख-संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक, क्षत्रिय हाई स्कूल, जौनपुर ।

गौरीशंकर श्रीवास्तव, सा० आ०— साहित्य-प्रेमी, कवि और कहानी-लेखक; ज०—१६१४ ; लेख०—१६३४ ; अप्र० र०—अंचल, अंतर्ध्वनि, करील, निकुंज, त्रिवेणी, उत्पल इत्यादि ; प०—प्रधानाध्यापक, भ्याना, ग्वालियर ।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा, रा० ब०, म० म०, डाक्टर—हिंदी के इतिहास-मर्मज्ञ विद्वानों में कदाचित् सर्वश्रेष्ठ, अनेक भाषाओं के प्रकांड पंडित, प्राचीन इतिहास-शोधक, प्राचीन मुद्रा-संग्रहकार और प्राचीन लिपि के लब्धप्रतिष्ठ विशेषज्ञ ; ज०—१५ सितंबर, सन् १८६३ ; शि०—विलसन कालेज बंबई; ज्ञा०—संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, अँगरेजी; र०—प्राचीन लिपिमाला, सोलंकियों का इतिहास, सिरोही राज्य का इतिहास, राजपूताने का

इतिहास (दो भाग), डूँगर राज्य का इतिहास, बासवाड़ा राज्य का इतिहास, जोधपुर राज्य का इतिहास (दो भाग) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृथ्वीराज विजय, कर्नल टाड का जीवनचरित, अशोक की धर्मलिपियाँ (पहला भाग), अप्र०—प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, बीकानेर राज्य का इतिहास (दो भाग); वि०—सरकार की ओर से रायबहादुरी, महामहोपाध्याय की पदवी, काशी विश्वविद्यालय की ओर से डाक्टर की आनरेरी उपाधि, दिल्ली अधिवेशन में हिं० सा० सम्मे० की ओर से मंगलाप्रसाद पारितोषिक और शिमला-अधिवेशन में साहित्यवाचस्पति की उपाधि प्रदान की गई; भारतीय अनुशीलन नामक महत्त्वपूर्ण अभिनंदन-ग्रंथ भी आपको सम्मेलन द्वारा समर्पित किया गया ; प०—उदयपुर, राजपूताना ।

गंगाधर इंदूरकर, सा० र०, सा० शास्त्री—साहित्य-प्रेमी उदीयमान हिंदी-लेखक, ज०—१० जुलाई १६१६, शि०—प्रयाग, काशी; भूत० संपा०—हस्तलिखित 'संघ-मित्र' १६३६—४०; संपा० रच०—हिंदी विश्वविद्यालय पंचांग (१६६६—२०००) अप्र०—हिंदी में हास्य, अलंकारशास्त्र; प०—दारागंज प्रयाग ।

गंगाधर मिश्र, सा० र०, हिंदी-सेवक; ज०—१६१५ ; बनारस ; संपा०—'विमला' (१६३४); रच०—अंताचरी, मूलरामायण की विशद टीका; अप्र० रच०—सुरुचि समन्वय, मधुकोश, निबंध-सरणि; प०—बनारस ।

गंगानंदसिंह, कुमार, एम० ए०, एम० एल० सी०—अंतरराष्ट्रीय ख्याति के लेखक, अध्ययनशील विद्वान्, सुवक्ता और निपुण पत्रकार; ज०—१८६८; जा०—अँगरेजी,

संस्कृत, फ्रेंच, मैथिली, बँगला; रायल सोसाइटी आव ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड, रायल एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल एशियाटिक सोसाइटी, बिहार-उड़ीसा-रिसर्च सोसाइटी, इंपायर पार्लामेंटेरियंस एसोसिएशन आव ग्रेटब्रिटेन एंड आयरलैंड, और बिहार लेजिस्लेटिव कौंसिल के फेलो और सदस्य; इंडियन लेजिस्लेटिव एसेंबली में कई वर्ष तक काँग्रेसपार्टी के प्रधान मंत्री रहे ; बिहार प्रांतीय हिंदू सभा के सभापति ; र०—पत्र-पत्रिकाओं में अनेक गवेषणा-पूर्ण लेख ; प०—श्रीनगरा-धीश, पूर्णिमा, बिहार।

गंगापतिसिंह, बी० ए०—दरभंगा-निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान्, साहित्य-सेवी और लेखक ; कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिंदी और मैथिली के भूतपूर्व अध्यापक ; र०—कनौज-पतन (ना०) विवाह-विज्ञान,नरपशु (उप०) मिथिला की घरेलू कहानियाँ, पुराणों में वैज्ञानिक वार्ते ; ग्रियर्सन साहब की जीवनी; प०—पचही, दरभंगा।

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री—हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी और वयोवृद्ध लेखक ; र०—निबंधमाला-दर्श, प्रणयी, माधव, मेघदूत ; प०—लखनऊ।

गंगाप्रसाद पांडेय—अध्ययनशील आलोचक, सहृदय कवि और साहित्य-प्रेमी लेखक ; ज०—१९१४ ; र०—काव्य-कलना, नीर-क्षीर, निबंधिनी, छायावाद-रहस्यवाद ; महादेवी वर्मा, कामायनी ; एक परिचय, साहित्य-संतरण ; संपा०—महादेवी का विवेचनात्मक गद्य, काव्यकला, गद्य-परिचय ; अप्र०—हिंदी कथा-साहित्य, हेमांतिका (कविता); प०—कोठी स्टेट, मध्यभारत।

गंगाप्रसाद भौतिका—एम० ए०, बी० एल०, काव्य-

तीर्थ—हिंदी-साहित्य-प्रेमी लेखक ; संपा० रच०—सरल शरीर-विज्ञान ; प०—प्रयाग ।

गंगाप्रसाद मिश्र, एम० ए०, बी० ए० (आनर्स), सा० र०—कहानी और निबंध लेखक; ज०—जनवरी १९१७ ई०; शि०—लखनऊ; रच०—विराग—(उप०); अप्र०—कई कहानी और निबंधसंग्रह; प०—हिंदी अध्यापक गवर्नमेंट हाई स्कूल, हरदोई ।

गंगाप्रसाद शुक्ल, एम० ए०—प्रसिद्ध हिंदी लेखक, आलोचक और कुशल पत्रकार ; ज०—दिसंबर, १९०६, कानपुर; सा०—मार्च १९३९ में हिं० सा० समिति की धार में स्थापना; हिं० सा० समिति की बदनावर शाखा द्वारा हिंदी-प्रचार; उक्त धार-समिति के प्रधान मंत्री ; भूत०—सहकारी संपा०—'कादंबरी', कानपुर और 'वीणा', इंदौर ; 'वीणा' के 'धार-अंक' के विशेष संपादक ; वर्त० संपा०—सासा० 'वृत्तधारा', धार ; रच०—रचनाविधि, तुलसी-प्रवेशिका ; अप्र०—अब्राहम-लिंकन की जीवनी ; प०—रासमंडल, धार, मध्य भारत ।

गंगाप्रसादसिंह अखौरी, सा० वि०—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी और पत्रकार ; ज०—१९०१ ; भूत०—सहायक संपा०—'विश्वदूत', कलकत्ता; वर्त० संपा०—'भारत जीवन', काशी; सभासद ना० प्र० स० काशी; रच०—हिंदी के मुसलमान कवि, देवदास, अभागिनी, माधुरी, मित्र, दांपत्य जीवन, गीता-प्रदीप; प०—'भारत जीवन'-कार्यालय, काशी ।

गंगाविष्णु शास्त्री, धर्मभूषण, प्रसिद्ध धर्मशास्त्रज्ञ और सुवक्ता, भारतधर्म-महामंडल, काशी के प्रसिद्ध महोपदेशक; अनेक धार्मिक पुस्तकों और शास्त्रीय निबंधों के

लेखक; प०—विहटा, बिहार ।

गंगाशरणसिंह, सा० र० प्रसिद्ध विद्वान्, कवि और साहित्य के इतिहासज्ञ; ज०—१६०४; विहार प्रां० हिं० सा० के इतिहास के प्रमुख शोधक, प्राचीन कविता के प्रेमी संग्रह-कर्त्ता, 'युवक' के संचालक और संपादक; र०—विचार-प्रवाह, पद्य-प्रवाह, साहित्य-प्रवाह ; प०—खरगपुर, विहार ।

गांगेय नरोत्तम शास्त्री—सुप्रसिद्ध सहृदय कवि, अध्ययनशील विद्वान् और देश-प्रेमी ; ज०—१६००, काशी; शि०—लाहौर ; जा०—संस्कृत, अँगरेजी, बँगला ; भूत० अध्यापक काशी हिंदू-विश्वविद्यालय ; असहयोग संस्कृत-छात्र-समिति के संस्थापक और सभापति ; कलकत्ते में श्रीतुलसी पुण्यतिथि तथा विराट् परिहास सम्मेलन के आयोजक ; हिं० सा० सम्मे० को कलकत्ते के लिए निमंत्रण दिया ; बंगाल आयुर्वेदीय स्टेट फैकल्टी के रजिस्टर्ड कवि-राज, रायल एशियाटिक सोसाइटी और काशी नागरीप्रचारिणी के आजीवन सदस्य ; बंगीय साहित्य परिषद्, संस्कृत साहित्य - परिषद्, इंडियन रिसर्च इंस्टीट्यूट, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य-सम्मेलन के सदस्य; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के मद्रास अधिवेशन के अंतर्गत कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष ; रच०—गांगेयवाग्बाण, प्रणयपूरण, अन्योक्ति-रत्नावली, आचरण - दर्शन, समस्यापूर्तिचंद्रिका, कर्म में धर्म, भारतीय महिला-महत्त्व, गांगेय गद्यमाला, भारतीयोद्-बोधन, अमनसभा नाटक, गांगेय दोहावली, गांगेय गीत-गुच्छक, भारतीय वायुयान, गांगेय-तरंग, आत्मानंद, करुण तरंगिणी, नूतन-निकुंज, मालिनी मंदिर या फूलों की दुनियाँ, मधुरता आदि लगभग चालीस ग्रंथ ; प०—२८०, चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता ।

घनश्यामदास पांडेय—हिंदी तथा संस्कृत के प्रसिद्ध कवि; ज०—१८८६; र०—पावस-प्रमोद; अप्र०—अनेक कविता-संग्रह ; प०—मऊ, झाँसी।

घनश्यामदास बिड़ला—सुप्रसिद्ध हिंदी-साहित्य-प्रेमी, विख्यात दानवीर व्यापारी और सुलेखक; ज०—१८९१; सा०—बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर, लेजिस्लेटिव असेंबली के सदस्य, १९३० ; इंपीरियल प्रिफरेंस के विरोध में पद-त्याग ; सभापति—इंडियन चेंबर आव कामर्स, कलकत्ता १९२५, फिडरेशन आव इंडियन चेंबर आव कामर्स १९२९ और अ० भा० हरिजन सेवक-संघ; इंडियन फिस्कल अंतर्राष्ट्रीय लेबरकानफ्रेंस के(१९२७) और दूसरी गोलमेज कानफ्रेंस १९३० के डेलीगेट; अनेक संस्थाओं को दान दिया ; प्रसिद्ध राष्ट्रीय प्रकाशन-संस्था, सस्ता साहित्य-मंडल, दिल्ली के प्रधान संस्थापकों में ; र०—बापू आदि ; प०—कलकत्ता।

घनश्यामनारायणदास, एम० ए० (राजनीति, दर्शन), एल-एल० बी०, सा० र०—प्रसिद्ध राजनीति-विशारद और दार्शनिक; ज०—१९०४, पालीग्राम, गोरखपुर; शि०—काशी, प्रयाग; अप्र० र०—हिंदू-धर्म का वैज्ञानिक आधार, भारतीय दर्शनों का दिग्दर्शन, राजनीति, 'दि प्राब्लेम आव डोमीनियल रूल फार इंडिया,' (अँग०) और 'दि डेवलपमेंट आव जुडिशल ऐडमिनिस्ट्रेशन इन ब्रिटिश इंडिया' (अँग०) नामक हिंदी-अँगरेजी पुस्तकें; प०—जमींदार, पालीग्राम, गोरखपुर।

घनश्यामप्रसाद 'श्याम'—कहानी-लेखक और कवि ; ज०—जनवरी १९११ ; र०—वीर हकीकतराय (नाटक), वाह री ससुराल

(उप०), स्मृति (कवि०) जीवन-सुधार (ना०) असर्ग (ना०) ; प्रधान मंत्री—प्रांतीय सम्मेलन; संस्था०—हिंदी-साहित्य-मंडल ; प०—बरहटा, नरसिंहपुर ।

घमंडीलाल शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, सा० वि०—साहित्य-प्रेमी लेखक और विद्वान्; ज०—६ जून, १८६६; शि०—आगरा, इलाहाबाद ; सेवा-समिति, खुर्जा की स्थापना १९३१ में ; बारह वर्ष तक उसके प्रधान मंत्री; हिंदी-प्रचारिणी सभा, खुर्जा की स्थापना १९३६ में, राजकीय कार्यालयों और रेडियो में हिंदी का अधिकार दिलाने को प्रयत्नशील ; साक्षरता-प्रसार लिए रात्रि-पाठशाला १९३६ में खोली ; अखिल भारतीय चर्खा-संघ के एक हजार गज प्रतिमास अपने हाथ का कता सूत भेजनेवाले सदस्य; रच०—मॉडर्न हिंदी-व्याकरण और रचना (तीन भाग), मॉडर्न हाईस्कूल हिंदी-व्याकरण ; वि०—कई पुस्तकें अँगरेजी में भी लिखीं ; प०—सेकंड मास्टर, जे० ए० एस० हाई स्कूल, खुर्जा, बुलंदशहर ।

चक्रधर झा, सा० लं०—प्रसिद्ध बिहारी लेखक और आलोचक; रच०—महाकवि भूषण की रचनाओं की आलोचना का एक विस्तृत ग्रंथ ; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक लेखों के दो-तीन संग्रह; प०—सोनागुजी, संताल-परगना; बिहार ।

चक्रधरसिंह, राजा—सुप्रसिद्ध हिंदी-साहित्य-प्रेमी, अध्ययनशील विद्वान् और संगीत-विशेषज्ञ ; ज०—१९०५ ; सा०—अखिल भारतीय संगीत सम्मे०, प्रयाग के सभापति १९३६ ; नागपुर विश्वविद्यालय के संगीतविभाग के भूत० अध्यक्ष ; रच०—बैरागढ़िया राजकुमार, अलकपुरी—उप०, मायाचक्र, रम्यरास—कवि०, रत्नहार, जोशे-

फ़रहन—उर्दू ; प०—राय-गढ़, सी० पी० ।

चक्रधर 'हंस'—एम० ए०, एल० टी०—प्रसिद्ध लेखक, कवि और कहानीकार; अनेक सामयिक विषयों पर छोटे-छोटे पैंफलेट लिखते रहते हैं; रच०—अनुवादचंद्रिका; प०—लखनऊ ।

चतुर्भुजदास रावत, सा० आ०, प्रभाकर, एम० आर० ए० एस०—पुराने ढंग के प्रसिद्ध समस्यापूरक कवि, दार्शनिक विद्वान् और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९०४, मैनपुरी; सा०—माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय के संरक्षक ; हिं० सा० समिति, भरतपुर के आजीवन सदस्य ; ब्रज-साहित्य-मंडल, मथुरा की कार्यकारिणी के सदस्य, सनातन-धर्मसभा और स्कूल के भूत० मंत्री ; रच०—सुरीली बाँसुरी, मेरा स्वप्न, सुमन सवैया, कमला—उप०, चतुर्भुज-सतसई, अनंत वर्मा—ना०, बेपेंदी का लोटा, चतुर्भुज-नीति, आत्मोल्लास, रूबाइयात चतुर्भुज, ब्रज पद्मावती—दो भाग, मंगलाचरण, व्याकरण-प्रवेश ; अप्र०—प्रभाकर-प्रभा, विवेक-वाटिका, महाकाव्य, प्रेम-रहस्य, हिय-हिलोर; प्रि० वि०—दार्शनिक साहित्य ; प०—साहित्य - कुटीर, दही गली, भरतपुर ।

चतुरसेन शास्त्री—सुप्रसिद्ध उपन्यास - कहानी-लेखक ; ज०—१८८८ ; वैद्यक पर अनेक ग्रंथ ; रच०—अमर अभिलाषा, सिंहगढ़-विजय, खवास का ब्याह ; प०—वैद्य, दिल्ली ।

चाँदमल जैन, एम० ए०, सा० र०—जैन धर्म और हिंदी साहित्य के प्रेमी और लेखक; ज०—१९०१ ; हेडमास्टर दिगंबर जैनपाठशाला जयपुर, १९३७ ; अप्र० रच०—अनेक कविता-निबंध-संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक, मिशन हाई स्कूल, जयपुर ।

चेतराम शर्मा, सा० र०, प्रभाकर—सुप्रसिद्ध विद्वान्, साहित्य-प्रेमी और सुलेखक ; ज०—१८१३, गढ़वाल ; शि०—ज्वालापुर, लाहौर और गढ़वाल ; स्थानीय नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रधान; साप्ताहिक 'प्रभात' के भूतपूर्व सहायक (१११४-१६) और मासिक 'चाँद', लाहौर के स्वतंत्र संपादक ; रच०—हिंदी-व्याकरण, हिंदी-गद्य-मंजूषा, धर्मपत्नी, भीमदेव (नाटक) ; अप्र०—शकुंतला-संहार ; प०—अध्यापक, कन्या महाविद्यालय, जालंधर ।

चैनसिंह ठाकुर—साहित्य-प्रेमी कवि ; ज०—१८८९; रच०—चैन-विलास, युद्ध-कल्याण-पच्चीसी, रण-चालीसा ; अप्र०—चैनज्ञान-सागर ; प०—सरसान, पिपलौदा स्टेट, मालवा ।

चैनसुखदास, न्यायतीर्थ, कविरत्न—प्रसिद्ध साहित्य-कार, दार्शनिक विद्वान्, और संस्कृत के प्रकांड पंडित; भूत० संपा०—'जैन-विजय' और 'जैन-बंधु' ; रच०—भावना-विवेक, पावन-प्रवाह; अप्र०—भगवान महावीर, जैनशासन, विभिन्न सामयिक और सामाजिक पत्र-पत्रि-काओं में समय समय पर प्रकाशित अनेक सुंदर और सारपूर्ण लेखों के संग्रह ; वि०—प्राचीन जैन साहित्य के उद्धार के लिए आप सदा प्रयत्नशील रहते हैं; स्वसंपादित पत्रों द्वारा आपने समाज में जागृति पैदा की है । प०—जयपुर ।

चंद्रकिरण सौनरिक्सा, श्रीमती, 'छाया', सा० र०—प्रसिद्ध कहानी-लेखक की कहानी-लेखिका पत्नी ; ज०—१९२०, नौशेरह—पेशावर छावनी ; शि०—मेरठ ; ज्ञा०—उर्दू, संस्कृत, बँगला, गुजराती ; लेख०—१९३८ ; अप्र० रच०—विविध पत्रों

में बिखरी कहानियों के दो-तीन संग्रह ; प०—कलकत्ता।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार—प्रसिद्ध भावुक कहानी-लेखक और सहृदय साहित्य-सेवी ; लेख०—१६२५ ; विश्व-साहित्य-ग्रंथमाला के संपादक ; रच०—भय का राज्य (कहानी-संग्रह); प०—मैगलेगन रोड, लाहौर।

चंद्रगुप्त, वेदालंकार—भारतीय इतिहास के अध्ययनशील विद्वान्, गंभीर विचारक और प्रसिद्ध लेखक ; रच०—वृहत्तर भारत ; प०—दिल्ली।

चंद्रदेव शर्मा, सा० र०, आचार्य, पुराणतीर्थ—प्रसिद्ध बिहारी लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१६०१, सारन, छपरा ; शि०—संस्कृतकालेज, मुजफ्फरपुर, बिहार, संस्कृत-समिति से वेद-व्याकरण-साहित्य और धर्मशास्त्र में आचार्य और कलकत्ता संस्कृत-समिति से पुराणतीर्थ उपाधियाँ प्राप्त कीं ; विभिन्न साहित्यिक और धार्मिक विषयों पर लेख ; रच०—विवेक-किरणावली, सूक्ति-सारावली और उद्‌बोधनम्; अप्र०—कर्तव्य-किरणावली, विवेक वचनावली, शांति-सोपान, विदुर-चरितावली ; प०—अध्यापक, राजसंस्कृत विद्यालय, बेतिया, चंपारन।

चंद्रदेवसिंह 'चंद्र', सा० वि०—राष्ट्रप्रेमी कवि और लेखक ; ज०—१६०१ ; अप्र० रच०—बिगुल, किसान, सच्चे मोती, गीता-चंद्र-प्रकाश ; प०—अध्यापक, आजमगढ।

चंद्रप्रकाशसिंह, कुँवर, एम० ए०—प्रसिद्ध कवि और साहित्य-प्रेमी लेखक ; ज०—१६१० सीतापुर ; शि०—लखनऊ, नागपुर ; वि०—लखनऊ विश्वविद्यालय से डा० रावराजा पं० श्यामबिहारी मिश्र द्वारा संस्थापित सर जार्ज लैंबर्ट गोल्ड मेडल

प्राप्त ; अब 'रंगमंच और हिंदी नाटक' विषय पर डाक्टरेट के लिए थीसिस लिख रहे हैं ; सा०—सिधौली, सीतापुर के श्रीविक्रमादित्य क्षत्रिय विद्यालय के संस्थापक, आजीवन सदस्य और मंत्री ; उक्त विद्यालय के भूत०प्रधानाध्यापक ; रच०—मेघमाला—गीत, संपा—कवि० ; प्रि० वि०—साहित्य, दर्शन और समाज-विज्ञान ; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, युवराजदत्त कालेज, ओयल, खीरी।

चंद्रप्रभा—उदीयमान कवयित्री और सहृदय साहित्य-प्रेमिका ; अप्र० रच०—विविध-पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी कविताओं के संग्रह ; प०—ठि० सर सेठ हुकुमचंद, इंदौर।

चंद्रबली पांडेय, एम० ए०—हिंदी-प्रचार के प्रबल समर्थक, सतर्क भाषा में सामयिक निबंध-लेखक और साहित्य-प्रेमी ; शि०—हिंदू-विश्वविद्यालय, काशी ; मासिक 'हिंदी', बनारस के कुशल संपादक ; नागरीप्रचारिणी सभा, काशी के अत्यंत उत्साही कार्यकर्त्ता ; रच०—बिहार में हिंदुस्तानी, मुगलकालीन हिंदी ; अप्र०—विविध सामयिक और हिंदी-प्रचार-संबंधी विषयों पर लिखे अनेक निबंध-संग्रह ; प०—ठि० नागरी - प्रचारिणी सभा, बनारस।

चंद्रभाल ओझा, एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), एल० टी०—प्रसिद्ध विद्वान्, सामयिक निबंध-लेखक और साहित्य-सेवी ; ज०—२४ जून, १६०४ ; स्थानीय हिंदू-छात्र-सभा के मंत्री ; रच०—सुबोध बाल-व्याकरण और रचना ; अप्र०—विविध विषयों पर लिखे अनेक सुंदर लेखों के कई और कहानियों-एकांकियों के एक-एक संग्रह ; प०—हेडमास्टर, [illegible] हाई

स्कूल, गोरखपुर।

चंद्रभूषणसिंह ठाकुर, सा० र०—हिंदी-प्रेमी लेखक और प्रचारक; ज०—१६०९; संस्था०—साहित्य कुटीर; अप्र० रच०—भीमसिंह, स्वार्थ का विष, यदुवनदहन; प०—अध्यापक, बिंदकी, फतहपुर।

चंद्रभूषण त्रिपाठी 'प्रमोद'—शृंगार और शांत रस के कवि; ज०—१६०२; रच०—आभा, मानस-तरंगिनी; प०—मझिगवाँ, रायबरेली।

चंद्रमणिदेवी—पुस्तक-भंडार, लहरियासराय के सुप्रसिद्ध संस्थापक और संचालक रायसाहब रामलोचनशरणजी की धर्मपत्नी; ज०—१६०४; नैपाल-राज्यांतर्गत रामवन नामक गाँव; ज्ञा०—नैपाली भाषा का विशेष ज्ञान; रच०—दुलहिन, कन्या-साहित्य—२ भाग, माता; प०—पुस्तक-भंडार, लहरियासराय, बिहार।

चंद्रमनोहर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०—पुराने ढंग के समस्यापूरक कवि, प्रसिद्ध सामयिक निबंध लेखक और आलोचक; ज०—१८८६; अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित; रच०—हिंदू-धर्म-शास्त्र, स्पेन का इतिहास; अप्र०—महोदय—कन्नौज का बृहद् इतिहास; प०—ऐडवोकेट, फतेहगढ़।

चंद्रमाराय शर्मा—प्रसिद्ध पत्रकार, गद्य काव्य-रचयिता, भावुक कवि और हिंदीशिक्षक; ज०—१६००; भू० संपा०—'धर्मवीर'; रच०—धारा प्रकाशिका, नलोदय, आरत भारत, त्रिपथगा, गद्य-गमक, पंचगव्य, पिंगलप्रबोध, विवेकबोध, तलवार की धार पर; प०—बहोरनपुर, बिहार।

चंद्रमौलि शुक्ल, एम० ए०, एल० टी०—प्रसिद्ध हिंदीलेखक और मनोवैज्ञानिक; ज०—१८८२; काव्य-

कुब्ज सभा काशी के सभापति; मू० संपा०—'कान्यकुब्ज'; रच०—रचना विचार, बाल-मनोविज्ञान, शरीर और शरीर रचना, नाट्यकथामृत, मानस-दर्पण, अकबर, करीमा—पद्य अनु०, अरिथमेटिक-शिक्षा-प्रणाली, हाईस्कूल हिंदी-व्याकरण और रचना, नूतन अरिथमेटिक—तीन भाग, बीज-गणित, अन्य अनेक पाठ-ग्रंथ; वि०—अँगरेजी में भी लिखते हैं; प०—वाइस प्रिंसिपल ट्रेनिंग कालेज, बनारस।

चंद्रराज भंडारी, सा० वि०—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी लेखक, गंभीर विद्वान् और निबंधकार; ज०—१६०२; लेख०—१६२०; रच०—भगवान् महावीर, समाज-विज्ञान—इंदौर की होल्कर हिंदी-कमेटी से स्वर्णपदक प्राप्त, भारतीय व्यापारियों का इति-हास—तीन भाग; अप्र०—संसार की भावी संस्कृति; प०—भानपुरा, इंदौर स्टेट।

चंद्रशेखर पांडेय, एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), सा० र०—सुप्रसिद्ध विद्वान्, अध्य-यनशील लेखक और साहित्य-प्रेमी; ज०—२५ जून, १६०३, काशी; शि०—प्रयाग, काशी; रच०—संस्कृत-प्रवेशिका (दो भाग), आधुनिक हिंदी-कविता, रसखान और उनका काव्य; प०—अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, सनातनधर्म कालेज, कानपुर।

चंद्रशेखर शर्मा 'सौरभ', काव्य-व्याकरण-स्मृति-पुराण-तीर्थ—सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी, संस्कृत के गंभीर अध्ययनशील विद्वान् और लेखक; अप्र० रच०—विविध विषयों पर लिखे अनेक गंभीर निबंध-संग्रह; प०—करौंदी गाँव, पो० गुमला, राँची।

चंद्रशेखर शास्त्री—दर्शन-शास्त्र, इतिहास, विज्ञान और राजनीति के विद्वान् तथा सुलेखक; जा०—अँगरेजी, संस्कृत, उर्दू; भूत० अध्यापक हिंदू-विश्वविद्यालय काशी;

रच०—न्यायबिंदु—बौद्ध ग्रंथ सुबोध जैन-दर्शन, तत्त्वार्थसूत्र, जैनागम समन्वय, मंत्रशास्त्र के पंचाध्यायी, बीजकोष, मंत्र सामान्य साधन - विधान, ज्वालामालिनी कल्प, पद्मावती कल्प आदि लगभग तीन दर्जन ग्रंथ लिखे, संकलित अथवा संपादित किए; वि०—चारों भाषाओं में लिखते हैं; प०—संपादक, 'वैश्य-समाचार', दिल्ली।

चंद्राबाई, पंडिता—जैन-समाज में प्रमुख साहित्य-सेविका; लगभग बाइस वर्ष तक 'जैन-महिलादर्श' का संपादन किया है; बालविश्राम नामक संस्था की स्थापना की; रच०—ऐतिहासिक स्त्रियाँ, महिलाओं का चक्रवर्तित्व, उपदेश रत्नमाला, सौभाग्य रत्नमाला, आदर्श निबंध, आदर्श कहानियाँ, वीर पुष्पांजलि; प०—बाला विश्राम, आरा, बिहार।

चंद्रावती ऋषभसेन—सुप्रसिद्ध कहानी - लेखिका; भूतपूर्व संपादिका मासिक 'दीदी' इलाहाबाद; रच०—नींव की ईंट (कहानी-संग्रह); इस पर हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से सेक्सरिया पुरस्कार मिला है; अप्र०—विविध पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी कहानियों के दो-तीन संग्रह; प०—सहारनपुर।

चंद्रिकाप्रसाद मिश्र 'चंद्र'—ब्रजभाषा के पुराने ढर्रे के समस्यापूरक कवि और साहित्य-मर्मज्ञ; ज०–१८९८, कानपुर; लेख—१९२०; ग्वालियर के साहित्यिक वातावरण के श्रेयपात्र; रच०—मारवाड़ गौरव, भगवा झंडा; प०—ग्वालियर।

चंपालाल 'पुरंदर'—उदीयमान कहानी - लेखक, कवि और निबंधकार; लेख०—१९३४; प०—चंदेरी।

छबिनाथ पांडेय, बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध

बिहारी विद्वान् और पत्रकार; बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मेलन के प्रधान मंत्री ; मासिक 'साहित्य', कलकत्ता और त्रैमासिक 'साहित्य', पटना के संचालक ; रच०—माँ का हृदय, तेल, समाज (ना०); स्त्री-कर्तव्य-शिक्षा ; अनु०—यंग इंडिया; प०—'साहित्य'-कार्यालय, पटना।

छेदीलाल झा 'द्विजवर'—प्रसिद्ध बिहारी कवि ; रच०—गंगालहरी सटीक, मिथिला की वर्तमान दशा, अप्र० रच०—सरस कविताओं के दो-तीन संग्रह ; प०—बनगाँव, भागलपुर।

छैलबिहारीलाल बजाज 'छैला अलबेला', 'बुलबुल छैला'—अनेक काव्य-ग्रंथों के रचयिता और नगर-प्रिय प्रसिद्ध व्यक्ति; ज०—१८६४, हाथरस ; लेख०—१९१० ; अनेक कवि-सम्मे० के सभापति ; दो वर्ष तक मासिक 'हितोपदेश' के प्रकाशक ; छह वर्ष तक साप्ता० 'भारतपुत्र' के संपा०; बीस वर्ष से स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य और अब शिक्षा-विभाग, हाथरस के सभापति; रच०—हृदय-सागर, फैलावट माला, मुकुरी माला; प०—नयागंज, चौक, हाथरस।

छोटेलाल पाराशरी, एम० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी और लेखक ; ज०—५ अगस्त, १९०५ ; स्थानीय हिंदू-सभा के प्रधान तथा हिंदी-प्रचार-मंडल के उत्साही कार्यकर्ता और सक्रिय सहायक ; प्रि० वि०—इतिहास और साहित्य ; प०—बदायूँ।

छुंगालाल मालवीय एम० ए० (हिंदी), एम० ए०—प्रि० (फिलासफी)—प्रसिद्ध आलोचक, अध्ययनशील विद्वान् और दर्शनशास्त्र के प्रेमी ; ज०—१९०३ ; शि०—बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ-विश्वविद्यालय ;

भूत० संपा०—साप्ता० 'अभ्युदय', प्रयाग और मासिक 'हिंदू-मिशन-पत्रिका', लखनऊ; अब हिंदी और फिलासफी अध्यापक, कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ; रच०—हिंदी-व्याकरण और रचना; निकुंज—मौलिक कहानियाँ, गल्पहार—कहानी-संग्रह, भारतीय विचारधारा में आशावाद—अनु०; अप्र०—प्रसाद-साहित्य—नाटक, कहानी और कविता का अध्ययन; वि०—'हिंदी-सेवी-संसार' के भूमिका-लेखक; प०—सुंदरबाग, लखनऊ।

जगतनारायणलाल—एम० ए०, एल-एल० बी०, राष्ट्रीय विचारों के प्रसिद्ध लेखक; भू० मंत्री—अखिल भारतीय और बिहारप्रांतीय हिंदू-महासभा; बिहार की काँग्रेसी सरकार के पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी; भू० सं०—'महावीर', पटना; रच०—एक ही आवश्यक बात, अर्थशास्त्र, हिंदूधर्म; प०—पटना।

जगदीश कवि—परसरमा-निवासी सुप्रसिद्ध राजकवि; दरभंगा और नैपाल के दरबारों से सम्मानित; सोनबरसा, भागलपुर के राजा राणा रुद्रप्रतापसिंह बहादुर से गज-दान पाया; रच०—प्रतापप्रशस्ति, बूटी रामायण; प०—सोनबरसा, भागलपुर।

जगदीशचंद्र शास्त्री—प्रसिद्ध हिंदी-सेवक और प्रचारक; ज०—१९०४; दिल्ली और दार्जिलिंग निवासकाल में अनेक संस्थाओं की स्थापना और हिंदी-प्रचार-कार्य में सहयोग; रच०—लगभग आधी दरजन पुस्तकें; अप्र० रच०—स्फुट लेखों के दो-एक संग्रह; प०—मखन, बिहार।

जगदीश झा 'विमल'—बिहार के अत्यंत प्रसिद्ध कवि, ख्यातिनामा कहानी-उपन्यास-लेखक तथा सफल अनुवादक; ज०—१८६१; जा०—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला, मराठी

में अच्छी गति ; रच०—वीणा-झंकार, पद्य-प्रसून, पद्य-संग्रह, खरा सोना, जीवन-ज्योति, लीला, आशा पर पानी, दुरंगी दुनियाँ, सावित्री, महावीर, सतीपंचरत्न, आदर्श सम्राट आदि लगभग अस्सी पुस्तकें; अप्र० रच०—अनेक गद्य-पद्य-संग्रह; प०—कुमैठा, भागलपुर।

जगदीशनारायण—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और बाल-साहित्य के ख्यातनामा लेखक ; युगांतर-साहित्य-मंदिर, पटना के संस्थापक और संचालक ; रच०—बच्चों का बचपन, गाँव की ओर, बैर का बदला; अप्र० रच०—ग्राम-सुधार-संबंधी अनेक छोटी पुस्तकें और निबंध-संग्रह; प०—हाजीपुर, बिहार।

जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध लेखक और उत्साही साहित्य-प्रेमी; ज०—जालौन के नगम्मनपुर गाँव में ; शि०—चंपा अग्रवाल कालेज, मथुरा और डी० ए० वी० कालेज, कानपुर ; प०—वकील, मथुरा।

जगदीशप्रसाद ज्योतिषी 'कमलेश', एम० ए०—प्रसिद्ध भावुक कवि और सहृदय लेखक ; ज०—१९०१, नरसिंहपुर ; शि०—एम० ए० में विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम आकर कोरिया दरबार स्वर्ण-पदक प्राप्त किया ; लेख०—१९२४ ; सा०—असहयोग आंदोलन में दो बार जेल-यात्रा ; रच०—कलरव और पांचजन्य ; अप्र०—अनेक कविता, कहानी और एकांकी-संग्रह; प०—सागर, सी०पी०।

जगदीशप्रसाद शर्मा—पंजाब-निवासी हिंदी के अच्छे लेखक और साहित्य-प्रेमी ; स्थानीय सभी हिंदी प्रचारक संस्थाओं से संबंधित ; प०—रेवाड़ी, पंजाब।

जगदीशप्रसाद—'श्रमिक'—हाजीपूर निवासी

प्रसिद्ध समाज-सुधारवादी लेखक और प्रचारक; संपा०—'महिला-संदेश'; रच०—मुजफ्फरपुर जिले का सत्याग्रह आंदोलन; अप्र० रच०—सरस कविताओं के अनेक संग्रह; प०—व्यवस्थापक, ओरियंटल प्रेस, पटना।

जगदीश्वरप्रसाद ओझा रोसड़ा-निवासी प्रसिद्ध समाज-सुधारवादी और साहित्य-सेवी; स्त्रीशिक्षा, उद्योग, पुरुषार्थ और स्वास्थ्य-रक्षा-संबंधी अनेक सामयिक तथा महत्त्वपूर्ण लेखों और पुस्तकों के निर्माता; प०—संचा० सुदर्शन-प्रेस, दरभंगा।

जगदंबाशरण मिश्र 'हितैषी'—राष्ट्रीयता के पुजारी, देशभक्तिपूर्ण कविताओं के रचयिता और साहित्य-प्रेमी; ज०—१८६९, उन्नाव के अंतर्गत गंजमुरादाबाद में; शि०—कानपुर; ज्ञा०—फारसी, उर्दू, अँगरेजी, संस्कृत, बँगला; दैनिक 'वर्तमान' के भूत० संचालक; रच०—कल्लोलिनी, वैकाली, मातृगीता; अप्र०—अनेक काव्य-संग्रह; वि०—देश-प्रेम और राष्ट्रीयता-भावना से युक्त कई गजलें उर्दू में भी लिखीं; प०—पुर्वा उन्नाव।

जगदंबाशरण शर्मा, एम० ए०, डिप्० एड०, सा० र० डुमरिया-निवासी प्रसिद्ध लेखक; रच०—बुद्धिपरीक्षा, वाणीसुधार, रचनावाटिका (तीन खंड), व्याकरण-वाटिका; प०—डिपुटीइंस्पेक्टर; मुँगेर, बिहार।

जगदंबाशरण शर्मा, एम० ए०—साहित्य-प्रेमी हिंदी लेखक और प्रचारक; ज०—मुँगेर; अदालतों में नागरी-प्रवेश कराने में प्रयत्नशील; सारण-जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री; प०—मशरक, सारण, बिहार।

जगदीशनारायण दीक्षित, एम० ए०, सा० र०, एल-एल० बी०—साहित्य-

प्रेमी लेखक और सहृदय आलोचक ; ज०—१६१२ ; शि०—आगरा ; अप्र० रच०—आलोचनात्मक लेख-संग्रह ; प०—वकील, नवाब-गंज, कानपुर ।

जगदीशसिंह गहलोत, एफ० आर० जी० एस०, एम० आर० ए० एस०—सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ, अध्ययनशील विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१८६६, जोधपुर ; शि०—जोधपुर हाई स्कूल, सिंध एकेडमी हैदराबाद; सा०—आर्य-समाज-सेवा-समिति के संचालक; जोधपुर राज्य के इतिहास व पुरातत्त्व कार्यालय के कोलेटर १६२६ ; देशी राज्य इतिहास-संदिर की स्था० १६२३; 'हिंदी-साहित्य-मंदिर' के संस्थापक ; हिं० प्र० सभा, जोधपुर के जन्मदाता और मान्य सदस्य ; 'शाकद्वीपी ब्राह्मण', 'सैनिक क्षत्रिय' आदि के भूत० संपा० ; रच०—मारवाड़ राज्य का इतिहास, राजपूताने का इतिहास—दो भाग, इतिहास-सहायक पंचांग, मारवाड़ की रीति-रस्म, मारवाड़ का संक्षिप्त वृत्तांत, भारतीय नरेश, उमेद उमंग, महाराजा सर प्रताप, चित्रमय जोधपुर, राजस्थान का सामाजिक जीवन, वीर दुर्गादास राठौड़, सती मीराबाई का जीवन और काव्य, मारवाड़ के जागीरदार और मुत्सद्दी, मारवाड़ राज्य के ताजीमी सरदार, राजपूताने के जागीरदार, जयपुर राज्य का इतिहास, अमर काव्य, चित्रमय राजस्थान, संसार के धर्म, नेपाल का सचित्र इतिहास ; प०—चंडावर, जोधपुर ।

जगन्नाथप्रसाद उपासक—साहित्य-प्रेमी कवि और लेखक ; ज०—१६१२ ; शि०—विक्टोरिया कालेज, लश्कर और मेडिकल कालेज, इंदौर ; रच०—बलिदान, पुकार ; प०—ग्वालियर ।

-जगन्नाथप्रसाद 'भानु' म० म०, रा० ब०—पिंगल-शास्त्र के विशेषज्ञ, हिंदी-साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, हिंदी संसार की वयोवृद्धतम विभूति, और प्रकांड पंडित ; ज०—८ अगस्त, १८५९, नागपुर ; जा०—संस्कृत, अँगरेजी, उर्दू, उड़िया, मराठी ; सा०—१९१३ में बिलासपुर के सेटिलमेंट अफसर के पद से पेंशन ली ; तभी सहकारी बैंक खोला ; अब मध्यप्रांतीय लिटरेरी अकेडमी के प्रमुख सदस्य ; रच० ; साहित्यिक—काव्य-प्रभाकर, छंद-प्रभाकर, छंद-सारावली, अलंकार-दर्पण, हिंदी-काव्यालंकार, अलंकार-प्रश्नोत्तरी, रस-रत्नाकर, काव्य-कुसुमांजलि, नायिका-भेद शंकावली, नवपंचामृत रामायण, श्री तुलसीतत्त्वप्रकाश, श्री-तुलसीभाव-प्रकाश ; गणित—काल-विज्ञान, अंक-विलास, काल-प्रबोध, ग्रहण-दर्पण ; भजन—तुम्हीं तो हो, जयहरिचालीसा, शीतला माता भजनावली ; वि०—इनके अतिरिक्त अँगरेजी, उर्दू और छत्तीसगढ़ी में भी आपके अनेक ग्रंथ हैं ; १९१४ में साहित्याचार्य, १९३८ में हिं० सा० सम्मे० की शिमला बैठक में साहित्यवाचस्पति, १९२० में रायसाहब, १९२५ में रायबहादुर, १९४० में महामहोपाध्याय उपाधियाँ मिलीं ; प०—बिलासपुर।

जगन्नाथप्रसाद खत्री 'मिलिंद'—प्रसिद्ध रहस्य-वादी और राष्ट्रीय कवि, कुशल नाटककार और पत्रकार ; ज०—१९०७, मुरार ; शि०—मुरार हाई स्कूल, अकोला राष्ट्रीय स्कूल महाराष्ट्र और काशी विद्यापीठ ; जा०—उर्दू, अँगरेजी, संस्कृत, मराठी, बँगला, गुजराती ; सा०—शांति निकेतन में एक वर्ष अध्यापक रहे ; लेख०—१९२५ ; भूत० संपा—मासिक

'भारती', लाहौर, साप्ता० 'जीवन' ग्वालियर ; रच०—जीवन-संगीत, पंखुरियाँ, आँखों में, नवयुग के गान—कविता, प्रताप-प्रतिज्ञा-नाटक, प०—ग्वालियर।

जगन्नाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, बी० एल०—पतेर, दरभंगा-निवासी, सुप्रसिद्ध साहित्यालोचक, यशस्वी संपादक, सुवक्ता और बाल-साहित्य-निर्माता ; ज०—१८६६ ; मासिक 'विश्वमित्र' कलकत्ता के भू० संपा० ; 'विशालभारत' के नियमित लेखक; रच०—दरभंगा, मुंगेर (दोनों का विस्तृत विवरणात्मक परिचय), जीवन देवता की वाणी (नवयुवकोपयोगी), साम्यवाद क्या है ?, जानते हो, बच्चों का चिड़िया-खाना; अप्र० रच०—अनेक आलोचनात्मक लेख और बालोपयोगी पुस्तकें ; प०—अध्यापक, चंद्रधारी मिथिला-कालेज, दरभंगा।

जगन्नाथप्रसाद वैष्णव—भजनानंदी कवि ; हरिनाम-यश-संकीर्तन की लगभग दो दर्जन पुस्तकों के संकलनकर्ता और संपा०—प०—बड़कापुर।

जगन्नाथप्रसाद शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०—सुप्रसिद्ध आलोचक, अध्ययन-शील लेखक और साहित्य-प्रेमी; ज०—१९०६, नागौर स्टेट ; शि०—सेंट्रल हिंदू स्कूल, और हिंदू विश्वविद्यालय, काशी ; अब हिंदू-विश्वविद्यालय में हिंदी के अध्यापक हैं ; रच०—हिंदी की गद्य शैली का विकास ; अप्र०—'प्रसादजी' के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन ; वि०—इसी पर शर्माजी को गत वर्ष हिंदू विश्वविद्यालय से डी० लिट्० उपाधि मिली ; प०—औरंगाबाद, काशी।

जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, राजवैद्य, आयुर्वेद पंचानन—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और आयुर्वेद-विषयक लेखक ; ज०—१८७१ ; सा०—वि-

लालपुर हिंदी-सभा की स्थापना; भूत० संपा०—'प्रयाग-समाचार', 'श्री वेंकटेश्वर-समाचार' और 'हिंदी-केसरी', नागपुर; आयुर्वेदिक पत्र 'सुधानिधि' के १९१० से संपादक; प्रयाग आयुर्वेद-प्रचारिणी सभा के संस्थापक; वैद्य-सम्मे० के पुनरुद्धारक; आयुर्वेदीय शिक्षा और परीक्षा के प्रबंधक; हिं० सा० सम्मे० के आरंभ से सदस्य—समय समय पर प्रबंध, प्रधान और संग्रह मंत्री; सभी प्रसिद्ध आयुर्वेदीय संस्थाओं से संबंधित; रच०—भारत में मंदाग्नि, आरोग्य-विधान, रस-परिज्ञान, आहार-शास्त्र, आयुर्वेद का महत्त्व, भारतीय रसायनशास्त्र, पथ्यापथ्य-निरूपण, नाड़ी-परीक्षा, आयुर्वेदीय मीमांसा, नीति कुसुम, आदर्श बालिका, नीति-सौंदर्य, भारत में डच राज्य, सिंहगढ़-विजय; प्रि० वि०—आयुर्वेद, नीति, इतिहास; प०—३ सम्मेलन मार्ग, प्रयाग।

जगन्नाथप्रसाद साहु—लालगंज - निवासी प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और हिंदी-प्रचारक; स्थानीय हिं० प्र० सभा के संचालक; हाजीपुर-सबडवीजन के पुस्तकालय-संघ के मंत्री; रच०—कई छोटी पुस्तकें और निबंध-संग्रह; प०—हाजीपुर।

जगन्नाथ पुच्छरत, सा० भू०, एफ० टी० एस०—अमृतसर के प्रमुख साहित्यिक, पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी परीक्षाओं के प्रचारक, वयोवृद्ध ख्यातनामा विद्वान्, लगभग पैंतीस वर्षों से साहित्य-सेवा में संलग्न; भूत० प्रधान मंत्री अमृतसर नागरी-प्रचारिणी सभा; रच०—परीक्षापद्धति, मुद्रणपद्धति, संकल्पविधि आदि; अप्र०—विविध संपादित और संगृहीत ग्रंथ; प०—साहित्य-सदन, चावल मंडी, अमृतसर।

जगन्नाथराय शर्मा, एम०

ए०, सा०, आ०, वि० लं०—रामपुर डिहरी-निवासी अध्ययनशील विद्वान्, कुशल अध्यापक और सफल कवि ; पटना-विश्वविद्यालय में हिंदी के व्याख्याता; रच०—अपभ्रंश-दर्पण, विक्रम-विजय (का०); अप्र०—साहित्यिक लेखों और कविताओं के दो-तीन संग्रह; प०—हिंदी अध्यापक, पटना कालेज, पटना।

जगन्नाथसहाय कायस्थ—प्रसिद्ध भजनानंदी और कवि ; रच०—आनंद सागर, प्रेमरसामृत, भक्तरसामृत, भजनावली, कृष्णबाललीला, मनोरंजन, चाँदहरण, गोपाल-सहस्रनाम ; अप्र० रच०—सरस कविताओं के दो-एक संग्रह ; प०—बड़ा बाजार, हजारीबाग, छोटा नागपुर।

जगनलाल गुप्त—सुप्रसिद्ध लेखक, इतिहासज्ञ औपन्यासिक और पत्रकार ; ज०—११ फरवरी, १८९१; ज्ञा०—संस्कृत, मराठी, गुजराती, बड़ौदा राज्य में हिंदी अध्यापक १९१४; मासिक 'प्रेमा', वृंदावन के संपा०—१९१५ ; बुलंदशहर में मुख्तार १९२० से; लेख०—१९०७; रच०—संसार के संवत्, देवलरानी और खिज्रखाँ, हम्मीर महाकाव्य, मालवमणि, कौटिल्य के आर्थिक विचार ; अप्र०—ब्रह्मांड - ऋग्वेद, वैशंपायन-संहिता, भारतवर्ष का प्राचीन भूगोल, प्राचीन इतिहास ; प०—मुख्तार, बुलंदशहर।

जगन्मोहनलाल, शास्त्री—जैन समाज के गण्यमान विद्वानों में एक ; 'परवार बंधु' के सफल संपादक ; प०—अध्यापक कटनी विद्यालय, कटनी ; मयभारत।

जगमोहनराय, एम० ए०, सा० र०—हिंदी लेखक, आलोचक और प्रचारक ; ज०—१९०७, गोरखपुर ; स्व० पंडित रामचंद्रजी शुक्ल की अध्यक्षता में 'हिंदी में गीतकाव्य' विषय पर रिसर्च

कों; रच०—हिंदी गीतकाव्य, हिंदी मुहावरे और लोकोक्तियाँ, पद्य-मुक्तावली; प०—अध्यापक विश्वेश्वरनाथ हाईस्कूल, अकबरपुर, फैजाबाद।

जगेश्वरदयाल वैश्य, एम० ए०, बी० एस-सी—साहित्य-प्रेमी हिंदी लेखक; ज०—५ दिसंबर, १९१०; शि०—मेरठ कालेज; लेख०—१९३२; रच०—स्वास्थ्य-प्रकाश, चार भाग, स्वास्थ्य-प्रभा—दो भाग, भारतीय कहानियाँ; वि०—अँगरेजी में भी कई पुस्तकें लिखी हैं; प्रि० वि०—विज्ञान और स्वास्थ्य; प०—हेड-मास्टर, स्टेट हाईस्कूल, चूरू, बीकानेर राज्य।

जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' एम० ए०—लब्धकीर्ति कथाकार, सुकवि, प्रसिद्ध समालोचक और विहार के प्रायः सर्वश्रेष्ठ सुवक्ता; अपने ओजस्वी व्याख्यानों से युक्तप्रांत और पंजाब में भी विहार का मस्तक ऊँचा करनेवाले; ज०—१९०४, रामपुरडीह, भागलपुर; ज्ञा०—अँगरेजी, बँगला, मैथिली; रच०—किसलय, मृदुदल, मालिका, मधुमयी, अनुभूति, अंतरध्वनि, प्रेमचंद की उपन्यासकला, चरित्ररेखा; प०—हिंदी-विभागाध्यक्ष, राजेंद्र-कालेज, छपरा।

जनार्दन पाठक—मेलही, सारन-निवासी साहित्य-सेवी और समाजसुधारवादी; ज०—१८९९; रच०—देशोद्धार, स्वराज्य और युधिष्ठिर; प०—सारन, विहार।

जनार्दन मिश्र, एम० ए०, डी० लिट्०, सा० आ०—विहार के मननशील दार्शनिक, अध्ययनशील विद्वान् और सुधी सहृदय समालोचक; ज०—१८९३, मिश्रपुर, भागलपुर; ज्ञा०—अँगरेजी, संस्कृत, बँगला, मैथिली; रच०—विद्यापति, सूरदास, भारतीय संस्कृति की प्रस्तावना के अतिरिक्त ऊँची कक्षाओं के विद्यार्थियों और साहित्य-

प्रेमियों के लिए अनेक सक-लित और संपादित पुस्तकें; प०—हिंदी-विभागाध्यक्ष, बी० एन० कालेज, पटना।

जनार्दन मिश्र 'परमेश'—प्रसिद्ध कवि और पत्रकार; ज०—१८६१, सनैटा, संताल परगना; रच०—हमारा सर्वस्व, रसबिंदु, पद्यपुष्प, सती, जीवन-प्रभात, कालापहाड़, (अनु०) वीरवृत्तांत, घटकर्पर-काव्य, हेमा, राष्ट्रीयगान, बरवै रामायण की टीका; प०—अध्यापक, कुरसेला, पुर्णिया।

जनार्दनराय, एम० ए०, सा० र०—राजस्थान के ख्याति प्राप्त गद्य-लेखक, हिंदी-प्रेमी और साहित्य-सेवी; हिंदी-विद्यापीठ उदयपुर और राज-स्थान हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मंत्री; मासिक 'बाल-हित' के संपादक; मेवाड़ में हिंदी-प्रेम जागरित करने के श्रेयपात्र; अप्र० रच०—कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गद्यकाव्य इत्यादि के संग्रह; प०—हिंदी-अध्यक्ष, विद्याभवन, उदयपुर।

जमनादास व्यास, बी० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक और लेखक; ज०—१६०६; शि०—पंजाब, अली-गढ़ और आगरा विश्वविद्या-लयों में; भू०—सहायक संपादक 'माहेश्वरी' और 'लोकमत'; अप्र० रच०—हमारी अर्थनीति, स्वराज्य की ओर, जैन हिंदी-साहित्य का इतिहास; प०—प्रधाना-ध्यापक, गर्ल्स हिंदी हाई-स्कूल, वर्धा।

जयकांत मिश्र—विष्णु-पुर-निवासी प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और पत्रकार; दैनिक 'आर्यावर्त', पटना के सहकारी और 'ज्योतिषी' के प्रधान संपादक; रच०—इत्सिंग की भारत-यात्रा; प०—सीता-मढ़ी, मुजफ्फरपुर।

जयकिशोरनारायण सिंह—सा० आ०; पकड़ी, निवासी प्रतिष्ठित साहित्य-

सेवी, प्रतिनिधि कथाकार, प्रतिभाशाली कवि और आलोचक; अप्र० रच०—'मेघदूत' का कुछ अनुवादित अंश, सरस कविता-संग्रह, कुछ कहानियाँ और अनेक साहित्यिक तथा आलोचनात्मक लेखों के संकलन ; प०—जमींदार और रईस, मुजफ्फरपुर।

जयगोपाल कविराज—वयोवृद्ध पंजाबी हिंदी-साहित्य-सेवी और सुकवि ; रच०—दयानंद चरितम्—ब्रजभाषा में तुलसी की रामायण के अनुकरण पर महाभारत—इस पर पंजाब सरकार ने पारितोषिक दिया, पति-पत्नी-प्रेम—उप०, सूरजकुमारी, पश्चिमी प्रभाव—ना०, संगीत चिकित्सा हिंदी में अनूठी पुस्तक; वि०—आप लगभग चालीस वर्ष से हिंदी-सेवा में संलग्न हैं ; प०—लाहौर।

जयचंद्र विद्यालंकार—सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ और अध्ययनशील समीक्षक ; भारतीय इतिहास के अनुसंधान में संलग्न ; रच०—भारतीय इतिहास की रूपरेखा—दो भाग ; प०—बनारस।

जयदेव गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—साहित्य-प्रेमी और कुशल पत्रकार; ज०—१२ जून, १९१० आगरा; शि०—हरबर्ट कालेज कोटा, सनातनधर्म कालेज कानपुर और आगरा विश्वविद्यालय ; लेख०—१९३५ ; आजकल युक्त प्रांतीय हिंदी-पत्रकार सम्मेलन के प्रधान मंत्री हैं और गत सात वर्षों से दैनिक 'प्रताप' के संपादकीय विभाग में काम कर रहे हैं ; रच०—गंगोत्री-यात्रा; प०—आर्यसमाज-भवन, मेस्टन रोड, कानपुर।

जयनारायण कपूर, बी० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी, हिंदी-प्रचारक और लेखक ; ज०—१८९९, संभल, मुरादाबाद ; सा०—हिंदी-साहित्य पुस्तकालय की

१९१७ में और हिंदी नाट्य-समिति की १९११ में स्थापना; रच०—उत्तम, मनोहर धार्मिक कहानियाँ, तीन तिलंगे—अनु०उप०, देहली की जाँकनी, गदर की सुबह शाम, गदर देहली के अखबार, अफसरों की चिट्ठियाँ आदि अँगरेजी से अनु०; अप्र०—राज-विज्ञान, प्राचीन भारतीय शिक्षापद्धति, कर्मयोगी श्रीकृष्ण का ऐतिहासिक व्यक्तित्व, ग्राम-पुस्तकालय-व्यवस्था; वि०—मौरावाँ जैसे उर्दू गढ़ में हिंदी के प्रवेश कराने का श्रेय इन्हें ही है; प०—वकील, मौरावाँ, उन्नाव।

जयनारायण झा 'विनीत'—प्रसिद्ध कवि और राष्ट्रीय विचारक; कांग्रेस-कार्यकर्त्ता; ज०—१९०२ बैगनी-नचादा, दरभंगा; रच०—घननादवध, दूत श्रीकृष्ण, वीरविभूति, महिला-दर्पण, कुंज, माला; प०—समस्तीपूर, दरभंगा, बिहार।

जयनारायण वार्ष्णेय—प्रसिद्ध साहित्यिक और लेखक; ज०—१३ मार्च, १९१३; शि०—आगरा, प्रयाग; वालोत्साह पुस्तकालय, श्री-तिलक लाइब्रेरी और औद्योगिक स्कूल के संस्थापकों में; रच०—रोजाना के काम की बातें, दो नगर, ज्ञानगजरा, पंचवटी या मारीचवध, आहार; अप्र०—बिजली के करिश्मे और संघर्ष; वि०—आप अँगरेजी में भी समय-समय पर लिखा करते हैं; प०—अलीगढ़।

जयरामसिंह, एम० एस-सी०, सा० र०—कृषि-विज्ञान और उद्यानशास्त्र के विशेषज्ञ; ज०—जूलाई, १९०७, गाजी-पुर; शि०—आगरा, काशी; राज हरपालसिंह हाईस्कूल जौनपुर में कृषि-अध्यापक १९२७; काशी विश्वविद्यालय में एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट में एग्रानमिस्ट और फार्म सुपरिंटेंडेंट, १९३९; रच०—

कृषि-विज्ञान, उद्यानशास्त्र ; प०—हार्टीकिल्चर और फार्म सुपरिंटेंडेंट, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

जयवंती देवी—जैनसमाज की उत्साही कार्यकर्त्री और उदीयमान लेखिका ; भारतवर्षीय द्वितीय जैनमहिला-समाज की प्रमुख-संचालिका ; 'महिलादर्श' की सहायक संपादिका ; प०—नानौता, सहारनपुर।

जयेंद्र, सा० र०—हिंदी-प्रचारक, कवि और निबंध-लेखक; ज०—१६१८; शि०—प्रयाग और हिंदी विद्यापीठ देवघर ; भूत० संपा०—साप्ताहिक 'चिनगारी', गया ; वि०—आसाम की मणिपुर रियासत और सिलहट, बंगाल में राष्ट्रभाषा-प्रचार किया ; अप्र० रच०—अनेक निबंध और कविता-संग्रह ; प०—कला-निकुंज, साढर, बरवथा, सिलहट, आसाम।

जसवंतसिंह, सरदार—हिंदी-प्रेमी प्रसिद्ध चित्रकार ; ज०—रावलपिंडी ; वि०—अनेक हिंदी कवियों की रचनाओं के लिए चित्र दिए हैं ; प०—ठि० सामयिक साहित्य-सदन, चेंबरलेन रोड, लाहौर।

जहूरबख्श, हिंदी कोविद—बाल और महिला साहित्य के सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक; ज०—१८६६ ; लेख—१६१४ ; रच०—प्रकाशित अप्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग सौ और इतिहास, भूगोल, स्वास्थ्य, नागरिकता, गणित; शिक्षा-पद्धति आदि विषयों पर लिखे लेखों की संख्या लगभग एक हजार है ; वि०—आपकी चौदहवर्ष की कन्या कुमारी मुबारक भी कई बालोपयोगी पुस्तकें हिंदी में लिख चुकी हैं ; प०—अध्यापक, सागर, सी० पी०।

जानकीवल्लभ शास्त्री, सा० आ०, वेदांताचार्य ; सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक, सुकवि समालोचक और संस्कृत-

साहित्य के विद्वान् ; रच०—काकली (संस्कृत क०) रूप और अरूप (क०) कानन और अपर्णा (कहा०), साहित्य-दर्शन (आलो० लेख); प०—मैगरा, विहार।

जानकीशरण वर्मा बी० ए०, बी० एल ; प्रसिद्ध जन-सेवक और बालचरनायक ; प्रयाग-सेवा-समिति की मुख-पत्रिका 'सेवा' के संपादक तथा 'जीवनसखा' के भू० संपादक; बालचर्या के विशेषज्ञ; र०—बालचर, जन-सेवा, सदाचार और स्वास्थ्य के संबंध में अनेक स्फुट लेख ; प०—गया, विहार।

जी० पी० श्रीवास्तव, बी०ए०, एल-एल० बी० हास्य-रस के प्रसिद्ध लेखक और उपन्यासकार ; ज०—अप्रैल, १८९१; १९१४ में 'इंद्रभूषण' स्वर्णपदक और १९२२ में 'गल्पमाला' रजतपदक-प्राप्त ; अनेक साहित्य-सम्मेलनों के सभापति; रच०—लंबीदाढ़ी, मीठी हँसी, नोकझोंक, मार-मारकर हकीम, आँखों में धूल, लतखोरीलाल, दुमदार आदमी, गंगा जमुनी, कंबख्ती की मार ; प०—गंगाश्रम, गोंडा, अवध।

जीवनलाल 'प्रेम', बी० ए०—काश्मीर-निवासी उदीयमान हिंदी कवि, कहानीकार और साहित्य-प्रेमी ; शि०—डी० ए० वी० कालेज, लाहौर ; रच०—पतझर ; अप्र०—दो काव्य - कहानी-संग्रह ; प०—ठि० सामयिक साहित्य सदन, चैंबरलेन रोड, लाहौर।

जुगलकिशोर 'मुख्तार'—जैन-साहित्य के प्रकांड पंडित, लब्धप्रतिष्ठ समालोचक और जैन-पुरातत्व के पारगामी ; ज०—१८७७, सहारनपुर ; जैन इतिहास और पुरातत्त्व के लिए प्रयत्नशील ; हिंदी जैन गजट के संपा०—१९०७, जैन हितैषी के संपा०—१९१९ ; वीर-सेवा-मंदिर की स्था० ;

रच०—मेरी भावना, वीर-पुष्पांजलि, स्वामी समंतभद्र, जिन पूजाधिकार - मीमांसा, ग्रंथ - परीक्षा—चार भाग, उपासना-तत्त्व, विवाह का उद्देश्य, अनित्य - भावना. समाज-संगठन, जैन-ग्रंथ सूची. इत्यादि लगभग पचीस ग्रंथ ; प०—वीर-सेना-मंदिर, सरसाँवाँ, युक्तप्रांत।

जैनेंद्रकुमार जैन—सुप्रसिद्ध कहानी-उपन्यास-निबंध-लेखक और स्वतंत्र विचारक; ज०—१६०५ ; शि०—जैनगुरुकुल ऋषि-ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनापुर, हिंदू - विश्वविद्यालय, काशी; लेख—१६२६; भूत० संपा०—मासिक 'हंस' काशी; रच०—परख, त्यागपत्र, सुनीता, तपोभूमि, प्रस्तुत प्रश्न वातायन एक रात, दो चिड़ियाँ, फाँसी, स्पर्धा, राजकुमार का पर्यटन प०—७ दरियागंज, दिल्ली।

ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'—सुप्रसिद्ध लेखक, सहृदय आलोचक और कुशल पत्रकार ; ज०—१८६५ ; भूत० संपा०—'मनोरमा', 'भारतेंदु', साप्ताहिक 'भारत', 'देशदूत' और सम्मेलन पत्रिका ; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उत्साही कार्यकर्त्ता ; रच०—श्री-कवि-कौमुदी, नवयुग-काव्य-विमर्श ; प०—'देशदूत'-संपादक, इंडियन प्रेस, प्रयाग।

ज्योतींद्रप्रसाद झा 'पंकज', सा० लं०—प्रसिद्ध कवि और काव्य-मर्मज्ञ ; रच०—रस, अलंकार इत्यादि का एक आलोचनात्मक लक्षण-ग्रंथ ; अप्र० रच०—सरस कविताओं के दो-तीन संग्रह ; प०—सारठ, संताल परगना, बिहार।

जौहरीमल सर्राफ—प्रगतिशील सुधार-साहित्य के लेखक और विचारक; रच०—विवाह क्षेत्र-प्रकाश, जैन-जाति सुदशा-प्रवर्तक, मंगलादेवी, गृहस्थधर्म-चर्चासागर समीक्षा,

दान-विचार - समीक्षा, सूर्य-प्रकाश-समीक्षा, धर्म की उदारता ; प०—दिल्ली ।

जौहरीलालजी शर्मा—प्रसिद्ध हिंदी-लेखक, साहित्य-प्रेमी और विद्वान् ; ज०—१८६७ ; संस्कृताध्यापक गवर्नमेंट हाईस्कूल बुलन्दशहर तथा प्रोफेसर गवर्नमेंट कालेज मुरादाबाद; भूत० संपा०—'गौड़ ब्राह्मण'; सभा०—इंद्रप्रस्थीय ब्राह्मण सभा ; उपसभा०—दिल्ली वर्णाश्रम स्वराज्य संघ; रच०—गायत्री मीमांसा, रागविद्याभ्यासआदि अप्र०—अनेक सुंदर निबंध-संग्रह; प्रि० वि०—धर्म और दर्शन ; प०—शीतलगंज, बुलंदशहर ।

टाकुरप्रसाद शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी विद्वान्, अध्ययनशील लेखक और प्राचीन कविता के मर्मज्ञ ; ज०—१८६६ ; रच०—कवितावली का सुसंपादित सटीक संस्करण; अप्र०—विभिन्न पत्रिकाओं में छपे सामयिक निबंधों और कविताओं के संग्रह ; प०—एक्ज़ीक्यूटिव आफिसर, म्यूनिसिपल बोर्ड, बनारस ।

तपेशचंद त्रिवेदी—प्रसिद्ध लेखक, सुकवि और कुशल पत्रकार ; ज०—१६१२ ; भूत० सहकारी संपा०—मासिक 'गंगा', और 'बीसवीं सदी', तथा साप्ताहिक 'हलधर'; अप्र० रच०—कालिंदी (कवि०), हेमंत (कहा०) ; प०—ग्राम गोईदा, पो० तारापुर, भागलपुर ।

तारकेश्वरप्रसाद—कुशल कहानी-लेखक और पत्रकार ; 'बीसवीं सदी' के संपादकों में; सा०—भारतेंदु साहित्य-संघ मोतिहारी और स्थानीय नवयुवक पुस्तकालय के उत्साही कार्यकर्त्ता ; रच०—गाँव की ओर (उप०); अप्र० रच०—पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी अनेक कहानियों और लेखों के संग्रह ; प०—अमलपट्टी,

मोतिहारी, विहार।

तारा कुमारी वाजपेयी, सा० र०—उदीयमान कहानी-लेखिका और आलोचिका; ज०—२० नवंवर, १९२२; अप्र० रच०—देवयानी (ना०), काव्य में छायावाद, तथा दो कहानी और आलोचनात्मक लेख-संग्रह; प०—ठि० रा० व० पं० संकटाप्रसाद वाजपेयी, बी० ए०, लखीमपुर, खीरी।

ताराशंकर पाठक, बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—साहित्य-प्रेमी अध्ययनशील विद्वान् और गंभीर आलोचक; ज०—१९११; शि०—इंदौर, आगरा, बनारस; सा०—मध्यभारत की हिंदी-साहित्य-समिति की कार्यकारिणी के उत्साही कार्यकर्त्ता, प्रांतीय हिंदी साहित्यसम्मेलन के प्रतिष्ठित सदस्य; हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा उसके साहित्य की अभिवृद्धि में संलग्न; अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संवंध और सक्रिय सहयोग; रच०—हिंदी के सामाजिक उपन्यास; अप्र०—हिंदी नाट्य साहित्य; प०—तुकोगंज, इंदौर।

तुलसीदत्त 'शैदा'—पंजाव-निवासी प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी और राष्ट्रभाषा-प्रचारक; हिंदी को उसका अधिकार दिलाने और उसके साहित्य का प्रचार-प्रसार करने में प्रयत्नशील; अनेक छोटे-छोटे प्रसार-संवंधी पैंफ्लेटों के रचयिता; स्थानीय हिंदीप्रचारिणी सभाओं के उत्साहीकार्यकर्त्ता; प०—१९ राणाप्रताप स्ट्रीट, कृष्णनगर, लाहौर।

तुलसीदास शर्मा 'नवल', बी० ए०, एल-एल० बी—कुशल लेखक, सुकवि और साहित्य-प्रेमी; ज०—१९०२ झाँसी; सा०—अनेक कवि-सम्मेलनों के सभापति; अप्र० रच०—दो-तीन काव्य-संग्रह; प०—वकील, ओरछा स्टेट, बुंदेलखंड।

तेजनारायण काक 'क्रांति', बी० ए०—सहृदय गद्यकाव्य-लेखक, कहानीकार और आलोचक ; ज०—१६१४ अमृतसर ; शि०—प्रयाग विश्वविद्यालय ; लेख—१६३० ; रच०—मदिरा (गद्यकाव्य); अप्र०—कुसुम-शर और धूपछाँह ; प०—जोधपुर।

दंडमूडि वेंकट कृष्णराव, सा० र०—साहित्य-प्रेमी हिंदी प्रचारक ; ज०—२० अप्रैल, १६११, मद्रास ; शि०—जैनी विद्यापीठ, साबरमती, प्रयाग ; अनेक हाई स्कूलों में हिंदी के प्रधानाध्यापक ; प०—अध्यापक, गूटी हिंदी प्रचार सभा, अनंतपुर।

दयानिधि पाठक, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—लेखक और वकील ज०—१८६८ ; शि०—प्रयाग, आगरा ; ज्ञा०—संस्कृत अँगरेजी ; अप्र० रच०—कुमार कर्तव्य ; वेणी संहार नाटक, देवदास, हिंदू, मिसमेयो, प०—वकील, खानपूर, इटावा।

दयाशंकर दुबे, एम० ए० एल-एल० बी०—राजनीति और नागरिक शास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान्, कुशल-लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—२८ जुलाई, १८६६ ; शि०—होशंगाबाद; सा०—कई वर्ष तक परीक्षा प्रबंध और अर्थ मंत्री हिंदी-साहित्य सम्मेलन ; भारतवर्षीय हिंदी अर्थशास्त्र परिषद् के मंत्री और सभापति १६२३ में; रच०—भारत में कृषिसुधार, विदेशी विनिमय, ब्रिटिश साम्राज्य शासन (श्रीभगवानदास केलाजी के साथ), अर्थशास्त्र-शब्दावली (केलाजी के और श्रीगदाधरप्रसाद के साथ), हिंदी में अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य (केलाजी के साथ), भारत के द्वादश तीर्थ, नर्मदा-रहस्य, संपत्ति का उपयोग, धन की उत्पत्ति,

सरल अर्थशास्त्र, (केलाजी के साथ), ग्राम्य अर्थशास्त्र, भारत का आर्थिक भूगोल, अर्थशास्त्र की रूपरेखा, सरल राजस्व, गंगा-रहस्य, संध्या-रहस्य ; वि०—इनके अतिरिक्त अनेक बालोपयोगी और पाठ-ग्रंथ ; अँगरेजी ग्रंथ—'दि वे टु एग्रीकल्चरल प्राग्रेस', 'एलीमेंट्री स्टेटिस्टिक्स' (श्री शंकरलाल अग्रवाल के साथ), 'सिंपल् डाइग्राम्स' (अग्रवाल जी के साथ); प्रि० वि०—अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र; प०—दुबे - निवास, ८७२ दारागंज, प्रयाग ।

दरबारीलाल जैन, सत्यभक्त, सा० र०—समाजसुधारक, धार्मिक लेखक तथा दर्शन शास्त्र के ज्ञाता ; ज०—१८६६, शाहपुर सागर जिला; शि०—प्रयाग, कलकत्ता, बिहार ; हुकुमचंद महाविद्यालय इंदौर और महावीर विद्यालय बंबई के अध्यापक रहे ; सत्यसमाज और कुलपतिआश्रम वर्धा की स्थापना; भूत० संपा०—'परिवार-बंधु', 'जैनजगत' तथा 'जैन-प्रकाश', 'सत्यसंदेश'; र० च०—धर्ममीमांसा प्र०भा०, जैनधर्ममीमांसा प्र० भा०, न्याय-प्रदीप, जैनधर्म और विधवा-विवाह ; भारतोद्धार नाटक, जैनधर्ममीमांसा दूसरा और तीसरा भाग, कृष्णगीता, सत्रियरत्न और धर्मरहस्य (अप्रकाशित) प०—शाहपुर, सागर जिला ।

द्वारकाजी कुँवर, शेरजंग बहादुर शाह—प्रसिद्ध राष्ट्र-सेवी, हिंदी-प्रेमी और लेखक; ज०—बनारस ; शि०—रामनगर में सैनिक, नागरिक एवं राज्य प्रबंधकारिणी शिक्षा ; सा०—१६३२-३४ में स्वर्गीय काशिराज के प्रतिनिधि तथा नॉनआफिशल तौर पर राज-कार्य-संचालन में सहायक और सलाहकार ; १६३४ में रामनगर छोड़ राष्ट्र-सेवा में संलग्न ; ग्राम-सुधार

और साक्षरता - प्रसार के समर्थक ; हस्तलिखित 'साक्षरता' के संचालक ; अखिल भारतीय साक्षरता-परिषद् के संस्थापक ; १२ वर्ष के परिश्रम से 'दृष्टि पर हिंदी-साक्षरता' नामक आविष्कार किया ; इस चित्र पर दृष्टि डालते ही हिंदी अक्षरों, मात्राओं एवं मिलावटों का ज्ञान हो जाता है ; रच०—यदि मैं काशिराज होता ? काशिराज-ग्राम-सुधार-योजना प्रौढ़ शिक्षा; अप्र०—साक्षरता-प्रचार ; प०—अखिल भारतीय साक्षरता - परिषद्, साक्षरतापीठ, प्रयाग।

द्वारिकाप्रसाद, एम० ए०—उदीयमान कहानीलेखक और साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी; ज०—मार्च १९१८; रच०—परियों की कहानियाँ, भटका साथी, स्वयंसेवक—उप०, आदमी—ना० ; अप्र०—सुनील, भूल के पुतले, चुंबन-विज्ञान और दो-तीन कहानी-संग्रह ; प०—लोहरदगा, विहार।

द्वारिकाप्रसाद गुप्त—गया के सुप्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—२१ अगस्त १९०६ ; शि०—हाई स्कूल तक ; लेख०—१९२४; रच०—मगध का महत्त्व ; दयानंद सरस्वती की जीवनी, स्वामी श्रद्धानंद, पंचरत्न, पुस्तकालय का इतिहास, बिहार के हिंदी - सेवक, गया के लेखक और कवि इत्यादि लगभग तीस ग्रंथ ; वि०—कई हस्तलिखित पत्रिकाओं और साप्ताहिक 'गृहस्थ' के भूतपूर्व संपादक ; अनेक साहित्यिक संस्थाओं और सम्मेलनों के भूतपूर्व मंत्री ; प०—लहेरी टोला, गया।

द्वारिकाप्रसाद मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी कार्यकर्ता; ज०—१९०१; सा०—मध्यप्रांत में काँग्रेसी एम० एल०ए० और मिनिस्टर;

बी० ए०—सेकसरिया-पुरस्कार-विजेत्री और प्रमुख कहानी तथा गद्य-काव्य - लेखिका ; ज०—१९१८; शि०—मारिस कालेज, नागपुर ; रच०—शबनम, मौक्तिक माल, शारदीय ; अप्र०—दो-तीन गद्य-काव्य और कहानी-संग्रह ; प्रि० वि०—गद्य-काव्य और कहानी ; वि०—प्रथम रचना पर हिं० सा० सम्मे० के मद्रास अधिवेशन में सेकसरिया पुरस्कार दिया गया ; प०—द्वि० प्रो० श्यामसुंदर चोरडिया एम० ए०, मारिस कालेज, नागपुर।

दिवाकरप्रसाद विद्यार्थी, एम० ए०—सुबैया-निवासी सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक, संवेदनशील कवि, गंभीर विचारक और सूक्ष्मदर्शी समालोचक ; ज०—१९११ ; अप्र० रच०—अनेक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी कविताओं, कहानियों और निबंधों के कई संग्रह ; प०—अँगरेजी अध्यापक, पटना-कालेज, पटना।

दीनदयालु गुप्त, एम० ए०, एल-एल० बी०—साहित्य-प्रेमी अध्ययनशील विद्वान्, प्राचीन साहित्य-मर्मज्ञ और कुशल आलोचक ; शि०—प्रयाग ; सा०—अष्टछाप के कवियों पर डी० लिट् उपाधि के लिए विशेष अध्ययन कर चुके हैं ; थीसिस तैयार है ; नंददास के संबंध में अनेक मौलिक लेख विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुए हैं ; प०—अध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

दीनदयाल 'दिनेश'—अजमेर के सुप्रसिद्ध कवि, कहानीकार, एकांकी-लेखक और आलोचक ; ज०—१ जनवरी, १९१४ ; ज्ञा०—उर्दू, फारसी, गुजराती ; लेख—१९३० ; सा०—'राजपूताना क्रानिकल', 'चलचित्र', 'परिवर्तन', 'कैलाश', 'नवज्योति' आदि के संपादकीय विभागों में काम किया ;

संपा०—साप्ताहिक 'विजय'; रच०—उस ओर (कहानी-संग्रह) ; प०—क्लर्क, कृषि औद्योगिक डी० ए० वी० कालेज, अजमेर ।

दीनानाथ व्यास—प्रसिद्ध निबंध-लेखक और कवि ; ज०—१६०६, उज्जैन; लेख—१६२६ ; प्रधान संपादक, मासिक सिनेमा सीरीज, १६३६; रच०—गल्प-विज्ञान प्रतिन्यास-लेखन, काम-विज्ञान टाल्सटाय और गांधी, हृदय का भार, अरमानों की चिता; अप्र०—मैं और तुम (गद्य का०), सपनों के दीप (का०), दो-तीन निबंध और कविता-संग्रह ; प०—उज्जैन ।

दीपनारायण मणि त्रिपाठी, एम० ए०, बी० टी०, सा० र०—साहित्य-प्रेमी हिंदी लेखक और प्रसिद्ध विद्वान् ; ज०—१६१० ; सा०—कुशी-नगर के साहित्य-विद्यालय के संचालक ; स्थानीय हिं० सा० सम्मे० के परीक्षा-केंद्र के व्यवस्थापक ; प०—प्रधानाध्यापक, बुद्ध हाईस्कूल, कुशीनगर, गोरखपुर ।

दुर्गादत्त पांडेय 'विहंगम', 'वेढवानंद'—साहित्य प्रेमी प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक ; ज०—८ अक्टूबर, १८६४ कोटा, नैनीताल ; भू० संपा०—'शक्ति' अलमोड़ा (पाँच वर्ष तक) 'शंकर' मुरादाबाद ; वर्त० संपा०—साप्ताहिक और दैनिक 'प्रताप', कानपुर ; रच०—रामचंद्राननी, नक्षत्रवती, सावित्री, देवयानी आदि नाटक और कांड-गीतांजलि ; प्रि० वि०—हास्यरस; प०—सहकारी संपादक 'प्रताप', कानपुर ।

दुर्गानारायण 'वीर ज्ञयदर्शी', कविराज, साहित्य-वाचस्पति, भारतीभूषण ; प्रसिद्ध लेखक, कवि, हिंदी-प्रचारक तथा प्रेमी ; ज०—१६०८, केवलारी ; शि०—केवलारी, दमोह, नागपूर,

देहली ; लेख—१९२४ ; संस्था०—शांति - साहित्य-सदन तथा हिंदी प्रचार समिति, कुमार-सभा और व्याख्यान-विनोदिनी-सभा आदि कई संस्थाएँ, पुस्तकालय तथा वाचनालय ; हस्तलिखित दैनिक प्रभात तथा हस्तलिखित मासिक 'प्रभातसंदेश' के संपा० ; रच०—पूर्णिमा, तारिका, तूणीर आदि लगभग २५ पुस्तकें ; अप्र०—स्वतंत्र किरण, करुण कटक, मधुर मकरंद, भारती, दिग्विजय ; प०—केवलारी, पथरिया, सागर, सी० पी० ।

दुर्गाप्रसाद अग्रवाल 'अनिरुद्ध', एम० ए०, सा० र०—कवि और साहित्य-प्रेमी; ज०—१९११ ; शि०—ग्वालियर और कानपुर ; लेख—१९३१ ; रच०—वीणापाणि (क०) ; अप्र०—मेघदूत (अनु०) ; प०—झाँसी ।

दुर्गाशरण पांडेय, सा० र०—धार्मिक लेखक और कवि ; ज०—१९००, बदायूँ; शि०—प्रयाग, काशी, जा०—संस्कृत और अँगरेजी; रुड़की गवर्नमेंट स्कूल और अमरोहा गवर्नमेंट स्कूल में हिंदी तथा संस्कृत के अध्यापक रहे ; रच०—रघुवंश टीका, संस्कृत रीडर दूसरा भाग, लिंगानुशासन, अष्टाध्यायी, सरलकारकी ; प०—गवर्नमेंट इंटर कालेज, मुरादाबाद ।

दुर्गाशंकर दुर्गावत—उदीयमान लेखक,सुवक्ता,सार्वजनिक कार्यकर्त्ता और देश-प्रेमी ; ज०—१९१७; सा०—अनेक वर्षों से मेवाड़ में हिंदी-प्रचार-प्रसार में संलग्न ; रच०—राणासांगा, लोकतंत्र की वैदिक धारणा ; प०—ब्रह्मपुरी, उदयपुर, मेवाड़ ।

दुर्गाशंकरप्रसादसिंह, महाराजकुमार — प्रसिद्ध कहानी-उपन्यास-लेखक और गद्य-काव्यकार ; रच०—ज्वालामुखी (गद्य-काव्य) हृदय की ओर (उप०), भूख

की ज्वाला; अप्र०—दो-तीन सुंदर कहानी-संग्रह ; प०—दिलीपपुर।

दुलारेलाल भार्गव—देव-पुरस्कार के सर्वप्रथम विजेता, उत्साही प्रकाशक और अनेक नवीन योजनाओं के आयोजक; ज०—१६०१ ; सा०—भूत० संपा० मासिक 'माधुरी', 'सुधा' और 'बालविनोद' ; गंगापुस्तकमाला और गंगा-फाइन-आर्ट प्रेस के संस्थापक; रच०—दुलारे दोहावली—ब्रजभाषा में दोहे ; अप्र०—एक गीत-संग्रह ; वि०—आपकी धर्मपत्नी सुश्री सावित्री एम० ए० सुंदर रचना करती हैं; पं०—कवि-कुटीर, लाटूश रोड, लखनऊ।

देवकीनंदन बंसल—उदीयमान लेखक और हिंदुत्व-प्रचारक ; रच०—प्रेम और जीवन, सौंदर्य और फिल्म-संसार ; प्रि० वि०—भक्ति, प्रेम और राष्ट्रीय कविता ; प०—मधुर मंदिर, हाथरस।

देवदत्त 'अटल'—उदीयमान कहानी-लेखक और साहित्य-प्रेमी ; रच०—एक सुंदर कहानी-संग्रह ; प०—लाहौर।

देवदत्त कुंदाराम शर्मा—कांग्रेसी कार्यकर्त्ता, हिंदी के अधिकारों के समर्थक और उसके प्रेमी ; अनेक वर्षों से सिंध-से अहिंदी प्रांत में हिंदी-प्रचार-प्रसार में संलग्न ; अब सिंध प्रांत की राष्ट्रभाषा-समिति के प्रधान मंत्री हैं ; प०—हैदराबाद, सिंध।

देवदूत विद्यार्थी—मोतिहारी-निवासी सुलेखक और सुवक्ता ; दक्षिण भारत-हिंदी-प्रचार-केंद्र में बीस वर्षों से प्रचार-कार्य में सहयोग दे रहे हैं ; रच०—तूणीर ; प०—मोतिहारी, बिहार।

देवनारायण कुँवर 'किसलय', सा० र०, सा० अ०—प्रसिद्ध बिहारी कवि और साहित्य-प्रेमी आलोचक ; ज०—२४ मई, १६१६, प्रयाग;

'साहित्यालंकार' में सर्वप्रथम होने के उपलक्ष में स्वर्णपदक प्राप्त ; साप्ताहिक 'राष्ट्रसंदेश' के संयुक्त संपादक, १९३९ ; रच०—आधुनिक हिंदी-कविता, पदध्वनि और प्रत्याशा; प०—पूर्णिया, विहार।

देवनारायण द्विवेदी—उदीयमान हिंदी-लेखक और साहित्य-प्रेमी; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उत्साही सहायक; रच०—दहेज; प०—प्रयाग।

देवराज उपाध्याय, एम० ए०—बभनगाँवाँ - निवासी प्रसिद्ध निबंध-लेखक और आलोचक ; रच०—साहित्य की रूपरेखा ; अप्र० रच०—साहित्यिक और आलोचनात्मक लेखों के अनेक संग्रह ; प०—हिंदी-अध्यापक, जसवंत-कालेज, जोधपुर।

देवव्रत शास्त्री—चंपारन-निवासी सुप्रसिद्ध पत्रकार, देश-सेवक और जीवनी-लेखक; ज०—१९०२; 'प्रताप', कानपुर के भू० सहकारी और 'नवशक्ति' तथा 'राष्ट्रवाणी' के वर्तमान प्रधान संपादक, विहार में पत्र-संचालन-कला के सफल प्रचारक और श्रेष्ठ उन्नायक ; रच०—गणेशशंकर विद्यार्थी और मुस्तफा कमालपाशा ; अप्र० रच०—अनेक स्फुट लेख-संग्रह ; प०—साप्ताहिक 'नवशक्ति'-कार्यालय, पटना।

देवीदत्त शुक्ल—मातृभाषा हिंदी के जनक, आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी के प्रिय शिष्य, 'सरस्वती' के यशस्वी संपादक, बाल-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्वान्; लेख०—१९२०; इसी समय से 'सरस्वती' के प्रधान संपादक ; रच०—'विचित्रदेश में' (कई भाग) जैसी बालोपयोगी पुस्तकों के अतिरिक्त अनेक सुंदर ग्रंथ ; संपा०—द्विवेदी काव्य-माला, भट्ट निबंधावली—दो भाग ; प०—'सरस्वती' के प्रधान संपादक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।

देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'—प्रसिद्ध हिंदी लेखक कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१० जूलाई, १६११ ; लेख०—१६३० ; भूत० संपा—'स्काउट मित्र', 'महा-वीर' तथा उपसंपा०—'नव-राजस्थान' और 'नवभारत' ; रच०—मंजरी (दंपति-कवि का सम्मिलित प्रयास), मीठी तानें, बिजली, महारानी दुर्गावती—इस खंडकाव्य पर मध्यप्रांतीय हिं० सा० सम्मे० से नवम अधिवेशन में 'मीर-पुरस्कार' और बरार लिटरेरी एकेडेमी नागपुर से पुरस्कार मिला, अंतर्ज्वाला, दुनिया के तानाशाह, रैन-बसेरा, आँख-मिचौनी, धधकती आग, फ्रांस की श्रेष्ठ कहानियाँ. रंगमहल—उप०, सन्नाटा और उलट-फेर—कहा० ; वि०—आपकी श्रीमतीजी भी सुंदर कविता करती हैं ; तथा आपके सुपुत्र चिरंजीव हरिदयाल ने बारह वर्ष की अल्पायु में ही एक बालोपयोगी पुस्तक प्रकाशित की है ; प०—उप-संपादक 'माया', मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

देवीदयाल शुक्ल 'प्रण-येश'—यशस्वी कवि और साहित्य-प्रेमी; ज०—१६०८; ज्ञा०—बँगला और संस्कृत; लेख०—१६२७ ; रच०—मुक्तसंगीत, निशीथिनी, कालिंदी, विजयाविहार; अप्र०—स्वामी शंकराचार्य प्रबंधकाव्य ; कई संस्थाओं के मंत्री और संस्थापक; प०—ठि० प्रकाशचंद रामदयाल, चौक, कानपुर।

देवीदयाल सामर, बी० ए०—प्रसिद्ध कहानी-गद्य-काव्य-लेखक, कवि, अभिनेता और संगीत-प्रिय ; ज०—१७ जूलाई, १६१२; शि०—हिंदू और आगरा विश्व-विद्यालय ; लेख० १६३० ; उदयपुर के विद्याभवन के आजीवन सदस्य ; इंदौर, काशी, उदयपुर आदि स्थानों

में अभिनय कर चुके हैं ; अप्र० रच०—गद्य-काव्यों के दो-तीन, कविता और कहानियों के एक-एक संग्रह ; प०—अध्यापक विद्याभवन, उदयपुर।

देवीदीन त्रिवेदी, एम० ए०, सा० र०—काव्यानुरागी हिंदी लेखक और साहित्य-सेवी ; ज०—१६१०, गोरखपुर ; शि०—प्रयाग ; भूत० संपा०—मासिक 'कान्यकुब्ज हितकारी', कानपुर, १६३१-३२ ; रच०—कांट-शिक्षण-शास्त्र (अनु०), बैसवाड़ी भाषा का इतिहास, आधुनिक रूप ; वि०—आपकी पत्नी सौ० राजराजेश्वरी त्रिवेदी 'नलिनी' ख्यातिप्राप्त कवयित्री हैं ; प०—डिप्टी इंस्पेक्टर, प्रतापगढ़।

देवीप्रसादगुप्त 'कुसुमाकर' (हिंदी में), 'गुलजार' (उर्दू में), बी० ए०, एल-एल० बी०—साहित्य-प्रेमी कवि और प्रसिद्ध लेखक; ज०—१८६३ ; रच०—इतिहासदर्पण, संयुक्तराष्ट्र की शासन-प्रणाली, उपाधि की व्याधि, कबीर और होली, बनावटी गवाह इत्यादि गद्य-पद्य की लगभग एक दर्जन पुस्तकें; प०—वकील, सोहागपुर, सी० पी०।

देवेंद्रकुमार जैन 'दिवाकर', न्यायतीर्थ, शास्त्री, सा० र०—साहित्य-प्रेमी आलोचक और लेखक ; ज०—३१ जनवरी, १६१४, उदयपुर ; भूत० प्रधानाध्यापक सुधाजैन विद्यालय, मारवाड़; रच०—महिला-महत्त्व ; प०—हिंदी अध्यापक, काल्विन इँगलिश मिडिल स्कूल, कुशलगढ़, राजपूताना।

देवेंद्रसिंह, एम० ए०—सुप्रसिद्ध लेखक और विचारक; ज०—१६०३ ; शिक्षा—अँगरेजी में एम० ए० और आई० सी० एस० ; सा०—लीडर के संपादकीय विभाग में कई साल तक काम किया;

अनेक साहित्य-सेवी संस्थाओं से घनिष्ठ संबंध है ; कई पत्रों का संपादन कर चुके हैं ; पत्र-कार कला पर अनेक लेख लिखे, कविताएँ भी लिखीं ; अब 'कायस्थ समाचार' के संपादक; प०—अध्यापक, कायस्थ पाठशाला, प्रयाग।

धनराजप्रसाद जोशी 'हिमकर'—साहित्य-प्रेमी, कवि और सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता ; ज०—१९१२ ; र०—तकलीगान; अप्र०—राष्ट्रीयता - भावनायुक्त कवि-ताओं के दो-तीन संग्रह ; प०—सहायक शिक्षक, हिंदी प्राथमिक शाला, सोहागपुर।

धनीराम बक्शी, मुनि, सा० भू०—प्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी और हिंदी-अधिकारों के समर्थक ; ज०—१८६६ ; सा०—हिंदी सभा के स्थापक, र०—तूफान, मार्गोपदेशिका चित्र, हिंदी वर्णबोध, लाल-बुझक्कड़ भजनमाला, बालहितोपदेश, बालरामायण, नगपुरिया झूमर, शिशुशिक्षा तथा सरल पत्रबोध आदि लगभग दो दर्जन ग्रंथ ; प्रि० वि०—साहित्य, दर्शनशास्त्र तथा आयुर्वेद ; प०—बरकंदाज टोली, चाई बासा, सिंहभूमि (विहार)।

धर्मपाल, वि० लं०—हिंदुत्व-प्रेमी, प्रसिद्ध लेखक और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; शि०—गुरुकुल काँगड़ी, सहारनपुर ; सा०—स्व० श्रीश्रद्धानंदजी के प्राइवेट सेक्रेटरी ; भूत० संपा०—दैनिक 'अर्जुन', दिल्ली; दैनिक 'तेज' के भूत० व्यवस्थापक ; स्थानीय आर्यसमाज के समय समय पर मंत्री, अथवा प्रधान ; अनेक ग्रंथों की रचना की ; प०—ठि० आर्य-समाज, बदायूँ।

धर्मपालसिंह— गौरजा, दरभंगा - निवासी प्रतिष्ठित साहित्यसेवी और गोमाता के भक्त ; सभी देशी-विदेशी

गोपालन-साहित्य का अध्ययन और मनन किया; 'किसान-केसरी' और 'जीव-दया-गोपालन' के भू० संपा०; विहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के सहायक; रच०—गोपालन की पहली-दूसरी पोथी; तथा गोरक्षा-संबंधी अनेक स्फुट लेख; प०—प्रबंधक, गोशाला, दरभंगा।

धर्मवीर, एम० ए०—सुप्रसिद्ध लेखक, कहानीकार और पर्यटन-प्रेमी लेखक; ज०—१९०४ झेलम, पंजाब; शि०—लाहौर, नैपाल, पटना, दिल्ली; रच०—संसार की कहानियाँ अप्र०—दो लेख-कहानी-संग्रह; अनु०—श्रीभाई परमानंद की लगभग बारह उर्दू पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद; आकाशवाणी (हिंदी) के भूतपूर्व और १९२५ से दैनिक और साप्ताहिक 'हिंदू' (उर्दू) के वर्तमान संपादक; वि०—१९३३ में गोलमेज कानफ्रेंस से संबद्ध पार्लियामेंटरी कमेटी में श्रीभाई परमानंद की सहायता के लिए लंदन गए; इंग्लैंड, फ्रांस, इटली में कला की शिक्षा के लिए निवास किया; १९३४ में चीन, जावा, वाली, लंका आदि अनेक देशों में कला की क्रियात्मक अनुभूति के लिए भ्रमण; अनेक अँगरेजी पत्रों में भी लिखते हैं; ला० हरदयालजी की जीवनी भी अँगरेजी में लिखी है; प्रि० वि०—चित्र और कहानी कला; प०—शीशमहलरोड, लाहौर।

धर्मवीर प्रेमी, एम० ए०, सा० र०—साहित्य-प्रेमी लेखक और कवि; शि०—मेरठ, आगरा और नागपुर; रच०—प्रबंध-बोध, आर्य-जगत के उज्ज्वल रत्न, वर्तमान समय में हिंदीसाहित्य समिति मेरठ के मंत्री हैं; प०—प्रिंटिंग प्रेस, मेरठ।

धर्मसिंह वर्मा, सा० वि०, सा० शास्त्री—साहित्य के

अध्ययनशील प्रेमी और लेखक ; ज०—१६०३, मिश्रीपुर, हरदोई ; शि०—प्रयाग, काशी, लाहौर ; र०—सौभद्र, राधेय ; अप्र०—अनेक फुटकर कविता संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक सेठिया कालेज, बीकानेर ।

धर्मेंद्रनाथ शास्त्री, तर्क-शिरोमणि—प्रसिद्ध हिंदी लेखक, विचारशील आलोचक और देशप्रेमी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; ज०—४ नवंबर, १८६७ ; सा०—१६२३-२४ में गुरुकुल वृंदावन में आचार्य रहे ; आर्यसमाज में जात-पाँत तोड़ने में विशेष प्रयत्न-शील ; आर्य-सार्वदेशिक सभा की कार्य-कारिणी के सदस्य ; र०—'जन्मभूमि' नामक पत्र के प्रकाशक और संपा० ; र०—दिव्य-दर्शन, सदा-चार, संध्या, पथ-प्रदीप ; वि०—आपकी धर्मपत्नी श्री-मती उर्मिला शास्त्री ने असह-योग में सक्रिय भाग लिया ; प०—प्रोफेसर गवर्नमेंटकालेज, मेरठ ।

धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, शास्त्री, एम० ए० (त्रितय)—सीवान-निवासी सुप्रसिद्ध निबंधकार और समालोचक ; ज०—सितंबर १६०५ ; 'रोशनी'-संपादक ; र०—पुरुष-प्रकृति और रमणी-निर्माण, गुप्तजी के काव्य में कारुण्यधारा; हरिऔधजी का प्रियप्रवास, संतकवि दरियादास ; अप्र० र०—पत्र - पत्रिकाओं में बिखरे अनेक आलोचनात्मक लेखों के संग्रह ; वि०—संतकवि महात्मा दरियासाहब की बीसों अप्रकाशित पुस्तकों की खोज के पश्चात् आपने उन पर आलोचनात्मक थीसिस डी० लिट्० उपाधि के लिए पटना विश्वविद्यालय में प्रस्तुत की है ; प०—हिंदी अध्यापक, पटना कालेज ।

धीरेंद्र वर्मा, डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्०—सुप्रसिद्ध भाषा - वैज्ञानिक,

ब्रजभाषा-काव्य के मर्मज्ञ विद्वान् और अधिकारी लेखक ; ज०—१८६७ बरेली; शि०—डी० ए० वी० स्कूल देहरादून, क्वींस हाई स्कूल लखनऊ और म्योर सेंट्रल कालेज इलाहाबाद ; लेख०—१९२० ; सा०—हिंदी की उच्चकक्षाओं का पाठ्यक्रम क्रमबद्ध करने में लगे रहे ; १९३४ में भाषा शास्त्र तथा प्रयोगात्मक ध्वनि-विज्ञान के अध्ययन के लिए योरप गए ; १९३५ में पेरिस यूनीवर्सिटी से डी० लिट्० उपाधि प्राप्त की ; हिंदुस्तानी एकेडेमी और हिं० सा० सम्मे० से घनिष्ठ संबंध, एकेडेमी की त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदुस्तानी' के आरंभ से संपादक मंडल में हैं, 'सम्मेलन पत्रिका' के भी संपादक रहे ; बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र देश के समान अहिंदी-भाषी-प्रदेश में भारतीयता के साथ-साथ प्रादेशिक व्यक्तित्व की भावना जागरित करने के समर्थक ; क्षणिक राजनीतिक उद्देश्यों की दृष्टि से असाहित्यिक लोगों के द्वारा हिंदी-भाषा, लिपि और शैली के साथ खिलवाड़ करने के विरोधी ; रच०—हिंदी राष्ट्र, अष्टछाप, ग्रामीण हिंदी, हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी भाषा और लिपि, ला लाग ब्रज, ब्रजभाषा-व्याकरण; अप्र०—अनेक सामयिक और भाषा रूप-संबंधी विषयों पर विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख-संग्रह ; प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

धेनुः क्षेत्र झा, सा० र०—साहित्य-प्रेमी-प्रचारक और लेखक; ज०—१८९१, शि०—पटना ; हिं० सा० सम्मे० के चंपारन-परीक्षा-केंद्र के संस्थापक ; रच०—रामायण रस-सार, साहित्य-कोष ; प०—अध्यापक, महेश्वरी एकेडेमी, कटिहार, बिहार ।

नगेंद्र (नागैच,) एम० ए० (हिंदी-अँगरेजी) – अध्ययनशील विद्वान्, उदीयमान आलोचक और साहित्य-प्रेमी; ज०—२४ मार्च, १६१५ अतरौली, अलीगढ ; शि०—आगरा और नागपुर विश्वविद्यालय ; र०—वनवाला कवि०, सुमित्रानंदन पंत – आलो०, साकेत एक अध्ययन, आधुनिक हिंदी नाटक, छंद और निबंध—कवि० और आलो० ; अप्र०—आलोचनात्मक लेखों और कविताओं का एक-एक संग्रह ; प्रि० वि०—कविता, आलोचना, व्यक्तित्व-अध्ययन और यौनशास्त्र ; वि०—आजकल देव पर डाक्टरेट के लिए थीसिस लिख रहे हैं ; प०—अँगरेजी अध्यापक, कमर्शल कालेज, दिल्ली ।

नत्थीलाल कुलश्रेष्ठ 'ज्ञानेंद्र', सा० र०—साहित्य-प्रेमी हिंदी-लेखक; ज०—१६०७ ; शि०—आगरा ; भूतपूर्व स्वतंत्र और सहायक संपादक—'ज्ञानोदय' और 'ब्रजभूमि' ; र०—हिंदी रचना, व्रजगीतांजलि ; प०—आगरा ।

नत्थूलाल विजयवर्गीय—साहित्य - प्रेमी उदीयमान लेखक, गद्यकाव्यकार और कवि; ज०—१६१०, सा०—प्रताप-सेवा संघ और शिवराज युवक संघ के सक्रिय सहायक ; प्रथम के सभापति भी ; मध्य भारतीय हिं० सा० सम्मे० के संस्थापकों में एक ; प्रथम अधिवेशन में साहित्य-मंत्री; अप्र० र०—कविताओं, गद्यकाव्यों और आलोचनात्मक लेखों का एक-एक संग्रह ; प०—असिस्टेंट एकाउंटेंट 'दि बैंक आव इंदौर' २४१८ गोकलगंज, महू, मध्यभारत ।

नरदेव, शास्त्री, वेदतीर्थ—सुप्रसिद्ध विद्वान्, देश-प्रेमी और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; ज०—२१ अक्टूबर, १८८० ; जा०—संस्कृत, प्राकृत, अँग-

रेज़ी ; सा०—अविवाहित रह कर देश, जाति और भाषा की सेवा में संलग्न हैं ; देहरादून कांग्रेस कमेटी के नेता और प्रधान; असहयोग आंदोलन में दो-तीन बार जेल-यात्रा भी की; भूत० संपा०—'भारतोदय', 'शंकर' ; रच०—आर्यसमाज का इतिहास—दो भाग, ऋग्वेदालोचन, गीताविमर्श, शुद्धबोध-चरित्र, पत्र-पुष्प, कारावास की राम-कहानी, वि०—इनके आधार पर आपने अनेक ग्रंथ लिखे हैं; प०—मुख्याधिष्ठाता, महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरद्वार ।

नर्मदाप्रसाद खरे, सा० वि०—साहित्य के अध्ययन-शील विद्यार्थी, कहानी लेखक और कवि ; ज०—१६ नवंबर, १९१२ ; शि०—जबलपुर; भूत० सहायक संपा०—मासिक 'प्रेमा', जबलपुर—दो वर्ष तक ; मध्य प्रांतीय सा० सम्मे० के संयुक्त मंत्री १९४१-४२ ; रच०—रत्न-राशि—जी०, आदर्श कथा-माला ; संपा०—नवकथा-मंजरी, काव्य-सुधा नव नाटक निकुंज, तीन मनोहर एकांकी, साहित्य-प्रदीप; प्रि० वि०—कविता ; प०—फूटा ताल, जबलपुर ।

नर्मदाप्रसाद मिश्र, बी० ए०, सा० र०, एम० एल० ए०—सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्य-कर्ता, अनेक बालोपयोगी पुस्तकों के रचयिता और साहित्य-प्रेमी; भूत० संपा०—'हितकारिणी' और 'श्री-शारदा' ; मिश्रबंधु-कार्यालय के संस्थापक और अध्यक्ष ; प०—मिश्रबंधु - कार्यालय, जबलपुर ।

नृसिंह अग्रवाल—राष्ट्रीय कवि और सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता ; अप्र० रच०—अत्यंत ओजपूर्ण भाषा में लिखी कविताएँ ; वि०—इस समय जेल में हैं ; प०—जबलपुर ।

नरसिंहराम शुक्ल—

उदीयमान उपन्यास-लेखक और पत्रकार ; ज०—१६११; लेख०—१६३२ ; रच० : उप०—किसान की बेटी, काजी की कुटिया, राजकुमारी, कनकलता, देवदासी, कुचक्र, चंद्रिका, बेगम, गुनहगार ; विविध—देशी शिष्टाचार, सफलता के सात साधन, महामना मालवीयजी, बृहद् पाक-विज्ञान, प्रेमियों के पत्र, आधुनिक स्त्री-धर्म, सौंदर्य और शृंगार ; वि०—अक्टूबर १६४३ से 'सजनी' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन और संपादन कर रहे हैं; प०—जार्जटाउन, इलाहाबाद।

नरसिंहलाल, बी० ए० (आनर्स), बी० टी०—साहित्य-प्रेमी, हिंदी के अधिकारों के समर्थक और सुंदर कवि ; पंजाब में हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से अपने गीतों और कविताओं के सरस संग्रह की एक लाख प्रतियाँ विना मूल्य वितरण करने में संलग्न, हिंदी-प्रचारिणी संस्थाओं के उत्साही कार्यकर्त्ता ; प०—हेडमास्टर, सनातनधर्म हाई स्कूल, लाहौर।

नरेंद्रदेव आचार्य, एम० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध देश-प्रेमी कार्यकर्त्ता; विचारशील लेखक, बौद्ध-साहित्य के प्रकांड पंडित और अध्ययनशील विद्वान्; ज०—१८८६; शि०—काशी विश्व-विद्यालय ; ज्ञा०—पाली, प्राकृत, संस्कृत ; सा०—फैजाबाद होमरूल लीग के सेक्रेटरी, १६१६ ; असहयोग में १६२० में वकालत-त्याग तभी काशी विद्यापीठ के आचार्य बने ; अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी कांफ्रेंस के सभापति १६३४ ; संयुक्त प्रांत में कांग्रेसी एम० एल० ए० १६३७ ; कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के नेता ; त्रैमासिक 'विद्यापीठ' और साप्ताहिक 'संघर्ष' के भूत० संपा० ; प०—नजरबाग, लखनऊ।

नरेंद्रनाथदास, विद्यालंकार—प्रसिद्ध विद्वान्, विद्यापति और गोविंददास की कविताओं के विशेषज्ञ तथा प्रमुख आलोचक ; रच०—विद्यापति - काव्यालोक ; प०—सखवाड़, विहार ।

नरेंद्र वर्मा—हिंदी-प्रेमी और यात्रा-संबंधी साहित्य के लेखक, स्थानीय राष्ट्रभाषा-प्रचार समितियों से संबंधित; रच०—'काँकरोली की यात्रा' जिसमें ऐतिहासिक, स्थानों का वर्णन है ; प०—अदालत, काँकरोली ।

नरेशचंद्र वर्मा 'नरेश', सा० वि०—साहित्य-प्रेमी और प्रसिद्ध बिहारी कवि ; ज०—१९१२ ; सा०—मुंगेर म्युनिसिपैलिटी हिंदी स्कूल में अध्यापक ; सहा० मंत्री हिंदी - साहित्य - परिषद् ; रच०—अंतर्ज्वाला और स्मृति - हार ; प्रि० वि०—काव्य तथा कहानी ; वि०—मुंगेर के वेली प्राइज के विजेता; प०—ग्राम - कमला, पो० मँझौल, मुंगेर (विहार) ।

नरोत्तमदास पांडेय 'मधु'—ओरछा - नरेश के दरबारी, व्रजभाषा तथा खड़ी बोली के सुकवि ; ज०—१९१५ ; रच०—राशिशतक, मुरलीमाला ; प०—मऊ, झाँसी ।

नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए० (हिंदी-संस्कृत), सा० वि०, विद्यार्णव, विद्यामहोदधि—राजस्थानी भाषा और साहित्य-उद्धार-कार्य के जन्मदाता, राजस्थानी के कदाचित् सर्वश्रेष्ठ वर्तमान विद्वान्, कुशल लेखक और संपादक ; ज०—१ जनवरी, १९०५ ; शि०—बी० के० विद्यालय और इंटर कालेज, बीकानेर और हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस ; सा० : सदस्य—नागरी — भंडार बीकानेर की कार्यकारिणी समिति, गु० प्र० सज्जनालय बीकानेर, ना० प्र० सभा

काशी, हिं० सा० सम्मे० प्रयाग, आगरा यूनिवर्सिटी सिनेट, आगरा यूनी० फैकल्टी आव आर्ट्स, हिंदी बोर्ड आव स्टडीज आगरा यूनी०, हिंदी कालेज कमेटी राजपूताना, मध्यभारत बोर्ड आव एजुकेशन और हिंदी परिषद् प्रयाग के प्रतिनिधि-मंडल ; संपादक—सूर्यकरण पारीक राजस्थानी ग्रंथमाला, पिलानी राजस्थानी ग्रंथमाला, सस्ती राजस्थानी ग्रंथमाला, त्रैमासिक 'राजस्थान - भारती' पृथ्वीराज रासो और राजस्थानी शब्दकोष ; सभापति—बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मे० और अखिल भारतीय राँकावत ब्राह्मण महासभा ; परीक्षक—राजपूताना बोर्ड, आगरा और हिंदू यूनीवर्सिटी; वि०—'राजस्थान रा दूहा' ग्रंथ पर द्वितीय मानसिंह पुरस्कार हिं० सा० सम्मे० द्वारा; प्रि० वि०—राजस्थानी भाषा और साहित्य, तथा भाषा-विज्ञान. ; रच०—मीरा - मंदाकिनी, राजस्थान रा दूहा भाग १, ढोला-मारू रा दूहा, राजस्थान के लोकगीत, भाग १–२, राजस्थान के ग्रामगीत भाग १, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, सूर-साहित्य-सुधा, मधुमाधवी, बीकानेर के वीर, बीकानेर के गीत, पद्य-कल्पद्रुम, हिंदी-पद्य-पारिजात भाग १–२, गद्यमाधुरी, हिंदी-निबंध नवनीत, सरल अलंकार, अलंकार-परिचय, सरल हिंदी व्याकरण १–२, स्वर्ण महोत्सव पाठमाला–६ भाग, संस्कृत - पाठमाला, अपभ्रंश पाठमाला, हिंदी के गद्य साहित्य का संक्षिप्त इतिहास; अप्र०—राजस्थानी हिंदी कोष (१ लाख शब्द), राजस्थानी भाषा का व्याकरण, राजस्थानी कहावतें, राजस्थान रा दूहा भाग २, राजस्थान के ग्रामगीत भाग २ । ३ । ४, राजस्थान की वर्षा संबंधी

कहावतें, जमाल के दोहे, डिंगल के गीत और उनका पिंगल, राजस्थानी भाषा और साहित्य, अपभ्रंश पाठमाला भाग २-३, अपभ्रंश व्याकरण, अपभ्रंश-हिंदी-कोष, हेमचंद्र का अपभ्रंश-व्याकरण, महाकवि केशव, कबीर ग्रंथावली, जायसी का पद्मावत, विद्यापति पदावली, रा० जइतसी र० छंद, प०—अध्यक्ष हिंदी-विभाग, डूँगर-कालेज, बीकानेर।

नलिनीबाला देवी—आचार्य श्रीकमल नारायणदेव की पत्नी, सा० भू०, विद्याविनोदिनी, ज०—१६२१; जा०—असमीया, बँगला; सा०—हिं० प्र० गुवाहाटी, का०—प्र० बालिका हाई स्कूल, गुवाहाटी; रच०—छायालोक (कहा०) शिशुकथा (असमीया) बँगला कथाओं का अनु०; प्रि० वि०—इतिहास; प०—रा० भा० प्र० समिति, गुवाहाटी, आसाम।

नलिनी बालादेवी—छपरा के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीकार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय की पत्नी; रच०—शकुंतला; प०—कालीबाड़ी, छपरा।

नलिनीबाला, श्रीमती—उदीयमान काव्य-लेखिका और साहित्य-प्रेमिका; लेख०—१६३०; रच०—कुंकुम (कविता-संग्रह); वि०—आपके पति श्रीदेवीदीन त्रिवेदी भी साहित्यानुरागी हैं; प०—प्रतापगढ़।

नवलकिशोर गौड़, एम० ए०,—दुनियाही, मुजफ्फरपुर निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान्, एकांकी नाटककार और आलोचक; 'योगी' और 'जनता' के संपादकीय विभाग के प्रमुख कार्यकर्त्ता; अप्र० रच०—एकांकी नाटकों, कहानियों और आलोचनात्मक साहित्यिक लेखों के चार-पाँच संग्रह; प०—हिंदी अध्यापक, बी० एन० कालेज,

पटना ।

नवलकिशोरसिंह—बिहार के प्रसिद्ध कहानी-लेखक और पत्रकार ; 'सर्चलाइट' के संपादकीय विभाग में काम करते हैं ; अप्र० रच०—अनेक सुंदर कहानी संग्रह ; प०—'सर्चलाइट'-कार्यालय, पटना ।

नंदकिशोर 'किशोर', सा० वि०—बाल-साहित्य के उदीयमान लेखक और कवि ; जा०—उर्दू, फारसी ; अप्र० रच०—दो-तीन काव्य-संग्रह; प०—अध्यापक, नानकचंद संस्कृत हाई स्कूल ; मेरठ ।

नंदकिशोर झा 'किशोर', काव्यतीर्थ—प्रसिद्ध कवि और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१६०१ वस्ती ; लेख०—१६१८ ; सा०—स्थानीय ग्राम सभा के भूत० मंत्री ; रच०—प्रियमिलन (महाकाव्य) ; प०—अध्यापक, ख्रीस्त राजा एच० ई० स्कूल, बेतिया, चंपारन ।

नंदकिशोर तिवारी, बी० ए०, यशस्वी पत्रकार, उद्भट व्युत्पन्न लेखक और सफल संपादक ; विहार सरकार के भू० हिंदी पबलिसिटी अफसर ; भूत० संपा०—चाँद, महारथी, सुधा, कर्मयोगी, भविष्य, मतवाला, माधुरी आदि ; रच०—स्मृतिकुंज (गद्यकाव्य का सा आनंद देनेवाला प्रसिद्ध उपन्यास); अप्र० रच०—अनेक सामयिक निबंध ; वि०—प्रतिभाशाली और कल्पना-संपन्न होते हुए भी जमकर इन्होंने कम लिखा है; प०—तिवारीपुर, बिहार ।

नंदकिशोरलाल 'किशोर'—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी ; ज०—१६०१; रच०—कुसुमकलिका, महात्मा विदुर (ना०), बालबोध रामायण, आरोग्य और उसके साधन, सुक्तिधारा; प०—छतनेश्वर, दरभंगा ।

नंदकिशोर सिंह—उदीयमान कवि और अध्ययनशील विद्यार्थी ; ज०—

१६२० ; रच०—आभा ; अप्र०—रणभेरी ; प०—रोसड़ा, दरभंगा।

नंदकिशोरसिंह ठाकुर 'किशोर'—पैमन - डिहरी-निवासी प्रसिद्ध जीवनी लेखक, विद्वान् और पत्रकार ; शाहाबाद-जिला सा० सम्मे० और आरा - साहित्य - परिषद् के प्रधान मंत्री ; 'भारतमित्र', 'श्रीकृष्णसंदेश', 'हिंदूपंच' और 'स्वाधीन भारत' इत्यादि दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों के भू० सहकारी संपा० ; रच०—ईश्वरचंद्र विद्यासागर, नारी हृदय (कहा०) सतीत्व-प्रभा या सती विपुला, मेवे की झोली, बालरण-रंग, प्राचीन सभ्यता, अरुणा, रणजीतसिंह (बँगला से अनु०), भैषज्य-दीपिका (होमियोपैथी), शिवनंदन सहाय की जीवनी; वि०—आजकल भोजपुरी-शब्दकोष का निर्माण कर रहे हैं; प०—शाहाबाद, बिहार।

नंदकुमार शर्मा, सा० वि०—प्रसिद्ध कवि, साहित्य-प्रेमी और हिंदी-प्रेमी ; ज०—१६०३, भरतपुर ; सा०—स्थानीय सनातनधर्म सभा और हि० सा० समिति के उत्साही कार्यकर्त्ता; लेख०—१६२० ; रच०—कृष्णजन्म, भगवती भागीरथी, परशुराम स्तोत्र ; अप्र०—गोवर्द्धन-शतक, पीयूष-प्रभा, शांति-शतक; प०—अनाह दरवाजा, भरतपुर, राजपूताना।

नंददुलारे वाजपेयी, एम० ए०—अध्ययनशील विद्वान्, गंभीर आलोचक और मनन-शील विचारक; ज०—१६०६; शि०—हजारीबाग मिशन कालेजियट स्कूल, काशी विश्वविद्यालय ; १६२६-३० में मध्यकालीन हिंदी काव्य में अनुसंधान-कार्य किया ; १६३० में 'भारत' के संपा० ; १६३२—३६ तक ना० प्र० सभा काशी में 'सूरसागर' का संपादन आरंभ किया ;

१९३७--३९ तक गीताप्रेस गोरखपुर में 'रामचरितमानस' का संपादन ; १९४० में हिं० सा० सम्मे० के पूना अधिवेशन में साहित्य-परिषद् के सभापति ; १९४१ से काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यापक ; रच०—मौलिक—जयशंकर प्रसाद, हिंदी-साहित्य ; बीसवीं शताब्दी, साहित्य : एक अनुशीलन, तुलसीदास ; संपा०—सूर-सागर, रामचरित-मानस ; संग्रह—हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, सूर-सुषमा, सूर-संदर्भ, साहित्य-सुषमा ; अनु०—धर्मों की एकता ; वि०—इनके अतिरिक्त अनेक पुस्तकों की विस्तृत आलोचना ; प०—हिंदू विश्वविद्यालय, काशी।

नागरमल सहल, बी० ए०, सा० वि०—हिंदी के उदीयमान लेखक और साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी; ज०—अगस्त १९१९; शि०—हाई स्कूल नवलगढ; रच०—शतदल, 'उत्तररामचरित'—आलोचना ; अप्र०—अनेक आलोचनात्मक लेख-संग्रह ; प०—सीनियर हिंदी-अँगरेजी अध्यापक, चमड़िया हाई स्कूल, फतेहपुर, जयपुर-स्टेट।

नाथूदान ठाकुर—राजस्थान में डिंगल भाषा के सर्वश्रेष्ठ वर्तमान कवि और ख्यातिप्राप्त साहित्य - प्रेमी विद्वान् ; ज०—१८९१ ; डिंगल और पिंगल दोनों के विशेषज्ञ ; दोनों में सुंदर रचना करते हैं ; हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के समर्थक ; रच०—वीर सतसई नाम का विख्यात काव्य-ग्रंथ ; प०—नाथघाट, उदयपुर, मेवाड़।

नाथूराम प्रेमी—सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी, सुलेखक और यशस्वी प्रकाशक ; ज०—१८८१ ; जा०—अँगरेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, संस्कृत, प्राकृत ; भूत०

संपा०—मासिक 'जैनमित्र' और 'जैन-हितैषी'; स्था०—हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय की स्थापना १६१० के लगभग; रच०: अनु०—प्रद्युम्नचरित्र, ज्ञानसूर्योदय, उपमिति, भवप्रपंच, पुण्यास्रव कथाकोष, सज्जनचित्तवल्लभ, प्राणप्रिय, चरर्चाशतक आदि संस्कृत से; प्रतिभा, रवींद्र-कथा-कुंज, फूलों का गुच्छा, शिक्षा, बँगला से; धूर्ताख्यान, कर्णाटक जैन कवि, गुजराती से; जान स्टुअर्ट मिल, दिया तले अँधेरा, श्रमण नारद मराठी से; स्वतंत्र—विद्वद्रत्नमाला, जैन ग्रंथकर्त्ता, जैन-साहित्य का इतिहास, भट्टारक-मीमांसा, अर्धकथानक; प०—अध्यक्ष हिंदी ग्रंथरत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग, बंबई।

नाथूराम माहौर—ब्रजभाषा के सुंदर कवि, रसिक और साहित्य-प्रेमी; ज०—१८८९; स्था०—तुलसी-जयंती-कवि-सम्मेलन के संस्थापक; रच०—दीन का दावा, वीरवधू, वीरबाला; अप्र०—छत्रसाल-गुणावली, अश्रुमाल; प०—झाँसी।

नाथूराम शास्त्री, प्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी और संस्कृत के अच्छे विद्वान्; रच०—वनस्थली, उद्यान; प्रि० वि०—कविता; प०—साहूकारा, बरेली।

नान्हूराम प्रमार—ब्रजभाषा के सुकवि, और साहित्य प्रेमी विद्वान्; ज०—१८७३; अप्र० रच०—गीता का सरस अनुवाद; प०—रिटायर्ट डिप्टीकलेक्टर, ललितपुर, झाँसी।

नाथूलाल वज, न्यायतीर्थ, सा० र०—साहित्य-प्रेमी लेखक, समाज-सुधारक और जाति-हितैषी; संपा०—'खंडेवाल जैन हितेच्छु'; रच०—वीर-निर्वाणोत्सव, महिलाओं के प्रति दो शब्द, बुंदेलखंडी जैन तीर्थों की

यात्रा ; प०—'खंडेवाल जैन-हितेच्छु'-कार्यालय, इंदौर।

नान्हूराम राजगुरू, सा० र०—लेखक और प्रचारक ; ज०—३ मई, १६०५ ; शि०—इंदौर, इलाहाबाद ; र०—नागदह जाति का इतिहास, ग्रामोन्नति, प्रेम-तपस्वी, साहित्य - सुधा ; प०—प्रधानाध्यापक, कुकड़ेश्वर, होल्कर राज्य।

नानकचंद श्रीवास्तव, एम० ए०, एल० टी०, सा० र०—प्रसिद्ध लेखक और सुयोग्य अध्यापक; ज०—सन् १८६८ , वलरामपुर, जिला गोंडा ; शि०—आगरा, प्रयाग, काशी, जा०—उर्दू और अँगरेजी; र०—पपीहा, कामदेव-विजय और कामदेव-संग्रह (अप्रकाशित); प०—लायल कालेजिएट स्कूल, वलरामपुर, गोंडा।

नारायणदत्त बहुगुणा—प्रसिद्ध अध्ययनशील लेखक और सुधारवादी सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; ज०—२४ सितंबर, १६६६ ; जा०—संस्कृत, उर्दू, अँगरेजी ; सा०—गढ़वाल साहित्य - परिषद् की कार्यकारिणी, स्थानीय कांग्रेस कमेटी और कुमायूँ इंडस्ट्रियल एडवाइज़री कमेटी के सदस्य ; कर्णप्रयाग - साहित्य - परिषद्, रानीगंज - ग्राम-सुधार-सेवक संघ इत्यादि के भूत० प्रधान; इनके अतिरिक्त समय-समय पर लगभग चालीस स्थानीय संस्थाओं के उपप्रधान, मंत्री अथवा उत्साही कार्यकर्त्ता ; भूत० संपा०—मासिक 'कर्मभूमि' ; र०—विभावरी, वेदना, पर्वतीय प्रांतों में ग्राम-सुधार, विभूति, ग्राम-गीत, निर्झरिणी, मधुमास, गद्यकाव्य, ग्राम-सुधार, चित्रमय गढ़वाल; प्रि० वि०—पत्रकार-कला, राजनीति और ग्रामसुधार ; प०—साहित्य-सदन-सैल, पो० गौचर, गढ़वाल।

नारायणप्रसाद माथुर

'नरेंद्र'—साहित्य-प्रेमी कवि और लेखक ; ज०—१६ अगस्त, १९१६ ; शि०—ग्वालियर ; सा०—अखिल भारतीय राष्ट्रीय सभा और श्रीटैगोर-साहित्य-परिषद् के उत्साही सदस्य ; अप्र० रच०—दो लेख और कविता-संग्रह ; प०—प्रधानाध्यापक, पबई, भिलसा, ग्वालियर।

नारायण राव, सा० वि०—प्रसिद्ध विद्वान्, साहित्य-प्रेमी और पुराने ढंग के समस्यापूरक सुकवि ; ज०—१८९९ ; शि०—ग्वालियर, प्रयाग, बनारस ; लेख०—१९१० ; रच०—वर्षमहोत्सव; अप्र०—राममंजरी, नारायण जातक ; प०—अध्यापक, ग्वालियर।

नित्यानंद शास्त्री—हिंदी और संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् सुलेखक, सफल और कुशल कवि; ज०—१८८९; शि०—पंजाब विश्वविद्यालय, ओरियंटल कालेज लाहौर ; सर्व-प्रथम आने से स्वर्णपदक और छात्र-वृत्ति पाई ; सा०—भावनगर की आत्मानंद जैन-ग्रंथमाला के संपादक ; महावीर कालेज बंबई के भूत० अध्यापक ; जोधपुर राजपूत हाई स्कूल के भूत० हेड पंडित ; पंजाब विद्वत्परिषद् की ओर से 'आशुकवि', भारतधर्म महामंडल काशी की ओर से 'कविराज' और बंबई विद्वत्-परिषद् की ओर से 'विद्यावाचस्पति' उपाधियाँ प्राप्त ; रच०—संस्कृत में मारुतिस्तव ; लघुछंदोलंकार-दर्पण; आर्यामुक्तावली, आर्या-नक्षत्रमाला, बालकृष्ण नक्षत्र-माला, श्रीरामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि लगभग एक दर्जन ग्रंथ ; हिंदी—ऋतु-विलास, द्विजदेवदर्पण, आदि-शक्तिवैभव, कुरीति-बत्तीसी, उन्नति-दिग्दर्शन , रामकथा-कल्पलता, हनुमद्दूत, मुक्तक-कविताकलाप, मुक्तकलेख-संग्रह ; प०—अध्यक्ष राज-

कीय पुस्तकालय, जोधपुर।

निस्यानंद सारस्वत वैद्य, सा० र०—साहित्य-प्रेमी लेखक और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; शि०—बनारस तथा लाहौर; अप्र०—आलोचनात्मक साहित्य तथा आयुर्वेद संबंधी अनेक लेख सार्व० का० लगभग १५० आदमियों को नागरी लिपि से साक्षर किया तथा रतनगढ़ में नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना भी की ; प०—अध्यापक, श्रीहनुमान आयुर्वेद महाविद्यालय, रतनगढ़।

निर्मलाकुमारी माथुर, सा० र०, प्रभाकर—भावुक कला-प्रेमिका, कहानी-कविता और गद्यकाव्य की उदीयमान लेखिका ; ज०—१६ दिसंबर १९२२ दिल्ली; सा०—अनेक कविसम्मेलनों में कविता-पाठ ; स्थानीय हिंदी प्रचारिणी सभा की सदस्या ; रेडियो पर भी कविताएँ पढ़ीं ; स्थानीय हाई स्कूल में अध्यापिका हैं; अप्र० रच०—बिखरे चित्र, सुरभि के अतिरिक्त विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों, कविताओं, गद्यकाव्यों और आलोचनात्मक लेखों के दो-दो, एक-एक संग्रह ; वि०—दो-तीन कविताओं और कहानियों पर पुरस्कार भी मिल चुका है ; प०—७ दरियागंज आनंद लेन, दिल्ली।

निरंकारदेव सेवक, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध कवि और साहित्य-प्रेमी लेखक ; ज०—१९ जनवरी, १९१९; शि०—आगरा ; रच०—कलरव, स्वस्तिका, चिनगारी ; अप्र०—मस्ती के गीत, विद्यापति ; प०—हिंदी अध्यापक, सरस्वती विद्यालय हाई स्कूल, बरेली।

निरंजनदेव वैद्य 'प्रियहंस', आयुर्वेदालंकार—साहित्य-प्रेमी, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता और लेखक; ज०—१९०४ ; शि०—गुरुकुल

काँगड़ी, सहारनपुर ; सा०—स्थानीय आर्यसमाज और हिंदी-प्रचार-मंडल के उत्साही कार्यकर्त्ता ; 'अर्जुन'—दिल्ली, 'लोकमत'—जबलपुर और 'जन्मभूमि'—लाहौर आदि दैनिकों के संपादकीय विभागों में काम किया ; वि०—अब 'सत्यसार्थी' तथा 'तीर्थयात्री' के उपनाम से पद्यमयी रचनाएँ लिखते हैं ; रच०—प्रमुख हिंदी कवि, हिंदी-वेणी संहार नाटक ; प०—आर्यसमाज, दयानंद सेवाश्रम, बदायूँ।

निहालसिंह, संट—सुप्रसिद्ध पत्रकार, अध्ययनशील विद्वान् और सुयोग्य लेखक ; ज०—पंजाब ; स्व० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी के उद्योग से हिंदी में लिखने लगे ; सा०—अनेक देशी-विदेशी संस्थाओं से संबंध है ; जापान, अमेरिका, योरप आदि में भ्रमण कर चुके हैं ; अनेक प्रसिद्ध पत्रों के संवाददाता ; 'लोहेमियन मैगजीन' के भूत० संपा०— ; अँगरेजी के 'माडर्न रिव्यू' के नियमित लेखक ; प०—ग्रैंड-होटेल, सीलोन।

नीतीश्वरप्रसादसिंह—दहिला, मुजफ्फरपूर-निवासी साहित्य-सेवी और हिंदी-प्रेमी; ज०—१९१७ ; स्थानीय 'सुहृद संघ' के संस्थापक और प्रधान मंत्री ; साहित्यिक जागृति के लिए सतत आंदोलन करने में प्रवृत्त उत्साही युवक ; हिंदुस्तानी और रोमनलिपि के विरोध में अनेक महत्त्वपूर्ण लेख लिखे; प०—मंत्री सुहृदसंघ, मुजफ्फरपुर।

नीलकंठ तिवारी, एम० ए०, सा० र०—फिल्म लाइन में कहानी संवाद-गीत-लेखक, आर्टिस्ट और प्रसिद्ध कवि ; ज०—१९०६ ; रच०—इंद्र-धनुष ; अप्र०—दो कविता-संग्रह ; प०—पाटनवाला मंजिल, वाडिया स्ट्रीट, तारदेव, बंबई (७)।

नेगीराम—साहित्य-प्रेमी, हिंदी-भाषा के सुलेखक, कांग्रेस के गण्यमान नेता और अपने प्रांत के अद्वितीय वक्ता; स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी-सभाओं के उत्साही सहायक और सक्रिय कार्यकर्त्ता; प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

नोखेलाल शर्मा, बी० ए०, मा० आ०, काव्यतीर्थ, शास्त्री—गद्यकाव्य के लेखक, साहित्य-प्रेमी और हिंदी-प्रचार-प्रसार में तत्पर; ज०—१६०४ भागलपुर; र०—मणिमाला (गद्यकाव्य); अप्र०—विविध पत्रों में बिखरे लेख और गद्यकाव्य-संग्रह; प०—अध्यापक, जयपुर।

पतराम गौड़ 'विशद', एम० ए०, सा० र० हिंदी के सुंदर लेखक, आलोचक, सुकवि तथा सुप्रसिद्ध विद्वान्; ज०—१६१३; शि०—विड़ला कालेज पिलानी व महाराजा कालेज जयपुर; र०—चौबोली - रेगिस्तान (काव्य); र० अप्र०—मानव और प्रकृति (काव्य); प०—विडला कालेज, पिलानी, जयपुर।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बी० ए०, द्विवेदी-युग के प्रतिष्ठित लेखक, अध्ययनशील आलोचक और विचारशील निबंधकार; ज०—और शि०—खैरागढ़; सा०—'सरस्वती', प्रयाग के संपादक १६२० से—सात-आठ वर्ष तक; तब से स्थानीय हाई स्कूल में अध्यापक; इलाहाबाद की 'छाया' के वर्तमान संपादक; र०—पंचपात्र, हिंदी-साहित्य-विमर्श, विश्व-साहित्य, शतदल—कवि०, पद्मवन; अप्र०—दो-तीन निबंध और कविता-संग्रह; वि०—आपकी कहानियाँ भी प्रायः निबंध के ही ढंग पर है; प०—अध्यापक हाई-स्कूल, खैरागढ़।

पन्नालाल अग्रवाल—जैन साहित्य के प्रतिष्ठित

विद्वान् और कुशल लेखक ; संपा० रच०—ज्ञानसूर्योदय—दो भाग, उर्दू कथा, बनारसीनाम-माला, विवाह-क्षेत्रप्रकाश, तिलोयपण्णत्ति, दोहा पाहुड, सावयधम्म दोहा, हरिवंशपुराण, वरांगचरितम्; वि०—अनेक सार्वजनिक जैन-संस्थाओं के कार्यकर्त्ता रहकर जैन-साहित्य के उद्धार का कार्य किया ; प०—मंत्री, वीर-सेवा-मंदिर, सरसावाँ ।

पन्नालाल गुप्त 'अनंत'—उदीयमान हिंदी लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्यार्थी ; भू० संपा०—साप्ताहिक 'नवज्योति'; अप्र० रच०—दो-तीन सामयिक निबंध-संग्रह; प०—कैसरगंज, अजमेर ।

परमानंद, भाई, एम० ए०—सुविख्यात हिंदू नेता ; आर्यसमाज की ओर से दक्षिण अफ्रीका गए ; अमरीका की ब्रिटिश कालोनीज देखने के लिए गए ; गदरपार्टी केस के अभियुक्त ; फाँसी की सजा, किंतु फिर आजन्म काला-पानी ; १९२० में रिहाई ; पंजाब-विद्यापीठ के चांसलर ; अ० भा० हिंदू-महासभा के सभापति १९३३ ; ज्वाइंट पार्लमेंटरी के समक्ष हिंदुओं की ओर से बयान देने विलायत गए ; केंद्रीय एसेंबली के मेंबर : रच०—पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक विद्वत्तापूर्ण रोचक लेख और वक्तव्य ; प०—दिल्ली ।

परमानंद, शास्त्री—जैन-समाज के उदीयमान लेखक, अनुवादक और समालोचक ; ज०—१९०६ ; रच०—समाजतंत्र तथा एकीभाव—अनु०, पंडिता चंदाबाई—जीवनी: अप्र०—अनेक सुंदर और खोजपूर्ण लेख : प०—इंदौर ।

परमेष्ठीदास जैन न्यायतीर्थ—जैन-साहित्य के हिंदी-प्रेमी विद्वान्, पत्रकार और सुलेखक ; ज०—१९०६ ;

शि०—जबलपुर, इंदौर ; सा०—भू० पू० संपादक जैन-मित्र, दिगंबर जैन, वीर; हिंदीप्रचारक मंडल, हिंदी विद्यामंदिर और राष्ट्रभाषा अध्यापन-मंदिर के संस्थापक; रच०—जैनधर्म की लगभग १२ पुस्तकों की हिंदी में रचना की ; प०—राष्ट्रभाषा अध्यापन-मंदिर, खपटिय चकला, सूरत।

परमेश्वरलाल जैन 'सुमन'—उदीयमान कवि और प्रतिभाशाली लेखक ; ज०—२५ जनवरी १६२० ; सा०—मारवाडी साहित्य-मंदिर भिवानी, हिसार से दस खंडों में प्रकाशित होनेवाले ग्रंथ 'मारवाडी गौरव' के संपादक; अप्र० रच०—जापान का इतिहास, जैन - इतिहास, सुमनकुंज, अग्रवाल जाति का इतिहास; प०—समस्तोपुर (विहार)।

परमेश्वरसिंह—शिवहर-निवासी प्रसिद्ध पत्रकार ; भू० पू० संपादक विश्वमित्र, प्रताप, हिंदुस्तान ; इस समय किताव संसार (पटना) के संचालक हैं ; प०—पटना।

परशुराम चतुर्वेदी—'कात्यायन', एम० ए०, एल० एल० बी० ; ज० १८६४; ज्ञा०—उर्दू बँगला, मराठी और गुजराती; सा०—मेंवर डिस्ट्रिक्ट वोर्ड वलिया १६३१, मेंवर वेंच आनरेरी मेजिस्ट्रेट वलिया ३०—३५; चेअरमैन ज़ि० ग्रामसुधार वोर्ड वलिया ३८—४०; हिंदी - प्रचारिणी सभा, 'चलता साहित्य' के संचालक;रच०—संक्षिप्त रामचरितमानस (संपादित), मीरावाई की पदावली (संपादित), अप्र०—संतमत व संतसाहित्य, महात्मा कवीर-साहव ; प्रिय० वि०—दर्शन, इतिहास और साहित्य (संत-साहित्य में विशेष रुचि) ; प०—जौही, पो० भदसर, वलिया (यू० पी०)।

परिपूर्णानंद वर्मा—सुप्रसिद्ध नाटककार, सुलेखक और

सफल पत्रकार ; ज०—७ फरवरी १९०७ ; शि०—बीकानेर, काशी ; सा०—भू० पू० संपा० सैनिक, प्रेम, लोकमत, संदेश, प्रेमा ; रच०—शिवपार्वती, वीर अभिमन्यु, रानीभवानी. प्रेम का मूल्य, मेरी आह, हिंदू-हित की हत्या, युक्तप्रांत की विभूतियां, लगभग १२ जीवनचरित्र ; प०—प्राइवेट सेक्रेटरी, सर पद्मपत सिंहानियाँ, कानपुर।

प्रकाशचंद्र गुप्त, एम० ए० ; प्रसिद्ध आलोचक एकांकी नाटक और निबंध लेखक ; ज०—१९०८ अनूप शह ; शि०—प्रयाग विश्वविद्यालय; रच०—नया हिंदी-साहित्य, आलो० लेख ; वि०—आलो० निबंधों स्केचों, और एकांकियों के दो-तीन संग्रह प्रकाशित होने को हैं ; प०—अध्यापक, अँगरेजी-विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

प्रकाशचंद्र यादव—कुशल पत्रकार और सुलेखक ; ज०—१९१५ प्रयाग; सा०—ग्रामसेवासंघ के सभापति, यादवशिक्षा समिति के मंत्री, कटरा कांग्रेस-कमेटी के मंत्री, भू० पू० संपादक यादवसंदेश, जागृति, सिपाही ; अ० भा० समाचारपत्र-प्रदर्शनी के संयोजक, जवाहरगंज कन्या पाठशाला के मैनेजर, रच०—विश्वविवाह-प्रणाली, महापुरुषों के कल्याणकारी उपदेश, व्यक्तिगत व्यायामपद्धति ; वि०—व्यायाम के आप विशेष प्रेमी हैं ; प०—६२ जवाहरगंज, युनीवेर्सिटी स्कूल-रोड, प्रयाग।

प्रकाशवती पाल—हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानीकार और औपन्यासिक श्री-यशपाल की विदुषी पत्नी ; शि०—लाहौर ; सा०—कई वर्षों तक क्रांतिकारी दल की सदस्या रहीं ; 'विप्लव' और विप्लवी ट्रैक्ट की प्रकाशिका ; विप्लव पुस्तकमाला

(९ पुस्तकें निकल चुकी हैं) का प्रकाशन ; प०—विप्लव कार्यालय, हीवेट रोड, लखनऊ।

प्रणवानंद, स्वामी—अध्ययनशील विद्वान् और भ्रमण-प्रिय साहित्य-सेवी ; र०—'कैलाश-मानसरोवर' (दस बार यात्रा करके आँखों देखा वर्णन); वि०—यह ग्रंथ हिंदी में अपने ढंग का एक ही है प०—प्रयाग।

प्रतापनारायण पुरोहित, कविरत्न, बी० ए०, सा० भू०, ताजीमी सरदार, अध्यक्ष महकमा पुण्य, राज्य सवाई जयपुर ; ज०—१९०३ ; शि०—मेयो कालेज अजमेर, महाराजा कालेज जयपुर, आगरा कालेज, आगरा ; र०—नल - नरेश - महाकाव्य, काव्य-कानन, मन के मोती, नवनिकुंज, गुणियों के गायन, श्रीरामार्चन (अंगरेजी अनुवाद सहित); प्रि० वि०—साहित्य ; प०—सिनवार हाउस, गनगौरी बाजार, जयपुर सिटी, राजपूताना।

प्रतापनारायण श्रीवास्तव, बी० ए०, एल० एल० बी—यशस्वी उपन्यासकार और कहानी-लेखक; र०— विदा, विजय—दो भाग, विकास, निकुंज, आशीर्वाद।

प्रतापसिंह कविराज—प्राणाचार्य ; ज०—२ जून १८९२ ; शि०—मद्रास, कलकत्ता ; काशी वि० वि० की आयुर्वेदिक फार्मेसी के अध्यक्ष ; र०—महामंडल-जयंतीग्रंथ, खनिजविज्ञान, स्वास्थ्यसूत्रावली, संक्षिप्त विषविज्ञान, प्रसूतिपरिचर्या, जच्चा, प्रतापकथा-भरण ; प०—अध्यक्ष, आयुर्वेदिक फार्मेसी, विश्वविद्यालय, काशी।

प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त' ; स्व० साहित्याचार्य चंद्रशेखर शास्त्री के सुपुत्र ; लिमेज-निवासी सुप्रसिद्ध

कहानी - उपन्यास - लेखक, उत्साही पत्रकार और प्रतिभाशालीकवि; भू०सं० साप्ताहिक 'विजली'—पटना ; वर्तमान संपा० मासिक 'आरती'—पटना ; रच०—पतझड़, पाप-पुण्य, संन्यासी, लालिमा, धारा, तलाक, जेलयात्रा, दो दिन की दुनिया ; वि०—इधर प्रकाशन कार्य भी इन्हों ने आरंभ किया है ; प०—पटना ।

प्रभाकर माचवे, एम० ए०—अध्ययनशील विद्यार्थी, कुशल आलोचक और हास्य-प्रिय लेखक ; ज०—१९१७; शि०—रतलाम, आगरा ; ले०—१९३४ ; रच०—जैनेंद्र के विचार, त्यागपत्र की भूमिका; वि०—आपने प्रायः गद्यकाव्य, कहानी, कविता, निबंध, आलोचना, हास्य-व्यंग्य सभी पर लिखा है ; प०—माधव-कालेज, उज्जैन ।

प्रभाकरेश्वरप्रसाद उपाध्याय—साहित्य - प्रेमी विद्वान् और अध्ययनशील लेखक ; हिं० सा० सम्मेलन के उत्साही सहायक ; प्रेमघन-सर्वस्व के संपादक ; प०—प्रयाग ।

प्रभुदयाल अग्निहोत्री, व्या० आ०—मध्यभारत के गण्यमान हिंदी प्रचारक, सुलेखक और आलोचक ; ज०—२० जुलाई १९१४ शाहजहाँपुर ; कई साहित्यिक संस्थाओं के संस्थापक, विदर्भ हिंदी-साहित्य-समिति के प्रधान मंत्री, मारवाड़ी सेवासदन के विद्यामंदिर के आचार्य ; रच०—आधुनिक संस्कृत शिक्षण प्रणाली, आधुनिक हिंदी काव्यधारा, धर्म और समाजवाद, उच्छ्वास, वैदिक धर्म, ६ पाठ्य पुस्तकें; अप्र०—जीवनगान; वि०—'आकाश-विहारी शास्त्री' नामक उपनाम से यदा-कदा व्यंग्य लेख लिखते हैं; प०—आचार्य विद्यामंदिर, मारवाड़ी सेवा-सदन, अकोला, बरार ।

प्रभुनारायण शर्मा 'सहृदय, सा० र०—लेखक, अध्यापक, कवि ; ज०—१६०४. वलपुर, जयपुर; शि०—प्रयाग, जयपुर ; पहले कौंसिल आफ स्टेट जयपुर के सेक्रेटरिएट में. फिर होम डिपार्टमेंट में. तथा रेविन्यु डिपार्टमेंट में काम; रच०—विचारवैभव, पत्र-प्रताप, वेणीसंहार, कल्याणी-कृष्णा. योगेश्वर, साहित्य सरिता, साहित्य मणिमाला. स्वास्थ्यसरोज. स्वास्थ्यसुधा, स्वास्थ्य-नियम ; वलिवेदी, प्रेम-समाधि, कायापलट, विस्मृत कुसुम, मंजुमयूख, सप्तस्वर, भारतीय शिल्प, सेतुनिर्माण-कला, वास्तुकला (अप्र०); प०—महाराजा कालेज, जयपुर।

प्रभुनारायण त्रिपाठी 'सुशील' प्रजावैद्य और कुशल लेखक ; ज०—१६०० सा०—प्रजावंधु - समिति, प्रजावंधु पुस्तकालय, प्रजावंधु औषधालय आदि के संचा० ; मंडल कांग्रेस कमेटी के मन्त्री ; पब्लिक हाई स्कूल शिवराजपूर में हिन्दी-अध्यापक ; रच०—राष्ट्रपति जवाहर निद्राविज्ञान तथा आजादी के शहीद ; प०—मरियानी, चौबेपूर, कानपूर।

प्रवासीलाल वर्मा, मालवीय 'मालव - मधुकर मस्ताना'—प्रसिद्ध लेखक पत्रकार और साहित्य-सेवी ; ज०—१८६७ ; ज्ञा०—अँगरेजी, उर्दू, बँगला, मराठी, गुजराती, संस्कृत, पंजाबी ; भूत० संपा०—'धर्माभ्युदय' 'सुनि', 'कैलास', 'जागरण' 'मस्ताना', 'हंस', 'साधना' आदि साप्ताहिक तथा मासिक हिंदी-साहित्य-मंडल नामक; प्रकाशन संस्था के संस्थापक ; रच०—वृक्ष-विज्ञान - शास्त्र, कर्मदेवी, अग्निसंसार, जंगल की भयंकर कहानियाँ, मूल-राज, पाटन की प्रभुता, कुमुद-कुमारी, सप्तपर्ण, एकादशी का उपवास, गरम तलवार.

राजाधिराज, पृथ्वी - वल्लभ, गुजरात का नाथ ; प०—ठि० हिंदी - साहित्य - मंडल, प्रकाशक, बनारस।

प्रेमनारायण अग्रवाल, एम० ए०—राजनीति, अर्थ-शास्त्र और सामयिक समस्याओं के अध्ययनशील विद्यार्थी, उदीयमान पत्रकार और लेखक ; शि०—प्रयाग ; सा०—प्रयागी लेखक-संघ के संस्थापकों और मासिक 'लेखक' के संपादकों में; संघ के डेढ़ वर्ष तक मंत्री ; इंडियन कलोनियल एसोसिएशन के १९३२ से ४० तक प्रधान मंत्री ; देशी-विदेशी अनेक पत्रों में उक्त सामयिक समस्याओं और विषयों पर लिखा ; 'बंबे क्रानिकिल', 'मार्निंग स्टैंडर्ड' और 'संडे स्टैंडर्ड' के संपादकीय विभागों में समय-समय पर काम किया; रच०—प्रवासी भारतीयों की समस्या ; स्वामी भवानी दयाल संन्यासी ; अप्र०—सार्वजनिक कार्य-कर्त्ता और उनकी आय के साधन, व्यावहारिक पत्रकार-कला, युवकों का विवाहित जीवन, युवकों की समस्याएँ ; प्रि० वि०—यात्रा और साहित्य-संग्रह ; प०—रईस, अजीतमहल, इटावा।

प्रेमनारायण टंडन, एम० ए०, सा० र०—ज०—१३ जनवरी, १९१५ ; शि०—लखनऊ ; सा०—जातीय मासिक 'खत्री-हितैषी' के भूत० संपा० १९३६–४१ ; हिंदी-सेवी-संसार के संपा०; बालोपयोगी पाक्षिक 'होनहार' के वर्तमान संपा० ; विद्यामंदिर नामक प्रकाशन-संस्था के संस्थापक ; रच०—लिखित — द्विवेदी - मीमांसा, प्रताप-समीक्षा, प्रेमचंद : ग्राम-समस्या, हमारे गद्य-निर्माता, हिंदी-साहित्य-निर्माता, हिंदी-कविरत्न, हिंदी लेखकों की शैली, मातृभाषा के पुजारी, साहित्य-परिचय, हिंदी-सा-

हित्य का छात्रोपयोगी इतिहास, सूर : जीवनी और ग्रंथ स्कंदगुप्त : एक परिचय, अजातशत्रु : एक परिचय, संक्षिप्त व्याकरण-बोध; संपा०—साकेत-समीक्षा, पुण्य-स्मृतियाँ, साहित्यिकों के संस्मरण, प्रेमचंद : कृतियाँ और कला, भँवरगीत (नंददास), सुदामाचरित, गोपी-विरह और भँवरगीत (सूर), गद्य सुमन-संग्रह, सरस सुमन-संग्रह ; प्रस में—हिंदी गद्य का इतिहास, कामायनी - मीमांसा, हिंदी-रचना और उसके अंग ; वि०—अपने अनुज श्रीतेजनारायण टंडन के साथ 'बालबंधु' एम० ए० के नाम से १५ बालोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं ; प०—रानीकटरा, लखनऊ।

प्रेमनारायण माथुर, एम० ए०, बी० काम;—अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी; ज०—१५ अक्तूबर १९१२ कुरावड़ (मेवाड़); शि०—महाराणा कालेज उदयपुर, एस० डी० कालेज कानपूर ; र०—प्रारंभिक अर्थशास्त्र, गाँवों की समस्या ; अप्र०—रीडिंग्ज इन इंडियन इकनामिक्स, अर्थशास्त्र के सिद्धांतों पर, पूँजीवाद ; प्रि० वि०—अर्थशास्त्र, और राजनीति, विशेषतः विभिन्न वाद ; प०—प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर।

प्रेमरत्न गोयल, हिंदी-रत्न—साहित्य-प्रेमी सुलेखक; सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी सभाओं के सहयोगी ; प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

प्रेमलता गुप्त, बी० ए०—हिंदी की विशेष प्रेमिका और प्रचारिका ; हैदराबाद में हिंदी का प्रचार करने-कराने का यथाशक्ति प्रयत्न करती हैं; प०—धर्मपत्नी, श्रीलक्ष्मीनारायण गुप्त, सहायक अर्थ-मंत्री, हैदराबाद दक्षिण।

पांडेय बेचन शर्मा

'उग्र' सार्थक उपनामधारी, प्रतिष्ठित कहानी, उपन्यास, नाटक और हास-परिहास-पूर्ण निबंध-लेखक; भूत० संपा०—मासिक 'विक्रम' उज्जैन ; रच०—चाकलेट, महात्मा ईसा, चुंबन, शराबी, घंटा, बुधुआ की बेटी, दिल्ली का दलाल, चंद हसीनों के खुतूत, माधव महाराज महान्, चार बेचारे, जीजीजी, रेशमी, पंजाब की महारानी ; वि०—सिनेमा के लिए भी आपने बहुत कुछ लिखा है ; प०—उज्जैन ।

पार्वतीप्रसाद, एम० एस-सी० ; विज्ञानाचार्य ; वैज्ञानिक साहित्य के प्रमुख लेखक; विहार प्रादेशिक हिं० विज्ञान सम्मे० के अध्यक्ष ; रच०—अनेक स्फुट निबंध ; प०—सीनियर अध्यापक, साइंस-कालेज, पटना ।

पारसनाथ सिंह, 'विशारद'—विहार के उत्साही हिंदी-प्रेमी और सुलेखक ; ज०—२० जुलाई १९१२ ; सा०—'वेणी - पुस्तकालय' के संस्थापक और मंत्री, बिहारप्रांतीय हिंदी - प्रचारिणी सभा के जन्मदाता (१९४१); पटना जिला पुस्तकालय-संघ की स्थापना १९४१; रच०—आज का गाँव, सुदूरपूर्व की बातें ; वि०—आजकल आप दैनिक 'आर्यावर्त' के संपादकीय विभाग में हैं ; प०—आर्यावर्त-कार्यालय, पटना

पारसनाथसिंह, बी० ए०, बी० एल ; परसानिवासी साहित्यप्रेमी विद्वान् और सुलेखक ; भू० पू० प्रबंधक हिंदुस्तान टाइम्स ; कलकत्ते के कई दैनिक पत्रों के भू० पू० संपादक ; रच०—पंछी-परिचय, आँखों देखा युद्ध ; प०—मैनेजिंग डाइरेक्टर 'सर्चलाइट', पटना ।

पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, डाक्टर, एम० ए०, एल-एल० बी०, डी० लिट्० साहित्य के प्रतिभावान्-आलो-

चक, अध्ययनशील विचारक और निबंध-लेखक ; ज०—१९०१ गढ़वाल ; सा०—कई वर्ष तक काशी नागरी प्रचारिणी सभा के खोजविभाग के निरीक्षक रहे ; भूत०—सभापति दशम ओरियंटल कांफ्रेंस (तिरुपति); लेख०—१९२५; रच०—'निरगुन स्कूल आफ हिंदी पोइट्री' (अँगरेजी), गोस्वामी तुलसीदास, रूपक रहस्य, 'गोरखवाणी' नामक ग्रंथ का बड़े परिश्रम से आप संपादन भी कर चुके हैं ; अप्र०—सुंदर आलोचनात्मक लेखों का संग्रह; वि०—एम० ए० में संयुक्तप्रांत में प्रथम श्रेणी में पास होनेवाले आप पहले गढ़वाली नवयुवक हैं, आपने संत कवियों का विशेष अध्ययन किया है; प०—अध्यापक, हिंदी-विभाग; विश्वविद्यालय, लखनऊ।

पुत्तनलाल विद्यार्थी—प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी, विद्वान् और सुलेखक ; ज०—३० अक्टूबर १८८९ फर्रुखाबाद ; ज्ञा०—उर्दू, हिंदी, फारसी, अँगरेजी ; सा०—काशी नागरी प्रचारिणी सभा के १९०९ में सदस्य, हिंदी-साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, (१९१२-२१), हिंदीसाहित्य-सम्मेलन के लखनऊ अधिवेशन के सहकारी मंत्री ; एक पत्रिका का संपादन भी किया, थियोसोफिकल सोसाइटी लॉज के सभापति ; रच०—सरल पिंगल ; वि०—आपने जमालपुर में हिंदी-साहित्य-सभा भी स्थापित की है जिसके सभापति स्वयं हैं ; प०—कलकत्ता।

पुरुषोत्तमदास टंडन, डाक्टर, एम० ए०, एल० एल० बी०, डी० लिट्—हिंदी के गण्यमान्य साहित्य सेवी, प्रचारक और लब्धप्रतिष्ठ सुवक्ता ; सर्वेंट्स आफ पीपुल सोसाइटी के सभापति ; हिंदी-साहित्य सम्मेलन के जन्म-

दाता और भू० पू० अध्यक्ष; सभापति यू० पी० प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी; इलाहाबाद म्यूनिसिपैलिटी के चेयरमैन; प०—प्रयाग।

पुरुषोत्तमदास स्वामी, एम० एस-सी०, एफ० सी० एस० (लंदन), एफ० जी० एम० एस०, एफ० आई सी० एस, विशारद; सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक, साहित्य-प्रेमी विद्वान् और वैज्ञानिक; वि०—राजस्थानी साहित्य विद्यापीठ बीकानेर, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिंदी साहित्य संम्मेलन प्रयाग, इंडियन साइंस कांग्रेस असोशिएशन कलकत्ता, राजस्थान हिंदी साहित्य-सम्मेलन उदयपुर, बीकानेर राज्य साहित्य - सम्मेलन, इत्यादि के सम्मानित सदस्य; कई वैज्ञानिक संस्थाओं के फेलो (सभ्य), डूँगर कालेज केमिकल सोसाइटी के सभापति, राजस्थान हिंदी-साहित्य-सम्मेलन बीकानेर के प्रधान मंत्री; रच०—भूगर्भविज्ञान, विज्ञान की कुछ बातें, राजस्थानी भूमि; प०—डूँगर कालेज, बीकानेर।

पुरुषोत्तमदेव कविराज, आयुर्वेदालंकार—कुशल चिकित्सक, सफल वक्ता और सिद्धहस्त लेखक; स्थानीय सभी सार्वजनिक संस्थाओं के उत्साही सहयोगी; उर्दू-प्रदेश में भी संस्कृत-प्रधान हिंदी के समर्थक और प्रचारक; प०—वैद्य, मुलतान।

पुरुषोत्तमप्रसाद पांडेय—विलासपुर के लब्ध-प्रतिष्ठ लेखक और हिंदी-प्रेमी विद्वान्, रच०—लाल गुलाल, अनंत लेखावली, लेखमाला; वि०—आपके छोटे भाई पं० लोचनप्रसाद पांडेय और कवि मुकुटधर भी हिंदी-प्रेमी और सुलेखक हैं; प०—बालपुर, पो० चंद्रपुर, जिला विलासपुर।

पुरुषोत्तम शर्मा चतु-

वैंद्री—सा० आ०, शास्त्री—संस्कृत साहित्य के हिंदी-प्रेमी विद्वान् ; ज०—१८६८ ; ज्ञा०—संस्कृत, हिंदी, पाली, प्राकृत, गुजराती ; रच०—शुद्धाद्वैतमार्तंड, नवरत्न, वल्लभदिग्विजय, कामाख्य दोष-विवरण, रसगंगाधर, अंबिका परिणयचंपू, छंदोविन्मंडन, छप्पन भोग, संस्कृत भाषा का व्याकरण, ध्वन्यालोकस्तर ; प्र० संपादक 'भारतीय धर्म' ; प०—गुलाबवाड़ी, अजमेर।

पूर्णचंद्र जैन टुंकलिया, एम० ए०, सा० र०—यशस्वी लेखक, विद्वान्, अर्थशास्त्रज्ञ तथा सफल आलोचक ; शि०—विशेषतया आगरा ; सा०—भू० पू० अवैतनिक अध्यापक—हिंदी साहित्य (रात्रि) पाठशाला; रच० — बुधजनविलास (श्रीचंदजी के सहयोग द्वारा रचित) ; प०—गणित और हिंदी अध्यापक, ऐंग्लोवैदिक हाई स्कूल, जोबनेर, पो० आसलपुर, जयपुर।

पंचमसिंह, कैप्टेन, राजा, ईसुद्दौला—प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—२८ जनवरी १९०४ ; शि०—सरदार स्कूल फोर्ट ग्वालियर और मेयो कालेज अजमेर ; लश्कर म्युनिसिपैलिटी के सभापति ; रच०—नीति-समुच्चय, संक्षिप्त रामायण, संक्षिप्त महाभारत, शिकार, मराठा - राजपूत - इतिहास ; प०—अधिपति, पहाड़गढ़, ग्वालियर राज्य।

फूलचंद, शास्त्री—सिद्धांत-रत्न, सुलेखक तथा कुशलपत्र-कार; भूत० संपा०—'प्रमेय-रत्नमाला', 'शांतिसिंधु' ; प०—काशी।

फूलदेवसहाय वर्मा, एम० एस-सी०, ए० आई०, आई० एस-सी०—कौरुव, सारन-निवासी सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ; ज०—१८९१ ; शि० पटना कालेज, विश्वविद्यालय और प्रेसीडेंसीकालेज कलकत्ता;

बँगलौरके इंडियन इंस्टीट्यूटआव साइंस से रासायनिक विषयों पर अनुसंधान करके उपाधि पाई ; विज्ञान-परिषद्, प्रयाग के सभापति ; ना० प्र० सभा, काशी के वैज्ञानिक कोष के सहायक संपा० ; रच०—प्रारंभिक रसायन (दो भाग), साधारण रसायन (दो भाग), मिट्टी के बरतन, वैज्ञानिक शब्दकोष; अप्र०—अमेरिका, जर्मनी और भारत के पत्र-पत्रिकाओं में विखरे पचास और हिंदीपत्रों में छपे सैकड़ों वैज्ञानिक लेखों के कई संग्रह; वि०—'गंगा' के विज्ञान अंक का बड़ी कुशलता से आपने संपादन किया था ; हिं० सा० सम्मे० के शिमला अधिवेशन, और बिहार प्रां० सम्मे० के आरा अधिवेशन के विज्ञान-विभाग के सभापति ; कई पुस्तकें अँगरेजी में भी लिखी हैं ; प०—अध्यापक, रसायन विभाग, हिंदू विश्व-विद्यालय, काशी।

बचान सिंह पँवार, 'कुमुदेश' विशारद ; उदीयमान समस्यापूरक कवि; ज०—१९१४ ; सा०—सिधौली ग्राम में आप कृषकों में हिंदी का विशेष प्रचार कर रहे हैं ; अप्र० रच०—भंवर-कविता संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक विक्रमादित्य क्षत्रिय विद्यालय, सिधौली, सीतापुर।

बजरंगलाल सुलतानिया, सा० वि०—हिंदी के होनहार नवयुवक कवि ; ज०—१९१९ रुदौली, बाराबंकी ; शि०—फैजाबाद ; लेख०—१९३५ ; 'सैनिक' के स्थायी लेखक ; भू० पू० संपादक 'सुकवि' १९३९-४० ; अप्र०—कई सुंदर साहित्यिक लेख और कहानियाँ ; प्रि० वि०—सरस साहित्य ; प०—पो० जलालपुर, फैजाबाद।

बद्रीदास पुरोहित, वेदांतभूषण—प्रसिद्ध विद्वान्, अध्ययनशील लेखक और मननशील विचारक ; भूत०

संपा०—साप्ताहिक 'धर्म-रक्षक' कलकत्ता ; प०—प्रधान, श्रीवानप्रस्थाश्रम, जोधपुर।

बद्रीप्रसाद 'काला'—हरियाणा प्रांत के उत्साही हिंदी प्रचारक और सफल वक्ता ; ज०—६ सितंबर, १६१० रोहतक ; सा०—कई अहिंदी स्थानों में हिंदी पाठशालाएँ खोलीं, १६४० में साधारण कैद ; वि०—जेल से छूटकर अब हिंदी प्रचार कर रहे हैं ; प०—ठि० पं० खुशीराम शर्मा वाशिष्ठ' जैतो, नाभा स्टेट।

बद्रीप्रसाद रईस; 'रसिक-बिहारी'; ज०—१८८८ ; ज्ञा०—हिंदी, उर्दू, अँगरेजी; रच०—राधिकाबत्तीसी, दुख-विनाशन कृष्णविनय, समस्या-पूर्तियों का संग्रह, सर्वविद्या-तरंगिणी ज्योतिषतरंगावली, वि०—कुरमी जाति में आप शिक्षा का प्रचार कर रहे हैं, रामायण के विशेष प्रेमी ; प०—बड़ौदा, पो० पनागर, जबलपुर।

बद्रीप्रसाद व्यास, सा० र०—साहित्य-प्रेमी सामयिक निबंध लेखक और हिंदी-प्रचारक ; शि०—इलाहाबाद तथा इंदौर ; मालव परिषद् के संस्थापक ; वक्तृत्व तथा लेखन कला - प्रचारार्थ अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के संचालक ; हिंदी साहित्य समिति विद्यापीठ, इंदौर में भू० पू० अध्यापक, रच०—, ऊषा और अहिल्या समिति; प०—अध्यापक, हिंदीशाला, इंदौर।

बदरीनाथ वर्मा, एम० ए०, काव्यतीर्थ ; बिहार के प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक ; बिहार-विद्यापीठ के आचार्य, भूत० संपा०—'भारतमित्र' कलकत्ता और 'देश', पटना ; सभा०—प्रांतीय हि० सा० सम्मेलन और उसके सत्रहवें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष ; रच०—समाज और अनेक

साहित्यिक लेख; प०—मीठा-पुर, पटना।

बदरीनारायण शुक्ल, एम्० ए०, बी० टी०—हास्य-रस के सुप्रसिद्ध लेखक और कहानीकार; ज०—१० सितंबर १६१० कहानी; शि०—जबलपुर; लेख०—१६३०; रच०—कुंदजेहन, शास्त्रीसाहब; अप्र०—कथा-कुंज; प०—अध्यापक राज-कुमार कालेज, रायपुर सी० पी०।

बनारसीदास चतुर्वेदी—सुप्रसिद्ध पत्रकार, संस्मरण और स्केच लेखक तथा साहित्य-मर्मज्ञ; ज०—१८६२; शि०—आगरा कालेज में इंटर तक; फर्रुखाबाद हाई स्कूल में अध्यापक १६१३-१४; डेली कालेज इंदौर में अध्यापक १६१४-२०; शांति निकेतन में दीनबंधु सी० एफ० एंड्रूज के साथ १६२०-२१; गुजरात राष्ट्रीय विद्या-पीठ अहमदाबाद में अध्यापक १६२१-२५; तभी साबरमती आश्रम में प्रवासी भारतीयों का कार्य; 'आर्यमित्र' तथा 'अभ्युदय' के संपादकीय विभागों में १६२७; 'विशाल भारत' के संपादक १६२८-३७; टीकमगढ़ी श्रीवीरेंद्र केशव साहित्य-परिषद् के प्रधान १६३७ से; पाक्षिक 'मधुकर' के संपादक १६४० से; प्रवासी भारतीयों के संबंध में आंदोलन कार्य १६१४-२४; इंडियन नेशनल कांग्रेस के प्रतिनिधि होकर ईस्ट आफ्रिका गए १६२५; समय-समय पर प्रवासी भारतीय, घासलेट साहित्य विरोधी, साहित्य और जीवन, विकेंद्रीकरण, जनपदीय कार्य-क्रम बुंदेलखंड प्रांत-निर्माण, पत्रकार और लेखक-समस्या, अराजकवाद, सेतुबंध आदि आंदोलनों में सोत्साह कार्य किया; शांतिनिकेतन में हिंदी भवन, कांग्रेस में विदेशी विभाग और साहित्य-सम्मेलन

में सत्यनारायण - कुटीर की स्थापना कराई ; रच०—प्रवासी भारतवासी, भारत-भक्त एंड्रूज, सत्यनारायण कविरत्न. रानाडे, केशवचंद्र-सेन, हृदयतरंग (संग्रह), फिजी की समस्या, फिजी में भारतीय प्रतिज्ञाबद्ध कुली प्रथा, राष्ट्रभाषा ; ट्रैक्ट—एमा गोल्ड मैन, लुई माइकेल, प्रिंस क्रोपाटकिन, माइकेल वाकूनिन आदि ; वि०—अपने ग्रंथों से विशेष आर्थिक लाभ उठाने का आपने प्रयत्न नहीं किया ; सर्वसाधारण के लिए अपनी रचनाओं का मुद्रणाधिकार स्वतंत्र कर रखा है ; समय-समय पर अनेक साहित्य-संस्थाओं के सभापति भी रहे हैं ; प्राचीन भारतीय उत्सवों के उद्धार और प्रचार की आशा से प्रतिवर्ष आप वसंतोत्सव की आयोजना करते हैं ; प०—टीकमगढ़, झाँसी।

बनारसीदास जैन, डॉक्टर, एम्० ए०. पी-एच० डी०—पंजाब प्रांत के लब्ध-प्रतिष्ठ सुलेखक और हिंदी-प्रेमी विद्वान् ; ज०—१८८९ लुधियाना ; रच०—अर्धमागधी-रीडर, हिंदी व्याकरण, जैन-जातक, प्राकृत-प्रवेशिका, फोनोलोजी आफ पंजाबी, कैटलाग आफ मैनस्क्रिप्ट इन दी पंजाबी जैन भांडार, पंजाबी जबान के लिट्रेचर—फारसी ; प०—६ नेहरूस्ट्रीट कृष्णनगर, लाहौर।

बनारसीप्रसाद 'भोजपुरी'—मटुकपुर-निवासी प्रसिद्ध-पत्रकार और लेखक ; ज०—१९०४ ; शि०—विशारद ; सा०—भू० सहकारी संपादक—'स्वाधीन भारत', आरा और 'आर्यमहिला' काशी ; 'बालकेसरी' आरा के संपादकीय विभाग में भी काम कर चुके हैं ; रच०—भंडाफोड़, देशभक्त, मेरे देवता, मेरे राम का फैसला, समाज का पाप, गरीब की आह, आदर्श गाँव

मैदाने जंग ; प०—ग्राम, पो० वड़हरा, आरा, बिहार।

वनारसीलाल 'काशी', बी० ए०, सा० र०—शाहाबाद प्रांतीय हिंदी-सेवक तथा उत्साही कार्यकर्त्ता ; भभुआ, सूरजपुरा और तिलौथू में सम्मेलन परीक्षा केन्द्र के स्थापक ; रच०—रामायण के उपदेश, हिंदी पाठमाला ; प०—प्रधान हिंदी अध्यापक, सरल हाई स्कूल, तिलौथू, शाहाबाद, बिहार।

बम्बहादुरसिंह नेपाली 'मगन' उदीयमान लेखक ; ज०—देहरादून १६१७ ; शि०—बेतिया ; भूत० संपा०—चम्पारन ; रच०—फुटबाल नियमावली, फुटबाल, फुटबाल-संसार, चम्पारन का इतिहास तथा संजीवन ; अप्र०—रामनगर राज्य का इतिहास, भारतीय सिनेमा आदि ; प०—पेशकार, रामनगर राज्य, चम्पारन, बिहार।

ब्योहार राजेंद्रसिंह, एम० एल० ए०—सुप्रसिद्ध देशभक्त और हिंदी-प्रेमी विद्वान् ; रच०—ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार; अप्र०—अनेक सामयिक और लोकोपयोगी विषयों पर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे सुंदर और पठनीय लेखों के कई संग्रह ; प०—जबलपुर।

बरजोरसिंह 'सरल', सा० र०—नाटक तथा उपन्यासकार ; शि०—प्रयाग, मुजफ्फरपूर, वर्तमान समय में हिंदी प्रचार कार्य; रच०—दीनोद्धार और शीला ; प०—१३० खुशाल पर्वत, प्रयाग।

बसंतीलाल मलयानी—साहित्य-प्रेमी, लेखक, और सफल संपादक ; शि०—सैलाना, मालवा ; सा०—साप्ताहिक 'महेश्वरी बंधु' कलकत्ता के नौ साल तक संपादक ; अप्र० रच०—समय समय पर विभिन्न साम-

थिक विषयों पर लिखे लेख-संग्रह ; प०—श्री निवास काटनमिल, बंबई ।

बलदेव उपाध्याय, सा० आ०—संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् और हिंदी-प्रेमी ; ज०—१८६६ बलिया; सा०—संस्कृत के अनेक विद्वत्तापूर्ण प्राचीन ग्रंथों का शुद्ध संस्करण निकाला ; 'काव्यालंकार' और 'भरत नाट्यशास्त्र' का शुद्ध सुलभ-संस्करण प्रस्तुत किया, रच०—रसिकगोविंद और उनकी कविता, सूक्तिमुक्तावली, संस्कृत कविचर्चा, भारतीय दर्शन, शंकरदिग्विजय, आचार्य सायण ; प०—संस्कृताध्यापक, विश्वविद्यालय बनारस ।

बलदेवनारायण बी० ए०—कुशी निवासी प्रसिद्ध अर्थशास्त्री विद्वान् ; कई गंभीर लेख लिखे जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं ; अब तरवरा (दरभंगा) की बिहार विद्यापीठ शाखा में अध्यापक हैं ; प०—दरभंगा ।

बलदेवप्रसाद मिश्र 'राजहंस' एम्० ए० , एल-एल०बी०,डी० लिट्;ज०—१२ सितंबर १८९८; सा०—साहित्यिक, सामाजिक तथा लोकसेवी संस्थाओं का नेतृत्व और प्रतिनिधित्व ; रच०—शंकर दिग्विजय, शृंगारशतक, वैराग्यशतक, असत्य संकल्प, वासनावैभव, जीवनविज्ञान, साहित्यलहरी, गीतासार, कोशलकिशोर, मादक प्याला, मृणालिनी-परिणय, समाजसेवक, तुलसी-दर्शन, जीवनसंगीत, मानस-मंथन ; प्रि० वि०—समाज-सेवा, साहित्यिक तथा दार्शनिक चर्चा; प०—रायपुर ।

बलभद्रपति—राँची के सहृदय हिंदी प्रेमी और प्रचारक ; ज०—१९१४ राँची ; सा०—हिंदी साहित्य परिषद्, राँची के वर्तमान मंत्री, १९४२ में उक्त-

परिषद् के पुस्तकालय का उद्घाटन, हस्तलिखित 'दीपक पत्रिका का प्रकाशन ; प्रि० वि०—चित्रकला; प०—मंत्री हिंदी साहित्यपरिषद्, राँची।

बलवीर सिंह ठाकुर 'रंग'—एटा के प्रसिद्ध नवयुवक कवि ; रच०—खटमल बाईसी, परदेशी ; प०—नगला कटीला, तहसील कासगंज, एटा।

ब्रजनाथ शर्मा, एम० ए०, एल-एल० बी०—अद्वैत वेदांत के मर्मज्ञ, प्रसिद्ध वक्ता और सुलेखक ; ज०—१८८७ लखनऊ ; शि०—लखनऊ ; सा०—वाइस प्रेसीडेंट, रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग; सह० सभापति युक्त-प्रदेश धर्मरक्षिणी सभा, उप-सभापति मूलचंद रस्तोगी ट्रस्ट, मान्य सदस्य हि० सा० सम्मेलन, प्राच्य विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय के सदस्य ; रच०—महात्मा गाँधी (दो भाग), डी० डी० बेलेरा, स्वामीराम का जीवनचरित्र, महान चरित्र ; प०—चौपटियाँ, लखनऊ ।

ब्रजेंद्रनाथ गौड़—उदीयमान कवि, कहानीकार और उपन्यासलेखक; भूत० संपादक—उर्मिला, कृपक, मासिक विज्ञापक, विजय ; प्रधानमंत्री और संचालक और श्रमजीवी लेखक मंडल ; रच० अतृप्त मानव, सिंदूर की लाज, पैरोल पर, भाई बहन, सीप के मोती, युद्ध की कहानियाँ ; अप्र०—आवारा, मन के गीत ; प०—उर्मिला आफिस, लखनऊ।

वृद्धिचंद शर्मा वैद्य,—वयोवृद्ध हिंदी-प्रेमी विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१८८२; शारदासदन पुस्तकालय के संस्थापक ; सरस्वती. पुस्तकालय के जन्मदाता ; कई गवेषणात्मक लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित

सावित्री पाठशाला, धर्म-युवक मंडल के संस्थापक और संरक्षक ; प०—लक्ष्मणगढ़ (सीकर)।

ब्रह्मदत्त भवानीदयाल—महात्मा भवानीदयाल संन्यासी के सुपुत्र और हिंदी के होनहार सुलेखक ; ज०—१३ फरवरी १९१९ ; शि०—शास्त्री-कालेज, डरबन (दक्षिण-अफ्रीका); र०—पोर्तु गीज पूर्व अफ्रीका में हिंदुस्तानी, प्रवासी - प्रपंच - उपन्यास ; वि०—आपकी सहधर्मिणी सुश्री निर्मला भी हिंदी-विदुषी हैं; प०—प्रवासीभवन, आदर्शनगर, अजमेर।

ब्रह्मदत्त मिश्र 'सुधींद्र', बी० ए०, सा० र०—कोटा निवासी विद्वान्, सफल कार्यकर्ता तथा कवि ; शि०—इंदौर, आगरा, गोरखपूर ; सा०—भारतेंदु समिति, कोटा राज्य के साहित्य-मंत्री ; र०—शंखनाद ; अप्र०—कई कविता और साहित्य लेख-संग्रह ; प०—क्लर्क, पुलिस विभाग, कोटा।

बाबूराव विष्णुपराड़कर—भारत के सफल पत्रकारों में से एक, सुवक्ता और प्रसिद्ध लेखक ; ज०—१८८३ काशी ; सा०—भू० पू० संपादक 'बंगवासी' (१९०७-८), हितवार्ता १९०७-१०, 'भारतमित्र' १९१०-१९, 'आज' १९२० से अब तक, इस समय दैनिक 'संसार' के भी संपादक हैं, अ० भा० हिंदी-साहित्य सम्मेलन के २७ वें अधिवेशन शिमला के सभापति ; वि०—स्व० श्री प्रेमचंदजी की पुण्यस्मृति में मासिक 'हंस' काशी के 'स्मृति-अंक' का भी आपने १९३७ में संपादन किया था; हिंदी-पत्रकार कला को और उठाने का श्रेय आपको भी है ; प०—बनारस।

बाबूलाल गुप्त, सा० वि०—अध्ययनशील लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—

१८८८ ; सा०—स्थानीय हिंदी साहित्य-सभा के जन्म-दाता ; आठवें बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के मंत्री ; स्थानीय सेवक समिति और हिंदू सभा के उपमंत्री ; अब हिं० सा० सभा के प्रधान-मंत्री ; रच०—कान्यकुब्ज, नवीन गया माहात्म्य ; प०—लहेरीटोला, गया ।

बाबूलाल भार्गव 'कीर्ति' बी० ए०, बी० टी०, सा० आ०, सा० र०, एम० आर० ए० एस०—बालसाहित्य के ख्याति प्राप्त सुलेखक और प्रसिद्ध विद्वान् ; ज०—१९०८ सागर; शि०—सागर, काशी, जबलपुर ; रच०—परियों का दरबार, लोमड़ी रानी, विदेश की कहानियाँ, बाल-कथामंजरी, पद्यप्रसून, सुगम हिंदी व्याकरण (२ भाग) ; अप्र०—अनोखी कहानियाँ, मिठाई, फुलझड़ियाँ, मस्त-धारा, तितली, गद्यप्रवेशिका, कलरव ; प्रि० वि०—बाल-साहित्य ; प०—हेडमास्टर म्यूनिसिपल हाई स्कूल, सागर, मध्यप्रांत ।

बाबूलाल मार्कंडेय—साहित्य-प्रेमी लेखक और भावुक कवि ; ज०—१९०६ ; अप्र० रच०—दो तीन कहानी और कविता-संग्रह ; प०—हेडक्लर्क, लोकलबोर्ड, मंडला, सी० पी० ।

बाबूलाल 'ललाम' प्रसिद्ध कवि, नाटककार और साहित्य-प्रेमी; ज०—१८७७; ज्ञा०—उर्दू, फारसी अँगरेजी; प्राचीन पुस्तकों का संग्रह है ; अनेक नाटकों तथा काव्यों की रचना की है ; प्रि० वि०—भक्तिविषयक रचना; प०—नियावा, फैजाबाद ।

बाबूराम बिथरिया सा० र०—साहित्यसेवी, ले-खक, संपादक एवं जातिसेवक; ज०—१८८९ सिरसागंज, मैनपुरी; शि०—आगरा, प्रयाग; ज्ञा०—उर्दू; सीनियर ट्रेनिंग इंस्पेक्टरी और हेड-मास्टरी ट्रेनिंग स्कूल जिला

आगरा में सुपरवाइजरी और इंचार्जी हिंदी विभाग रेलवे स्कूल बाँदीकुई (राजपूताना) में की, काटन प्रेस के मैनेजर, अब काशी नागरी प्रचारिणी सभा के साहित्यान्वेषक, भूतपूर्व सं०—अध्यापक, अयोध्यावासी पंच; संचालक—सनातन धर्म पुस्तकालय, शारदासदन, भारती-भवन; रच०—हिंदी काव्य में नवरस, हिंदी शिक्षा चतुर्थ भाग, प्रथमा साहित्यदर्पण, प्रारंभिक व्याकरण; हिंदी-नवरत्नों की जीवनी और उनके काव्यों का चुना हुआ संग्रह, कृष्ण, भीष्म, नल-दमयन्ती, रायबहादुर हीरा-लाल की जीवनी, हिंदी की व्यापकता निबंध, जिस पर रघुनाथसिंह स्वर्णपदक मिला आदि (अप्रकाशित); त्रि०—सनाढ्य महासभा लश्कर, ग्वालियर से 'जात्यालंकार' की उपाधि प्राप्त की। प०—सनातनधर्म पुस्तकालय, फिरोजाबाद।

बालकृष्णराव एम० ए०, आई० सी० एस०; अँगरेजी दैनिक 'लीडर' के यशस्वी संपादक स्व० श्री सी० वाई० चिंतामणि के सुपुत्र, हिंदी के प्रतिष्ठित कवि और कुशल लेखक; ज०—१९१३; सेक्रेटरी, इलाहाबाद यूनिवर-सिटी यूनियन; मंत्री—सुकवि समाज प्रयाग; सभा०—कवि सम्मेलन द्विवेदी मेला प्रयाग, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट प्रयाग; असिस्टेंट कमिश्नर हरदोई; सभापति हिंदी-साहित्य संघ, लखनऊ; रच०—कौमुदी, आभास; प०—प्रयाग।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'—सुप्रसिद्ध देश-प्रेमी, ख्यातिप्राप्त सुकवि और वक्ता; ज०—१८९७ भुजालपुर; सा०—भूत० संपा०—'प्रताप', 'प्रभा'; रच०—कुंकुम; अप्र०—कई सुंदर। कविता-संग्रह; प०—ठि० 'प्रताप'

कार्यालय, कानपुर।

बालमुकुंद गुप्त एम० ए०, सा० र० ; प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी आलोचक; ज०—लखनऊ १६०६ ; रच०—हिंदी-साहित्य में कृष्णकाव्य का विकास ; अनेक पाठ्य-पुस्तकें जो यू० पी० और पंजाब में शिक्षा क्रम में हैं ; वि०—बचपन स्वर्गीय आचार्य पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी के संसर्ग में कटा, 'हिंदी में कृष्णकाव्य का विकास' नामक महत्त्व-पूर्ण विषय में खोज कर रहे हैं ; प०—डी० ए० वी० कालेज, कानपूर।

बालमुकुंद गुप्त, एम० ए०, सा० र०—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी और कुशल आलोचक ; सा०—'वर्तमान' (दैनिक), कानपुर का संपादन ; रच०—हिंदी व्याकरण और रचना-प्रवेश ; अप्र०—दो समालोचना-संबंधी साहित्यिक लेख-संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक, डी० वी० कालेज, गोरखपूर।

बालमुकुंद व्यास—प्रचार-क्षेत्र से बाहर रहनेवाले अध्ययनशील वयोवृद्ध विद्वान् और व्याकरण के प्रकांड पंडित ; ज०—१८७३, ईसागढ ; ज्ञा०—फारसी, उर्दू, अँगरेजी, संस्कृत ; भूत० हिंदी व्याख्याता, माधव कालेज उज्जैन ; अप्र०—आलोचनात्मक हिंदी-व्याकरण नामक बृहत् ग्रंथ, संतशीलनाथ, योग ; प०—उज्जैन।

बालसिंह ठाकुर—पुराने ढंग की समस्यापूरक कविता करने में सुदक्ष, अलंकार-शास्त्र के विशेष ज्ञाता और प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञ ; तुलसी-साहित्य के अनन्यभक्त और प्रेमी प्रचारक ; प०—सीकर।

बिट्ठलदास मोदी—प्राकृतिक चिकित्सा के आचार्य और सुलेखक ; प्राकृतिक

चिकित्सा पर आपके अनेक लेख यत्र-तत्र प्रकाशित हो चुके हैं ; आरोग्य - मंदिर, गोरखपुर के संस्थापक ; भू० पू० संपादक 'जीवन सखा', 'जीवन-साहित्य' ; प०—आरोग्यमंदिर, गोरखपुर ।

बिंदाचरण वर्मा, बी० एस-सी०, विज्ञान के अध्ययन में लगे हुए उत्साही हिंदी-प्रचारक ; ज०—१९२३ मुजफ्फरपुर ; सा०—'सुहृद-संघ' मुजफ्फरपुर के संयोजकों में एक ; उक्त सघ के प्रबंध मंत्री, हाई इंग्लिश स्कूल मोतीपुर के निर्माण में आपने सहयोग दिया ; प०—हेड-मास्टर, हाई इंग्लिश स्कूल, मोतीपुर, मुजफ्फरपुर ।

बी० पी० सिनहा 'पन्ना-बाबू', बी० एस-सी०, बार० एट० ला०, सिमरीनिवासी प्रसिद्ध पत्रकार, उच्चकोटि के विचारक और लेखक ; भू० पू० संपादक देश, संघर्ष ; प०—लखनऊ ।

बुद्धिचंदपुरी 'हिमकर' सा० भू०, सा० लं०—पंजाब प्रांत के हिंदी-प्रेमी, प्रचारक और विद्वान् ; रच०—स्त्री-शिक्षा भजनावली, स्त्रीधर्म चेतावनी, श्रीकामधेनुदशा, भक्ति उपदेश रत्न, श्रीप्रह्लाद नाटक, श्रीसूरदास, सती-शीतवंती, पूर्णभक्त (चार भाग), श्रीबद्री केदार यात्रा; वि०—स्त्रीशिक्षा के आप विशेष प्रेमी हैं ; प०—रामेश्वर-पुस्तकालय, हिम्मत-पुर, पो० लसूरी, शुजाबाद, मुलतान ।

बेचू नारायण, रायबहादुर—बालसाहित्य के प्रसिद्ध बिहारी लेखक ; अनेक साहित्यिक संस्थाओं से संबंधित ; रच०—शिशु-चिंतन, ब्रह्मानंद, केशवचंदसेन, राजाराम मोहनराय, जीवनवेद इत्यादि प०—पटना ।

बेनीप्रसाद वर्मा, बी० ए० ; ज०—१९२०; शि०—अजमेर, नागपुर ; रच०—

भारतीय चित्रकला तथा शिल्पकला ; वि०—आपने कवि 'प्रसाद' के 'आँसू' का अँगरेजी में अनुवाद किया है ; प०—असिस्टेंट स्टेशन मास्टर, इटारसी।

वैजनाथप्रसाददुवे 'साहित्यरत्न'; ज०—१६०७ ई० ; शि०—सागर (सी० पी०), पचमढ़ी (सी० पी०), अजमेर बोर्ड ; हिंदी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ; सा०का०—भूत० संपा०—प्रताप सेवा-संघ ; सदस्य—लेखकसंघ प्रयाग, रेडक्रास महू ब्रांच के अंतरगत काउन्सलर ; हिंदी साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के केंद्र के व्यवस्थापक ; अप्र० रच०—हिंदी साहित्य के सप्तसुमन, बड़ों का विद्यार्थी जीवन, गिरा—समालोचना ; प्रि० वि०—समालोचना एवं बाल-साहित्य ; प०—हिंदी अध्यापक, पी० बी० पी० स्कूल महू (मध्यभारत)

वैजनाथपुरी, एम० ए० एल-एल० बी०—प्रसिद्ध इतिहास प्रेमी विद्वान् और लेखक ; ज०—२१ जनवरी १९१६ लखनऊ ; शि०—लखनऊ ; सा०—संपादक प्राचीन भारत ; सदस्य इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस; रच०—इंडिया ऐज़ डिक्राइब्ड बाई अरली ग्रीक राइटर्स ; अप्र०—यूनानी इतिहासकारों का भारतवर्णन, कुशानकाल एवं कुशानकालीन सभ्यता संबंधी ४० लेख ; वि०—आजकल कुशानकालीन सभ्यता और संस्कृति पर थीसिस लिख रहे हैं; रेडियो पर अक्सर प्राचीन भारतीय सभ्यता संबंधी ब्राडकास्ट भी करते हैं; प०—कटारी टोला, लखनऊ।

भगवत्स्वरूप जैन 'भगवत्'—जैन-समाज के लब्धप्रतिष्ठ कवि, कहानी और नाटककार ; रच०—उस दिन, संन्यासी, समाज

की आग, घूँघट, घरवाली, रसभरी, आत्मतेज, त्रिशला-नंदन, जयमहावीर ; फलफूल, झंकार, उपवन, भाग्य ; प०—आगरा।

भगवतसिंह, महाराजकुमार—हिंदी साहित्य के अनुरागी, हिंदी-प्रचार-प्रसार-कार्य की योजनाओं से सहमत और हिंदी के अधिकारों के समर्थक ; प०—उदयपुर, मेवाड़।

भगवतीचरण ; ज०—१८६६ ; प्रसिद्ध लेखक; सा०—आरा नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य तथा कार्यकर्त्ता, चम्पारन जिला साहित्य-सम्मेलन तथा मोतिहारी के भारतेंदु साहित्यसंघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता ; रच०—महर्षि जमदग्नि का सत्याग्रह; अप्र०—झल्लकंठ, मुगल-आजम ; प्रिय वि०—साहित्य ; प०—अध्यापक, गौरीशंकर स्कूल, मोतिहारी, विहार।

भगवतीचरण वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी० ; कुशल कवि, प्रसिद्ध उपन्यासकार और सफल कहानी-लेखक ; ज०—१९०३ शफीपुर ग्राम ; लेख०—१९२९ ; रच०—कविता—मधुकण, प्रेम-संगीत, मानव, उपन्यास—पतन, चित्रलेखा, तीन-वर्ष, कहानी संग्रह—इंस्टालमेंट, दो वाँके; वि०—आपके उपन्यास 'चित्रलेखा' का फिल्म बनाया गया जिसको जनता ने बहुत पसंद किया, आजकल आप बंबई में रहकर फिल्मों के संवाद और गाने लिख रहे हैं; प०—बंबई।

भगवती देवी—हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कहानीकार और गंभीर औपन्यासिक श्रीजैनेंद्रकुमारजी की विदुषी और कहानी-लेखिका पत्नी ; कई सुंदर और उच्चकोटि की कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ; प०—दिल्ली।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी—हिंदी के सुप्रसिद्ध कथाकार, साहित्य-प्रेमी और उपन्यास-लेखक ; ज०—१८९९ मंगलपुर ग्राम ; लेख०—१९१७ ; सा०—भू० पू० संपादक 'संसार', 'विक्रम' दैनिक, माधुरी; भूत० सहायक मंत्री, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन (४ वर्ष तक) ; र०—उपन्यास—पिपासा, परित्यक्ता, दो वहनें; कहानी—पुष्करिणी, खाली-बोतल; नाटक—छलना, आलो०—युगारंभ ; वि०—आपकी रचनाओं में कवींद्र रवींद्र और प्रसिद्ध औपन्यासिक शरत की छाया है ; प०—दारागंज, प्रयाग।

भगवतीप्रसाद सिंह 'शूर'—सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी रईस ; कई साहित्यिक समारोह और आयोजनों के संयोजक; र०—म० म० रामावतार शर्मा के संस्मरण ; प०—सारन।

भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव, एम० एस-सी०, एल-एल० बी०—ज०—१९११ आजमगढ़ ; शि०—प्रयाग ; 'हिंदी-विश्वभारती' के 'भौतिक-विज्ञान' तथा 'प्रकृति पर विजय' शीर्षक स्तंभों के संपादक ; र०—वैज्ञानिक चमत्कार ; अप्र०—कई सुंदर वैज्ञानिक लेख; प०—किशोरीरमण इंटर कालेज, मथुरा।

भगवतीप्रसाद त्रिवेदी 'करुणेश'; सा० वि०; ज०—१२ अक्टूबर १९०६ ; ले०—१९२४ ; र०—पद्यप्रवाह ; अप्र०—कुंडलियाशतक, गड़बड़माला, दोहावली ; प्रि० वि०—करुण और हास्यरस ; प०—सहकारी अध्यापक कान्यकुब्ज वोकेशनल स्कूल, लखनऊ।

भगवतीलाल श्रीवास्तव, सा० र०—साहित्य और विज्ञान-प्रेमी सामयिक निबंध लेखक ; र०—हिंदी-

गुणगान, विषबेलि, अनत का अतिथि, बालगीतावली, हृदयकूक और संक्रामक-व्याधियाँ; अप्र०—दो साहित्य और विज्ञान-संबंधी सामयिक लेखसंग्रह; प०—बनारस।

भगवन्नारायण भार्गव, बी० ए०, एल-एल बी०—खड़ीबोली के प्रसिद्ध कवि और साहित्य-सेवी लेखक; रच०—मेघनाद-वध नामक काव्य; प०—वकील, झाँसी।

भगवानदास केला—राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान् और विशेषज्ञ; ज० १८६० ; शि०—पानीपत, करनाल, दिल्ली और नागपुर; भू० प्रधानाध्यापक पोकरण मिडिल स्कूल, जोधपुर; लेख०—१६१०; भू० संपा०—'प्रेम', वृंदावन और 'माहेश्वरी', नागपुर; र०—भारतीयशासन देशीराज्य-शासन, भारतीय विद्यार्थी-विनोद, हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ, भारतीय जागृति, विश्व-वेदना, भारतीय-चिंतन, भारतीय-राजस्व, नागरिक शिक्षा, श्रद्धांजलि, भारतीय नागरिक, अपराध-चिकित्सा, भारतीय अर्थशास्त्र, गाँव की बात, साम्राज्य और उसका पतन, सरल भारतीयशासन, नागरिकशास्त्र, भारतीय राज्य-शासन, नागरिक ज्ञान, ऐलिमेंटरी सिविक्स, सरल नागरिक ज्ञान (दो भाग), राजस्व, देशभक्त दामोदर, बाल-ब्रह्मचारिणी कुंती देवी, सरल नागरिक शास्त्र; अन्य मित्रों के साथ लिखी रचनाएँ—हिंदी में अर्थशास्त्र और राजनीति-साहित्य, निर्वाचनपद्धति राजनीतिशब्दावली, ब्रिटिश-साम्राज्यशासन, अर्थशास्त्र-शब्दावली, धन की उत्पत्ति, सरल अर्थशास्त्र; प०—भारतीय ग्रंथमाला-कार्यालय, वृंदावन।

भगवानदीन महात्मा—जैन-साहित्य के प्रतिष्ठित विद्वान्, जैन और आर्य-संस्कृति के पुजारी, राष्ट्रीय

भावना-प्रधान कविताओं के रचयिता और सुलेखक; अप्र० रच०—अनेक महत्त्वपूर्ण निबंध-कविता-संग्रह ; प०—ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनागपुर।

भगीरथप्रसाद शास्त्री—अध्ययनशील विद्वान्, संस्कृत साहित्य के पंडित और हिंदी के कुशल लेखक; अप्र० रच० हिंदी और संस्कृत में लिखे तीन चार सरस काव्य-संग्रह ; प०—अध्यापक, महाविद्यालय, ज्वालापुर।

भगीरथ 'प्रेमी' बी० ए० एल-एल० बी०—उदीयमान कहानी-लेखक और कवि ; ज०—१९१७ ; शि०—होलकर कालेज, इंदौर ; सा०—स्थानीय हिंदी-साहित्य सभा के सभापति ; अप्र० रच०—दो लेख और कहानी-संग्रह ; प०—सेक्रेटेरियट, बड़वाहा, इंदौर।

भगीरथ मिश्र, एम० ए०—साहित्य-प्रेमी, उदीयमान कवि और गंभीर आलोचक ; ज० १९१४ कानपुर ; शि०—लखनऊ - विश्वविद्यालय ; रच०—पृथ्वीराज रासो के दो समय ; अप्र० रच०—दो तीन कविता-संग्रह; वि०—आरंभ से कविता में रुचि, कई हिंदी समितियों की स्थापना; प्रि०वि०—निबंध, कहानी और कविता ; प०—अध्यापक, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, लखनऊ।

भदंत आनंद कौसल्यायन—बौद्ध-साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् और कुशल लेखक ; ज०—१९०५ अम्बाला ; रच०—बुद्धवचन, बुद्ध और उसके अनुचर, भिक्षु के पत्र, जातक—दो भाग, 'सचो संगहो' (त्रिपिटक के मूल पालि-उद्धरणों का संकलन) के संपादक ; अप्र०—महावंश—अनुवाद ; प०—मूलगंध कुटि, विहार, सारनाथ, बनारस।

भवानीदयाल संन्यासी—

प्रवासी भारतीयों के उत्साही और निस्वार्थ सेवक और उनकी समस्याओं पर विभिन्न दृष्टियों से विचार करने तथा लिखनेवाले विद्वान् लेखक; सा०—अ० भा० हिंदी सम्पादक सम्मेलन, कलकत्ता अधिवेशन के सभापति १९३१, दशम विहार-हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति १९३१, भू० पू० संपादक 'आर्यावर्त' १९१३-१४; 'इंडियन ओपीनियन' (हिंदी-विभाग), १९१४, 'धर्मवीर' (१९१७-१८), 'हिंदी' (१९२२-२५) 'आर्यावर्त' १९३१; ग्र०—दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, सत्याग्रही महात्मा गांधी, वैदिक धर्म और आर्य-सभ्यता, हमारी कारावास-कहानी, ट्रांसवाल में भारतवासी, नेटाली हिंदू, शिक्षित और किसान, दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव, वैदिक प्रार्थना, प्रवासी की कहानी, वर्णव्यवस्था या मरण अवस्था स्वामी शंकरानंद-संदर्शन, कई छोटे-छोटे ट्रैक्ट, सैकड़ों सामयिक लेख; वि०—आजकल आप 'प्रवासी पुस्तकमाला' का प्रकाशन-संपादन कर रहे हैं; प०—प्रवासीभवन, आदर्शनगर, अजमेर।

भागवतप्रसाद वर्मा 'दुखित'—सियरुआँ-निवासी प्रसिद्ध लेखक, कवि और पत्रकार; 'माधुरी' और 'गंगा' के संपादकीय विभाग में काम किया; अप्र०—सामयिक विषयों पर लिखे निबंधों और कविताओं के दो-तीन संग्रह; प०—हिंदी अध्यापक, राज-हाईस्कूल, सूर्यपुरा, विहार।

भागवतमिश्र, बी० ए० एल-एल० बी०, साहित्य-प्रेमी, सार्वजनिक कार्यकर्त्ता और कुशल लेखक; ज०—१८९२; सा०—ग्रामसुधार के भूतपूर्व सभापति, कोआपरेटिव सोसाइटीके चेयरमैन, स्थानीय डी० ए० वी० हाई स्कूल के भूतपूर्व मैनेजर तथा नागरी

प्रचारिणी सभा गाजीपुर के वर्तमान सभापति; अप्र० रच०—द्रौपदी की क्षमा, करवला, वरदान, मिश्र-दोहावली, गोधूलि आदि ; प०—वकील, गाजीपुर।

भागीरथप्रसाद दीक्षित, सा० र०—आलोचक हिंदी लेखक और सुवक्ता; ज०—१८८४ ; शि०—प्रयाग ; ज्ञा०—संस्कृत ; कोटा के नारमल स्कूल के हेडमास्टर, इंसपेक्टर आफ स्कूल्स और इंटर कालेज के प्रोफेसर रहे ; विद्यापीठ प्रयाग में प्रिंसिपल रहे, और नागरी प्रचारिणी सभा काशी में रिसर्च का काम किया ; सेंट जोजेफ व नेशनल हाई स्कूल, लखनऊ के अध्यापक रहे ; रच०—शिवाबावनी, साहित्यसरोज, हिंदीव्याकरणशिक्षा, साहित्यसुधाकर गद्य-प्रवेशिका, गाजीमियाँ, हिंदूजाति की पाचनशक्ति, वीर काव्य-संग्रह, दीक्षितकोष ; प०—दारागंज, प्रयाग।

भानुसिंह बघेल—अध्ययनशील लेखक, हिंदी के अधिकारों के समर्थक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८६२; रच०—बालादर्श, बांधवेश वीर वेंकटरमणसिंह ; अप्र०-युवादर्श और रीवाँ का इतिहास ; प्रि० वि०—इतिहास और साहित्य ; प०—भरतपुर, गोविंदगढ़, रीवाँ राज्य।

भास्कररामचंद्र भालेराव (सुभेदार) 'कविदास'—मराठी-साहित्य के विद्वान्, हिंदी-प्रेमी और सुलेखक ; ज०—१८६५ ; सम्पादित और अनुवादित ग्रंथों की संख्या लगभग २४ हैं, चार इतिहास अप्रकाशित हैं ; प०—मनावर, ग्वालियर।

भीखनलाल आत्रेय—डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्; दर्शन, मनोविज्ञान और सिद्धांत के प्रकांड पंडित, लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१८६७ सहारन-

पुर ; शि०—सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और काशी ; सा०—'फिलासफी आफ योगवाशिष्ठ' नामक विषय पर थीसिस लिखकर डी० लिट की डिगरी प्राप्त की; दूसरी अ० भा० ओरियंटल कान्फ्रेंसके सभापति; रच०—योगवाशिष्ठ और उसके सिद्धांत, श्रीशंकराचार्य का मायावाद, वाशिष्ठ-दर्शनसार, प्रकृतिवाद-पर्यालोचन, फिलासफीआफ योगवाशिष्ठ, योगवाशिष्ठ एंड इट्स फिलासफी, योगवाशिष्ठ एंड माडर्न थाट्स, एलीमेंट्स आफ इंडियन लाजिक, फिलासफीआफथियोसोफी, वाशिष्ठदर्शनम्, योगवाशिष्ठसार, डेफीकेशन आफ मैन, ए प्ली फार रिओरिंटलेशन आफ ओरिंटलथाट्स; प०—बिड़ला होस्टल, विश्वविद्यालय, काशी।

भुवनेंद्रकुमार 'विश्व'—जैनसमाज के होनहार कवि और सुलेखक ; भू० पू० संपादक 'महावीर' ; आजकल सरल 'जैनग्रंथमाला' के संचालक हैं जिसमें १० उत्तम धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है ; प०—जबलपुर।

भुवनेश्वरनाथ मिश्र, 'माधव', एम० ए०; सिओंली निवासी, भक्ति और संतसाहित्य के मार्मिक मननशील विद्वान्, अत्यंत भावुक लेखक और भक्त कवि ; ज०—१६०४ ; भू० संपा० साप्ताहिक 'सनातनधर्म'—हिंदू-विश्वविद्यालय ; वर्तमान सहकारी संपा० 'कल्याण'—गीताप्रेस, गोरखपुर ; रच०—मीरा की प्रेम-साधना, धूपदीप, संतवाणी. संत-साहित्य ; अप्र०—अनेकआलोचनात्मक और साहित्यिक लेखों के संग्रह ; प०—पो० चिलौटी, शाहाबाद, बिहार।

भुवनेश्वरप्रसाद 'भुवनेश कवि', एम० ए०, बी० एल ; छपरा-निवासी ब्रजभाषा के सुंदर कवि ; राजेंद्र कालेज, छपरा में संस्कृत प्रोफेसर

संगीतकला के मर्मज्ञ, रच०—कई चमत्कारपूर्ण कविताएँ; प०—छपरा।

भुवनेश्वरराय, बी० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी लेखक, सफल प्रचारक तथा योग्य संपादक; बलिया भ्रातृ-मंडल की ओर से प्रकाशित 'आशा' के भू० संपा०; स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालय के संस्थापक; सम्मेलन परीक्षाओं के केंद्र-व्यवस्थापक; रच०—मेरी पहाड़यात्रा तथा जीवन की रूढ़ियाँ; मरल पक्षी पालन (बँगला पुस्तक); प०—भ्रातृमंडल, बलिया।

भुवनेश्वरसिंह 'भुवन'—आनंदपुर-निवासी सुप्रसिद्ध रईस, कवि, लेखक और पत्रकार; ज०—१६०६; रच०—आर्य्य; भू० पू० संपादक विद्यापति, लेखमाला, वैशाली, विभूति, और तिरहुत-समाचार; वि०—आपका निजी पुस्तकालय बिहार के श्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक है; प०—दरभंगा।

भूदेव शर्मा, एम० ए०, वि०लं०—लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् और सुलेखक; रच०—सत-पातसेन; संपा०—गद्य-दीपिका, सूर मंदाकिनी; प०—अध्यापक; क्राइस्टचर्च कालेज, कानपूर।

भूरसिंह सुर्यासिंह राठौर कुँवर, सा० भू०—उत्साही साहित्य-सेवी, लेखक और हिंदी अधिकारों के समर्थक; सा०—गाँवों में हिंदी-साहित्य-प्रचार के उद्देश्य से अपने निवास-स्थान में श्रीरणधीरोह पुस्तकालय स्थापित किया—१६२८ में; क्षात्र-धर्म-साहित्य-मंदिर के संस्थापक और अध्यक्ष; जयपुरी 'क्षात्रधर्म-संदेश' के संचालक और संपादक; प०—फेफाना, नोहर, बीकानेर राज्य।

भैरवगिरि—प्रसिद्ध कवि और सुयोग्य विद्वान्; रच०—मारुति-विजय—खंडकाव्य

धर्मसमाज संस्कृत-कालेज के अध्यापक; प०—मुजफ्फरपुर।

भैरवप्रसादसिंह 'पथिक' वि० र०, सा० र०—प्रसिद्ध विद्वान् और हिंदी-प्रचारक; ज०—१ दिसंबर १९१० बरुआ अख्तियारपुर; सा०—भू० पू० संपादक 'राजपूत', बहलोलपुर के राणाप्रताप पुस्तकालय, पलवैया के भारतेंदु-पुस्तकालय और माहेश्वरी खेतान पुस्तकालय के संस्थापक; हिंदी विद्यापीठ देवघर की उपाधि-परीक्षाओं के परीक्षक; अप्र०—एकांकी नाटकों का एक संग्रह; वि०—इस समय आप प्रिय-प्रवास की शैली पर एक-खंडकाव्य लिख रहे हैं; प०—पथिकाश्रम, पड़रौना, गोरखपुर।

भोलानाथ दरख्शा—हिंदी और उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक और जैन-धर्म प्रचारक; सं०—सनातन जैन; रच०—पुनर्लग्न मीमांसा, विधवाचरित्र, मनोरमा का बारहमासा, पंचव्रत, पंच बालब्रह्मचारी पूजा, दर्शन-चौबीसी, रत्नपच्चीसी, जैनधर्म और जाति - विधान, जैनकल्प का गणित, जैनाचार्यों का यशोगान, भगवत कुंदा—कुंदाचार्य का जीवन चरित्र; वि०—उर्दू भाषा में जैन धर्म की आपने लगभग २२-२३ पुस्तकें लिखी हैं; प०—बुलंदशहर।

भोलानाथ शर्मा, एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), एम० ए०—प्रि० (अँगरेज़ी)—सुप्रसिद्ध विद्वान्, ब्रजभाषा-मर्मज्ञ और आलोचक; ज्ञा०—संस्कृत, बँगला, अँगरेज़ी तथा जर्मन; सा०—सम्मेलन की सभी प्रवृत्तियों में लगन से कार्य करते हैं; बरेली कालेज हिंदी प्रचारिणी सभा, नगर हिंदी सभा, तथा अदालत में नागरी प्रचार के प्रमुखकार्यकर्ता; बरेली, कालेज में हिंदी और संस्कृत के अध्यापक हैं; रच०—

फौस्ट (मूल जर्मनी से अनुवाद), बंगला साहित्य की कथा ; अप्र० रच०—टेल (जर्मन ना०), वीर विजय, वैदिक व्याकरण, अरस्तू की राजनीति; वि०—सूर-साहित्य का गंभीर अध्ययन किया है और सूरसागर का सुसंपादित संस्करण तैयार करने में संलग्न हैं ; प०—विहारीपुर, बरेली ।

भोलालाल दास, बी० ए०, एल-एल० बी०—कसरौर निवासी प्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१६०६ ; रच०—हिंदू लॉ में स्त्रियों के अधिकार , अत्तरों की लड़ाई, भारतवर्ष का इतिहास ; वि०—'चाँद' के भूतपूर्व नियमित लेखक ; इस समय यूनाइटेड प्रेस लिमिटेड (भागलपुर) के साहित्यिक प्रकाशन विभाग के अध्यक्ष हैं ; प०—भागलपुर, विहार ।

भँवरमल सिंघी, बी० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध आलोचक, इतिहासकार तथा यशस्वी सेवक ; शि०—प्रयाग तथा काशी ; सा०—काशीपुर जूटसेलर्स एसोसिएशन (कलकत्ता) के सेक्रेटरी ; 'ओसवाल नवयुवक' मासिकपत्र के भूत० संपा० ; रच०—वेदना—गद्य काव्य ; अप्र०—अनेक ऐतिहासिक तथा आलोचनात्मक ग्रंथ ; प०—पीतलियों की चौक, जौहरी बाजार, जयपुर ।

भँवरलाल भट्ट 'मधुप', सा० र०—साहित्यप्रेमी लेखक पत्रकार और कवि ; भूत० सहकारी संपादक तथा व्यवस्थापक 'वाणी' और नीमाड़ प्रांत में सम्मेलन परीक्षाओं के केंद्रस्थान ; सन् १६३१ तक अध्यापन कार्य. रच०—गुंजार और मधुकण;अप्र०—आलोचनात्मक लेख-संग्रहतथा ग्राम-सुधार-संबंधी रचनाएँ ; प०—'वाणी-मंदिर', खरगोन।

भृगुरासन शर्मा, ज०—

१६१६ गोरखपुर ; अप्र० रच०—राष्ट्रसेवा, साहित्य और समाज, जीर्णोद्धार, गल्पगुच्छ ; वि०—हिंदी की उन्नति के लिए आप सदैव प्रयत्न करते हैं ; प०—प्रधानाध्यापक, मिडिल स्कूल, कुबेरनाथ।

मथुराप्रसाद दीक्षित सा० वि०—पिरारी-निवासी सुलेखक और कुशल पत्रकार; ज०—१६०४ ; भूत० संपादक तरुण भारत, देश, नवयुवक ; बिहार - प्रादेशिक हिंदी - साहित्य - सम्मेलन के संस्थापक ; रच०—बाबू कुँवरसिंह, नादिरशाह, विदेशों में भारतीय, विप्लवी वीर, गोविंद-गीतावली की टीका—टिप्पणी ; प०—पटना।

मथुराप्रसाद सिंह, सा० र० ; सुप्रसिद्ध देश प्रेमी, कवि और हिंदी प्रचारक ; ज०—१६१० ; ज्ञा०—मराठी, गुजराती, बँगला और हिंदी ; सा०—भू० पू० संपादक दैनिक महावीर ; गीता और रामायण के प्रचारक ; राजेंद्र साहित्य - महाविद्यालय के संस्थापक, उक्त विद्यालय के प्रधानाध्यापक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षा समिति, स्थायी समिति और विश्वविद्यालय परिषद् के सदस्य ; प०—प्रधानाध्यापक, राजेंद्र-साहित्य - महाविद्यालय, सेवदह, पो० बिरजू मिल्की, पटना।

मणिराम 'कंचन' खत्री—बाल-साहित्य के उदीयमान लेखक और काव्य-प्रेमी कवि ; ज०—१६१२ ; अप्र० रच०—दो तीन काव्य-संग्रह; प०—तालबेहट, झाँसी।

मदनगोपाल सिंहल—साहित्य-प्रेमी, कुशल लेखक और भावुक कवि ; ज०—१६०६ ; मेरठ, सा०—छावनी बोर्ड के कमिश्नर तथा स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी सभाओं के उत्साही कार्यकर्त्ता और सहायक, मेरठ से प्रका-

शित होनेवाले 'आदेश' और 'वैश्य हितकारी' के संपादक ; मेरठ की हिंदी साहित्य-समिति के प्रधान ; रच०—एकांकी नाटक, रंगशाला, भक्तमीरां, कलिका—कवि०, धर्मद्रोही राजा वेन, सत्यनारायण ; अप्र० रच०—कई सरस काव्य, प०—सदर, मेरठ ।

मदनमोहन मालवीय, महामना—देश के अग्रसर प्राप्त राष्ट्रीय नेता ; ज०—२५ दिसंबर १८६१; शि०—प्रयाग ; दैनिक 'हिंदुस्तान' और साप्ताहिक 'इंडियनओपीनियन' का संपादन; यू० पी० के धारा सभा के सदस्य (१९०२–१२) ; १९०६–१८ तक उसके अध्यक्ष; १९१०–१९ तक इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य ; १९१६ में काशी में हिंदू-विश्वविद्यालय की स्थापना ; प्रारंभ से ही उसके वाइस चांसलर रहे ; १९२२–२३ में हिंदू-महासभा के प्रधान हुए ; १९२४ से केंद्रीय व्यवस्थापक सभा के सदस्य रहे ; रच०—यत्र-तत्र पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सैकड़ों गवेषणात्मक लेख ; प० - काशी ।

मदनमोहन मिश्र—लेखक और पत्रकार ; ज०—४ मार्च १९१४ ; शि०—काशी, प्रयाग ; सहायक संपादक 'प्रकाश', १९३३से; रच०—व्यावहारिक शिक्षा, स्वास्थ्य-सोपान, भारतीय पशु-पक्षी ; अप्र०—यांधव-वैभव, चंद्र-ज्योत्स्ना ; प०—स्वलगा स्ट्रीट, रीवाँ राज्य ।

मदनमोहनलाल दीक्षित ज०—१८८७ ; रच०—अनुचरी; संसार सेवा, बात की चोट, मोहनमाला ; प०—हेड-मास्टर, मिडिल स्कूल, छिपरा ।

मदनलाल शर्मा, डाक्टर ला० भू० ; बालसाहित्य के सुप्रसिद्ध राजस्थानी लेखक; ज०—१८९३; सा०—जोधपुर में हिंदी प्रचार के लिए

तत्पर ; रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा ; प्रि० वि०—बालसाहित्य ; रच०—पंच-मेल—कहानी-संग्रह ; प०—हिंदी-अध्यापक, श्रीसुमेर स्कूल, जोधपुर ।

मदनसिंह, एम० ए०—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी कई सामयिक ट्रैक्टों के लेखक और विद्वान्; ज०—प्रतापगढ़ स्टेट; अप्र० रच०—विभिन्न विषयों पर लिखे निबंध-संग्रह ; प०—अध्यापक, मेयो कालेज, अजमेर ।

मधुसूदन ओझा 'स्वतंत्र'—महिला - निवासी प्रसिद्ध कवि, निबंधकार और सुधार-समर्थक; ज०—१८९९; रच०—कंसवध, धर्मवीर, मोरध्वज, समाजदर्पण ; अप्र०—अनेक कविता-संग्रह; प०—महिला, पटना ।

मधुसूदन चतुर्वेदी, 'मधु' एम० ए०, बी० एस-सी०,—साहित्यप्रेमी, अध्ययनशील विद्यार्थी और कुशल-लेखक ; ज०—१९१०; शि०—आगरा कालेज, आगरा ; सा०—मंत्री हिंदी सभा, आगरा कालेज आगरा , भू० पू० संपादक आर्यमित्र, दिनेश, दिवाकर, विजय; अप्र०—अँगरेजी नाट्य साहित्य का इतिहास, साहित्य-मंजरी, जीवनप्रभात, झाँसी की रानी ; प्रि० वि०—आलोचना ; प०—अहिल्या भवन, फीलखाना, हैदराबाद, (दक्षिण)

मधुसूदन 'मधुप'—उदीयमान साहित्य-प्रेमी और लेखक; ज०—और शि०—इंदौर ; सा०—समवयस्क युवकों के साथ हस्तलिखित मासिक 'आशा' कई वर्षों से निकाल रहे हैं ; इसके कई सुन्दर विशेषांक निकाले हैं ; प०—स्नेहलता-गंज, इंदौर ।

मन्नूलाल शर्मा 'शील'—हिंदी के होनहार नवयुवक कवि ; ज० १९१४; रच०—चर्खाशाला, अँगड़ाई ;

अप्र०—एक पग, धृतराष्ट्र; प०—पाली, कानपूर।

मनफूल त्यागी 'सुधीर', बी० ए०, प्रभाकर, सा० वि; ज०—बिजनौर १६०६; शि०—आगरा, कानपूर; सा०—शिक्षा राष्ट्रीयता तथा भाषा प्रचार; र्च०—देश देश के बालक और बच्चों के गीत; अप्र०—पत्र साहित्य सीरीज; प्रि० वि०—कविता, कहानी, नाटक; प०—परबार हाई स्कूल, जोधपुर।

मन्मथकुमार मिश्र, एम० ए०—प्रसिद्ध संगीत-प्रेमी, साहित्यकार और अध्ययनशील विद्यार्थी; शि०—हिंदू-विश्व-विद्यालय काशी; संपा० र्च०—प्राचीन भक्त कवियों की भजनमाला; अप्र०—संगीत-संबंधी विद्वत्तापूर्ण लेख-संग्रह; वि०—लक्ष्मणगढ़ में 'सेवासदन' के संस्थापक हैं; 'सेवासदन-वाचनालय' और 'सेवासदन-पुस्तकालय' के जन्मदाता, आजकल दानवीर सेठ जुगलकिशोर बिड़ला के सेक्रेट्री हैं; प०—लक्ष्मणगढ़ सीकर।

मन्मथरामकृष्ण भट्ट "नवल" रा० भा० वि०, विशारद, एम० आर० ए० एस०;—सुदूर दक्षिण प्रांत के सुप्रसिद्ध हिंदी-लेखक और प्रचारक; ज०—२९ मार्च, १९१२ अकोला; शि०—बंबई, प्रयाग और मद्रास वि० वि०; ज्ञा०—कन्नड, कोंकणी, मराठी, अँगरेज़ी, संस्कृत और हिंदी; र्च०—आदर्श पत्नी, राष्ट्र-भाषा (हिंदी, अँगरेज़ी, कन्नड में), हिंदी-कन्नड-साम्य, नव-युग के कवि, हिंदू विधवा, कनकपास; अप्र०—नवल पद्य, नवलमेल, ग्रामर इन ग्राफिक ग्रिप, वही, नारी गोदावरी, नल-दमयंती, बिखरे मोती, कई उपन्यास और कहानी-संग्रह; वि०—भारत के आप सर्वप्रथम व्यक्ति हैं जो अल्पायु में ही लंदन की एम० आर० ए० एस० के

मेंबर बनाये गये ; प०—कैंप, पार्क व्यू, हासन, मैसूर स्टेट।

मनीराम शुक्ल 'मानस-किंकर' ; ज०—१६२२ ; 'तुलसीतत्त्वप्रकाश' के संशोधक; कविसमाज, बिलासपुर के संस्थापक; रच०—रामायण संबंधी लेखों का एक संग्रह प्रकाशित हो गया है ; अप्र०—अनेक साहित्यिक और धार्मिक लेखों के दो-एक संग्रह ; प०—पोंडी नरगोड़ा, पो० नरगोड़ा, बिलासपुर।

मनोरंजनप्रसादसिंह, एम० ए० ; डुमराँव-निवासी प्रसिद्ध कवि, गद्यकाव्यकार और मननशील विद्वान् ; हिंदू विश्वविद्यालय काशी में भू० अँगरेजी अध्यापक ; अब राजेन्द्र कालेज, छपरा में प्रिंसिपल ; रच०राष्ट्रीय मुरली, उत्तराखंड के पथ पर (यात्रा), गुनगुन और संगिनी (कवि०) ; अप्र० रच०—अनेक काव्य और निबंधसंग्रह ; प०—छपरा।

मनोरंजनसहाय श्रीवास्तव, बी० ए० (आनर्स) ज०—१६२०; भूतपूर्वसंपादक—बालविनोद, और झारखंड ; वि०—हास्यरस के अभिनेता ; र०—अनेक अप्रा० कहानी और कविता-संग्रह ; प०—गुमला, राँची।

मनोहरलाल जैन, एम० ए०—हिंदी-प्रेमी सुलेखक ; ज०—४ दिसंबर१६१४दमोह; शि०—दमोह, इंदौर; अप्र० रच०—कई सुंदर साहित्यिक लेख-संग्रह ; प०—प्रोफेसर, जैन इंटर मीडिएट कालेज, बड़ौत, मेरठ।

महताबराय अग्रवाल, वि० लं०, एम० ए०—हिंदी के सुलेखक और हिंदी-प्रेमी विद्वान् ; ज०—१६०२; आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता, हिंदी के पुराने ग्रंथों की खोज में आप प्रयत्नशील हैं; प०—रोहतक।

महादेवप्रसाद, एम० ए०—सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक और

समालोचक ; विहार संस्कृत असोशियेशन के मंत्री ; रच०—सूरदास की 'साहित्य लहरी' की टीका ; प०—मुजफ्फरपुर ।

महादेवी वर्मा, एम० ए०—आधुनिक स्त्री-कवियों में सर्वश्रेष्ठ, सफल और लब्ध-प्रतिष्ठ निवंध-लेखिका ; ज०—१६०७ फर्रुखाबाद ; लेख०—१६२९ ; सा०— अनेक कवि-सम्मेलनों में सभानेत्री ; भूत० संपादिका—मासिक 'चाँद', इलाहावाद ; रच०—नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा, अतीत के चलचित्र—संस्मरण;अप्र०—अनेक विचारशील और स्त्री-समाज-संबंधी निवंधों और कविताओं के दो-तीन संग्रह ; वि—आप कुशल चित्रकर्त्री भी हैं ; 'नीरजा' पर आपको ५००) पुरस्कार मिला ; 'महादेवी का आलोचनात्मक गद्य'नाम से आपके कुछ निवंधों का एक संकलन भी प्रकाशित किया गया है ; आपके गौरव-पूर्ण ग्रंथों के सचित्र संस्करण वड़ी सजधज से प्रकाशित हुए हैं जिनमें आपही के हस्तलेख में रचनायें छपी हैं ; प०—मुख्याध्यापिका, महिलाविद्यापीठ प्रयाग ।

महामायाप्रसादसिंह, पटेरीनिवासी साहित्य-प्रेमी रईस ; जिले के गण्यमान्य कांग्रेसी नेता; व्यायाम प्रणाली के विशेषज्ञ और सुवक्ता ; रच०—यूरोप - यात्रा-संवंधी लेखमाला ; प०—पटेरी, विहार ।

महावीरप्रसाद शर्मा 'प्रेमी'—प्रचार से दूर रहकर हिंदी-सेवा करनेवाले सहृदय कवि और लेखक ; ज०—१६०३; शि०—प्रेम महा-विद्यालय वृंदावन, 'जागृति' साप्ताहिक के भूतपूर्व संपादक; रच०—प्राकृतिक विजली का प्रयोग, संगीत ; प०—२४ वनारस रोड,सलकिया, हवड़ा ।

महावीरप्रसाद त्रिपाठी,

सा० र०, सा०, श्रा०, काव्य-तीर्थ—साहित्य-प्रेमी हिंदी-लेखक ; रच०—ऋषिराज, स्व० महात्मा परमानंदजी सरस्वती का जीवनचरित्र ; प०—लोहाई स्ट्रीट फर्रुखाबाद ।

महावीरसिंह गहलोत, एम० ए०;रिसर्चस्कालर, राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रबल समर्थक और प्रचारक; ज०—१६२० शि०—एम० ए० काशी; सा०—१६४० से युक्तप्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचारिणी सभा के प्रचारमंत्री ; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के लिए हस्तलिखित ग्रंथों की खोज ; इस निस्वार्थ सेवा के लिए सभापति पं० रामनारायण मिश्र द्वारा उपहार से पुरस्कृत; श्री 'वैष्णव सत्संग' अहमदाबाद से अष्टछाप संबंधी साहित्य की खोज के लिए प्रति मास ६०) स्कालरशिप मिलती है ; वि०—भारतीय-चित्रकला का गंभीर अध्ययन; काशी विश्वविद्यालय से डाक्टरेट के लिए 'अष्टछाप' पर थीसिस तैयार कर रहे हैं; अहमदाबाद के 'गुजरात वर्नाक्यूलर सोसाइटी' के 'उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग' के अंतर्गत 'वल्लभ वेदांत और पुरानी राजस्थानी' के विद्यार्थी;प०—गहलोत भवन, मेड़ती दरवाजा, जोधपुर ।

महेंद्र—सहृदय हिंदी-प्रेमी, प्रकाशक और लेखक ; ज०—१६०० ; सा०—आगरे में साहित्य विद्यालय की स्थापना, कई पुस्तकालय खोले, सांप्रदायिक अशांति में हिंदुओं का नेतृत्व १६३४;ग्राम-सुधार-संबंधी शिविर योजना में सक्रिय भाग; सा०—भूत० संपा०—१६१८–२४, 'जैसवाल जैन','वीर संदेश'(१६२७-२८), 'सैनिक' साप्ताहिक (१६२६–३२), 'हिंदुस्तान समाचार'–दैनिक (१६३०), 'सत्याग्रह समाचार' और 'सिंहनाद' (१६३०–३२),

'आगरा पंच' दैनिक(१६३४-४०),'साहित्य संदेश(१६३७-४३),प०—साहित्यरत्न भंडार, सिविललाइंस, आगरा ।

महेंद्रकुमार, न्यायाचार्य—प्रतिष्ठित विद्वान्, कुशल लेखक, ओजस्वी वक्ता और प्राचीन जैन-साहित्य के पंडित; ज्ञा०—संस्कृत, पाली, प्राकृत ; अध्यापक स्याद्वाद महाविद्यालय ; संपा० रच०—न्यायकुमुद—दो भाग, प्रमाण-मीमांसा, अकलंक ग्रंथत्रय, प्रमेलकमलमार्तंड; वि०—जैन साहित्य के उद्धार-कार्य में आप संलग्न हैं; प०—अध्यापक, स्याद्वाद विद्यालय, काशी ।

महेंद्रनाथ नागर, एम० ए०, सा० र०—मध्यभारत के उत्साही हिंदी लेखक और प्रचारक ; ज०—१६ नवंबर १६१३ इंदौर ; सा०—हरिजनों में हिंदी-प्रचार; सम्मेलन की परीक्षाओं की निःशुल्क पढ़ाई का प्रबंध करते हैं ; रच०—कई सुंदर आलोचनात्मक लेख ; प०—रानीपुरा, बड़वानी स्टेट, सी० आई० ।

महेंद्रप्रतापसिंह, राजा—भारत के निर्वासित देशभक्त; ज०—१८६६ मुरसान (अलीगढ़); १६०३ में सपत्नीक योरप भ्रमण ; १६०६ में प्रेम महा-विद्यालय की स्थापना, गुरुकुल विश्व-विद्यालय को पंद्रह हजार मूल्य की जमीन दान दी ; 'प्रेम' साप्ताहिक के संस्थापक-संपादक ; प०—आजकल योरप में हैं ।

महेंद्रलाल, न्यायाचार्य—जैनसाहित्य के प्रकांड पंडित और विद्वान् हिंदी लेखक ; संपादक—'जयधवला',रच०—अकलंक ग्रंथत्रयी, न्यायकुमुद, प्रमेयकमल मार्तंड; संस्थापक—अकलंक सरस्वती भवन ; प०—बंबई ।

महेश्वरप्रसाद 'मंसूर'—प्रसिद्ध लेखक ; ज०—१६०६; सं०—'तिरहुत समाचार'; भू० पू० सहा० संपा०—

'जीवन संदेश'; सा०—चित्र-पटसाहित्य के समालोचक; स्थानीय 'गाँधीपरिषद्' एवं 'स्वजातीय सभा' के प्रधान-मंत्री; संयुक्तमंत्री—'हिंदू महा-सभा'; प्रि० वि०—राज-नीति एवं सिनेमा; रच०—दो एक अप्रकाशित कहानी-संग्रह; प०—दिल्ली।

माईदयाल जैन, बी० ए०, बी० टी०—जैन-साहित्य के प्रसिद्ध लेखक; ज०—२७ जुलाई १९०१ रोहतक; जा०—अँगरेजी, हिंदी और उर्दू; इन तीनों भाषाओं के सिद्धहस्त लेखक भी हैं; रच०—मैट्रीकुलेशन जाग्रफी, नादिर तारीखहिंद, इँग्लिश वर्ड्स डिस्टिंगुइश्ड, ए यूनीक् बुक आफ इंग्लिश, अनसीन प्रभावशाली जीवन, सदाचार, शिष्टाचार और स्वास्थ्य, ज्योतिप्रसाद, जैनधर्म ही सार्वभौम धर्म हो सकता है, जैन-समाजदर्शन; अप्र०—देहात सुधार, चालचलन, बालशिक्षा-दीक्षा; वि०—'जैनतीर्थ और उनकी यात्रा' और 'जैनधर्म शिक्षावली' (चार भाग) का संशोधन भी किया है; प०—देहली।

माखनलाल चतुर्वेदी—पत्रकार कला के आचार्य, सहृदय कवि, निर्भीक और स्पष्टवादी वक्ता; ज०—१८८८ बावई जिला होशंगाबाद; भूत० सफल संपा०—'प्रताप', 'प्रभा'; वर्त० संपा०—साप्ताहिक 'कर्मवीर', खँडवा; रच०—हिमकिरी-टिनी—कविता, कृष्ण-अर्जुन-युद्ध—नाटक, वनवासी—कहानी-संग्रह; अप्र०—साहित्यदेवता—गद्यकाव्य; वि०—आपकी कविताएँ 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रकाशित होती हैं, गतवर्ष आप हिंदी साहित्य सम्मेलन, हरिद्वार अधिवेशन के सभापति बनाए गए थे; प०—कर्मवीर प्रेस, खँडवा।

माणिकचंद जैन, न्याया-

चार्य—प्रसिद्ध जैन विद्वान् और समाजसेवी लेखक; अप्र० रच०—श्लोकवार्तिक नामक अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की भाषा टीका जिसके प्रकाशन के लिए तीस हजार से अधिक रुपए चाहिए; प०—सहारनपुर।

मातादीन शुक्ल—हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक, सफल संपादक और साहित्य-प्रेमी; सा०—कई वर्ष तक लखनऊ की 'माधुरी' के सहकारी और प्रतिनिधि संपादक रहे; अनेक पाठ-ग्रंथों का संपादन किया; वि०—आपके सुपुत्र श्रीरामेश्वर शुक्ल 'अंचल', एम० ए० हिंदी की अच्छी सेवा कर रहे हैं; प०—मैनेजर, एजुकेशनल बुकडिपो, जबलपुर।

माताप्रसाद गुप्त, डॉक्टर, एम० ए०, डी० लिट्—सुप्रसिद्ध अध्ययनशील विद्वान्, प्राचीन साहित्यमर्मज्ञ और दार्शनिक आलोचक; रच०—तुलसी-संदर्भ, कवितासंगल, पार्वतीमंगल; वि०—आपने कविवर बनारसीदासजी के अर्द्धकथानक का संपादन किया है; प०—प्रयाग।

माधवशरण 'कुमुद', सा० वि०—ज०—१६२२; सा०—'मित्रमंडल' के संस्थापक, रच०—पिंगल पीयूष, गांडीव; प०—साहित्यागार, पो० बगही, जोगापट्टी, चंपारन।

माधवाचार्य रावत 'मधुर', बी० ए०, एल-एल० बी०; ज०—१८९१, श्रीनगर; रच०—चित्रावलोकन जहांआरा, रामाभिनय—३ भाग (युवराज राम, वनवासी राम, राजा राम), वीरवर नेपोलियन बोनापार्ट, सुकोचरा, हरिजन, सरोजा का सौभाग्य; प०—एडवोकेट, हाईकोर्ट, बाँदा।

माधवानंद स्वामी, महर्षि—संस्कृत साहित्य के सभी अंगों के प्रगाढ़ विद्वान्, योगशास्त्र के पारदर्शी, अनेक

राजा महाराजाओं के गुरु, उपदेशक और कुशल वक्ता; रच०—ज्ञान समुद्र नामक विस्तृत ग्रंथ; प०—जोधपुर।

मानसिंह, राजकुमार, बार० एट० ला०, वि० भू०—बनेड़ा राज्य के स्वनामधन्य हिंदी-प्रेमी और कुशल लेखक; ज०—१६ नवंबर १६०८ बनेड़ा; शि०—बनेड़ा, मैसूर; सा०—तीन साल तक अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन को २५१) का मान पुरस्कार दिया; अब वही पुरस्कार राज० हिंदी साहित्य-सम्मेलन से १२१) का दिया जाता है; रच०—बाल-राजनीति, लंदन में भारतीय विद्यार्थी; अप्र०—राजा—उप०; प०—बनेड़ा राज्य, मेवाड़।

मायादेवी—रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी की विदुषी धर्मपत्नी; रच०—कन्या धर्म शिक्षा; अप्र०—पाकशास्त्र; प०—साहित्यकुटीर, दहीगली, भरतपुर, राजपूताना।

मालोजीराव नरसिंहराव शितोले, राजराजेंद्र, कर्नल—हिंदी, अँगरेजी और मराठी के अध्ययनशील विद्वान् और सुलेखक; ज०—१८६९; मातृभाषा मराठी होने पर भी हिंदी के प्रबल समर्थक; अनेक बार योरपयात्रा; 'शासन-शब्द-संग्रह' के संपादक; रच०—अश्वपरीक्षा (हिंदी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक), ग्राम-चिंतन; अप्र०—नवीन शिक्षा-योजना, धर्म-शिक्षा; प०—सचिव, ग्वालियर राज्य।

मुन्नालाल, काव्यतीर्थ—पंचकल्याणक आदि प्रतिष्ठाओं में निपुण एवं माने हुए प्रतिष्ठाचार्य, ओजस्वी वक्ता और सफल लेखक; अप्र०—जैन धर्म और साहित्य-संबंधी लेख-संग्रह; प०—ठि० सेठ हीरालालजी, इंदौर।

मुन्नालाल समगोरिया—सुलेखक, कवि और प्रभाव-

शाली वक्ता ; रच०—भक्ति-प्रवाह, सामाजिक अत्याचारों का दुष्परिणाम, सद्विचार-रत्नावली, भारत के सपूत ; प०—प्रचारक, जैनअनाथाश्रम, देहली।

मुरलीधर दिनोदिया, बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी और सुकवि ; ज०—१९१७ ; सा०—स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं में सक्रिय सहायता; साप्ताहिक 'एकता' के भूतपूर्व संपादक ; प०—वकील, भिवानी, हिसार, पंजाब।

मुरलीधर श्रीवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी, हिंदी प्रचारक तथा सफल लेखक ; हिंदी-प्रचार-समिति वर्धा में साहित्यिक कार्यकर्त्ता ; रच०—मीराबाई का काव्य; अप्र०—दो साहित्यिक लेख-संग्रह; प०—हिंदी प्रचार-समिति, वर्धा।

मुरारीप्रसाद, एडवोकेट—सिमरीनिवासी सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ और संगीत शास्त्र विशारद ; संगीत संबंधी एक विशद और बृहत् ग्रंथ लिखा है ; प०—हाईकोर्ट, पटना।

मुरारीलाल शर्मा, 'बाल-बंधु' और 'एक अनुभवी स्काउटर'—स्काउटिंग और बाल - साहित्य के यशस्वी लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८९२ ; सा०—सेवा-समिति बालचर मंडल के स्काउट मास्टर और हिंदुस्तान स्काउट एसोसिएशन के स्काउट कमिश्नर ; भू० पू० संपादक 'भारतीय बालक' ; अब 'सेवा' (प्रयाग) के संपादकमंडल में हैं ; रच०—संगीतसुधा, साहसी बच्चे, गोदी भरे लाल, होनहार बिरवे, जीवनसुधार, दुनिया की झाँकी, रहस्यकुंज, दूध-मलाई, परीक्षा, हिंदीबसंत (दो भाग), साहित्य चंद्रिका, बाल - संजीवनी, रम्य दीपावली, मनस्वी,

कर्मवीर, कोकिला, बुलबुल (उर्दू), हमारे नेता, हमारी देवियाँ, हमारी दुनिया ; प्रि० वि०—बाल-साहित्य ; प०—सेवामंदिर, ट्रीपीटैंक, मेरठ ।

मुंशीराम शर्मा 'सोम', एम० ए०—हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक और आलोचक ; ज०—१६०२ आगरा ; र०—संध्यासंगीत, श्रीगणेश गीतांजलि, आर्यधर्म, हिंदीसाहित्य के इतिहास का उपोद्घात, कविकुल-कीर्ति, सूरसौरभ, संपादक—'साहित्य-सुधाकर' ; अप्र०—पद्मावत का भाष्य, सूरसौरभ—बृहत् संस्करण, भक्ति तरंगिणी ; प०—हिंदी प्रोफेसर, डी० ए० वी० कालेज, कानपूर ।

मुंशीलाल पटैरिया, सा० र० ; ज०—१६१२ झाँसी ; बुंदेलखंड नागरी-प्रचारिणी सभा झाँसी के संस्थापक ; र०—बिजली ; अप्र०—बलिदान, शिशु-विनोद, साहित्य-सार ; वि०—झाँसी में आप यथाशक्ति हिंदी-प्रचार कर रहे हैं; प०—पुरानी कोतवाली, झाँसी ।

मूलचंद 'वत्सल'—प्रसिद्ध कवि, 'गद्य-काव्य'-कार और लेखक; ले०—१६२०; र०—ऐतिहासिक महापुरुष, आदर्श जैन महात्मा, सतीरत्न, बिजनौर में साहित्यरत्नालय की स्थापना ; प०—आगरा ।

मेदिनीप्रसाद पांडेय—मध्यप्रांत के वयोवृद्ध हिंदी-प्रेमी और ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवि ; ज०—१८६६ ; र०—कई अनूठे काव्य ग्रंथ जिसमें 'पद्य-मंजूषा' बहुत प्रसिद्ध है ; अप्र०—सत्संग विकास (चार भाग); वि०—महामहोपाध्याय पं० जगन्नाथप्रसादजी 'भानु' के आप घनिष्ठ मित्र हैं ; प०—परसापाली, रायगढ, सी० पी० ।

मेलाराम वैश्य—हिसार प्रांत के गण्यमान व्यक्ति और

प्रभावशाली हिंदी लेखक ; ज०—१८८२; सा०—१९२३ में अग्रवाल महासभा के सभापति, १९२१ में सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने से कारावास, १९०८ में मारवाड़ी विद्यालय की और १९०९ में वैश्य महाविद्यालय की स्थापना, १९०९ में प्रेमसागर सभा की नींव डाली, १९२३ में अमृतसर में मारवाड़ी विद्यालय खोला ; रच०—जागृति, बच्चों के गीत, असहयोग ध्वनि, ब्रह्मचर्य, राष्ट्रीय ध्वनि, हिंसा करना हिंदू-धर्म नहीं, शंकराचार्य (नाटक), जगदर्शन मेला, साधु महात्माओं से प्रार्थना, गोमाता की प्रार्थना, वैश्यजाति-सुधारक गायन, बालसाहित्य गल्पमाला, ज्ञानसरोवर, वैद्य-डाक्टर, दानरहस्य, देशभक्त अष्टोत्तरी, शांतिसरोवर, गंदे गीतों का बहिष्कार; अप्र०—अग्रवाल-वंश-दर्पण, व्यापार सहस्री, राष्ट्रीय सहस्री, त्रिभाषिक रत्न ; प०—ठि० सत्य सिद्धांत मंडल, भिवानी, हिसार, पंजाब ।

मैथिलीशरण गुप्त—द्विवेदी-युग के सबसे अधिक लोकप्रिय कवि, भक्त हृदय और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८८६ झाँसी ; लेख०—१९०५ ; रच०—साकेत, भारत भारती, जयद्रथ वध, गुरुकुल, हिंदू, पंचवटी, अनघ, स्वदेश-संगीत, वक-संहार, वन-वैभव, सैरंध्री, त्रिपथगा, झंकार, शक्ति, विकटभट, रंग में भंग, किसान, शकुंतला, पद्यावली, वैतालिक, गुरु तेग बहादुर, यशोधरा, द्वापर, सिद्धराज, मंगलघट, वीरांगना, विरहिणी ब्रजांगना, पलासी का युद्ध, स्वप्न वासवदत्ता, मेघनाद-वध, रुबाइयात उमर खय्याम, चंद्रहास, तिलोत्तमा, त्रिशंकु, नहुष, शांति, आस्वाद, गृहस्थगीत ; वि०—'साकेत' नामक महाकाव्य पर आपको मंगलाप्रसाद पुरस्कार दिया

गया; आपकी 'भारत भारती' का आधुनिक युग की काव्य रचनाओं में कदाचित् सबसे अधिक प्रचार हुआ है; इसी के कारण आप प्रतिनिधि राष्ट्रीय कवि कहे जाने लगे हैं; आपके बँगला के अनुवादित काव्य भी सफल हैं; प०—साहित्य-सदन, चिरगाँव, झाँसी।

मोतीलाल मेनारिया, एम० ए०—राजस्थानी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और सहृदय विद्वान्; ज०—१९०२; शि०—१९२६ में बी० ए०, और १९३१ में एम० ए०; र०—मेवाड़ की विभूतियाँ राजस्थानी साहित्य की रूप रेखा, डिंगल में वीररस, राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज (प्रथम भाग), वि०—इस समय डिंगल साहित्य की खोज के महत्त्वपूर्ण कार्य में संलग्न; प०—गनगोरघाट, उदयपुर।

मोतीलाल, शास्त्री, वेदवाचस्पति—वैदिक साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक; ज०—१९०८ जयपुर; सा०—'मानवाश्रम विद्यापीठ' की स्थापना, पाक्षिक 'मानवाश्रम' का प्रकाशन-संपादन; र०—हिंदी गीता-विज्ञान-भाष्य, उपनिषद्-विज्ञान-भाष्य—दो खंड, मांडूक्योपनिषद् हिंदी-विज्ञान भाष्य, वेदेषु धर्मभेदः, श्राद्ध-विज्ञान; वि०—आपका प्रधान और पुनीत उद्देश्य वैदिकविज्ञान का पुनरुत्थान करना है; प०—मानवाश्रम विद्यापीठ, जयपुर।

मोहनदास करमचंद गांधी, महात्मा—विश्व-प्रसिद्ध भारतीय नेता, हिं० सा० सम्मे० और ना० प्र० सभा, काशी के सम्मानित सदस्य; ज०—२ अक्टूबर, १८६९; शि०—राजकोट, भावनगर, इँगलैंड; सा०—असहयोग आंदोलन के जन्मदाता; दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह आंदोलन और

सिद्धांतों के प्रचारक ; खेड़ा प्रांत के किसानों में और पटना प्रदेश के निलहा साहबों के विरुद्ध सफल आंदोलक ; १९२० में सत्याग्रह आंदोलन का प्रथम आरंभ किया ; सावरमती आश्रम की स्थापना की ; 'यंगइंडिया' और नव-जीवन' के जन्मदाता ; दूसरा सत्याग्रह आंदोलन (१९३२-३४) चलाया ; १९३१ में वाइसराय से संधि ; गोलमेज कानफ्रेंस में भारतीय प्रति-निधि ; १९३४ में हरिजन-आंदोलन के जन्मदाता; १९३५ में काँग्रेस से स्तीफा ; अखिल भारतीय हिं० सा० सम्मे० के इंदौर के (१९१७) और (१९३५) के अधिवेशनों के सभापति ; गुजराती और अँगरेजी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनका हिंदी में अनुवाद हो चुका है ; प०—वर्धा ।

मोहनलाल गुप्त 'मोहन'—सुप्रसिद्ध कवि और हिंदी-प्रेमी; भू०पू० संपादक—'नवयुवक', 'तिरहुत समाचार' ; अनेक कविताएँ और लेख लिखे ; प०—मुजफ्फरपुर ।

मोहनलाल महतो 'वियोगी'—गया - निवासी नवीन आधुनिक शैली के सुप्रसिद्ध कवि, प्रतिभाशाली कहानी-उपन्यास और निबंध-कार, हृदयग्राही संस्मरण-लेखक; निष्पक्ष आलोचक और सिद्धहस्त व्यंग्य-चित्रकार ; रच०—निर्माल्य, एकतारा, रेखा, आरती के दीप, कल्पना, विचारधारा, रजकण आदि ; प०—ऊपरडीह, गया, विहार ।

मोहनलाल शांडिल्य, शास्त्री—खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि, संस्कृत के विद्वान् और साहित्य-प्रेमी; ज०—१९०२; रच०—गजेंद्रमोक्ष ; वि०—अनेक वृहत् कवि सम्मेलनों के संयोजक ; प०—कोटरा, जालौन ।

मोहनलाल, शास्त्री, काव्य-तीर्थ—समाज के कर्मठ विद्वान् और सुलेखक ; रच०—इह-

डाला, रत्नकरण्ड, श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, तत्काल गणित गुरु पद्यावली, सरल जैनधर्म प्रवेशिका—चार भाग, नाम माला, छत्र-चूड़ामणि, सरल जैनविवाहविधि, सरल जैन-गारी संग्रह, अभिषेक पाठ, अहार क्षेत्रपूजन; संपादक—दि० जैन गोलापूर्व डाइरेक्टरी, गोलापूर्व जाति का इतिहास; प०—इंदौर।

मोहनवल्लभपंत, एम० ए०, हिंदी के सुप्रसिद्ध समालोचक और लेखक; ज०—१६०५; शि०—अल्मोड़ा, काशी; रच०—कवितावली की टीका, दोहावली की टीका, अन्योक्ति कल्पद्रुम-सटीक, सूरपंचरत्न; वि०—यद्यपि इन सभी पुस्तकों पर ला० भगवानदीन का नाम है पर ये लिखी आप ही की हैं; प०—किशोरी रमण इंटर कालेज, मथुरा।

मोहन शर्मा—विद्याभूषण विशारद; ज०—१६०२; ज्ञा०—अँगरेजी, बँगला, गुजराती, उर्दू और संस्कृत; भूत० संपा०—'मोहिनी', 'हिंदुस्तान', 'रसायन', 'पैसा', 'काव्यकलाधर'; सदस्य—एलायन्स आफ आनेर लंदन सोसायटी आफ साइलेन यूनिटी अमेरिका और पीस प्लेज यूनियन लंदन; रच०—मयंकमुखी, कलियुगी कुबेर, (जिस पर टाटा कंपनी द्वारा पुरस्कार मिला), भारत की व्यवसायी विभूतियाँ, विद्रोही, महाराव रामसिंह जू देव; अप्र०—अँगरेजी हिंदू सभ्यता तथा निबंधनिर्झर; प्रि० वि०—साहित्य तथा देश सेवा; प०—'मोहिनी' कार्यालय, इटारसी (मध्यप्रांत)।

मोहनसिंह सेंगर—राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत, कविताओं के सहृदय लेखक; रच०—चिता की चिनगारियाँ; वि०—कई वर्षों से विशालभारत' के सहायक संपादक हैं; प०—कलकत्ता।

मंगतराय 'साधु'—सुप्र-

सिद्ध जैनी साधु श्रीभोलानाथ जी के परममित्र और समाज सुधारक विद्वान् ; 'सनातन जैन' के प्रकाशक ; कई सुंदर लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ; प०—बुलंदशहर।

मंगलदेव शास्त्री, डाक्टर, एम० ए०, डी० फिल—संस्कृत के धुरंधर विद्वान् और हिंदी-प्रेमी लब्धप्रतिष्ठ सुलेखक ; ज०—१८६० ; सा०—गवर्नमेंट संस्कृत कालेज और उसके द्वारा होनेवाली संस्कृत परीक्षाओं के रजिस्ट्रार; रच०-तुलनात्मक भाषाशास्त्र अथवा भाषाविज्ञान—जर्मनभाषा से अनुवादित, प्रेम और प्रतिष्ठा; प्रि० वि०—सांस्कृतिक इतिहास तथा समाज शास्त्र, भाषा शास्त्र और वैदिक साहित्य ; प०—प्रिंसिपल संस्कृत कालेज बनारस।

मृत्युंजयप्रसाद, विद्यालंकार—जीरादेई - निवासी साहित्य-प्रेमी विद्वान् ; देशरत्न डा० राजेंद्रप्रसाद के सुपुत्र; ज०—१९११; सह०संपा०—'देश' "हिंदी नवजीवन'; रच०-अनीति की ओर, भारतवर्ष की प्रधान एकता; प०—सारन।

यशपाल, बी० ए०, प्रभाकर—स्वतंत्र विचारक देश-सेवक, प्रसिद्ध कहानी तथा उपन्यासकार ; शि०—काँगड़ी, लाहौर ; सा०—कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्त्ता, कई बार कारावास ; प्रसिद्ध राजनीतिक पत्र 'विप्लव' का संपादन ; रच०—पिंजरे की उड़ान, न्याय का संघर्ष, मार्क्सवाद, दादा कामरेड, गाँधीवाद की शव-परीक्षा, वो दुनियाँ, चक्कर क्लब, ज्ञान-दान, देशद्रोही तथा तर्क का तूफान ; इनके अतिरिक्त अन्य राष्ट्रीय, राजनीतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक लेख-संग्रह ; प०—विप्लव - कार्यालय, लखनऊ।

यशपाल जैन, बी०, ए०, एल०, एल० बी०—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी और

उदीयमान लेखक; ज०—१९१४; शि०—प्रयाग; सा०—भूत संपा०—'जीवनसुधा'; सस्ता साहित्य मंडल के अंतर्गत एक वर्ष तक संपादन कार्य; भू० मंत्री संस्कृति-संघ और हिंदी परिषद्, दिल्ली; वर्तमान सह० संपा० 'मधुकर'; भूत० ऑर्गनाइजिंग स्काउट मास्टर; भूत० इंचार्ज धर्म समाज इंटर कालेज, तथा ट्रूप लीडर, ईवनिंग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद; रच०—निराश्रिता, नव-प्रसूर—कहानी० आदि, लगभग एक दर्जन पुस्तकों का संपादन तथा अनुवाद; प०—'मधुकर'-कार्यालय, टीकमगढ़।

यशोदा देवी, श्रीमती, प्रयाग के कुशल लेखक श्री-कन्हैयालालजी मुंशी की धर्म-पत्नी, सुयोग्य कहानी-लेखिका साहित्य-प्रेमिका; ज०—१९०८; रच०—भ्रम (कहानी-संग्रह); अप्र०—विभिन्न पत्रों में प्रकाशित कहानियों के दो-तीन संग्रह; प०—कृष्ण कुंज, इलाहाबाद।

यज्ञदत्त उपाध्याय, एम० ए०—सुप्रसिद्ध लेखक और मसुदा-राज्य के दीवान; हिंदी के विशेष अनुरागी और सुलेखक; 'भारत धर्म' में अनेक सारगर्भित लेख प्रकाशित; प०—मसुदा राज्य, अजमेर।

यज्ञदत्त शर्मा, एम०ए०—उदीयमान लेखक और साहित्य प्रेमी आलोचक; ज०—१९१६ आगरा; शि०—प्रयाग तथा आगरा विश्वविद्यालय, रच०—विचित्र त्याग, दो पहलू, ललिता, दया (ना०), हिंदी का संक्षिप्त साहित्य; प०—आगरा।

यज्ञनारायण मिश्र, एम० ए०, सा० र०—सुलेखक और प्रसिद्ध विद्वान्; ज०—१९१२; शि०—प्रयाग, काशी और आगरा; सा०—हिंदी प्रेमियों और अनेक विद्यार्थियों के अवैतनिक अध्यापक; भूत०

तथा वर्तमान परीक्षक हिंदी साहित्य सम्मेलन ; रच०—संस्कृत अनुवाद तथा व्याकरण, साक्षरता आदि कई अप्र० लेख और काव्य-संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल, झाँसी ।

याज्ञवल्क्य अग्निहोत्री उदीयमान लेखक, साहित्य-प्रेमी विद्यार्थी और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; ज०—१६१८ ; शि०—बंबई तथा गुजरात ; सा०—प्रोफेसर, हिंदी उर्दू विभाग ; सूरत ट्रेनिंग कालेज और बेसिक ट्रेनिंग सेंटर ; प्रधान—कोविद मंडल ; राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति, वर्धा, हिंदुस्तानी प्रचार सभा आदि के उत्साही कार्यकर्त्ता ; ज्ञा०—उर्दू, गुजराती; रच०—उर्दू लिपि-परिचय तथा कई एक लेख काव्य-संग्रह; प०—कंकू मैंशन, सूरत ।

योगेंद्रनाथ शर्मा 'मधुप'–हास्यरस के प्रतिष्ठित लेखक स्व० पंडित शिवनाथ शर्मा के सुपुत्र, विद्वान् और साहित्य-मर्मज्ञ ; शि०—लखनऊ ; दैनिक और साप्ताहिक 'आनंद' के कई वर्ष तक संपादक रहे ; अनेक ग्रंथों की रचना की है ; प०—'आनंद' - कार्यालय, चौक, लखनऊ ।

रघुनाथप्रसाद परसाई,–सामयिक साहित्य के प्रसिद्ध लेखक और अध्ययनशील विद्वान् ; ज०—१८६७ ; शि०—इंदौर ; रच०—देशी राज्यों की समस्या, देशी-राज्य और संघ शासन ; प्रि० वि०—रियासत-सुधार; प०—मालापुरा, सोहागपूर ।

रघुनाथ बोगड़—साहित्यप्रेमी युवकरत्न ; हिंदी पुस्तकालय की रजत जयंती के अध्यक्ष, ग्रामों में शिक्षा प्रसार के लिए लगभग २० पाठशालाएँ खोलीं जिनमें हिंदी अनिवार्य ; हिंदी विद्यापीठ के संस्थापक ; प०—डीडवाना, मारवाड़ ।

रघुनाथ विनायक धुलेकर—राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता एवं सुलेखक ; ज०—६ जनवरी १८९१ ; शि०—प्रयाग, कलकत्ता; सा०—महाराष्ट्र समिति तथा विद्यालय झाँसी और महाराष्ट्र गणेश मंदिर ट्रस्ट के संस्थापक ; भू० पू० संपादक अर्ध साप्ताहिक 'उत्साह', 'मातृभूमि'-दैनिक, 'फ्री इंडिया' साप्ता०; रच०—अनेक पुस्तकों के रचयिता ; इस समय कई वर्षों से वार्षिक 'मातृभूमि अब्दकोष' के संपादक हैं ; प०—झाँसी।

रघुनंदनदास—मैथिली साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक ; रच०—पावसप्रमोद, भर्तृहरि-निर्वेद, रसप्रबोध ; प०—मिथिला, बिहार।

रघुधरदयाल त्रिवेदी 'सत्यार्थी'—नवोदित सुकवि; पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक सुंदर रचनाओं के संग्रह ; 'सामयिक साहित्य सदन' के संस्थापकों में एक ; जोधपुर की कई साहित्यिक संस्थाओं का संचालन किया है ; प०—सामयिक साहित्य सदन, चेंबरलेन रोड, लाहौर।

रघुवरदास 'महंत'—लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् और साहित्य के मर्मज्ञ लेखक ; ज०—१८९१ ; सा०—'धर्म भूषण' और 'सुकवि' के प्रमुख कवि; अनेक शिष्यों के काव्य गुरु; अप्र० रच०—अनेक धार्मिक, शिक्षाप्रद साहित्यिक लेख तथा रचनाएँ ; प०—१०८ श्री बालाजी का मंदिर, हटा, (दमोह)।

रघुवीर, डाक्टर ; हिंदी के सुप्रसिद्ध प्रेमी, विद्वान् और प्रबल समर्थक ; बेसिक हिंदी कोष की सुंदर रचना की है ; प०—प्रोफेसर, सनातन धर्म कालेज, लाहौर।

रघुवीर नारायण, बी० ए०—अँगरेजी और हिंदी के उच्चकोटि के कवि ; ज०—१८८४ ; रच०—बटोहिया, भारतभवानी, रघुवीर रसरंग,

रघुवीर पत्र-पुष्प; वि०—इँगलैंड के राज कवि ने इनकी अँगरेज़ी कविताओं की बड़ी प्रशंसा की है; आपके सुपुत्र चि० श्रीहरेंद्रदेवनारायण, एम० ए० अत्यंत प्रतिभाशाली कवि हैं; आजकल आप अपनी 'अपूर्व आत्मकथा' लिख रहे हैं; प०—प्राइवेट सेक्रेटरी, बनैली राज्य, छपरा, बिहार।

रघुवीरसिंह, महाराज कुमार, डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्०—सुप्रसिद्ध गद्य-गीतकार, इतिहास मर्मज्ञ तथा हिंदी के लब्धप्रतिष्ठ सुलेखक; ज०—१९०८; र०—पूर्व मध्यकालीन भारत, बिखरे फूल, मालवा इन ट्रैंजिशन, इंडियन स्टेट्स इन दी न्यू रेजमी, सप्तद्वीप, शेष स्मृतियाँ, मालवा में युगांतर, सेलेक्सन फ्राम सर सी० डब्लू० मैलेट्स लेटर बुक, सिंधियाज अफेयर्स; प०—रघुवीर-निवास, सीता मऊ, मालवा।

रघुवंश पांडेय 'मुनीश' सा० र०—साहित्य-प्रेमी लेखक और अध्ययनशील विद्यार्थी; ज०—१९१२ बलिया; संपा०—सत्य हरिश्चंद्र नाटक; अनु०—बौद्ध भारत; वि०—सहायक संपादक 'किशोर'; प०—किशोर कार्यालय, बाँकीपुर, पटना।

रजनधारीसिंह, एम० ए०, बी० एल०, राष्ट्रीय विचारों के प्रतिष्ठित लेखक, हथुआ राज्य के वर्तमान मैनेजर; भू० सभा०—बिहार-कौंसिल; भू० सं०—सचित्र त्रैमासिक 'किसान'; प०—ज़मींदार और रईस, भरतपुरा, बिहार।

रणंजयसिंह 'ददन', राजकुमार, ओ० सी०, एम्स एम० एल० ए०; ज०—२९ अप्रैल १९०१; शि०—लखनऊ; ले० १९१२; एंपायर पार्लमेंटरी ऐसोशिएशन के मान्य सदस्य; मीरा प्रकाशन समिति हैदराबाद सिंध के सदस्य; रणवीर विद्या-प्रचा-

रिणी सभा के संस्था०-संरक्षक; 'मनस्वी' के संचालक तथा संरक्षक; रच०—अभ्यागमन, सत्य संरक्षण, विद्या, व्यायाम, म्लेच्छ महामंडल, सुस्वप्न संग्रह ; प०—ददन सदन, अमेठीराज्य, सुल्तानपुर, अवध।

रत्नचंद्र छत्रपति, एम० ए०, साहित्यरत्न—प्रसिद्ध विद्वान् और साहित्यमर्मज्ञ ; शि०—प्रयाग, पटना; र०—'रत्न समुच्चय' ; अप्र०—साहित्यिक लेख, नाटक तथा ग्रामसंबंधी लेख ; मंत्री 'हिंदी साहित्य परिषद्', पटना ; सह० मंत्री 'श्रीविहार हिंदी पुस्तकालय' ; प०—राजेंद्र कालेज, छपरा।

रतनलाल बांगड़— हिंदी-साहित्य के विशेष प्रेमी और सुलेखक ; हिंदी के व्यापारी साहित्य के अनुभवी लेखक ; अनेक लेख 'माहेश्वरी' तथा सनातन में प्रकाशित ; प०—ग्वालियर पेंट एंड केमिकल इंडस्टीज कंपनी लिमिटेड, लश्कर, ग्वालियर।

रमाचरण, बी० ए० ; राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत कुशल लेखक ; 'जीवनसंदेश', 'खादी सेवक' के संपादक ; प०—मुजफ्फरपुर।

रमावल्लभ चतुर्वेदी— हास्यरसाचार्य स्व० पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के सुपुत्र ; रच०—रेलदूत; प०—मलयपुर।

रमाशंकर अवस्थी— निर्भीक पत्रकार तथा लब्धप्रतिष्ठ लेखक ; ज०—मई १८९७ ; कांग्रेस में काम करते हैं ; भू० पू० संपादक—अभ्युदय, प्रताप; दैनिक 'वर्तमान' के संस्थापक व संपादक ; रच०—रूस की राज्यक्रांति, बोलशेविक जादूगर, सत्याग्रह गाइड; प०—'वर्तमान'-कार्यालय, कानपुर।

राजकिशोरसिंह ठाकुर— बी० ए०, बी० एल० ; ऐमनडिहरी-निवासी प्रसिद्ध राजनीति-विशारद, अर्थशास्त्र के

विद्वान् और पत्रकार ; साप्ताहिक 'अग्रसर' (कलकत्ता) के प्रधान और दैनिक 'भारतमित्र' के संयुक्त संपा० ; रच०—हंगरी में अहिंसात्मक असहयोग, हिंदू-संगठन, बृटिश-राज-रहस्य, एशिया का जागरण, ईची-रहस्य (अँगरेजी के प्रसिद्ध जापानी उपन्यास का दो भागों में अनुवाद) ; अप्र० रच०—अर्थशास्त्र और राजनीति-विषयक अनेक सामयिक और महत्त्वपूर्ण स्फुट लेख-संग्रह ; प०—वकील, आरा, विहार।

राजकिशोरसिंह, बी० काम ; प्रसिद्ध लेखक और कहानीकार ; ज०—१९१६ बलिया ; ज्ञा०—उर्दू, इँगलिश, संस्कृत, बँगला, गुजराती ; 'छाया' के संपादक ; 'लोकमान्य' के सिनेमा, संवाद और व्यापार 'स्तंभों' के संपादक ; रच०—जीवन-उप० ; प०—संपादक 'छाया', १६० हरिसन रोड, कलकत्ता।

राजकुमार, साहित्याचार्य ; रच०—'पार्श्वाभ्युदय' का हिंदी पद्यानुवाद; वि०—इस समय आप श्रीबनारसीदास चतुर्वेदी के साथ एक महत्त्वपूर्ण जैन ग्रंथ का निर्माण कर रहे हैं ; प०—अध्यापक पपौरा विद्यालय, पपौरा।

राजकृष्ण गुप्त—रूपसदराय बनारसी,-बी० एस-सी०—हास्यरस में गद्य और पद्य ; ज०—१८११ ; अप्र० रच०—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हास्यरस की रचनाओं के संग्रह; प०—२१।२६ भैरोंनाथ, बनारस।

राजनाथ पांडेय, एम० ए०, एल० टी०—प्रसिद्ध आलोचक, साहित्य - प्रेमी विद्वान्, अध्ययनशील लेखक ; ज०—१९०८; शि०—क्किंस कालेज, बनारस तथा प्रयाग विश्वविद्यालय ; रच०—तिब्बत यात्रा, वेद का राष्ट्र-गान ; नाटक—लंका-दहन; उप०—मैना ; अप्र०—हिंदी

'अंत्येष्टि' ; प्रि० वि०—व्याकरण (प्राचीन संस्कृत व्याकरण - अष्टाध्यायी-महाभाष्य) ; प०—बुकलाना, बकसर, मेरठ।

राजेंद्रप्रसाद, डाक्टर, एम० ए०, एम० एल०—जीरादेईनिवासी देशपूज्य राजनीतिक नेता ; ज०—१८८४ बंबई कांग्रेस अधिवेशन के राष्ट्रपति ; अ० भा० हिंदी-साहित्यसम्मेलन के नागपुर अधिवेशन के सभापति ; राष्ट्रभाषा-सम्मेलन के तीन अधिवेशनों (कोकनाडा, काशी, कलकत्ता) के सभापति ; राष्ट्रभाषाप्रचार के सुदृढ़ स्तंभ ; 'देश' के सफल संपादक ; रच०—चंपारन में महात्मा गांधी, अर्थशास्त्र, संस्कृत का अध्ययन ; प०—सदाकत आश्रम, पटना।

राजेंद्रप्रसाद, एम० ए०, बी० एल०—कटैया-निवासी यशस्वी कवि और लेखक ; आरा - साहित्य - परिषद् के सभापति ; अँगरेजी और हिंदी पद्यों में भगवद्गीता के सफल अनुवादक ; रच०—गीतामृत त्रिवेणी ; अप्र० रच०—सुंदर भावपूर्ण कविताओं के दो-एक संग्रह ; प०—प्रधानाध्यापक, माडल हाईस्कूल, आरा, बिहार।

राजेंद्रशंकर भट्ट—उदीयमान पत्रकार और लेखक ; ज०—१९२१ अजमेर; शि०—अजमेर; इलाहाबाद; सा०—साप्ताहिक 'राजस्थान' अजमेर, 'विश्वमित्र' दिल्ली के भूत० संपा० ; अब साप्ता० 'लोकवाणी' में काम कर रहे हैं; अ० भा० हिं० सा० सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, राजस्थान हिं० सा० समिति के संस्थापकों में ; प्रि० वि०—राजनीति विशेषतः रियासती समस्याएँ ; प०—साप्ता० 'लोकवाणी'-कार्यालय, जयपुर।

राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, बी० ए०, एल-एल०

बी०, संपादक जन्मभूमि ; अनेक आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं ; रच०—आहुतियाँ—कहा० ; प०—जमींदार और रईस, सुरसंड, बिहार।

राधाकृष्ण—बिहार के प्रसिद्ध तरुण कहानीकार ; 'कहानी' के संपादक रह चुके हैं ; रच०—सजला, फुटबाल; प०—भट्टाचार्यजी लेन, राँची।

राधाकृष्णप्रसाद बी० ए० (आनर्स)—प्रसिद्ध कहानीकार ; ज०—१९२० ; शि०—पटना ; वि०—तीन वर्षों तक विभिन्न पत्रों के संपादकीय और पुस्तकभंडार के साहित्यिक विभाग में काम किया; रच०—देवता, विभेद, अंतर की बात आदि कहानियाँ ; अप्र०—आराधना, वह महान् कलाकार आदि पुस्तकें तथा संग्रह ; प०—गजाधर मंदिर, मछुआ टोली, पटना, ।

राधाकृष्ण विसाचा—राष्ट्रभाषा - प्रेमी दाधीच ब्राह्मण, सुलेखक और विद्वान्; 'राजहंस' के नाम से अनेक कविताएँ लिखी हैं ; मारवाड़ी 'नागपुर' के संपादक ; प०—श्रीनिवास काटन मिल, बंबई।

राधादेवी गोयनका, सा० वि०—सुप्रसिद्ध विदुषी और सुलेखिका ; ज०—१९०९ ; सा०—भू० अध्यक्षा अ० भार० परदा-निवारण-सम्मेलन, कलकत्ता; मध्य भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन तथा श्रीमहिला-परिषद् आदि; वर्तमान अध्यक्षा—विदर्भ प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन; र०—अनेक अप्रकाशित साहित्यिक एवं सामाजिक लेख-संग्रह ; वि०—मारवाड़ी समाज की जागृति में विशेष हाथ ; प०—मारवाड़ी सेवासदन विद्या मंदिर, अकोला, बरार।

राधिकारमणप्रसाद सिंह, राजा, एम० ए०, सूर्यपुराधीश; प्रसिद्ध उपन्यास और कहान-

लेखक, अत्यंत भावुक और भाषा शैलियों के अद्भुत अधिकारी ; ज०—१८९१ ; बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के द्वितीय अधिवेशन (बेतिया चंपारन) के सभापति और उसी के पंद्रहवें अधिवेशन (आरा) के स्वागताध्यक्ष ; ना० प्र० सभा, आरा के भू० सभापति ; रच०—रामरहीम गल्पकुसुमावली, नवजीवन प्रेमलहरी, तरंग, गांधी टोपी, सावनी सभा, पुरुष और नारी, टूटा तारा, सूरदास इत्यादि ; प०—शाहाबाद, बिहार।

राधेलाल शर्मा 'हिमांशु', ज०—१९०३ ; शांतिस्मारक हिंदी-साहित्य - समिति के संस्थापक ; अनेक रच-नाएँ पत्रों में प्रकाशित हैं ; प०—करेलीगंज, नरसिंहपुर, सी० पी०।

राधेश्याम कथावाचक—प्रसिद्धि - प्राप्त कथावाचक, साहित्यिक से अधिक सफल प्रकाशक और पुराने ढंग के नाटककार ; ज०—१८९० ; रच०—वीर अभिमन्यु, ईश्वर भक्ति, मशरिकी हूर, श्रवणकुमार इत्यादि 'एलफ्रेड कंपनी के नाटककार' की हैसियत से लिखे एक दरजन से अधिक नाटक ; निजी उर्दू तर्ज पर लिखी रामायण और महा-भारत ; शकुंतला और सत्य-नारायण बोल पर भी लिखे जो सफल नहीं हुए ; वि०—राधेश्याम प्रेस की स्थापना करके काफी धन और नाम कमाया ; प०—राधेश्याम प्रेस, बरेली।

रामकृष्ण जोशी, सा० र० ; प्रसिद्ध देश-प्रेमी और हिंदी-प्रचारक ; गाँव - गाँव घूम कर हिंदी - प्रचार का प्रयत्न करते हैं ; कई सुंदर रचनाएँ यत्र-तत्र प्रकाशित हुई हैं ; प०—अखिल-भारत चर्खा संघ; राजस्थान शाखा, गोविंदगढ़, मलिकपुर, जयपुर।

रामकिशोर शर्मा 'किशोर, बी० ए०—प्रसिद्ध लेखक, और पत्रकार ; ज०—१६०६ ग्वालियर ; शि०—लश्कर ; लेख०—१६२१ ; भरतपुर हिं० सा० सम्मेलन में स्वर्णपदक प्राप्त १६२६ ; ग्वालियर हिं० सा० सम्मेलन के सहायक मंत्री और उसके अंतर्गत होनेवाले कविसम्मेलन के संयोजक १६३५ ; साप्ताहिक 'जयाजीप्रताप' के सहकारी संपादक १६२८ से; रच०—योरप का इतिहास, राष्ट्रीय-गान, निकुंज ; अनु०—गीता और महादजी सिंधिया—मराठी से, भारतीय कृषि का विकास—अँगरेजी से; प०—'जयाजीप्रताप' - कार्यालय, ग्वालियर।

रामकिशोर, शास्त्री, बी० ए०, विद्यावाचस्पति ; ज०—१ नवंबर १६१६ ; शि०—लाहौर, आर्यसमाज अमेठी, श्रीरणवीर विद्या - प्रचारिणी सभा अमेठी, ददनसदन क्लब के सदस्य और पदाधिकारी; श्रीविश्वेश्वरानंद वैदिक अनुसंधानालय के संपादकों में एक ; संपादक 'मनस्वी'; प्रि० वि०—दर्शन तथा धर्मशास्त्र; प०—ददन सदन, अमेठी जिला सुलतानपुर (अवध)।

रामकिंकर भगवान वल्लभ पाण्डेय—उदीयमान लेखक और साहित्य के विद्यार्थी ; ज०—१६१६ ; सा०—संस्था०—आयुर्वेद-मंदिर चिकित्सालय तथा उदार भारतीय साहित्य सदन ; रच०—वरदगान, ब्राह्मण गौरव और कृषक गौरव ; अप्र०—वारांगना तथा प्रणय-समाधि और साहित्यिक तथा समाज - संबंधी अनेक लेख-संग्रह; वि०—कविताएँ रचना वैचित्र्य और अलंकारों से पूर्णतया विभूषित ; प०—कुमायूँ, अल्मोड़ा ।

रामकुमार वर्मा, डाक्टर, एम० ए०, पी-एच० डी०—

वर्तमान युग के लब्धप्रतिष्ठ रहस्यवादी कवि, नाटककार और समालोचक ; ज०—१५ नवंबर १६०५ सागर ; शि०—नागपुर, प्रयाग ; रच०—अंजलि, रूपराशि, चित्तरेखा, चंद्रकिरण, वीरहमीर, चित्तौड़ की चिता, अभिशाप, निशीथ; आलो०—साहित्य-समालोचना, कबीर का रहस्यवाद, हिंदी-साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास ; गीत०—हिमहास ; ना०—पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई ; सं०—हिंदी गीतिकाव्य, कबीर - पदावली, जौहर, आधुनिक हिंदी-काव्य; वि०—हिंदी सा० के आलो० इतिहास पर आपको नागपुर यूनीवर्सिटी से पी-एच० डी० की उपाधि मिली ; चित्ररेखा पर २०००) का देव पुरस्कार और चंद्रकिरण पर ५००) का चक्रधर पुरस्कार मिला है ; प०—विश्वविद्यालय, प्रयाग ।

रामकुमारी चौहान—हिंदी की विख्यात कवयित्री; ज०—१८७६ ; स्व० ठा० रतनसिंह की धर्मपत्नी ; रच०—निश्वास—इस पर सेकसरिया पुरस्कार मिला ; अप्र०—वीरवर - नाटक ; प०—बड़ा बाजार, झाँसी ।

रामकृष्णदास कपूर, एम० ए०, एल० टी०, सा० लं०—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी और कुशल लेखक ; सा०—यदा-कदा अभिनय कार्य तथा हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की सेवा ; रच०—अनेक अप्रकाशित लेख-संग्रह तथा आलोचनात्मक निबंध रचनाएँ ; प०—राजकुमार कालेज, रायपुर (सी० पी०)।

रामकृष्ण शुक्ल 'शिलीमुख', एम० ए०—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, प्रतिष्ठित आलोचक और कुशल लेखक ; ज०—१६०१; शि०—बरेली, शाहजहाँपुर,

मुरादाबाद, आगरा, कानपूर, लखनऊ, काशी तथा प्रयाग; सा०—हिंदी-साहित्य-समाज तथा हिंदी - पुस्तकालय की स्थापना ; रच०—अमृत और विष, प्रसाद की नाट्य-कला, आधुनिक हिंदी - कहानियाँ, रचना रहस्य, उसका प्यार (अनु० कहा०) ; इसके अतिरिक्त अनेक मौलिक उपन्यास, अनुवादित ग्रंथ तथा लेख संग्रह; प्रि० वि०—आलोचना, ललित साहित्य, शिक्षा और जीवन - तत्त्व ; प०—महाराजा कालेज, जयपूर।

रामकृष्णाचार, बी० ए०, विद्वान् ; विशारद ; दक्षिण भारत के उत्साही हिंदी-प्रचारक; रच०—सती शर्मिष्ठा ; प०—श्रीकृष्ण प्रेस, उदीपी, साउथ कनारा।

रामखेलावन पाण्डेय, एम० ए०—सहसराम-निवासी विद्वान् समालोचक, गंभीर विचारक तथा निबंधकार ; बिहार प्रां० हिं० सम्मे० के संयुक्त मंत्री; अप्र० रच०—वर्तमान हिंदी-कविता, वर्तमान हिंदी-गद्य-साहित्य, दीपशिखा (कहा०); प०—पटना।

रामगोपाल—वि० लं०, ज०—१८६८ बिजनौर ; शि०—गुरुकुल काँगड़ी हरद्वार; सं०—'सैनिक' 'अर्जुन'; रच०—श्रद्धानंद और रामदेव की जीवनी ; प्रि० वि०—राजनीति व पत्रकार कला ; प०—'अर्जुन' - कार्यालय, दिल्ली।

रामगोपाल शास्त्री, वैद्य-भूषण, कविराज—पंजाब में हिंदी के अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील और उसके प्रचार-प्रसार में संलग्न ; सा०—स्थानीय हिंदी-प्रचारिणी सभा के प्रधान; प०—लाहौर।

रामचरण 'मित्र' हयारण—खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि और काव्य-प्रेमी ; ज०—१९०४; रच०—भेंट (काव्य);

अप्र०—सरसी, वीर बुंदेल ; प०—झाँसी।

रामचंद्र गुप्ता साहु—स्थानीय हाईस्कूल के मैनेजर ; हिंदी-युवक-पुस्तकालय के संस्थापक ; पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक लेख ; हिंदी - प्रचार के लिए सतत प्रयत्न करते हैं ; प०—धामपुर।

रामचंद्र गौड़, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध साहित्य-सेवी, गणित-शास्त्रज्ञ तथा सफल लेखक ; शि०—बनारस, नागपुर, आगरा; टेकनोलोजिकल इंस्टीट्यूट लंडन की परीक्षा भी पास कर ली ; भूतपूर्व अध्या०—महारानी संयोगिता बाई हाई स्कूल ; आजकल देवी श्रीअहिल्याबाई स्कूल में हिंदी विषय के मुख्याध्यापक तथा होल्कर राज्य टेक्स्ट बुक कमेटी के गणित-विभाग के सभासद् हैं; रच०—अलजेब्रा मेड ईजी ; अप्र०—गणित संबंधी ग्रंथ वि०—आप प्राचीन गणित शास्त्र के पुनरुद्धार में प्रयत्नशील हैं तथा गणित विषय संबंधी निबंध लिखते हैं ; प०—रोहतक।

रामचंद्र टंडन, एम० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध हिंदी प्रेमी विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१६ जनवरी १८६६ ; सं०—हिंदुस्तानी-त्रैमासिक ; मंत्री-रोरिक सेंटर आफ आर्ट एंड कल्चर ; रच०—श्रीमती सरोजिनी नायडू, रेणु, टाल्सटाय की कहानियाँ, रूसी कहानियाँ, कलरव, कसौटी, सप्तपर्ण, धरती हमारी है. अँगरेजी—सांग्स आव् मीराबाई, निकलस रोरिक पेंटर एंड पैसिफिस्ट, आर्ट अव् असितकुमार हल्दार, आर्ट अव् अमृत शेरगिल, आर्ट अव् अनागारिक गोविंद ; प०—हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।

रामचंद्र द्विवेदी 'प्रदीप', बी० ए०—विख्यात गीत-

कार और कवि; ज०—१९१६ बड़नगर (मालवा); शि०—इंदौर, प्रयाग और लखनऊ; १९३९ में बंबई की प्रसिद्ध फिल्म कंपनी बांबे टाकीज में गीतकार के रूप में प्रवेश; 'कंगन', 'बंधन', 'पुनर्मिलन', 'नयासंसार'; 'अनजान', 'झूला', किस्मत आदि के सफल गीतकार; कई गीतों के रेकार्ड भी बन चुके हैं; र०—पानीपत; प०—कस्तूरवाड़ी, विलेपार्ले बंबई।

रामचंद्र प्रफुल्ल, साहित्यायुर्वेद - विशारद—प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, कवि और चिकित्सक; ज०—१९०३; ज्ञा०—संस्कृत, गुजराती; सा०—स्थानीय संस्थाओं के कार्यकर्त्ता; स्थानीय श्रीकृष्ण - वाचनालय तथा म्युनिसिपैलिटी कमेटी के कई वर्षों से मंत्री; भूत० संपा०—मासिक 'विनोद'; अप्र० र०—विशेष जटिल रोग और उनकी चिकित्सा; प०—प्रधानाध्यापक, डालमिया ए० वी० मिडिल स्कूल, चिड़ावा, जयपुर।

रामचंद्र वर्मा—हिंदी के अनन्य प्रेमी, प्रकांड विद्वान्, सुलेखक और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी; ज०—१८८९; सा०—१९०७से 'हिंदी केसरी' के संपादक रहे; तत्पश्चात् विहार बंधु, नागरी प्रचारिणी पत्रिका और दैनिक तथा साप्ताहिक भारत जीवन के संपादक रहे; भू० पू० सहा० संपा०—हिंदी शब्द सागर; र०—कालीनागिन; बरनियर की भारतयात्रा, झाँसी की रानी, महादेव गोविंद रानाडे, आत्मोद्धार, सफलता और उसकी साधना के उपाय, बालशिक्षा, उपवास चिकित्सा, वैधव्य कठोर दंड या शांति, भारत की देवियाँ, महात्मा गांधी, गोपालकृष्ण गोखले, हम स्वराज्य क्यों चाहते हैं, आयर्लैंड का इतिहास, सुभा-

पित और विनोद, साम्यवाद, भूकंप, राजा और प्रजा, मेवाड़ - पतन, सिंहलविजय, सूर्यग्रहण, करुणा, वर्तमान एशिया, जातककथामाला, वैज्ञानिक साम्यवाद, कर्तव्य, हिंदू राजतंत्र, प्राचीन मुद्रा, रवींद्र-कथाकुंज, भारत के स्त्रीरत्न, छत्रसाल, अकबरी-दरबार, भारतीय स्त्रियाँ, समृद्धि और शांति, सामर्थ्य, मधु-चिकित्सा, विधाता का विधान, मानवजीवन, गोरों का प्रभुत्व, अमृतपान, अरब और भारत के संबंध, निबंध-रत्नावली, असहयोग का इतिहास, संजीवनी विद्या, रूपकरत्नावली, शिक्षा और देशी भाषाएँ, हिंदी दासबोध, पुरानी दुनियाँ, मितव्यय, काश्मीर-दर्शन, लंका के मोती, आँखोंदेखा महायुद्ध, कविताकुंज, मँगनी के मियाँ, मानसरोवर और कैलाश, उर्दू हिंदी कोष, हिंदी ज्ञानेश्वरी, अंधकार युगीन भारत, रमा, ग्रामीण समाज ; प०—मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

रामचंद्र 'विकल'—कुशल कवि और हिंदी-प्रेमी ; ज०—१६१६ ; ज्ञा०—उर्दू, अँगरेजी; रच०—संयोग, विकल-कल्पना, साधना, त्याग, देश के लिए; प०—नहरबाग, फैजाबाद।

रामचंद्र शर्मा, सा० र०—प्रसिद्ध लेखक और विद्वान् ; शि०—प्रयाग तथा पंजाब ; मंत्री—स्थानीय आर्यसमाज; प्रधान—'आर्य-कुमार सभा' ; डिस्ट्रिक्टबोर्ड मिडिल स्कूल, मुरादाबाद अध्यापक-संघ; भू० सहकारी सं०—अध्यापक (पाक्षिक पत्र), ; संस्था०—हिंदी-साहित्य-पाठशाला ; महिला-विद्यापीठ और सम्मेलन की परीक्षाओं के केंद्र ; रच०—हिंदी-कल्पलता, वैदिक कर्म-पद्धति, आदर्श गीतावली (३ भाग) और सुमन-संचय ;

अप्र०—ऐतिहासिक तथा साहित्यिक लेख ; प०—सरस्वती - प्रेस, किसरौल, मुरादाबाद ।

रामचंद्रशर्मा 'चंद्र' वैद्य—साहित्य-प्रेमी कवि और अध्ययनशील लेखक ; ज०—१८६५ ; र०—गंगागुण-मंजरी ; अप्र०—अष्टावक्र-गीता ; प०—भरतपुर ।

रामचंद्र शर्मा 'वीर'—कुशल संगीतज्ञ, उपदेशक और हिंदी-लेखक ; ज०—१९०९ ; सा०—१९४२ में जयपुर की राजभाषा उर्दू के स्थान पर हिंदी बनाने के लिए सफल अनशन व्रत ; र०—वीर-वाणी, वीर-गर्जना, विकट-यात्रा, विजय-पताका, विमल कथा; अप्र०—वीर रामायण महाकाव्य ; प०—भारत-भवन, बैराठ, जयपुर ।

रामचंद्र सकसेना, बी० ए०, एल-एल० बी०—उदीयमान कहानी, एकांकी नाटक-कार और साहित्य-प्रेमी ; शि०—डायमंड जुबिली हाई स्कूल, बी० एच० एस० डी० कालेज कानपुर, विश्वविद्यालय इलाहाबाद ; अप्र० र०—कहानी और एकांकी के दो-एक संग्रह । प०—वकील, कानपुर ।

रामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र', एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—हिंदी लेखक, आलोचक, टीकाकार और प्रसिद्ध संपादक ; ज०—१९०४ ढोलापुरा, फिरोजाबाद; शि०—प्रयाग, आगरा; सा०—१९२८-३७ तक आगरा-हिंदी-साहित्य विद्यालय के अवैतनिक आचार्य, विद्यार्थी वादविवाद सभा, छात्रपरिषद् के स्थापक ; 'जयाजी प्रताप' लश्कर के सहकारी संपादक ; भूत० संपा०—'आर्यमित्र' 'आर्य-पथिक' 'आगरापंच'; र०—मानस का अरण्यकांड, पार्वती मंगल, जानकी मंगल,

कृष्णगीतावली, गद्यकुसुमावली, संकलन सहेली, गंगावतरण दीपिका पार्वती मंगल (आलोचना), संक्षिप्त गीतावली, पद्मावत प्रकाशिका, काव्यकलाधार दीपिका, ग्राम-सुधार प्रवेशिका, हमारे नए ग्राम ; तुलसीसंग्रह; समन्वय, रसरहस्य ; निबंध - चंद्रोदय, हिंदी - शब्द - संग्रह (अप्रकाशित) ; प०—जयाजी प्रताप, लश्कर ।

रामजय पांडेय, एम० ए०, सा० र०—साहित्य-प्रेमी कुशल लेखक; शि०—प्रयाग, पटना ; सार्व०—डाइरेक्टर आफ शिक्षा-विभाग, बिहार-आफिस के भूत० लेखक ; कालेज की पत्रिका के भूत० स्वतंत्र संपा० और श्रीगौड़ीय-मठ, पटना के 'भागवत' के भूत० सहकारी संपा० ; सम्मेलन - परीक्षार्थियों के अवैतनिक शिक्षक ; रच०—कुमार सुंदर तथा कई ऐतिहासिक, साहित्यिक और नैतिक विषय-संबंधी लेख ; प०—सेक्रेटेरियट, पटना ।

रामजीदास वैश्य—साहित्य-प्रेमी प्रसिद्ध लेखक, सुवक्ता और अध्ययनशील विद्वान् ; ज०—१८८९ ; लेख०—१९०९ ; अनेक साहित्यिक और सार्वजनिक संस्थाओं से संबंधित तथा सक्रिय सहयोगी ; रायल एशियाटिक सोसाइटी के सदस्य ; रायल सोसाइटी आव आर्ट्स और इंटर नेशनल फैकल्टी आव साइंस के फैलो ; रच०—फूल में काँटा, धोखे की टट्टी, मेरी विलायत यात्रा, चित्र-रेखा—सिनेमा कहानी, सभी झूठ, सुघर गँवारिन, काश्मीर की सैर, ग्वालियर के उद्योग-धंधे ; वि०—कैलाशवासी श्रीमंत सरकार माधवराव सिंधिया आलीजाह बहादुर ने १९२९ में आपको 'वफादार दौलते सिंधिया' की उपाधि से विभूषित किया था ; प०—ग्वालियर ।

रामजीवन शर्मा 'जीवन'—प्रसिद्ध ओजस्वी लेखक ; ज०—१६०३ ; संदेश, प्रण-वीर, महारथी, नवयुवक के संपादक ; अनेक स्फुट लेख तथा कविताएँ ; प०—मरवन, विहार।

रामदत्त भारद्वाज, एम० ए०, एल-एल० बी०, एल० टी०—साहित्य-प्रेमी विद्वान् और कुशल लेखक ; ज०—१६०२ ; शि०—दिल्ली, आगरा और प्रयाग; सा०—लाइफ मेंबर, इंडियन फिलो-सोफिकल कांग्रेस, फार्मिली मेंबर आफ दि कोर्ट यूनी-वर्सिटी आफ देहली; कासगंज से प्रकाशित 'नवीन भारत' के सपादक मंडल के भूत० अन्यतम सदस्य; सेक्रेटरी—गोखले पब्लिक लाइब्रेरी तथा अध्यापक, ए० वी० पी० हाईस्कूल, कासगंज; रच०—स्त्रियों के व्रत, त्योहार और कथाएँ, तुलसी-चर्चा, रत्ना-वली, प्रारंभिक संस्कृत पुस्त-कम्, संस्कृत पाठावली और हिंदी-गद्य-कुसुमांजलि आदि अनेक साहित्यिक, सामाजिक और पाठ्य ग्रंथ-संग्रह ; प्रि० वि०—दर्शनशास्त्र (प्राच्य और प्रतीच्य); प०—मोहन मुहल्ला, कासगंज, एटा।

रामदयाल पांडेय—प्रसिद्ध कवि और लेखक ; हाईस्कूल में हिंदी-अध्यापक ; भूत० संपा०—'अग्रदूत' ; अप्र० रच०—भावपूर्ण कविताओं के दो सरस संग्रह; प०—शाहपुर पट्टी।

रामदहिन मिश्र, काव्य-तीर्थ—विहार के यशस्वी वयो-वृद्ध हिंदी-प्रेमी विद्वान्, लब्ध-प्रतिष्ठ सुलेखक और हिंदी प्रकाशक ; ज०—१८८६ ; सा०—प्राचीन ढंग की हिंदी कविताएँ, "दशकुमार चरित" का हिंदी अनुवाद, "पार्वती-परिणय" नामक संस्कृत नाटक का अनुवाद, अनेक पाठ्य-पुस्तकों का संपादन ; आलो-चनात्मक तथा अनुवादित ग्रंथ;

लिखे; सत्साहित्य ग्रंथमाला नाम की एक पुस्तकमाला को जन्म दिया ; रच०—भारत-वर्ष का इतिहास, रचना विचार, प्रवेशिका हिंदी व्याकरण, साहित्य-मीमांसा, साहित्य, साहित्य-परिचय, साहित्यालंकार-साहित्य-सुधा, साहित्य सुषमा, भारत भूगोल, संस्कृत बोधोदस, सरल संस्कृत पाठ्य; वि०—इस समय आप हिंदुस्तानी प्रेस, बालशिक्षा-समिति, ग्रंथमाला-कार्यालय, एजूकेशनल बुकडिपो के संचालक हैं ; अनेक वर्षों से प्रसिद्ध बालोपयोगी मासिक 'किशोर' का सफल संपादन कर रहे हैं ; इसके संस्थापक और संचालक भी आपही हैं ; प०—बाँकीपुर, पटना।

रामदास राय—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी और कुशल लेखक; ज०—१९१२; रच०—भर्तृहरि-शतक, मेघदूत मुद्राराक्षस (ना०), रघुवंश १० सर्ग तक, मनुकालिक ब्रह्मचारी और राजा, पंचरात्रि, श्रीमद्भगवद् गीता, उत्तर रामचरित आदि; प०—अध्यापक, भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर।

रामदेनी तिवारी द्विजदेनी; एम० एल० ए०; हास्य-रस के प्रसिद्ध कवि ; बिहार प्रांतीय कवि सम्मेलन, पूर्णिया के स्वागताध्यक्ष ; 'हितैषी' के यशस्वी संपादक ; जिला साहित्य सम्मेलन के सभापति; मुद्रित पुस्तकें अनेक ; प०—फारबिस गंज, पूर्णिया, बिहार।

रामधन शर्मा शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, सा० आ०—अध्ययनशील विद्वान्, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी का अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील और सुलेखक; ज०—१९०२; शि०—प्रयाग, पंजाब, कलकत्ता ; सा०—नागरी-प्रचारिणी-सभा के स्थायी और प्रबंधकारिणी समिति के और हिं० सा० सम्मे० के पिछले सात वर्षों से

स्थायी समिति के सदस्य; प्रयाग - विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के भूत० अध्यापक तथा वर्तमान प्रधानाध्यापक, (संस्कृत, हिंदी) कामर्शल कालेज (दिल्ली विश्वविद्यालय); भू० रिसर्च स्कालर 'पंजाब विश्वविद्यालय'; र०—आदर्श चरितावली, गद्य सुषमा, रघुवंश, बाल रामायण नाटक आदि तथा अनेक अप्र० आलोचनात्मक साहित्यिक लेख-संग्रह और नैषधीय-चरित्र (श्रीहर्ष); प०—४१८ कटरा नील, दिल्ली।

रामधारीप्रसाद, सा० वि०; भगवानपुर निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक; ज०—१८६५; विहार प्रांतीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में उसके प्रधान मंत्री तथा उपसभापति; चंपारन जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के नवम अधिवेशन (१९४१) के सभापति; रच०—उप०—ध्रुव तारा, जयमाल; सम्मेलन संबंधी अनेक लेख; प०—भगवानपुर, बिहार।

रामधारीसिंह 'दिनकर', बी० ए० (आनर्स)—बिहार के प्रतिनिधि कवि; ज०—१९०८; बिहार प्रां० कवि-सम्मे० (छपरा) के सभापति; इतिहास के विद्वान्; रच०—रेणुका, हुंकार, रसवंती, द्वंद्वगीत; कलिंग विजय, कुरुक्षेत्र; अप्र० रच०—सरस कविताओं के दो-तीन संग्रह; प०—सिमरिया घाट मुंगेर, बिहार।

रामनरेश त्रिपाठी—प्रसिद्ध कवि, ग्रामगीत-संग्रहकार, आलोचक और बाल-साहित्य के लेखक; ज०—१८८६; शि०—जौनपुर; ले०—१९०१; सा०—'हिंदी मंदिर' के संस्थापक; 'हिंदी-मंदिर प्रेस' १९३१ में खोला; १९२५ में कविकौमुदी का प्रकाशन-संपादन; १९३१-४१ तक 'वानर' का प्रकाशन-संपादन; र०—हिंदी महाभारत

कविता कौमुदी-७ भाग, पथिक, मिलन, स्वप्न, मानसी, स्वप्न-चित्र, हिंदुस्तानी कोष, जयंत, प्रेमलोक, तरकस, रामचरित-मानस की टीका, तुलसीदास और उनकी कविता २ भाग, मारवाड़ के मनोहर गीत, सुदामा चरित, पार्वती मंगल, घाघ और भड्डरी, चिंतामणि, हिंदी का संक्षिप्त इतिहास, सुकवि कौमुदी, कौन जागता है, शिवाबावनी, सोहर, बाल कथा कहानी १७ भाग, गुप-कहानियाँ २ भाग, मोहन-माला, बताओ तो जानें, वानर संगीत, हंसू की हिम्मत, नेता बुकौवल, बुद्धिविनोद, पेखन, मोतीचूर के लड्डू, अशोक, चंद्रगुप्त, महात्मा बुद्ध, आल्हा, हिंदी ज्ञानोदय रीडर—६ भाग, कन्या शिक्षा-वली रीडर ६ भाग, हिंदी प्राइमर २ भाग, हिंदी पत्र-शिक्षक, गाँव के घर; वि०—'स्वप्न' पर आपको हिंदुस्तानी एकेडमी ने ५००) का पुरस्कार दिया; पथिक बर्लिन युनि-वर्सिटी में कोर्स-बुक है; प०—सुल्तान (अवध); प०—प्रयाग।

रामनाथ शर्मा—हिंदी के पुराने समर्थक, लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्वान्; ज०—१८८८; रच०—ग्वालियर के वृक्ष और उनका उपयोग, ग्वालियर राज्य में हिंदी, व्यावहारिक शब्द-कोष; वि०—वन-विभाग के सर्वोच्च पद पर पहुँच कर अब अव-काश ग्रहण किया है; प०—ग्वालियर।

रामनाथ 'सुमन'—लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् और यशस्वी सुलेखक; हरिजनों के उत्थान और उनमें हिंदी प्रचार करने में विशेष दत्तचित्त; रच०—भाई के पत्र, प्रसाद की काव्य साधना, घर की रानी, गांधी वाणी; वि०—साधना-सदन नामक प्रकाशन संस्था के संचालक हैं; प०—प्रयाग।

रामनारायण मिश्र, सांख्य-

रत्न ; ज०—१८८६ ; र०—जनक-बाग-दर्शन, कंसवध, बिरुदावली, भक्तिसुधा ; प०—छपरा, विहार।

रामनारायण यादवेंदु 'यादवेंदु', बी० ए०, एल० एल० बी०:—राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के विचारशील सुलेखक और अध्ययनशील विद्वान् ; ज०—१९०९ ; शि०—विशेपतया आगरा ; प्रि० वि०—राजनीति तथा समाज सुधार ; र०—'कहानी कला' राष्ट्र संघ और विश्वशान्ति', 'दाम्पत्य जीवन', 'इन्दिरा के पत्र', 'समाजवाद गांधीवाद', 'भारतीय शासनविधान', 'औपनिवेशिक स्वराज्य', 'भारत का दलित समाज', पाकिस्तान', 'साम्प्रदायिक समस्या', हिटलर की नई युद्ध कला', हिटलर की विचार धारा', भारतीय संस्कृति और नागरिक जीवन','यदुवंश का इतिहास', अंतर्राष्ट्रीय कोश ; वि०—अनेक पाठ्य क्रम-स्वीकृत साहित्यिक एवं राजनीति संबंधी ग्रंथ, 'भारत का दलित समाज' ग्रंथ द्वारा २५०) का 'श्रीराधामोहन गोकुलजी पुरस्कार' प्राप्त हुआ ; इसके अतिरिक्त अनेक साहित्य, राजनीति, दाम्पत्य विज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय विषय संबंधी अप्र० लेखसंग्रह ; प०—नवयुग साहित्य निकेतन राजामंडी, आगरा।

रामनारायण विजय वर्गीय, बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—२० दिसंबर, १९१४ ; सा०—स्थानीय प्रताप-सेवा-संघ, शिवराज युवकसंघ के उत्साही कार्यकर्त्ता ; मध्य-भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में ; उसके महू अधिवेशन की स्वागत-समिति के प्रधान मंत्री ; प०—शिवराज युवक-संघ, महू, मध्यभारत।

रामनारायण शास्त्री—

सुकवि, यशस्वी लेखक और उदीयमान साहित्य सेवी ; अप्र० रच०—कई, अप्रकाशित काव्य-संग्रह ; प्रि० वि०—कविता ; प०—गीताप्रेस, गोरखपूर ।

रामनारायण हर्पुल मिश्र सा० र०—सा०—उपमंत्री जिला कांग्रेस कमेटी ; मंत्री हिंदू सभा ; सभा०—सत्य सनातन धर्म सभा तथा रामपुर वैद्य सभा; संस्था०—श्री हर्पुल भारत गौरव महौपधालय तथा श्री हर्पुल-आयुर्वेद विद्यालय; रच०—धर्मविवेचन तथा अनेक वैद्यक संबंधी लेख ; वि०—हिंदी द्वारा आयुर्वेद विपय से सम्मेलन की रत्न परीक्षा के लिए विद्यार्थी तैयार करना ; प०—बालाघाट, सी० पी० ।

रामनारायण श्रोत्रिय, वैद्य ज०—१८८५ ; नागरी प्रचारिणी सभा बदायूँ के संस्थापक, हिंदी पाठशाला के जन्मदाता ; राष्ट्र भापा प्रचार का प्रयत्न करते हैं ; प०—बदायूँ ।

रामनारायण त्रिपाठी—खड़ी बोली के उदीयमान कवि; ज०—१९१५ ; सा०—मौंठ-कवि-परिपद् के प्रधान मंत्री ; अप्र० रच०—दो काव्य-संग्रह ; प०—मौंठ-कवि-परिपद्, झाँसी ।

रामनिवास शर्मा—विद्वान् रत्न और विज्ञान-साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक; ज०—१८८२ शि०—बनारस, कांगड़ी ; सा०—सौरभ के यशस्वी संपादक ; भौतिक विज्ञान, सौंदर्य विज्ञान, पुरातत्त्व, धर्म आदि अनेक विपयों के धुरंधर लेखक; सैकड़ों सारगर्भित विद्वत्ता-पूर्ण लेख उच्चकोटि की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ; प०—झालावाड़ ।

रामनंदन मिश्र शास्त्री—पतोर निवासी सुप्रसिद्ध साम्यवादी नेता और सुलेखक ; विहार-महिला-विद्यापीठ और मगन आश्रम के संस्थापक ; अनेक स्फुट लेख और भापण;

प०—मगन आश्रम, मभौलिया, दरभंगा

रामपाल चंदेल 'प्रचंड', वीररस के प्रसिद्ध बुंदेली कवि और साहित्य-प्रेमी ; सा०—बुंदेलखंड-कवि-परिषद् के संचालक तथा मंत्री, ज०—१६०७ ; रच०—बुंदेलखंड-वागीश ; अप्र०—दो काव्य-संग्रह ; प०—बुंदेलखंड-कवि-परिषद्, झाँसी।

रामप्रकटमणि त्रिपाठी सा० र०—प्रसिद्ध लेखक, कवि और अध्यापक; ज०—१६०७; बलरामपुर, गोंडा ; शि०—प्रयाग, काशी, पटना ; जा०—संस्कृत व्याकरण, शास्त्री तथा व्याकरणाचार्य; अप्र० रच०—विविध पत्र-पत्रिकाओं में छपे अनेक लेखों के संग्रह ; प०—हिंदी अध्यापक, लायल कालेजिएट स्कूल, बलरामपुर।

रामप्रसाद पांडेय, एम० ए०, डिप्० एड०—बीरमपुर-निवासी मननशील विद्वान्, आलोचक और साहित्यिक ; रच०—साहित्य-सरिता, साहित्य-सुषमा और काव्य कलश की आलोचनात्मक व्याख्याएँ; प०—बीरमपुर, बिहार।

रामप्रसाद शर्मा 'उपरीन'—ब्रजभाषा के सुकवि, प्राचीन कविता के प्रेमी और साहित्य-सेवी ; ज०—१८६२ ; रच०—आदर्श जीवन, ज्ञान-कली; अप्र०—त्रिवेणी; वि०—आपका काव्य-विकास स्व० श्रीअजमेरीजी के संपर्क से हुआ ; प०—चिरगाँव, झाँसी।

रामप्रसादसिंह 'आनंद', बी० ए०—प्रतिष्ठित समाज-सुधारक, राष्ट्र-प्रेमी, कार्यकर्त्ता, यशस्वी, गद्य काव्य लेखक, नाटककार तथा उदीयमान साहित्यिक निबंध लेखक ; रच०—'चित्रकार' (गद्य काव्य) तथा प्रेम के पथ पर; अप्र०—दो काव्य तथा साहित्यिक लेख-संग्रह ; प०—तेज बहादुरसिंह जमींदार, नौनरिया, गोरखपुर।

रामप्रियाशरणसिंह

'रत्नेश'—हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि ; ज०—१८६६ पटना ; देश, आर्यावर्त के भू० पू० संपादक ; 'जौहर' के नाम से उर्दू में भी लिखते हैं ; रच-नाएँ सभी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रि-काओं में प्रकाशित होती रहती हैं ; प०—पटना।

रामप्रीतशर्मा 'शिव', सा० वि० ; केसठ-निवासी प्रसिद्ध कवि और पत्रकार ; ना० प्र० सभा, आरा द्वारा प्रकाशित 'हरिऔध-अभिनंदन-ग्रंथ' के अन्यतम संपा० ; अप्र०रच०—सामयिक निबंधों और कविताओं के दो-तीन संग्रह ; प०—ठि० नागरी प्रचारिणी सभा, आरा।

रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, सा० र०—प्रसिद्ध विद्वान्, साहित्य-प्रेमी और सुलेखक ; शि०—प्रयाग तथा बनारस, ; सा०—काशी नागरी प्रचारिणी सभा के सदस्य; भूत० साहित्य मंत्री तथा प्रधान मंत्री ; रच० काव्य कलाधर, काव्य कुसु-माकर, काव्य प्रदीप, भूमिका और अनमोल रत्न आदि ; अप्र०—अनेक साहित्यिक लेख-संग्रह ; प०—अध्यापक क्वींस कालेज, बनारस।

रामबालक पाण्डेय—अध्ययन शील विद्वान्, सार्वज-निक कार्यकर्ता, उत्साही लेखक एवं सुवक्ता ; ज०—१८६८ ; सा०—असहयोगी आन्दो-लन के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्य-कर्ता, पलकाश्रम पुस्तकालय, स्थानीय पाठशालाओं के सह-योगी सदस्य स्था०—हिंदी-साहित्य - सम्मेलन - परीक्षा-केंद्र तथा रामायण प्रसार समिति ; सद०—हिंदू महा-सभा, सनातनधर्म तथा आर्यसमाज सेवी ; रच०—राष्ट्र तथा समाज सम्बन्धी अनेक अप्र० लेख संग्रह ; प०—गोविन्दपूर, सारन।

रामभरोसेदास 'शरण'—पिंगल तथा अलंकार शास्त्र के प्रकांड पंडित और सुकवि

अनेक स्फुट रचनाएँ की हैं ; शृंगार, हास्य और वीररस में आपकी अच्छी प्रतिभा है ; प०—बरहरा, रायगंज, अयोध्या ।

राममनोहर विचपुरिया 'सम्राट'—साहित्य प्रेमी वक्ता और राष्ट्रीय कवि; ज०—१८६८; सा०—अनेक राजनीतिक और सामाजिक सभाओं में सहयोग; रच०—वंशी विहार ; प०—मुड़वारा, कटनी ।

राममूर्ति मेहरोत्रा, एम० ए०, सी० टी० ; भाषा विज्ञान के विद्वान् और प्रसिद्ध लेखक; ज०—२२ दिसंबर १६१० संभल; रच०—भाषा-विज्ञान सार, लिपिविकास तथा वाक्-विकास ; वि०—प्रायः भाषा विज्ञान तथा मनोविज्ञान पर रेडियो से ब्राडकास्ट करते हैं; प०—अध्यापक, कालीचरण हाईस्कूल, लखनऊ ।

राममोहन, बी० काम ; ज०—२६ जून १६१६ ; रच०—कांग्रेस सरकार संयुक्त प्रांत में, चँदौसी इतिहास ; प्रि० वि०—महानूपुरुषों की जीवनियाँ ; प०—चँदौसी ।

रामरक्षात्रिपाठी 'निर्भीक', सा० र०; ज०—१६१३ अयोध्या ; जा०—संस्कृत, उर्दू, अँगरेजी ; का०—हि० अ० फार्क हाईस्कूल, फैजाबाद ; रच०—अयोध्या-दिग्दर्शन ; प०—बरहटा, अयोध्या ।

रामरीझन 'रसूलपुरी', तिरहुत समाचार के सम्पादक रह चुके हैं ; अनेक स्फुट रचनाएँ तथा लेख लिखे ; आजकल काशी से 'अप्सरा' पत्रिका निकालने जा रहे हैं ; प०—काशी ।

रामलाल अग्रवाल, कविराज साहित्याचार्य, हिंदी-प्रभाकर, वैद्यवाचस्पति, सा० र०—साहित्य प्रेमी और कुशल लेखक; शि०—पंजाब, बनारस, आगरा ; रच०—हिंदीसाहित्य ; सुश्रुत संहिता-विमर्श, शिवाबावनी, यशो

धरा, हिंदी विलास, कलरव और काव्य में मंदाकिनी आदि काव्यों की विस्तृत टीकाएँ; अनेक नैतिक, वैद्यक संबंधी तथा साहित्यिक लेख; वि०—चिकित्सक होते हुए भी हिंदी की भरसक सेवा ; प०—कृष्णगली, लाहौर।

रामलालशरण 'रंग', वयोवृद्ध हिंदी प्रेमी और सुकवि ; जा०—उर्दू फारसी, अंग्रेजी ; हिंदू इंगलिश स्कूल, अयोध्या के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक ; राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' के सहपाठी एवं मित्र ; रच०—सरजू का प्राकृतिक वर्णन ; अप्र०—भक्तिरस की अनेक कविताएँ ; प०—लक्ष्मण किला, अयोध्या।

रामलाल श्रीवास्तव, बी० ए०—प्रसिद्ध कवि तथा उत्साही कार्यकर्ता ; सा०—'गोरखपुर अखबार' के संपादक ; अप्र० रच०—काव्य-संग्रह तथा साहित्यिक लेख ; प०—सं० 'गोरखपुर अखबार' गोरखपुर।

रामलोचनशरण 'विहारी', रायसाहब—विहार के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान्, सुलेखक और हिंदी प्रचारक; ज०—१८८८; सा०—पुस्तकभंडार विद्यापति प्रेस, हिमालय प्रेस के संस्थापक ; 'बालक', 'होनहार', 'रौनियार-वैश्य' के जन्मदाता और संपादक ; रच०—व्याकरण बोध, व्याकरण चंद्रिका, व्याकरण-नवनीत, व्याकरण चंद्रोदय, बालरचना, रचना प्रवेशिका, रचना चंद्रिका, रचना चंद्रोदय, रचना नवनीत, नीतिनिबंध, गद्य-साहित्य, गद्यामोद, गद्यप्रकाश, साहित्य सरोज, साहित्य-विनोद, साहित्य प्रमोद, राष्ट्रीय साहित्य ६ भाग, राष्ट्रीय कविता संग्रह, काव्य सरिता, इतिहास - परिचय, भूगोल-परिचय, स्वास्थ्य परिचय, प्रकृति परिचय, प्रतिवेश परिचय, धर्मशिक्षा, शिशुकर्म-संगीत, मनोहर पोथी, गणित

पढ़ाने की विधि, ऐतिहासिक कथामाला ; वि—हाल ही में आपकी स्वर्ण जयंती और पुस्तक भंडार की रजतजयंती के उपलक्ष में एक बृहत् अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया गया है ; प०—लहेरिया सराय, बिहार ।

रामवचन द्विवेदी 'अरविंद'—सुप्रसिद्ध लेखक और अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी ; ज०—१६०४ बिहार प्रादेशिक अष्टम हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के प्रकाशन विभाग और कवि सम्मेलन के मंत्री ; स्थानीय साहित्य सम्मेलन और बिहार प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के सदस्य तथा उद्देश्यों के प्रचारक ; स्था०—हिंदी साहित्य समिति सहसराम तथा अनंत हिंदी मंदिर दुर्वाली ; रच०—भारती, कथाकुंज, स्वप्नसुंदरी, धर्मदिवाकर, श्रीकृष्ण संदेश और आत्मोत्सर्ग आदि ; प०—बाँकीपूर गर्ल्स-स्कूल, पटना ।

रामविलासशर्मा, डॉक्टर, एम० ए०, पी-एच-डी०—सुप्रसिद्ध लेखक और प्रगतिवादी आलोचक ; ज०—१९१२ ; प्रांतीय प्रगतिशील लेखक संघ के मंत्री ; 'हंस' के कविता भाग के संपादक ; रच०—मौ०—चार दिन ; उपं०, प्रेमचंद—आलो०, भारतेंदु युग—आलो ; अनु०—भक्ति और वेदांत, कर्मयोग, राजयोग ; अप्र०—हिंदी आलोचना साहित्य का इतिहास, सदाबहार - सदासुहाग, महायुद्ध का इतिहास; प०—प्रोफेसर, बलवंत राजपूत कालेज, आगरा ।

रामविलास सिंह—सुकवि और समाज-सुधार के पक्षपाती ; ज०—१८६७ ; रच—कमला, उषा, भगवद्गीता का पद्यानुवाद, सेनापति कर्ण, दमयंती नाटक, अनाथ महिलाओं की पुकार, प्रणयिनी-विछोह ; अप्र०

र०—अनेक कविता और निबंध-संग्रह ; प्र०—प्रयाग।

रामवृक्ष शर्मा 'बेनीपुरी'—बिहार के सुविख्यात पत्रकार, देशप्रेमी नेता और बालसाहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक ; ज०—१९०१ ; तरुण भारत, किसान मित्र, गोलमाल, बालक, युवक, लोकसंग्रह, कर्मवीर, योगी, जनता के सफल संपादक ; र०:बालो०—बगुलाभगत, सियार पाण्डे, बिलाई मौसी, हीरामन तोता, आविष्कार और आविष्कारक, रंगबिरंग, चिड़िया खाना, जानवरों का जीवन, क्यों और क्या, पँचमेल मिठाइयाँ, सतरंगा धनुष, कविता कुसुम; नवयुवको०—साहस के पुतले, जान हथेली पर, फूलों का गुच्छा, पदचिह्न, झोपड़ी से महल, बहादुरी की बातें, प्रेम ; टीका—बिहारी सतसई, विद्यापति पदावली, कन्या में जोश ; उप०—पतितों के देश में, लाल तारा, झोपड़ी का रुदन, दीदी, माटी की मूरतें, मातृदिन, जीवनतरु, रानी ; अन्य—लालचीन, लाल रूस, नई नारी, नया मानव, नवीन साहित्य, शिवाजी, गुरुगोविंदसिंह, विद्यापति, लंगतसिंह ; वि०-कई पुस्तकों के उर्दू संस्करण भी हो चुके हैं ; प्र०—पुस्तकभंडार, लहेरियासराय।

रामशरण उपाध्याय, बी० एल०, एल० टी० ; अनुभवी शिक्षण-शास्त्री ; ट्रेनिंग स्कूल के हेडमास्टर ; नवीन शिक्षक के संपादक ; इतिहास, भूगोल, प्रबंध रचना, हिंदी-अँगरेजी-अनुवाद पर प्रामाणिक पुस्तकें ; र०—मगध का प्राचीन इतिहास ; प्र०—पटना।

रामसरन शर्मा, बी० ए० साहित्य-प्रेमी और कुशल लेखक ; ज०—१९१२ ; शि०—मेरठ कालेज ; प्रि० वि०—कहानी, साहित्य और

राजनीति ; अप्र० रच०—अनेक साहित्यिक लेख तथा कविता संग्रह ; प०—१३८६, नाईवाली गली नं० २३ करौल बाग, दिल्ली।

रामस्वरूप 'रसिकेश', एम० ए०, शास्त्री, विद्या-वाचस्पति, एम० ओ० एल० ; ज०—२५ जनवरी १६०७ ; शि०—रावलपिंडी, लाहौर ; रच०—अनुवाद चंद्रोदय, छंदरलावली, अँगरेजी हिंदी कोष, अलंकार प्रवेशिका, देशविदेश की कहानियाँ, धर्म-शिक्षक, पद्यपीयूष ; प्रि० वि०—साहित्य, धर्म, सदा-चार ; प०—प्रोफ़ेसर, डी० ए० वी० कालेज, लाहौर।

रामस्वरूपशर्मा 'मयंक'—साहित्य के अध्ययनशील विद्यार्थी और लेखक ; ज०—१६१४; शि०—प्रयाग तथा कानपूर ; सा०—भूत० प्रधानाध्यापक, लोअर विभाग, प्रताप हाई स्कूल, कानपूर ; भूत० मैनेजर, भारतीय-विद्यापीठ, गांधीनगर, कानपूर तथा बुंदेलखंड में अनेक सार्व-जनिक संस्थाओं के स्थापक ; रच०—प्रेम तरंग और हनु-मान पचासा ; अप्र०—कई लेख तथा काव्य-संग्रह; प०—अध्यापक भारतीय विद्यालय, नयागंज, कानपूर।

रामस्वरूप शर्मा 'रसि-केंदु' विशारद; ज०—१६०३ रच०—साँवरी, मोहिनी ; प०—हिंदी अध्यापक, चंपा अग्रवाल इंटर कालेज, मथुरा।

रामसहाय 'रमाबंधु'—सुप्रसिद्ध गद्यलेखक ; ज०—१८६० ; रच०—मित्र, मिलाप, मोहिनी रानी, कृष्णगीतांजलि ; प०—हटा, दमोह, मध्यप्रांत।

रामसिंह गहलौत—हास्य-रस के सुंदर तथा उदीयमान कवि हैं; ज०—१६११ ; अप्र० रच०—विमाता, 'कुक्कुड़ूँकूँ'; प०—ग्राम बेलहरी, गाजीपुर।

रामसिंहजी, ठाकुर,—साहित्य-प्रेमी लेखक और हिंदी-

अधिकारों के समर्थक ; ज०—१६०२ ; शि०—हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस ; सा०—प्रोफेसर, अंग्रेजी भाषा और साहित्य हिंदू विश्वविद्यालय, डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्सट्रक्सन, बीकानेर राज्य ; सभा०—म्यूनिसिपल बोर्ड, बीकानेर श्रीगुण प्रकाशक सज्जनालय, बीकानेर की प्रमुख सार्वजनिक और साहित्यिक संस्था और श्रीशार्दूल ब्रह्मचर्याश्रम ; सदस्य—गवर्निंग बाडी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस ; राजपूताना तथा सेंट्रल इंडिया बोर्ड ऑफ एजुकेशन ; ट्रस्टी—बी० जे० एस० रामपूरिया एजुकेशनल ट्रस्ट, बीकानेर ; रच०—कृष्ण रुक्मणीवेलि ढोला मारूरा दूहा, राज स्थान के लोक गीत, भाग १—२, राजस्थान के ग्राम गीत भाग १ (आगरा) चन्द्र सखी के भजन, (सस्ती) मेघमाला गद्य काव्य, रतिरानी, . संक्षिप्त केशव जीवन, स्मृतियाँ-संकलित ; अप्र०—जटमल ग्रंथावली, रावजैतसीरौ छंद, ऐतिहासिक डिंगलगीत, चारणी गीत (५), राजस्थान के लोकगीत भाग ३—४, राजस्थान के ग्रामगीत भाग २—३—४, कणिका (राजस्थानी कविता), ज्योत्स्ना-गद्य काव्य कानन, कुसुमाञ्जलि, इन्द्रचाप कविता, स्वर्गाश्रम-निवन्ध, मित्रों के पत्र, प०—मधुवन, बीकानेर ।

रामसेवक त्रिपाठी 'सेवकेंद्र'—ब्रजभाषा के कुशल कवि और साहित्य-प्रेमी लेखक; ज०—१६०६ ; ज्ञा०—अँगरेजी, बँगला ; रच०—मीरा मानस, ताजमहल, सूरदास, छत्रशाल ; प०—झाँसी ।

रायकृष्णदास, सुप्रसिद्ध कलाकोविद, गद्यकाव्यकार, कहानी लेखक और नागरी प्रचारिणी सभा काशी के उत्साही सहायक ; ज०—१८९२ ; लेख०—१९१०-११ से आचार्य द्विवेदीजी के प्रभाव से गद्य और प्रसादजी

तथा मैथिलीशरण के प्रभाव से खड़ी बोली में कविता लिखना आरम्भ किया; स्था० १६२० में भारत कला भवन; यह भारतीय-ललित कला-पुरातत्त्व का एक बहुत बड़ा राष्ट्रीय संग्रह है जो नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में संचालित हो रहा है; इसका स्थान भारतीय कला के संसार-प्रसिद्ध संग्रहालयों में है १; र०—साधना, छाया-पथ, प्रवाल, पगला-अनूदित, संलाप, अनाख्या, सुधांशु, आँखों की थाह, भारत की चित्रकला, भारतीय मूर्तिकला, भावुक, ब्रजरज, इक्कीस कहानियाँ, नई कहानियाँ; प्रि० वि०—साहित्य, संगीत, कला; प०—काशी।

रासविहारीराय शर्मा, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध जीवनी लेखक, हिंदी-सेवक, समालोचक तथा सफल संपादक; शि०—काशी हिंदू विश्वविद्यालय पटना और प्रयाग; सा०—भूतपूर्व डिपुटी इंस्पेक्टर 'शिक्षा-विभाग', हजारी बाग; रांची शिक्षण विद्यालय (सेकेंडरी टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल) में हिंदी साहित्य तथा शिक्षाविज्ञान के अध्यापक; र०—प्राइमरी ट्रांसलेशन, सुबोध वर्णपरिचय तथा शिक्षा और शासन; अप्र०—अनेक समालोचना संबंधी साहित्यिक लेख; भूत० संपा०—'शिक्षक'; प०—टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, राँची।

रावनारायनसिंह—प्रसिद्ध हिंदी अनुरागी मसुदानरेश; गल्प-साहित्य के सुलेखक; नारायण हाई स्कूल विजय नगर के संचालक; इस स्कूल में हिंदी पर समुचित ध्यान दिया जाता है; प०—विजय-निवास भवन, पो० विजय-नगर, अजमेर।

राजाराम शास्त्री—कई वर्षों तक डी० ए० वी० कालेज लाहौर में संस्कृत के प्रोफेसर रहे; अनेक संस्कृत ग्रंथों का

हिंदी में अनुवाद किया; प०—लाहौर।

रामाधार त्रिपाठी 'जीवन'—प्रतिष्ठित एवं उत्साही कवि; रच०—तंदुल; अप्र०—दो काव्य-संग्रह; प्रि० वि०—काव्य; प०—गोरखपुर।

रामाधीनलाल खरे—प्रसिद्ध कवि और कविता-मर्मज्ञ; ज०—१८८४; लेख०—१६०५; हिं० सा० सम्मे० की ओर से 'कविरत्न', विद्या-विभाग-काँकरोली की ओर से 'कविभूषण' और ओरछा-दरबार से 'अन्योक्त्याचार्य' की उपाधि-प्राप्त; रच०—श्री कृष्ण-जन्मोत्सव, छत्रसालवंश कल्पद्रुम, पद्मिनी-चमत्कार, बीकानेर वीरबाला, जीव-हिंसा आदि; अनेक ग्रंथ अप्रकाशित भी हैं; प०—राजकवि, ओरछा।

रामानुजलाल श्रीवास्तव—प्रसिद्ध कविता-कहानी लेखक और सफल संपादक; भूत० संपा०—मासिक 'प्रेमा' वर्त० संपा०—'सारथी'; प्रेमा-पुस्तक माला नामक प्रकाशन-संस्था की स्थापना की; आपने कई पाठ्य ग्रंथों का भी संपादन किया है; प०—इंडियन प्रेस, जबलपुर।

रामायणप्रसाद, एम० एल० ए०; विद्वान् लेखक और पत्रकार; संस्था०—बाल हिंदी पुस्तकालय, आरा; संचा० और संपा०—'स्वाधीन भारत'—आरा; अप्र० रच०—सामयिक विषयों पर स्फुट रूप में लिखे अनेक निबंध-संग्रह; प०—आरा।

रामायणशरण, एम० ए०—गोरखरी-निवासी प्रसिद्ध लेखक और पाठ्य ग्रंथ-संपादक; सेंटजेवियर मिशनरी स्कूल, पटना में हिंदी अध्यापक; संपा० र०—हिंदी मुहावरे और कहावतें, साहित्य-सरोवर, साहित्य-चंद्रिका, साहित्य-माधुरी, मनोहर साहित्य; प०—पटना।

रामावतारप्रसाद

'अरुण'—सुप्रसिद्ध कवि ; रच०—अरुणिमा ; स्फुट-कविताएँ ; प०—समस्तीपुर (दरभंगा), बिहार ।

रामावतार विद्याभास्कर—प्रसिद्ध लेखक, भाषान्तरकार ; तथा यशस्वी विद्वान् ; र०—पंचदशी, बोधसार, शत-श्लोकी, वाक्यसुधा, योग-तारावली, दशश्लोकी, गीता परिशीलन, नारद भक्तिसूत्र, तथा बालगीत ; अप्र०—जाग्रतजीवन, मनुष्यजीवन का लक्ष्य, ईश्वर भक्ति, आदर्श परिवार, जीवनसूत्र, भाव-सागर, ग्रामसुधार, शिक्षकों का मार्गदर्शक, बालजागरण, बालप्रश्नोत्तरी, बालोद्बोधन, मनन, सत्यसिद्धान्त तथा लघु-गीतापरिशीलन आदि ; प०—संचालक, बुद्धि सेवाश्रम, बिजनौर, रतनगढ़, यू० पी० ।

रामावतार शर्मा, एम० ए०, बी० एल, सा० आ०, सा० वि०;—सुप्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक;रच०—भारत का इति-हास, आस्तिकवाद, भारतीय ईश्वरवाद ; अनेक विद्वत्तापूर्ण लेख ; वि०—'भारतीय ईश्वर-वाद' पर विदेश से उपाधि मिली ; प०—हिंदी रिसर्च स्कालर,विश्वविद्यालय,पटना ।

रामावतार शर्मा 'विकल' प्रसिद्ध लेखक और कवि ; ज०—१९१२ ; 'माँ मंदिर' के संस्थापक ;'विकल साहित्य माला के लेखक ; रच०—वधशाला, न्यूबाला, मजदूर, दिव्यदर्शन, अंतर्कथा, हिंदी रहस्य, सूखा पीपल ; अप्र०—कृषकबाला, प्रभात-फेरी, सुम-रनी, भैयादूज, श्रद्धानंद, उपा-निमत्रण ; प०—'माँ' मंदिर, मंडी धनौरा, मुरादाबाद ।

रामेश्वर 'करुण'—ब्रज-भाषा और खड़ी बोली के सुप्रसिद्ध कवि ; ज०—१९०१ ; सं०—शिक्षा-मासिक ; रच०—करुणसतसई, बालगोपाल, ईसवनीति कुंज, तमसा ; प०—सामयिक साहित्यसदन चेंबरलेन रोड, लाहौर ।

रामेश्वरदयाल 'श्रीकर'- खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि और साहित्यप्रेमी ; ज०—१९०४ ; अप्र० रच०—दो-तीन काव्य-संग्रह ; प०—चरखी, जालौन।

रामेश्वरप्रसाद गुप्त, एम० एस्-सी०-आरा-निवासी सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक निबंधकार ; 'माधुरी', 'विश्वमित्र', आदि के लेखक ; अप्र० रच०—अनेक निबंध-संग्रह ; प०—डिपटीकलेक्टर, आरा, बिहार।

रामेश्वरप्रसाद दुबे—प्रतिष्ठित विद्वान्, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सफल वैद्य एवं साहित्य सेवी ; सा०—भूत० प्रधानाध्यापक, स्थानीय स्कूल, हरदा; प०-'कल्पवृक्ष' कार्यालय, उज्जैन।

रामेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव, बी० ए०, एल-एल० बी०—खड़ी बोली के उदीयमान कवि और काव्य-प्रेमी; ज०—१९१२ ; अप्र० रच०—दो काव्य-संग्रह ; प०—वकील, बघौरा, उरई।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', एम० ए०—प्रसिद्ध उदीयमान कवि और कहानी-लेखक; ज०—१ मई १९१५; शि०—लखनऊ और नागपुर ; रच०—तारे—कहा०, मधूलिका, अपराजिता, किरण बेला, ये, वे बहुतेरे, करील, लालचूनर, समाज और साहित्य ; अप्र०—चढ़ती धूप, देवयानी ; प०—दारागंज, प्रयाग।

रामेश्वरी नेहरू—सुप्रसिद्ध विदुषी महिला; ज०—१८७६ ; योरप, रूस आदि का भ्रमण किया ; अनेक वर्षों तक 'स्त्रीदर्पण' का संपादन; आल इंडिया वीमेंस कांग्रेस की सोशल सेक्रेटरी ; कंसेंट कमेटी की सदस्या ; विदेशों में भारत की दशा पर अनेक भाषण दिए ; प०—लाहौर।

रामेश्वरीप्रसाद 'राम'—बिहार के नाटककार और

कवि ; ज०—१६०१ ; रच०—अछूतोद्धार ना० तथा अनेक स्फुट कविताएँ ; प०—बाढ, बिहार ।

राहुल सांकृत्यायन, महा-पंडित, त्रिपिटकाचार्य, सुप्रसिद्ध नेता और उद्भट लेखक; ज०—१८६९ ; रच०—बुद्धचर्या, धम्मपद, मज्झिमनिकाय, दीर्घनिकाय, विनयपिटक, तिब्बत में बौद्धधर्म, तिब्बत में सवा वर्ष, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, लद्दाखयात्रा, लंका, ईरान, जापान, सोवियतभूमि, साम्यवाद ही क्यों, वाइसवीं सदी, कुरान-सार, पुरातत्त्व-निबंधावली, शैतान की आँख, जादू का मुल्क, सोने की ढाल, विस्मृत के गर्भ में, सतमी के बच्चे, दिमागी गुलामी, तुम्हारा-क्षय, क्या करें; प०—सारन ।

रुद्रदत्त मिश्र 'सुरेश', बी० ए०, सा० र०—ग्वालियर के हास्यरस के कवियों में कदाचित् सर्वश्रेष्ठ, अनेक पैरोडियों के लेखक ; मिडिल स्कूल, मुरार में प्रधानाध्यापक हैं; ज०—१६०६ ; रच०—हिंदी रीडरें (पाँच भाग) हिंदी व्याकरण, घनचक्कर, राम की कुंडलियाँ; अप्र०—सुरेश सतसती, प०—शारदा-सदन, लश्कर, ग्वालियर ।

रूपकुमारी वाजपेयी, एम० ए०—सुप्रसिद्ध विदुषी कहानी लेखिका ; ज०—३ सितंबर १६१७ ; शि०—जबलपुर ; सा०—हिंदी-साहित्य संघ और फिलासोफिकल एसोसिएशन की सदस्या ; कई सुंदूर कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं ; प०—ठि० लेफ्टिनेंट संतवाजपेयी आर०आई० एन० बी० आर०, नेवी आफिस, विजगापट्टम ।

रूपनारायण पांडेय—हिंदी के श्रेष्ठ पत्रकार, सफल अनुवादक, सुकवि और प्रकांड विद्वान् ; ज०—१८८४ ;

शि०—लखनऊ ; सा०—'निगमागम चंद्रिका', 'नागरी प्रचारक', 'इंदु', 'माधुरी' (प्रारंभिक ५ वर्ष) के भूतपूर्व संपादक; इस समय लगभग ११ वर्षों से फिर 'माधुरी' का संपादन कर रहे हैं ; रच०—शुकोक्ति-सुधा-सागर, आँख की किरकिरी, शांतिकुटीर, चौबे का चिट्ठा, दुर्गादास, उस पार, शाहजहाँ, नूरजहाँ, सीता, पापाणी, सूम के घर धूम, भारतरमणी, बंकिमनिबंधावली, ताराबाई, ज्ञान और कर्म, विद्यासागर, बालकालिदास, बालशिक्षा, तारा, राजारानी, घर-बाहर, भू-प्रदक्षिणा, गल्पगुच्छ ५ भाग, समाज, शिक्षा, महाभारत के कतिपय पर्व, रमा, पतित पति, शूरशिरोमणि, हरीसिंह नलवा, गुप्तरहस्य, खाँजहाँ, मूर्खमंडली, मंजरी, कृष्णकुमारी, बंकिमचंद्र, अज्ञातवास, बहता हुआ फूल, पोष्यपुत्र, चंद्रप्रभ-चरित्र पृथ्वीराज, प्रफुल्ल, शिवाजी, वीरपूजा, नारीनीति, आचार-प्रबंध, घर जमाई, स्वतंत्रता-देवी, नीतिरत्नमाला, भगवती शतक, शिवशतक, रंभा-शुक-संवाद, पत्र - पुष्प, दुरंगी-दुनिया, गोरा, बुद्धचरित, खोई हुई निधि, गृहलक्ष्मी, विजया, पराग, अशोक, पद्मिनी, सचित्र हिंदी भागवत, सुबोध बालभागवत, सुबोध बाल-महाभारत, सुबोध बालरामायण, प्रतापी परशुराम, महारथी अर्जुन, महावीर हनुमान, गजरा ; प०—रानीकटरा, लखनऊ ।

रेवतीरंजन सिनहा—साहित्य-प्रेमी और कुशल लेखक ; ज०—२ सितंबर १९२० वृंदावन ; हिंदी साहित्य-समिति, मथुरा के संस्थापक ; कलकत्ता में भी हिंदी समिति की स्थापना की और उसके मंत्री रहे ; अनेक मनोहर रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई

हैं ; प०—८८ वृंदावन, युक्तप्रांत।

रैवतसिंह ठाकुर, साहित्य-मनीषी—हिंदी प्रेमी और सहृदय कवि ; ज०—१९०७, किशनगढ़ ; शि०—हाई स्कूल तक ; रच०—क्षत्रिय भजनावली, लक्ष्मण विलास–डूँगर राज्य का पद्यात्मक इतिहास ; वि०—लक्ष्मण विलास पर डूँगरपुर राज्य से ५००) का पुरस्कार और जागीर मिली ; संस्कृत-कार्यालय अयोध्या ने 'साहित्य-मनीषी' उपाधि से विभूषित किया; अप्र०—गुहिल गौरव-प्रकाश, छत्रसाल दशक ; प०—सैन्य विभाग, उदयपुर, मेवाड़।

लज्जाकुमारी प्रभाकर ; ज०—१३ मई १९२१ ; एकांकी नाटक, गद्यगीत की सुलेखिका और कवयित्री ; श्रमजीवी लेखक मंडल की महिला प्रतिनिधि ; प०—आर्यपुत्री पाठशाला, तांदलियावाला, लायलपुर, पंजाब।

लज्जावती—उदीयमान कवयित्री ; रच०—वीर जीवन, गृहिणी कर्तव्य ; प०—मथुरा।

लज्जावती, श्रीमती—साहित्य की प्रेमिका, सुलेखिका और हिंदी के अधिकारों की पोषिका, अप्र० रच०—समय-समय पर पंजाबी पत्रों में प्रकाशित लेख-संग्रह ; प०—मुख्याध्यापिका, आर्य-पुत्री पाठशाला, हजूरीबाग, श्रीनगर।

लल्लनप्रसाद द्विवेदी, सा० र०—साहित्य-प्रेमी और कुशल लेखक; ज०—१९२१ ; अप्र०रच०—अनमेल विवाह नाटक, जवाहर ; प०—राष्ट्र-भाषा विद्यालय ; बरहज, गोरखपुर।

लल्लीप्रसाद पांडेय—वयोवृद्ध हिंदी प्रेमी विद्वान् और द्विवेदी-युग के सुप्रसिद्ध लेखक ; ज०—१८८६ ; सा०—भूत० कार्यकर्ता

"हिंदी-केसरी"; नवलकिशोर प्रेस में भूत० संशोधन कार्य-कर्त्ता ; कुछ समय तक "कलकत्ता समाचार" के सहयोगी रहे ; १९१७ से २२ तक इंडियन प्रेस, प्रयाग में कार्य किया ; कुछ वर्ष तक "बाल सखा" का संपादन ; "सरस्वती" के प्रसिद्ध संपा० द्विवेदीजी के कुछ वर्ष तक सहायक के रूप में रहे ; भूत० प्रधान मंत्री "काशी नागरी प्रचारिणी सभा" ; रच०—रायबहादुर (उल्था), ठोक पीटकर वैद्यराज (अनुवाद) ; इसके अतिरिक्त लगभग दो दर्जन अनुवादित पुस्तकें और अनेक अप्र० लेख संग्रह ; प्रि० वि०—कथा साहित्य, संत साहित्य और भ्रमण ; प०—इंडियन प्रेस लि०, बनारस छावनी।

ललितकुमार सिंह 'नटवर'—प्रसिद्ध कवि और अभिनेता ; बिहार प्रांतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापकों में ; विख्यात स्काउट मास्टर ; आशा, आलोक के संपादक; रच०—बाँसुरी ; अनेक स्फुटकविताएँ; प०—मुजफ्फरपुर।

ललिताप्रसाद सुकुल एम० ए० ; सुप्रसिद्ध विद्वान् और आलोचक ; ज०—१९०४ ; शि०—प्रयाग ; रच०—सुदामाचरित्र का एक संस्करण ; धोखाधड़ी-अनु०, साहित्य-चर्चा, अंग्रेजी साहित्य की झाँकी, मीराबाई के गीत, सज्जाद संबुल ; प्रि० वि०—साहित्य ; प०—विश्वविद्यालय कलकत्ता।

लक्ष्मण नारायण गर्दे—मराठी साहित्य के वयोवृद्ध, हिंदी के सुलेखक और ख्यातिप्राप्त कुशल पत्रकार ; ज०—१८८९ काशी ; सा०—भू० पू० संपा०—वेंकटेश्वर समाचार, बंगवासी, भारतमित्र, नवनीत, पुनः भारतमित्र (६ वर्ष तक), श्रीकृष्ण संदेश ; कलकत्ते की कांग्रेस कमेटी के

सभापति, कल्याण के योगांक, संतांक, वेदांतांक, साधनांक के वि० संपादक ; रच०—मौलिक०—नकली-प्रोफेसर, मियाँ की करतूत, महाराष्ट्र-रहस्य, सरलगीता, श्रीकृष्ण चरित्र, एशिया का जागरण ; अनु०—एकनाथ चरित्र, ज्ञानेश्वर चरित्र, तुकाराम चरित्र, श्रीअरविंद योग, योग प्रदीप, हिंदुत्व, गांधी सिद्धांत, आरोग्य और उसके साधन, जापान की राजनीतिक प्रगति, माँ ; प०—काशी।

लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज, बी० ए०,—बाल-साहित्य के सिद्धहस्त लेखक ; रच०—'मनन', दिल्ली का सुलतान, योरप का रावण हर हिटलर, बालोपयोगी १४ पुस्तकों का एक सेट ; प०—अध्यापक, कालिवन ताल्लुकदार कालेज, लखनऊ।

लक्ष्मण शास्त्री—रच०—लघुस्तवराज, दयालुस्तव षोड़शी, गुरु परंपरानुति, श्री हरिस्तोत्र (चित्रकाव्य) अप्र०—कीर्ति-सागर (राम-कथा) ; प्रि० वि०—काव्य रचना, व्याकरण और ज्योतिष ; प०—अनाथोपकारक संस्कृत पाठशाला, नागौर (मारवाड़)।

लक्ष्मणस्वरूप, डाक्टर ; संस्कृत, अंग्रेजी और फ्रेंच के अनेक नाटकों का हिंदी में सफल अनुवाद किया ; प०—प्रिंसिपल ओरियंटल कालेज, लाहौर।

लक्ष्मणसिंह चौहान, ठाकुर, बी० ए०, एल-एल० बी०—राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता, कवि तथा नाट्यकार ; रच०—सौभाग्य-लाडला नैपोलियन और उत्सर्ग ; वि०—आज कल जेल में हैं ; प०—जबलपुर।

लक्ष्मीकांत झा, आई० सी० एस० ; विशिष्ट प्रतिभा-शाली कथाकार, निबंधलेखक और समालोचक; रच०—मैंने कहा ; प०—बरारी, बिहार।

लक्ष्मीकांत त्रिपाठी, शास्त्री, सा० र०, सा० श्रा०—ज०—श्रक्टूबर १६१६ ; श्रीमृत्युंजय फार्मेसी के व्यवस्थापक ; आदर्श आयुर्वेदिक कंपनी लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर ; अप्र० रच०—रसगंगाधर विमर्श, साहित्य और समाज, हिंदी भाषा का विकास ; प०—श्रीमृत्युंजय भवन, ऐब्रटरोड, लखनऊ।

लक्ष्मीचंद्र वाजपेयी—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी विद्यार्थी ; ज०—१६१६ ; रच०—जीवन-संघर्ष, नीला लिफाफा ; प्रि० वि०—दर्शन शास्त्र और ललित साहित्य ; प०—लाटूशरोड, कानपूर।

लक्ष्मीधर वाजपेयी—हिंदी साहित्य के प्रकांड पंडित, धुरंधर लेखक और विद्वान् ; ज०—१८८७ ; भू० पू० संपादक हिंदी ग्रंथमाला-मासिक ; 'हिंदी केसरी', चित्रमय जगत मासिक, आर्यमित्र, राष्ट्रमत, तरुणभारत-ग्रंथावली और लक्ष्मी आर्ट प्रेस के संचालक ; रच०—मौ०—धर्मशिक्षा, गार्हस्थ्य-शास्त्र, सदाचार, नीति, काव्य और संगीत ; अनु०—वज्राघात, उषाकाल, चंद्रगुप्त, मेघदूत, संस्कृत मेघदूत का समश्लोकी और समवृत्त अनुवाद; दूसरों के साथ—दासबोध, रामदास चरित्र, शालोपयोगी भारतवर्ष ; प०—गांधीनगर कानपुर।

लक्ष्मीनारायण—अ०भा० चरखासंघ की बिहार शाखा के प्रधानमंत्री ; बिहार में खादी आंदोलन के मुख्य उन्नायक ; 'खादी सेवक' के संचालक-संपादक ; खादी के प्रचार और उसके अर्थशास्त्र तथा उसकी उपयोगिता पर अनेक महत्त्वपूर्ण लेख ; प०—मुजफ्फरपुर।

लक्ष्मीनारायण टंडन, एम० ए०, सा० र०—यात्रा-साहित्य के उदीयमान लेखक,

साहित्य-प्रेमी और प्रचार-क्षेत्र से दूर रहनेवाले कवि ; ज०—१२ जुलाई १६१२ ; शि०—लखनऊ, नागपुर ; रच०—संयुक्तप्रांत की पहाड़ी यात्राएँ, रचनाबोध, मातृभाषा के पुजारी ; अप्र०—दुलारे दोहावली-समीक्षा, संयुक्तप्रांत के तीर्थस्थान, हृदय-ध्वनि, सप्तप्रवेश, अंताक्षरी-प्रकाश, भाग्यविधान-उप०, प्रवेश-कहा० ; प०—अध्यापक, कालीचरण हाई स्कूल, लखनऊ।

लक्ष्मीनारायण दीक्षित, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध लेखक और सुयोग्य अध्यापक ; ज०—१६०० नेवाड़ी जिला इटावा; शि०—प्रयाग, आगरा,; ज्ञा०—संस्कृत और अँगरेजी ; अप्र० रच०—विविध पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक सामयिक निबंधों के संग्रह ; प०—एँग्लो बंगाली इंटरमीडियट कालेज, प्रयाग।

लक्ष्मीनारायण मूँदड़ा, 'भारतीय'—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी प्रचारक ; ज०—१६१७; ज्ञा०—मराठी व अँगरेजी ; सा०—राष्ट्रभाषा प्रचार, कांग्रेस का कार्य ; रच०—अनेक साहित्यिक लेख ; प्रि० वि०—साहित्य ; प०—शाखा—सस्ता साहित्य मंडल, बजाज बाड़ी, वर्धा।

लक्ष्मीनारायण लाल, रायसाहब, एक्स एम० एल० ए०; ज०—१३ मार्च १६१२; सा०—'लक्ष्मीप्रेस' के संस्थापक, भू० पू० संपादक 'लक्ष्मी', गृहस्थ ; रच०—समुद्रयात्रा, हिंदू मुस्लिम एकता, गीतारत्नावली, आरती, श्रीरामहृदय, चित्रगुप्त कथा ; प०—वकील, औरंगाबाद, बिहार।

लक्ष्मीनारायण शास्त्री पालीवाल ; विद्या-विभाग कांकरोली के सरस्वती भंडार के प्रबंधक ; अनेक सुंदर लेख

लिखे हैं; प०—कांकरोली, मेवाड़।

लक्ष्मीनारायण शुक्ल, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०—कवि और साहित्य-सेवी; ज०—सं० १९६२ गोरखपुर; शि०—प्रयाग, लखनऊ; रच०—पद्यात्मक गंगागरिमा; प०—एडवोकेट, गोरखपुर।

लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', एम० ए०; ज०—१८ जनवरी १९०८; शि०—भागलपुर; रच०—भागलपुर; भू० पू० संपादक 'कुमार' साहित्य, राष्ट्रसंदेश; अप्र० रच०—भ्रातृप्रेम, गुलाब की कलियाँ, रसरंग, वियोग, काव्य में अभिव्यंजनावाद, जीवन के तत्त्व और काव्य के सिद्धांत; प्रि० वि०—समालोचना; प०—ग्राम रूपसपुर, पो० धमदाहा, पूर्णिया, बिहार।

लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी, बी० ए०, सा० र०, शास्त्री—हिंदी के उदीयमान सुलेखक; शि०—प्रयाग, पंजाब तथा काशी; सा०—हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से मद्रास प्रांत में हिंदी प्रचारक; "खिलौना" के सहकारी संपा०; ज्ञा०—हिंदी, अँगरेजी तथा संस्कृत; रच०—रमेशचंद्र दत्त; स्वामी विवेकानंद, जगदीशचंद्र बोस, भारतेंदु हरिश्चंद्र, पृथ्वीराज, भगवान् रामचंद्र, नल दमयंती, फुर-फुर-फुर, भैंसासिंह; कई टीकायें जिनमें रहिमन नीति दोहावली तथा शिवाबावनी की टीकायें प्रसिद्ध हैं; देवकवि कृत 'भावविलाश' काव्य का संपादन भी किया है; प०—अध्यापक, मधुसूदन विद्यालय हाई स्कूल, सुल्तानपूर।

लक्ष्मीनिवास गनेरीवाल, राजा—अहिंदी प्रांत हैदराबाद के सुविख्यात हिंदी-प्रेमी और हिंदी प्रसारक; ज०—१९०७ हैदराबाद; अध्यक्ष

हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद; अपने प्रांत में हिंदी का प्रचार करने का यथाशक्ति प्रयत्न करते हैं; प०—सीताराम बाग, हैदराबाद (दक्षिण)।

लक्ष्मीपतिसिंह, बी० ए०; मैथिलबंधु के सुयोग्य संपादक; रच०—चारुचरितावली, चामुंडा; प०—मधेपुर, देवढ़ी, दरभंगा।

लक्ष्मीप्रसाद मिश्र 'कविहृदय'; ज०—१२ जनवरी १६१२; शि०—जबलपुर; सा०—'पशुबलि-निरोध' सभा के उपसभापति; रच०—बालबाँसुरी; अप्र०—जीवनदीप. प्रभा; प०—परकोटा, सागर।

लक्ष्मीप्रसादमिस्त्री 'रमा' मध्यप्रांत के लब्ध प्रतिष्ठ साहित्य प्रेमी; ज०—१८८७; ज्ञा०—संस्कृत, अँगरेजी, गुरुमुखी, बँगला; रच०—बंधुवियोग, काल का चक्र, प्रेमबंधन, महिलागायन, स्तुतिप्रबंध, साहित्य-पूर्णिमा, साहित्य-वाटिका, कोकिला, साहित्यिक हासविलास, प्रेमशतक; प०—हटा, दमोह, सी० पी०।

लालचंद जैन, बी० ए० एल-एल० बी०; अ० भा० दिगंबर जैन परिषद् के सभापति; रच०—'समय सार' का सरल अनुवाद; प०—ऐडवोकेट, रोहतक।

लालसिंह शक्तावत, बी० ए०, एल-एल० बी०, ज०—१८६४; हिंदी के विशेष प्रेमी, उदयपुर की हिंदी-विद्या-पीठ को ७) का प्रतिमास दान देते हैं; प्रतापवाचनालय के संस्थापक; प्रि० वि०—उपनिषद् साहित्य; प०—सेटेलमेंट आफिसर, उदयपुर, मेवाड़।

लूणाराम कौशिक 'अरुण', उदीयमान कवि तथा लेखक; ज०—१६१२; सा०—राजस्थानी संघ बंबई का मंत्रित्व; र०—विभावरी; प्रि० वि०—साहित्य-सेवा; अप्र०—प्रभात संगीत; प०—भास्कर भुवन- फाणस वाड़ी,

बंबई नं० २।

लेखावती जैन—प्रसिद्ध लेखिका तथा राष्ट्रसेविका; ज०—१६०७; अनेक उत्तम व्याख्यान दिए हैं; हिंदी में कई सुंदर पुस्तकें लिखीं; पंजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल की भूतपूर्व सदस्या; प०—अंबाला।

लोकनथा, सा०वि—दक्षिण भारत के सहृदय-हिंदी-प्रेमी; हिंदी-प्रचार-सभा मद्रास की शिक्षापरिषद् तथा व्यवस्थापक समिति के सदस्य; समाज के भू० पू० संपादक; रच०—माई आइडिया आफ एन आइडियल टेम्पुल, सर० सी० वी० रमन की जीवनी, अहिंसाधर्म की परमावधि, गोधन; प०—शांतिमंदिर, ७५ जी-स्ट्रीट, ढलसूर, बंगलोर छावनी।

लोचनप्रसाद पांडेय—हिंदी के प्रसिद्ध प्रौढ़ लेखक, विद्वान् और मातृभाषा-प्रेमी; ज०—१८८६; शि०—संबलपुर; सा०—महाकोशल इतिहास-समिति के जन्मदाता और अवैतनिक संपादक; हिंदी साहित्य-सम्मेलन के स्थापन में भी आपने विशेष योग दिया; प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन (१६२१) और प्रांतीय इतिहास-परिषद् के रायपुर अधिवेशन (१६२६) के आप सभापति रह चुके हैं; रच०—दो मित्र, प्रवासी, नीति-कविता, कविता-कुसुम, रघुवंशसार, वीर भ्राता लक्ष्मण, कविता कुसुममाला, हमारे पूज्यपाद पिता, छत्तीसगढ़ भूषण हीरालाल, प्रेमप्रशंसा, छात्र-दुर्दशा; साहित्य-सेवा, चरितमाला, आनंद की टोकनी, मेवाड़-गाथा, माधव-मंजरी, बालविनोद, बालिका विनोद, महानदी, नीतिशतक का पद्यानुवाद, कृपकबालसखा, कोशल प्रशस्ति रत्नावली, कोशल रत्नमाला, पद्य-पुष्पांजलि, जीवनज्योति; वि०—महानदी खंडकाव्य पर आपको

काव्यविनोद की उपाधि-प्रदान की गई थी; प०—काशी।

वर्धमान, शास्त्री, न्याय-तीर्थ—संपा—हिंदी जैन बोधक; रच०—अनु०—दानशासन, कल्याणकारक, भरतेश-वैभव, निमित्त शास्त्र; प०—शोलापुर।

वररुचि झा, एम० ए०; कुशल कहानी लेखक; चित्रपट-संबंधी अनेक आलोचनात्मक लेख; प०—महेशपुर, संथाल परगना।

वसंतलाल टोपणलाल शर्मा—आयुर्वेद महामहोपाध्याय—साहित्य के प्रेमी, हिंदी के अधिकारों के समर्थक और उसके निष्काम सेवक; हिं० सा० सम्मे० के परीक्षार्थियों को अवैतनिक शिक्षा देते हैं—प०—प्रिंसिपल भाई टीकमदास नानकराम सिंधु मार्तंड आयुर्वेद विद्यालय, हैदराबाद, सिंध।

व्रजकिशोर 'नारायण', बी० ए०—साहित्य-प्रेमी विद्यार्थी और उदीयमान लेखक; ज०—१९१७; शि०—लाहौर; सा०—भूत० हिंदी प्रोफेसर महिला कालेज, गुजरानवाला; वर्तमान प्रधान प्रबंधक, सामयिक साहित्य सदन; संपा०—'शांति', लाहौर; रच०—सिंहनाद, आज का प्रेम, चंपा आदि तथा अनेक अप्रकाशित साहित्यिक और सामाजिक लेख-संग्रह; प०—चेम्बर लेन रोड, लाहौर।

व्रजनंदनसहाय 'व्रजवल्लभ'—बी० ए०, बी० एल०; आरा-निवासी सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक, आलोचक और संपादक ; ज०—१८७४ ; आरा। ना० प्र० सभा। (आरा) के भू० मंत्री; बिहार प्रा० हिं० सा० सम्मे० (बेगूसराय, मुंगेर) के सभापति ; भू० संपा०—'शिक्षा', 'समस्यापूर्ति' और 'साहित्यपत्रिका' ; रच०—राजेंद्रमालती, व्रजविनोद,

हनुमान-लहरी, बूढ़ा वर, अद्भुत प्रायश्चित्त, चंद्रशेखर, लालचीन, विस्मृत सम्राट, राधाकांत, सौंदर्योपासक, विश्वदर्शन, अरण्यबाला, उद्धव, सत्यभामा-मंगल, अर्थ-शास्त्र, बलदेवप्रसाद मिश्र, राधाकृष्णदास, बंकिमचंद, मैथिल - कोकिल विद्यापति ; वि०—इनके विख्यात उपन्यास सौंदर्योपासक का मराठी और गुजराती में तथा 'लाल-चीन' का अँगरेजी में अनुवाद हो चुका है ; प०—वकील, आरा, विहार।

व्रजमोहन मिश्र 'व्रजेश', डाक्टर; सुप्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी सुलेखक; हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत में काफी लिखा है; कहानी की एक नई शैली आपने चलाई है; प०—देव-बंद, सहारनपुर।

व्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी०—व्रजभाषा-कविता के मर्मज्ञ, इतिहासकार अनुवादक और संपादक ; ज०-१८६० ; शि०—काशी ; ज्ञा०—संस्कृत, उर्दू, फारसी, बँगला ; काशी ना० प्र० सभा के उपमंत्री (सं० १९७७-८०) मंत्री (सं० १९८१), अर्थमंत्री (सं० १९९५-९७) प्रबंध-समिति के लगभग बीस वर्ष से सदस्य, स्थायी सदस्य ; ले०—१९०५ ; संपा०र०—खुसरो की हिंदी कविता, प्रेमसागर, तुलसी ग्रंथावली (सभा की ओर से), रहिमन विलास, संक्षिप्त रामस्वयंवर, मुद्राराक्षस, नंददास-कृत भ्रमर-गीत, भाषाभूषण, जरासंध-वध महाकाव्य, इंशा उनका काव्य और कहानी, भूषण-ग्रंथावली, सत्य-हरिश्चंद्र, भारतेंदुग्रंथावली (द्वितीय भाग), भारतेंदु नाटकावली (दो भाग), भारतेंदु-सुधा ; अनु० र०—हुमायूँ नामा, मआसिरुल उमरा (दो भाग), काव्यादर्श; मौ० र०—सर हेनरी लॉरेंस, बादशाह हुमायूँ, यशवंतसिंह तथा

स्वातंत्र्य युद्ध, हिंदी साहित्य का इति०, भारतेंदु हरिश्चंद्र, हिंदी नाट्य-साहित्य ; अप्र० र०—शाहजहाँ, खड़ी बोली साहित्य, नंददास ग्रंथावली आदि; प०—काशी।

व्रजशंकरप्रसाद—वसंतपुर निवासी परमोत्साही एवं कर्मठ पत्रकार; 'योगी' के संपादक ; प०—पटना।

वृंदावनविहारी—उदीयमान कहानी-लेखक और उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्त्ता; ज०—१६११; शि०—पटना विश्वविद्यालय; सार्व०—सहा० मं० 'साहित्य परिषद्' तथा 'आरा-साहित्य मंडल'; र०—'मधुवन' तथा 'आकांचा'; प्रि० वि०—कहानी तथा उपन्यास; प०—शिक्षक, टाउन स्कूल, आरा।

वृंदावनलाल वर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी—वर्तमान हिंदी साहित्य के गण्यमान्य नाटककार और औपन्यासिक; ज०—१८६० मऊरानीपूर; र०—उप०—गढ़ कुंडार, संगम, लगन, प्रत्यागत, कुंडली-चक्र, प्रेम की भेंट, विराटा की पद्मिनी; ना०—धीरे-धीरे; इनके अतिरिक्त कई नाटक और लिखे जो आजकल अप्राप्त हैं; वि०—आपके नाम से 'कोतवाल की करामात' नामक एक उपन्यास भी छपा है, पर वह आपकी चीज नहीं है—आपके किसी मित्र की रचना है; भूल से आपका नाम छाप दिया गया; प०—झाँसी।

वंशलोचनप्रसाद—विहार के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीरामलोचनशरणजी के छोटे भाई; ज०—१८६२; र०—कहानियों का गुच्छा, व्याख्यान संबंधी कई पुस्तकें; प०—लहेरियासराय, विहार।

वंशीधर मिश्र, एम० ए०; एल-एल० बी, एम एल० ए०, सा० र०—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान् और कुशल लेखक; ज०—१६०२;

सा०—खीरी प्रांत की व्यवस्थापिका के सदस्य, कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्त्ता होने से अनेक वार जेल भी हो आए हैं, बँगला की पुस्तकों का अनुवाद किया है, हिंदी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रचार-विभाग की उपसमिति के सदस्य भी हैं, लखनऊ विश्वविद्यालय हिंदी यूनियन और लखनऊ के 'साप्ताहिक लोकमत' पत्र के संपा० ; रच०—अजब-देश, हुक्का हुआ, गणित-चमत्कार तथा सुगृहणी, आओ नंगे रहें, प्रि० वि०—राष्ट्रीय साहित्यिक सेवा; प०—लखीमपुर, खीरी।

वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०, बी० एस-सी०—सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ और सुलेखक; ज०—१६०७ वलिया; रच०—गुप्तसाम्राज्य का इतिहास; अप्र०—विजयनगर साम्राज्य का इतिहास; वि०—गुप्तसाम्राज्य के इतिहास पर आपको १२००) का मंगलाप्रसाद पुरस्कार मिला है; प०—लाइब्रेरियन, गवर्नमेंट सेंट्रल लाइब्रेरी, प्रयाग।

वासुदेवनारायण सिंह अम्बौरी—धमार - निवासी अँगरेजी के प्रसिद्ध विद्वान्, अनुवादक और संपादक; विहार सरकार के हिंदी अनुवादक; दैनिक विहारी के संयुक्त संपा०; 'माडर्न विहार' (पटना) के भू० प्रधान संपा० और 'लीडर' (इलाहाबाद) के भू० प्रधान सह० संपा०; अनु०—उपनिषदों का अँगरेजी में अनुवाद किया; रच०—श्री रूपकलाजी की एक झाँकी, रूपवती (उप०); प०—पटना।

वासुदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, सा० र०—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी ; शि०—प्रयाग; भूत० सहकारी संपा०—'हिमालय', सम्मेलन परीक्षाकेंद्र एटा के संस्थापक ; रच०—

विनयपत्रिका की टीका, रचना तथा अन्य भक्ति और योग संबंधी लेख - संग्रह ; प०—अध्यापक हाई स्कूल, एटा।

वासुदेव वर्मा ; ज०—१९०३ जलालपुर ; भू० पू० संपादक—'मिलाप' 'उर्दू', 'गुरुघंटाल', 'वंदेमातरम्' ; इस समय स्त्रियों की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'शांति' का संपादन - संचालन कर रहे हैं ; प०—'शांति' कार्यालय, लाहौर।

वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध इतिहास-मर्मज्ञ और विद्वान् लेखक; ज०—१९०४; र०—उरु-ज्योति ; अर्वाचीन विवेचनात्मक पद्धति से संपादित किए हुए प्राचीन संस्कृत, पाली तथा अन्य भारतीय भाषाओं के ग्रंथों के संस्करण; भारतीय संस्कृति से संबंधित ग्रंथों का लेखन और प्रकाशन ; भारत की जनपदीय भाषाओं का अध्ययन और प्रकाशन ; वि० भूत क्यूरेटर, प्राविंशियल म्यूज़ियम; प०—लखनऊ।

वासुदेव शास्त्री 'करुणेश', प्रसिद्ध विद्वान्, कुशल लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९१६ भरतपुर ; र०—स्त्री शिक्षा-साहित्य, वैवाहिक आनन्द संस्कार विधवा और समाज व्याख्यान रत्नमाला ४ भाग, श्लोक पंचरत्न, शुक्लाद्वैत सम्प्रदाय के अणुभास्य का अनुवाद १ भाग; प०—अध्यापक, महाराजा स्कूल, काँकरोली, मेवाड़।

विजयबहादुर श्रीवास्तव एल० - एल० बी०—प्रसिद्ध हिंदी लेखक, इतिहासकार तथा अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी ; ज०—१९११ ; प्रि० वि०—साहित्य और इतिहास; र०—त्रिपुरी का इतिहास; अप्र०—भारतीय शासन से संबंधित एक अँगरेजी ग्रंथ और

दो साहित्यिक लेख-संग्रह ; प०—१०६ नार्थ सिविंग स्टेशन, व्यौहार बाग जवलपूर ।

विजयसिंह पटेल 'विजय'—प्रसिद्ध लेखक, अध्ययनशील विद्वान् तथा साहित्य सेवी ; ज०—१९०८; अप्र० रच०—लेख, काव्य, कहानी-संग्रह ; वि०—हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में सहयोग; प०—रईस, भोपाल ।

विद्याकुमारी भार्गव—गद्यगीत लेखिका और उदीयमान कवयित्री; ज०—१९१७; शि०—जबलपूर ; रच०—श्रद्धांजलि ; प्रि० वि०—मीरा की कविता ; प०—भार्गव-हाउस, जबलपुर ।

विद्यादेवी महोदया—सुप्रसिद्ध पंडिता और साहित्य-लेखिका ; जा०—अंग्रेजी, संस्कृत, बँगला ; सा०—अखिल भारतवर्षीय, सनातन धर्मी महिलाओं की संस्थापना, आर्यमहिला की संस्थापना ; नार्मल स्कूलधर्म सेविका विद्यापीठ, प्रकाशन विभाग, रच०—वाणी पुस्तक-माला संस्था के द्वारा कठोपनिषद् टीका, सती सदाचार परलोक तत्त्व, व्रतोत्सव कौमुदी, आदर्श देवियाँ, गीता का त्रिविध स्वरूप, वेदांत दर्शन, ईशोपनिषद्, धर्मतत्त्व, भारत-धर्म समन्वय ; प०—आर्य-महिला कार्यालय जगतगंज, बनारस ।

विद्याधर चतुर्वेदी, एम० ए० (द्वय), एल० टी० ; सा० र० ; ज०—१९०९ मैनपुरी ; सा०—मद्रास, आसाम में हिंदी प्रचार कार्य, माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय के मंत्री, सम्मेलन की परीक्षाओं के प्रचार में विशेष योग देते हैं ; आजकल पुराने साहित्य-ग्रंथों की खोज कर रहे हैं ; प०—सहकारी अध्यापक, शिवपुरी ।

विद्यानंद शर्मा, एम० ए०, हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक ; कई सुंदर लेख प्रकाशित ;

राजस्थान में हिंदी प्रचार में विशेष योग दिया ; प०—हेडमास्टर, सनातनधर्म विद्यालय, डीडवाना, मारवाड़ ।

विद्याभास्कर शुक्ल, एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, पी० ई० एस०—प्रसिद्ध विद्वान् और अध्ययनशील लेखक ; ज०—१६१० ; शि०—लखनऊ, मध्यप्रांत और अयोध्या ; सा०—हाई स्कूल बोर्ड की हिंदी कमेटी, बाटनी, जुआलोजी, एग्रीकलचर आदि कमेटियों तथा नागपूर यूनीवर्सिटी की बोर्ड आफ स्टडीज इनबाटिनी, फैकल्टी आफ साइंस के सदस्य ; स्था०—कालेज आफ साइंस हिंदी साहित्य-समिति, नागपूर ; रच०—मेरे गुरुदेव (अनु०), श्रीरामकृष्ण लीलामृत, शिकागो वक्तृता, श्रीरामकृष्ण वचनामृत, परिव्राजक, भक्तियोग, विज्ञान प्रवेश आदि अनेक अनुवादित मौलिक तथा वैज्ञानिक ग्रंथ और कई एक अप्र० लेख संग्रह ; वि०—अध्ययन के समय आपने 'रुचि राम साहनी प्राइज़' आदि अनेक पारितोषिक तथा छात्रवृत्ति पाई ; हिंदी का प्रचार भी यथासाध्य करते रहे ; आपने 'फासिल प्लांट्स' वैज्ञानिक आविष्कार में भी यथेष्ट प्रयत्न किया है तथा कई वर्ष और अब तक रिसर्च में संलग्न रहे ; प०—एसिस्टेंट प्रोफेसर आफ बाटिनी, कालेज आफ साइंस नागपूर ।

विद्याभूषण अग्रवाल, एम० ए०, सा० र०—हिंदी प्रेमी विद्वान् और समालोचक ; शि०—मथुरा, आगरा; रच०—पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित कई आलोचनात्मक लेखों के संग्रह ; वि०—आपके छोटे भाई श्रीभारतभूषण अग्रवाल एम० ए० भी हिंदी के अच्छे लेखक हैं ; प०—हिंदी प्रोफेसर, चंपा अग्रवाल इंटर कालेज, मथुरा ।

विद्यावती 'कोकिल'—प्रसिद्ध देश-प्रेमिका और कवयित्री ; ज०—१६१४ ; शि०—प्रयाग ; र०—अंकुरिता, माँ ; भू० पू० संपादिका ज्योति ; प०—ठि० श्रीत्रिलोकीनाथ सिनहा एम० ए०, एल० टी०, सहा० मंत्री कायस्थ पाठशाला, प्रयाग।

विंध्येश्वरीप्रसाद शास्त्री; संस्कृत और हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान् ; 'सूर्योदय' और 'सुप्रभातम' के संपादक ; 'आर्यमहिला' में अनेक धार्मिक लेख ; प०—हेडपंडित, सेंट्रल हिंदू स्कूल, काशी।

विनोदशंकर व्यास—प्रसिद्ध कहानीकार, निबंध-लेखक और उत्साही पत्रकार ; सा०—भूत० संपा० और संचा०—पाक्षिक 'जागरण' ; अब 'आज' के संपादकीय विभाग में काम कर रहे हैं ; र०—मधुकरी—दो भाग, कहानी—एक कला, विदेशी पत्रकार, प्रसादजी की उपन्यास कला ; प०—बनारस।

विमलरानी, बी० ए०—उदीयमान कहानी-लेखिका ; ज०—१४ अगस्त १६२२ ; शि०—आगरा विश्वविद्यालय ; इनका विवाह अलीगढ़ के रईस कुँवर शीलेंद्रसिंह, एम० ए०, एल-एल० बी० से हुआ है ; र०—अनुराग—कहानी-संग्रह ; अप्र०—दो तीन कहानी, कविता और गद्यगीत-संग्रह तथा उपन्यास; प०—अलीगढ़।

विमलादेवी 'रमा', 'साहित्यचंद्रिका'—प्रसिद्ध कवयित्री और सामयिक निबंध-लेखिका ; र०—शिक्षा-सौरभ ; अप्र०—स्त्री-शिक्षा और उनकी दशा-सुधार-संबंधी सामयिक लेखों तथा कविताओं के दो-तीन संग्रह ; प०—डुमराँव।

विश्वनाथप्रसाद, एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), सा० आ०, सा० र०, बी० एल०—

सुप्रसिद्ध विद्वान्, साहित्य-प्रेमी लेखक और अध्ययनशील आलोचक; ज०—२० अगस्त, १६०९; शि०—पटना विश्व-विद्यालय ; सा०—सारन जिले के द्वितीय हिं० सा० सम्मेलन के सभापति ; विहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के मंत्री १६३८-४० ; अब इसके सदस्य ; पटना विश्वविद्यालय के संदर्भ ग्रंथों के संपादन-मंडल के सदस्य ; अनेक उच्च परीक्षाओं के परीक्षक ; छपरे की सुविख्यात संस्था श्री-शारदा नाट्य-समिति तथा श्रीशारदा नवयुवक समिति के जन्मदाताओं और कर्ण-धारों में ; हिंदुस्तानी पारि-भाषिक कोष तैयार करने के लिए विहार सरकार द्वारा नियुक्त उपसमिति के सदस्य ; लेख०—१६२९ ; रच०—मोती के दाने-कवि० ; अप्र०—विविध पत्र-पत्रि-काओं और अभिनंदन ग्रंथों में प्रकाशित लेख, जैसे रामानंद और उनका युग, भारत के प्राचीन विश्वविद्यालय, हिंदी के आदि कवि सरहपाद, भारतीय नाट्यशास्त्र, विश्व-विनोद, पं० रामावतार जी० ; प०—अध्यापक, हिंदी विभाग, पटना कालेज, पटना । '

विश्वनाथप्रसाद मिश्र, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध समालोचक, संपादक और हिंदी प्रेमी; ज०—सं० १९६३ महुनाल काशी ; ज्ञा०—संस्कृत, अंग्रेजी; शि०—काशी, प्रयाग ; सा०—काशी विश्व-विद्यालय के हिंदी के अध्या-पक, भगवानदीन विद्यालय में लगभग १७ वर्ष तक विना शुल्क अध्यापन ; भूत० संपा०—'वर्णाश्रम', 'सनातन धर्म ; रच०—हिंदी में बाल-साहित्य का विकास, काव्यांग कौमुदी तृतीय भाग, पद्माकर पंचामृत, विहारी की वाग्वि-भूति, रानियाँ, वुद्धमीमांसा, हम्मीर हठ, रसिकप्रिया की

टीका, काव्यनिर्णय की टीका, गीतावली की व्याख्या, प्रेमचंदजी की कहानी कला, रसमीमांसा और मानस टीका (अप्रकाशित); प०—हिंदी अध्यापक, काशी विश्वविद्यालय, काशी।

विश्वनाथ राय, एम० ए०, एल-एल० बी०—सामयिक समस्याओं के अध्ययनशील विद्यार्थी और कुशल लेखक; ज०—१६०६; रच०—भारत में म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्टबोर्ड का विकाश, मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास, चीन की राज्य क्रांति, ग्राम्य अर्थशास्त्र, मुसलिम लीग का षड्यंत्र, प्रेम के आँसू, मायावी संसार, विनाश की ओर, महात्मा गांधी, हिटलर, नेपोलियन, टाल्सटाय, महाराणा प्रताप, शिवाजी, समर्थ गुरु रामदास, राजेंद्रप्रसाद; वि० वि०—राजनीति; प०—अध्यापक, डी० ए० वी० कालेज, काशी।

विश्वप्रकाश दीक्षित, 'बटुक', सा० र०—हिंदी-प्रेमी प्रचारक; ज०—१६२०; जा०—गुजराती, बँगला; सा०—सत्याग्रह में कारावास भोगा। कांग्रेसी कार्यकर्त्ता; रच०—प्रतिच्छाया० (होमवती देवी और कृष्णचंद्र शर्मा 'चंद्र' के साथ); प०—राणाप्रताप स्ट्रीट, कृष्णनगर, लाहौर।

विश्वमोहनकुमार सिंह, एम० ए०; सज्जनपुर के यशस्वी लेखक; ज०—१६००; कई स्फुट लेख, कहानियाँ; दो अप्र० उपन्यास; प०—प्रिंसिपल, चंद्रधारी मिथिला कालेज, दरभंगा।

विश्वेश्वरनाथ रेउ—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, प्रतिष्ठित आचार्य और सुलेखक; ज०—१८६० ई० जोधपुर; सा०—चार वर्ष तक इतिहास कार्यालय में कार्य किया; संस्कृत के प्रोफेसर तथा जोधपुर के पुरातत्व

विभाग के अध्यक्ष भी रहे; आप १९४२ में हिंदू विश्वविद्यालय काशी द्वारा इतिहास विषयक एम० ए० की थीसिस के परीक्षक नियुक्त हुए ; इसी वर्ष उन्होंने गवर्नमेंट की ओर से 'महामहोपाध्याय' की उपाधि भी पायी ; रच०—भारतके प्राचीन राजवंश, राजा भोज, राष्ट्रकारों का इतिहास, मारवाड़ का इतिहास, मेवाड़-गौरव, राठौर-गौरव, विश्वेश्वर स्मृति; कई पुस्तकों पर इन्हें पुरस्कार भी मिला है; शैव सुधाकर इनकी अनुवादित है ; साथ ही कृष्णविलास और वेदांत पंचक आदि पुस्तकों का भी संपादन किया है ; इसके अतिरिक्त ढोला मारवाड़, शिवरहस्य, शिवपुराण तथा कृष्णलीला आदि पुस्तकें भी लिखी हैं ; इन्होंने कई एक हिंदी तथा अंगरेजी लेख भी लिखे हैं ; प०—जोधपुर।

विश्वंभरसहाय 'प्रेमी'—प्रसिद्ध लेखक तथा पत्रकार ; ज०—१९०० ; प्रेमी प्रिंटिंग प्रेस के संस्थापक; 'तपोभूमि' के संपादक ; रच०—अनाथ अबला, अभागिनी अबला, सम्राट् अशोक, हर्ष, रामजीवन, दयानंद जीवनी; प०—बुढ़ाना गेट, मेरठ।

विष्णुकांत झा, बी० ए०, मिथिला मिहिर के भूतपूर्व संपादक ; यह पत्र सबसे पहले मासिक रूप में इन्होंने ही निकाला था ; कई स्फुट रचनाएँ ; प०—घोघर-डीहा, बिहार।

विष्णुकांता ऊषा, सा० र०—हिंदी-प्रेमिका और सुलेखिका ; शि०—बनारस, विशेषतया प्रयाग ; सा०—४ वर्ष तक मुख्याध्यापिका रहकर बालिकाओं को हिंदी साहित्य की ओर प्रवृत्त किया तथा स्त्री कवि सम्मेलन की योजना द्वारा स्त्रियों में कविता की अभिरुचि उत्पन्न की, फतेहपुर में हिंदी पुस्तकालय स्थापित किया ; अप्र०

रच०—तीन चार गद्य-पद्य संग्रह ; प०—फतेहपुर ।

विष्णुकुमारी श्रीवास्तव, 'मंजु', सा० र०—संपादिका, कवयित्री, लेखिका एवं अध्यापिका ; ज०—मुरादाबाद; शि०—प्रयाग; सा०—३ वर्ष तक राजदुलारी सनातन धर्म कन्या विद्यालय कानपुर में प्रिंसिपल, अब उक्त विद्यालय की मंत्रिणी, भूत० संपा०—'स्त्रीदर्पण' ; रच०—मीरापदावली, स्वरचित कविता की किंकिणी, गद्य काव्य की फुलझरी, दुखिया दुलहिन ; प०—'मंजु निलय', नवाबगंज, कानपुर ।

विष्णुदत्त 'विष्णु', प्रभाकर—सुप्रसिद्ध कहानीकार ; ज०—२१ जून १९१२ ; आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता ; अनेक लेख, एकांकी, रेखाचित्र और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ; प्रि० वि०—इतिहास, मनोविज्ञान ; प०—आरा मोहल्ला, हिसार (पंजाब) ।

विष्णुनथनाराम शर्मा—अहिंदी प्रांत में हिंदी प्रचार-प्रसार में संलग्न, उसके अधिकार दिलाने के लिए प्रयत्नशील पुराने राष्ट्रसेवक और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता ; स्थानीय राष्ट्रभाषा - प्रचार समिति के सहायक, हिंदी के अच्छे लेखक भी हैं ; प०—हैदराबाद, सिंध ।

वी० पी० वर्मा, 'भरसक्री'—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी प्रचारक ; ज०—१९१५ ; ज्ञा०—उर्दू, बँगला, मराठी ; अप्र० रच०—अनेक मासिक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी कहानियों के दो-तीन संग्रह ; प०—मरसर, बलिया ।

वीर विनायक दामोदर सावरकर, बार० एट० ला ; हिंदू महासभा के माननीय अध्यक्ष और सुप्रसिद्ध हिंदू नेता ; ज०—१८८३ ;

'विहार' का संचालन-संपादन, 'अभिनव भारत' संस्था स्थापित की ; इँग्लैंड में स्वाधीन भारतसमाज स्थापित किया ; १६१० में ४० वर्ष की सख्त कैद ; १६२४ में रिहा किए गए पर १६२४ से १६३६ तक रत्नगिरि में नजरबंद रहे ; १६३७ से निरंतर हिंदू महासभा के अध्यक्ष हैं ; रच०—मेजिनी की जीवनी—जप्त ; सन् अठारह सौ सत्तावन का भारतीय स्वातंत्र्य-युद्ध ; सिक्खों का इतिहास ; मराठी में अनेक नाटक तथा उपन्यास लिखे ; प०—बंबई ।

वीरहरि त्रिवेदी, सा० र०—हिंदी के उत्साही प्रचारक और सुलेखक ; ज०—१६०७ ; ज्ञा०—बँगला, उर्दू ; रच०—झाँसी की रानी–नाटक, चाणक्यनीति का अनुवाद, स्वरोदयज्ञान ; पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक लेख ; वि०—सम्मेलन के परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देकर हिंदी का प्रचार करने की चेष्टा करते हैं ; प०—क्लर्क, काटन ट्रेडिंग कंपनी, कानपुर ।

वीरेंद्रकुमार, बी० ए०—प्रसिद्ध कहानी लेखक; रच०—आत्मपरिणय-कहानी-संग्रह ; प०—इंदौर ।

वीरेंद्र विद्यार्थी, बी० ए०, एल० टी०—प्रसिद्ध लेखक तथा उत्साही कार्यकर्त्ता ; ज०—१८६४ ; अप्र० रच०—अनेक साहित्यिक लेख तथा काव्य संग्रह ; प०—अध्यापक, पृथ्वीनाथ हाई स्कूल, कानपूर ।

वीरेशदत्त सिंह, एम० ए०, बी० एल०, एम० एल० ए०, सा० वि०, सा० आ० ; कलकत्ता के कई दैनिक पत्रों के संपादकीय विभागों में काम किया है ; स्फुट लेख अनेक ; प०—संयुक्त मंत्री, राजेंद्र कालेज, छपरा ।

वीरेश्वर सिंह, एम०

ए०, एल-एल० बी०—रूपस-पुर-निवासी उच्चकोटि के यश-स्वी कहानी लेखक; रच०—उँगली का घाव ; अप्र० रच०—मौलिक कहानियों के दो-तीन सुंदर संग्रह; प०—ऐडवोकेट, मुजफ्फरनगर।

वेणीप्रसाद शर्मा—कथा-वाचक और कवि ; ज०—१६०८ ; रच०—पावनगिरि भजनावली, सत्यनारायण कथा ; प०—शांति-कुटीर खाचरोद, ग्वालियर।

वेनीमाधव तिवारी—खड़ी बोली और ब्रजभाषा के सुकवि ; ज०—१८६० ; अप्र० रच०—कई काव्य-संग्रह ; प०—आठा, उरई।

विश्वेश्वर नारायण 'विजूर'—साहित्य के अध्य-यनशील विद्यार्थी और लेखक; ज०—१६१४ ; शि०—बंबई और मद्रास यूनीवर्सिटी ; ज्ञा०—कन्नड, कोंकड़ी, मराठी, गुजराती, हिंदी, अँग्रेजी, अर्धमागधी, तैलंगी तथा संस्कृत ; प्रि० वि०—अक्षर कला, चित्रलिपि, बीजभाषा अर्थात् भारती ; प०—अध्या-पक, गणपति हाई स्कूल, मंगलौर।

विश्वंभरनाथ वाजपेयी 'ब्रजेश'—मध्य भारत के प्रतिभाशाली कवि ; ज०—१६१२उन्नाव; रच०—उल्का, रेखा ; प०—फिजीशियन ऐंड सर्जन, बड़वाहा, मध्य-भारत।

विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'—सर्वश्रेष्ठ कहानी-कारों में, उपन्यास लेखक ; ज०—१८६१ ; शि०—मैट्रिक ; ज्ञा०—फारसी, उर्दू, बँगला, अँग्रेजी, हिंदी ; रच०-मौलिक—गल्पमंदिर, कल्लोल, चित्रशाला—दो भाग, मणिमाला, माँ, भिखा-रिणी, दुबेजी की चिट्ठियाँ ; अनु०—मिलनमंदिर, अत्या-चार का परिणाम—नाटक ; जारीना, रूस का राहु, संसार की असभ्य जातियों की

स्त्रियाँ ; वि०—पहले आप 'राग़िब' के नाम से उर्दू में लिखा करते थे, पर १६०६ से हिंदी में ही लिखने लगे ; प०—कानपूर ।

विश्वंभरप्रसाद, एम० एस-सी० ; स्वामी विद्यानंद के उपनाम से अनेक सार-गर्भित लेख ; किसान समाचार के संस्थापक एवं संपादक; प०—मुजफ्फरपुर ।

विश्वंभरप्रसाद गौतम, एम० ए०, एल-एल० बी०, सा० र०, वकील—साहित्य प्रेमी विद्वान् और कुशल लेखक ; ज०—१८६८ ; कटनी, जबलपुर ; शि०—प्रयाग, नागपुर ; सा०—म्यूनीसिपिल कमेटी कटनी के प्रेसीडेंट, उत्तरी विभाग के सहकारी संघ के सभापति, डिस्ट्रिक्ट कौंसिल जबलपुर के सदस्य, और महाकौशल कांग्रेस कमेटी के सदस्य ; रच०—शिशुबोध (पद्य), हिंदुस्थान का इतिहास; प०—वकील, जबलपुर ।

विश्वंभरदत्त चंदोला—हिंदी के वयोवृद्ध साहित्य-सेवी और सुलेखक ; ज०—१८७६ ; सा०—गढ़वाल यूनियन के प्रमुख व्यक्ति, 'गढ़वाली' पत्रिका और गढ़-वाली प्रेस के सहयोगी भूत० कार्यकर्त्ता, वर्तमान संपा० "गढ़वाली" ; पत्रों और लेखों द्वारा समाज सेवा, समाज की अनेक कुरीतियों का निषेध करना मुख्य कार्य ; रच०—गढ़वाली कविता-वली, गढ़वाल संबंधी लगभग अन्य दो दर्जन पुस्तकें ; अप्र०—गढ़वाली इतिहास तथा अन्य अप्र० काव्य और लेख-संग्रह ; प०—गढ़वाल ।

शकुंतला देवी खरे—प्रसिद्ध कहानी लेखिका ; ज०—१६१७ ई० ; शि०—जबलपुर ; रच०—कवन, आरती, सती सीता, आश्रम-ज्योति, उन्मुक्ति ; अप्र० रच०—दो तीन कहानी

संग्रह ; प्रि० वि०—कथा साहित्य ; प०—ठि० श्री-नर्मदाप्रसाद खरे, फूटा ताल, जबलपुर ।

शकुंतला प्रभाकर—हिंदी-प्रेमी विदुषी महिला ; ज०—१६२२ ; श्रमजीवी लेखक मंडल की महिला मंत्रिणी ; कई सुंदर कविताएँ तथा कहानियाँ लिखी हैं ; प०—प्रधानाध्यापिका आर्य-पुत्री पाठशाला, तांदलिया-वाला, लायलपुर, पंजाब ।

शमशेर सिंह—व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि और साहित्य-प्रेमी लेखक ; सा०—स्था-नीय संस्थाओं के सहयोगी कार्यकर्त्ता ; वि०—आपके पास नाभा, पटियाला आदि रियासतों के राज्याश्रित कवियों की प्राचीन रचनाएँ सुर-क्षित हैं ; प०—पटियाला रियासत ।

श्यामजा शर्मा—प्रसिद्ध बिहारी कवि; ज०—१८७४; लेख०—१८६५ ; रच०—श्यामविनोद रामायण, श्याम-विनोद-दोहावली (७००दोहे), रामचरितामृत महाकाव्य, वृंदविलास (वृंद के दोहों पर कुंडलियाँ), अबलारक्षक, खड़ी बोली-पद्यादर्श, स्वाधीन विचार, विधवा-विहार; प०—भद्वर, विहार ।

श्यामनारायण कपूर, बी० एस-सी०—वैज्ञानिक और बालसाहित्य के प्रसिद्ध लेखक ; ज०—१६०८ ; कानपुर की साहित्य-निकेतन नामक प्रकाशन - संस्था के संस्थापक ; रच०—जीवट की कहानियाँ, विज्ञान की कहानियाँ, भारतीय वैज्ञा-निक—अपने ढंग की प्रथम पुस्तक, जहाज की कहानियाँ, बिजली की कहानियाँ, दूरबीन की कहानियाँ ; अप्र०—हिमालय - आरोहण, साबुन-विज्ञान, पुस्तकालय-विज्ञान, सरल रासायनिक धंधे; प०—साहित्य-निकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपुर ।

श्यामनारायण पाण्डेय, सा० र०—वीर-रस के प्रसिद्ध लेखक तथा सफल कवि ; ज०—१६१० ; ला०—'रिसर्च स्कालर' के रूप में 'गवर्नमेंट संस्कृत कालेज' में भूत० साहित्यिक अन्वेषक ; रच०—हल्दी घाटी (जिस पर 'देव-पुरस्कार' प्राप्त किया है [१]), कुमारसंभव का हिंदी पद्यानुवाद, रिमझिम, आँसू के कण, त्रेता के दो वीर और माधव ; प०—प्रधानाध्यापक, माधव संस्कृत विद्यालय, सारंग, काशी ।

श्यामनारायण बैजल, एम० ए०, एल-एल० बी० एल० टी० ; ज०—१६१२ ; शि०—कानपुर, बरेली, इलाहाबाद ; रच०—दुलहिन की बात, साहित्यिक बातें, ललित कलाविज्ञान ; अनेक आलोचनात्मक लेख तथा कहानियाँ ; प०—मदारी दरवाजा, बरेली ।

श्यामनंदन सहाय, बी० ए०, एम० एल०, रायबहादुर—सुप्रतिष्ठित हिंदी-प्रेमी और रईस ; अ० भा० हिंदी साहित्य सम्मेलन, मुजफ्फरपुर अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष ; हिंदी के परम हितैषी और हिंदी की संस्थाओं के सहायक ; वि०—आपके सुपुत्र श्रीकृष्णानंदसहाय भी यशस्वी साहित्यकार हैं; प०—मुजफ्फरपुर ।

श्यामबिहारी मिश्र, रावराजा, रायबहादुर, डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्—'मिश्रबंधु' के नाम से विख्यात, यशस्वी समालोचक और साहित्यकार ; ज०—१२ अगस्त १८७३ इटौंजा ; शि०—बस्ती, लखनऊ ; सा०—कौंसिल आफ स्टेट के आनरेबुल मेंबर १६२४-२८, रायबहादुर की उपाधि १६२८; रच०—लवकुशचरित्र, मदन-दहन, विक्टोरिया अष्टादशी, व्यय, भूषण ग्रंथावली-टीका, रूस का संक्षिप्त इतिहास,

जापान का संक्षिप्त इतिहास, हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों की खोज की रिपोर्ट, मिश्रबंधु-विनोद—४ भाग, हिंदी नवरत्न, भारतविनय, पुष्पांजलि, वीरमणि, बुद्धपूर्व भारत का इतिहास, मुस्लिम आक्रमण के पूर्व भारत का इतिहास, आत्म-शिक्षण, बूँदी वारीश, सूरसुधा, गद्यपुष्पांजलि, सुमनांजलि, उत्तरभारत नाटक, नेत्रोन्मीलन, पूर्वभारत नाटक, शिवाजी, धर्मतत्त्व, ईशानवर्मन, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी - अपील, संक्षिप्त हिंदी नवरत्न, हरकाशी प्रकाश, देवसुधा, विहारीसुधा-हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, रामराज्य-नाटक ; पु०—मिश्रभवन, गोलागंज, लखनऊ।

श्यामवदन पाठक 'श्याम', हिंदी के होनहार सुलेखक ; ज०—१९०६ ; कई मनोहर भावपूर्ण कहानियाँ लिखी हैं जो यत्र-तत्र प्रकाशित हैं ; रेडियो पर कविता पाठ करते हैं। बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया है ; प०—मूकवधिर विद्यालय, पटना।

श्यामसुंदर दास, डाक्टर रा० ब०, बी० ए०, डी० लिट्—स्वनामधन्य यशस्वी समालोचक और आधुनिक हिंदी-निर्माताओं में सर्वश्रेष्ठ; ज०—१४ जुलाई १८६९ ; शि०—काशी ; सा०—नागरी प्रचारिणी सभा काशी की स्थापना १८९३ ; 'सरस्वती', 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का प्रकाशन-संपादन; अनुसंधानकर्ता कमेटी के अध्यक्ष १९००–१९०८; मनोरंजन पुस्तकमाला (५० पुस्तकें निकलीं) का संपा०; 'हिंदी शब्द सागर' के संपादकीय विभाग के अध्यक्ष ; रच०-साहित्यालोचन, भाषा-विज्ञान, हिंदी भाषा और साहित्य, हिंदी के निर्माता २ भाग ; मेरी आत्मकथा ; संपा०—पृथ्वीराज रासो,

रामचरित मानस, वैज्ञानिक शब्दावली, कबीर ग्रंथावली, परमालरासो; अनेक पाठ्य-पुस्तकें; वि०—हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रयाग, अधिवेशन के आप सभापति थे; सम्मेलन ने 'विद्यावाचस्पति' की पदवी देकर और काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने 'डाक्टर आफ लिटरेचर' की उपाधि से सम्मानित किया; प०—काशी।

श्यामसुंदर पालीवाल 'मधुर'—खड़ी बोली के उदीयमान कवि; ज०—१९११; अप्र० रच०—दो काव्य-संग्रह; प०—नारहट, झाँसी।

श्यामसुंदरलाल दीक्षित, कविरत्न, सा० र०—उदीयमान कवि और साहित्य-प्रेमी आलोचक; ज०—१६ अगस्त १९१४; भूत० संपा०—मासिक 'मराल', आगरा और अँगरेजी मासिक 'ग्लोब'; १९२८ से कॉंग्रेसी स्वयंसेवक; रावतपाड़ा बालसभा के संस्थापक और डिक्टेटर; रच०—महाराजा भर्तृहरि—ना०, श्रीजवाहर दोहावली, भारती-मंदिर; अप्र०—कौमुदी, रामरहीम, गाँधी गीतावली, उर्मिला, मृगांक, कारागार; प०—नागरी-निकेतन, बाग मुजफ्फरखाँ, आगरा।

श्यामाकांत पाठक, सा० शा०, बी० लिट्—ज्योतिष के प्रकांड पंडित और हिंदी-प्रेमी विद्वान्; ज०—१८९७; रच०—श्याम सुधा, बुंदेल केसरी, ऊषा, दर्पदमन, भारतीय ज्योतिष शास्त्र; वि०—बुंदेल केसरी पर आपको महेंद्र महाराज पन्ना ने १०००) का पुरस्कार दिया; प०—जबलपुर।

श्यामू संन्यासी—गुजराती साहित्य के सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक; ज्ञा०—हिंदी, अँगरेजी, मराठी, गुजराती, उर्दू; रच०—मजदूर, ईंट

और रोड़े, कोयले, चित्रलेखा का अध्ययन, कँटीले तार—अनुवाद, स्नेहयज्ञ, फांटामारा, अप्र०—लेनिन; प्रि० वि०—राजनीति, विज्ञान ; प०—संचालक सहयोगी प्रकाशन, हीराबाग बंबई ४।

शरद्चंद्र भटोरे, सिद्धांत-रत्न—हिंदी प्रेमी सहृदय-विद्वान् ; ज०—१६१४ ; शि०—इंदौर ; रच०—नव-राष्ट्रनिर्माता, ऋषि दयानंद—चार्ट ; प्रि० वि०—साहित्य, धर्मशास्त्र ; प०—१० बनिया-वाड़ी, धार, मध्यभारत।

शशिनाथ चौधरी, बी० ए०, बी० एड०—सुप्रसिद्ध गद्यकार ; रच०—मिथिला-दर्पण, भगवान बुद्ध, सौंदर्य-विज्ञान, प्रेमविज्ञान, चरित्र-गठन ; प०—मिश्रटोला, दरभंगा।

शशिनाथ तिवारी 'शशि' बी० ए० (आनर्स)। उदी-यमान कवि और कहानी लेखक ; ज०—१ जनवरी, १६१६ ; अप्र० रच०—दो तीन कविता-कहानी-संग्रह ; प०—पटना।

शंकरदयाल 'सूर'—जन्मांध होते हुए भी ब्रज-भाषा में बराबर काव्य-रचना करते हैं ; ज०—१६१७ ; अप्र० रच०—दो कवित्त-संग्रह ; प०—बार, झांसी।

शंकरनाथ सुकुल, एम० ए० (त्रय), बी० टी०, सा० आ०—सुयोग्य विद्वान्, आलो-चक और कवि ; ज०—१६०७ ; हिंदुस्तान टाइम्स के संपादक रहे ; रच०—मति-राम ग्रंथावली, केशव ग्रंथा-वली ; वि०—इस समय भारतेंदुजी पर एक खोजपूर्ण पुस्तक लिख रहे हैं ; प०—सहायक अध्यापक, मधुसूदन विद्यालय हाई स्कूल, सुल्तान-पुर, अवध।

शंकरलाल मगनलाल कवि 'राम', एम० डी० बी०—गुजराती साहित्य के सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक और

विद्वान् ; ज०—१८६६ ; सा०—राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति वर्धा के प्रमाणित प्रचारक और परीक्षक ; भू० सं० 'विनय' हस्तलिखित, व्यवस्थापक 'समाज - सेवा मंडल', नांदोल, भू० हिंदी अध्यापक स्त्री-शिक्षणप्रवृत्ति पाठशाला ; अनेक हिंदी-वक्तृत्व वर्ग के प्रचारक ; रच०—फेर उतारवाना, तात्कालिक उपाय, सद्गुण माला, काव्य चंद्रोदय, दिव्य किशोरी, गुरु कीर्तन, गुजराती हिंदी टीचर ; प्रि० वि०—समाज सेवा और प्रवास ; प०—ऐंग्लो गुजराती स्कूल, कैनाल रोड, कानपुर ।

शंकरलाल वर्मा—उदीयमान नवयुवक लेखक ; ज०—१६०८ ; सा०—तेंदूखेड़ा में सम्मेलन की परीक्षा का केंद्र खोला ; स्वयं उसके व्यवस्थापक हैं ; रच०—जिले का भूगोल, त्रिमूर्ति, जगन्नाथ की यात्रा ; कई पाठ्य पुस्तकें ; प०—तेंदूखेड़ा, करेली, होशंगाबाद, मध्यप्रांत ।

शंकरराव लोंढ़े, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध विद्वान् सुलेखक एवं हिंदी-प्रचारक ; शि०—इंदौर, नागपुर ; आजकल वासुदेव आर्ट्स कालेज, वर्धा में प्रोफेसर हैं ; रच०—आत्म संयम ; उपरोक्त पुस्तक ग्वालियर शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कृत है ; कालेज की हिंदी साहित्य समिति के सभापति ; हिंदी-मंदिर पुस्तकालय, वाचनालय तथा हिंदी अध्यापक केंद्र के मंत्री ; प०—वर्धा, मध्य-प्रांत ।

शंकरसहाय सकसेना, एम० ए०, एम० काम—अर्थशास्त्र के सिद्धहस्त लेखक, विद्वान् और हिंदी-प्रेमी ; ज०—१६०४ ; शि०—एटा, कानपुर, आगरा, कलकत्ता ; सा०—मेवाड़ (उदयपुर) में प्रताप जयंती, हल्दीघाटी का मेला, प्रजा-

मंडल तथा अन्य संस्थाओं की स्थापना और संगठन; बरेली कालेज-हिंदी-प्रचारिणी सभा तथा नगर हिंदी सभा के प्रधान कार्य-कर्त्ता; रच०—औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल, भव्य-विभूतियाँ, उज्ज्वलरत्न, भारतीय सहकारिता आंदोलन, आर्थिक भूगोल, ग्राम्य अर्थ-शास्त्र, भारत का आर्थिक भूगोल, पूर्व की राष्ट्रीय जागृति, गाँवों की समस्याएँ, प्रारंभिक अर्थ-शास्त्र; इसके अतिरिक्त चीन की राष्ट्रीय जागृति और कार्ल-मार्क्स के आर्थिक सिद्धांत आदि अनेक अप्र० ग्रंथ; प्रि० वि०—राजनीतिशास्त्र, अर्थ-शास्त्र, ग्राम समस्याएँ तथा साहित्य; प०—प्रोफेसर, बरेली कालेज, बरेली।

शंभुनाथ सक्सेना—उदीयमान सुलेखक और हिंदी-प्रचारक; ज०—१४ जनवरी १९२०; सा०—संपादन-विचार, इंडियन-नेशन; 'आनंद' का इस समय संपादन कर रहे हैं; रच०—जीवन के प्रश्न, हाथ से कागज बनाना, मधुमक्खी पालन, चमड़ा पकाना, ग्राम-सुधार योजना, अवर फोक सॉग्स; प्रि० वि०—ग्राम-सुधार, मनोविज्ञान; प०—मदने की गोट, लश्कर, ग्वालियर।

शंभूदयाल सक्सेना, सा० र०—बालसाहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक और समालोचक; ज०—१९०१, फर्रुखाबाद; सं० त्रैमासिक "राजस्थानी", शोध पत्रिका; संस्था०—नवयुग-ग्रंथ-कुटीर, फर्रुखाबाद १९३१; बीकानेर शाखा-स्थापित १९३६; बाल मंदिर, बीकानेर १९३७; रच०—उत्सर्ग, अमरलता, भिखारिन, नीहारिका, रैन बसेरा और वंचिता; उप०—मीठी चुटकी, बहूरानी, भाभी; ना०—साधनापथ, गंगाजली, बल्कल और पंचवटी; चित्र-

पट, वंदनवार, धूपछाँह और पाप की कहानी, कहानी-संग्रह ; प्रबंध प्रकाश और काव्यालोचन निबंध ; संक्षिप्त जायसी, संक्षिप्त भूषण और केशव-काव्य आदि का संपादन किया ; इनके अतिरिक्त लगभग बीस सुंदर बालोपयोगी पुस्तकें लिखी हैं जिनमें कई के अनेक संस्करण हो चुके हैं ; अनेक पाठ-पुस्तकों का संपादन भी किया है ; 'घर की रानी', 'आँधी', 'पत्थर', 'सगाई', 'तथागत', 'काव्य समीक्षा', 'पंचामृत' आदि रचनाएँ अप्र० हैं ; प्रि० वि०—इतिहास ; प०—अध्यापक सेठिया कालेज, बीकानेर।

शंभूरत्न मिश्र 'मुकुल'—छायावादी कवि और कहानीकार ; ज०—१९१७ ; शि०—लखनऊ ; सा०—भूत० संपा० 'शांति', लाहौर; प्रि० वि०—कविता तथा कहानी ; प०—स्टीनोग्राफर, प्रतापपूर शुगर फैक्टरी, बिहार।

शंभूलाल शर्मा, कृषिविद्यालंकार—बालमनोविज्ञान के सुप्रसिद्ध ज्ञाता और लेखक ; ज०—१९०६ ; शि०—कांकरौली, उदयपूर और मेवाड़ ; सा०—संस्था० व्याख्यान सभा तथा भूत० संपा० विद्याविनोद ; स्काउट-मास्टर ; संचा० नवप्रभात-मंडल ; भूत० अध्यापक राजनगर स्कूल तथा एम० एम० स्कूल ; 'भारत भारती' के बाल विभाग के भूत० सहयोगदाता ; वि०—आप मेवाड़ के अच्छे शिक्षा-शास्त्री, बाल मनोविज्ञान-ज्ञाता तथा हिंदी के सुयोग्य प्रचारक और अच्छे कवि तथा सुलेखक हैं ; आजकल आप मेवाड़ के शिक्षा विभाग में शिक्षक हैं; रच०—अनेक अप्र० काव्य तथा साहित्यिक लेख - संग्रह ; प०—अध्यापक, लम्बरदार स्कूल, उदयपूर।

शांति देवी—विदुषी महिला-लेखिका ; ज०—सं० १९१८ ; शि०—हाई स्कूल इंद्रप्रस्थ गर्ल स्कूल, लाहौर ; सा०—संपादिका-'शांति' २ वर्ष, वीररस पूर्ण और भक्तिरस पूर्ण कविता और कहानी-लेखिका ; प०—मोहनलाल रोड, लाहौर ।

शांतिदेवी, बी० ए०, प्रभाकर ; साहित्यिक, सामाजिक और आलोचनात्मक लेखों की सुलेखिका और कहानीकार अ०' भा० श्रमजीवी लेखक मंडल की महिला मंत्रिणी ; प०—पी ३७६, सदर्न एवेन्यू, कलकत्ता ।

शांतिप्रिय द्विवेदी—लब्धप्रतिष्ठ कवि और यशस्वी समालोचक; भू० पू० सं०—भारत, कमला १९३९-४२ ; रच०—जीवनयात्रा, हमारे साहित्यनिर्माता, साहित्यिकी, संचारिणी, कवि और काव्य, युग और साहित्य ; प०—लोलार्ककुंड, काशी ।

शा० नवरंगी, सा० र०—हिंदी के ईसाई लेखक; शि०—पटना, मदुरा और प्रयाग ; ज्ञा०–हिंदी, लैटिन और अँग्रेजी ; रच०—ईश्वर का आवाहन, दादा, संत इग्नाना शियुस का जीवन चरित्र, प्रेम लहरी और जुबली ; कई सामाजिक और भजन संग्रह संबंधी अप्रकाशित ग्रंथ; वि० ईसाइयों में हिंदी प्रचार; प०—अध्यापक, सेंट जोन्स एच० ई० स्कूल, राँची ।

शारदाकुमारी देवी, एम० एल० ए०—'महिलादर्पण' छपरा की यशस्विनी संपादिका ; पत्रों में नारी-स्वत्व-संबंधी अनेक सुंदर लेख प्रकाशित; प०—मुजफ्फरपुर ।

शारदा देवी, सा० र०—प्रसिद्ध महिला सुलेखिका ; ज्ञा०—हिंदी, मराठी, तेलगू, संस्कृत तेमिल और अँग्रेजी ; भू० पू० प्रधान अध्यापिका, कन्या पाठशाला; सार्व०—मद्रास के वीमेन एसोसिएशन

के मुखपत्र 'स्त्रीधर्म' का सह० संपादन; स्त्री-शिक्षार्थ दक्षिण भारत में कक्षा-स्थापन; वि०—बंबई में पेरिन बेन के साथ अन्य भाषा भाषी स्त्रियों में हिंदी प्रचार; राष्ट्रीय और साहित्यिक लेख रचना; प०—अध्यापिका, महिला आश्रम, वर्धा।

शारंगधर शामजी पहिलवान—हिंदी-प्रेमी और प्रचारक; ज०—२ मार्च, १६०२; ज्ञा०—मराठी, गुजराती; सा०—हिंदी वर्ग के संस्थापक १६३६; स्थानीय हिंदू एसोसिएशन के हिंदी प्रचार-विभाग के मंत्री, लेख०—१६३०; अप्र० रच०—स्फुट लेख-संग्रह; प०—एवेल, नासिक, महाराष्ट्र।

शार्ङ्धर सिंह, एम० ए०—प्रसिद्ध निबंध-लेखक और आलोचक; कांग्रेसी विहार-सरकार के भूतपूर्व पर्लियामेंटरी सेक्रेट्री; खड्गविलास प्रेस, पटना के स्वामी; रच०—अनेक स्फुट लेख; प०—पटना।

शालग्राम द्विवेदी, एम० ए०, विशारद, साहित्य सेवी, सफल शिक्षक, कुशल लेखक एवं ओजस्वी वक्ता—ज०—१८६३; शि०—जबलपुर; सा०—माडल हाई स्कूल, जबलपुर के भूतपूर्व शिक्षक, विद्यार्थियों को हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा और मध्यमा परीक्षा के लिए तैयारी कराना, साहित्य रत्न के परीक्षक भी हैं, राष्ट्रीय-हिंदी-मंदिर के प्रारंभिक काल में 'श्रीशारदा' के उपसंपादक तथा शारदा-पुस्तक माला के सम्पादक; जबलपुर के स्पेंसर ट्रेनिंग कालेज में अध्यापक हैं; रच०—साहित्य-सरोज, समर-सखा, नवीन पत्र-प्रकाश वचना-शिक्षक; छात्रोपयोगी अनेक पुस्तकें; वि०—मासिक पत्रिकाओं में अनेक सामयिक लेख लिखे हैं; प्रि०

वि०—गम्भीर अध्ययन और साहित्यिक खोज के कार्य; प०—स्पेंसर ट्रेनिंग कालेज, जबलपुर।

शिखरचंद जैन, सा० र०—सुप्रसिद्ध समालोचक और कहानीकार ; ज०—१९०७ ; खंडेलवाल जैन हितेच्छु के संपादक रह चुके हैं, वीर वाचनालय का संस्थापन ; इस समय नवनिर्माण के 'प्रकाशक-संपादक हैं ; रच०—सूर एक अध्ययन, कविवर भूधरदास और जैन-शतक, हिंदी नाट्यचिंतन, प्रसाद का नाट्यचिंतन, जीवन की बूँदें, वासंती, नारीहृदय की अभिव्यक्ति, नाट्यकला एवं साहित्य की रूपरेखाएँ ; वि०—आपने नरेंद्र साहित्य कुटीर के नाम से एक प्रकाशन संस्था भी स्थापित की है ; प०—दीतवारिया, इंदौर।

शिवोलारानी 'कुसुम'—नवोदिता प्रतिभाशालिनी महिला कहानी लेखिका और गद्यगीत-लेखिका ; ज०—४ अप्रैल १९१८; शि०—दिल्ली; रच०—प्रथम पहर ; लगभग ५० कहानियाँ और १०० गद्य-काव्य ; प०—दिल्ली।

शिवचरणलाल मालवीय 'शिव'—हिंदी प्रेमी सुलेखक और विद्वान्; ज०—६ जून १९०९ ; संपादक—तारा - विजय—१९२९–३०, कर्मयुग १९३०, स्वराज्य १९३१ से अब तक ; १९२९ में विक्रम-साप्ताहिक का भी संपादन किया था ; रच०—पत्र-पत्रिकाओं में 'शिव' के नाम से प्रकाशित अनेक सुंदर लेख और भावपूर्ण कहानियाँ ; प०—शिवनिवास, हरीगंज, खंडवा, मध्य-प्रांत।

शिवदानसिंह चौहान—मार्क्सवादी प्रगतिशील कवि और सुलेखक ; सा०—प्रभा और नया हिंदुस्तान के संपादक रह चुके हैं ; इस समय हंस का संपादन कर रहे हैं ; रच०—स्पेन का गृहयुद्ध ;

प०—सरस्वती-प्रेस बनारस।

शिवनाथसिंह 'शांडिल्य', चौधरी—वालसाहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक ; ज०—१८६७ माछरा; सा०—हिंदी उर्दू मिडिल स्कूल, भारत-प्रेम और जवाहर पुस्तकालय के संस्थापक; श्रीपृथ्वीसिंहधर्मार्थ औषधालय, ज्ञानप्रकाशमंदिर के जन्मदाता ; रईस जमींदार व मेंबर मेरठ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ; भू० पू० संपा०—त्यागी ; रच०—शिकारियों की सच्ची कहानियाँ, वालगुलिस्ताँ, वालवोस्ताँ, फूलदान, सच्ची रोमांचक कहानियाँ, हँसती बोलती तसवीरें, मनोरंजक कहानियाँ, चटपटी कहानियाँ, अक्लमंदी की कहानियाँ, उर्दू कवियों की नीति कविताएँ, रूमी की कहानियाँ, वीरवल की कहानियाँ, नसीहत की कहानियाँ ; प०—माछरा. मेरठ।

शिवनारायण, सा० वि०—प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी-सुलेखक ; ज०—१६०४ ; सार्वजनिक कार्य—स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालयों के सहयोगी कार्य-कर्ता ; रच०—अप्रकाशित लेख और कविता संग्रह ; सदस्य "नागरी प्रचारिणी सभा" ; प्रि० वि०—हिंदी साहित्य (विशेषतया कविता); प०—वैजनाथाश्रम, बछरावाँ, रायवरेली।

शिवनंदन कपूर सा० वि०—वालसाहित्य के प्रसिद्ध लेखक और कवि ; रच०—धार्मिक कहानियाँ, लल्लू-कल्लू, अमर कहानियाँ, प्राचीन कहानियाँ, वीर-गान; वि०—'वाल-साहित्यमंदिर' के नाम से एक प्रकाशन संस्था खोली है ; प०—मशकगंज, लखनऊ।

शिवनंदनप्रसाद, वी० ए०, हास्यरस के सुप्रसिद्ध लेखक ; रचनाएँ 'अलबर्ट कृष्णअली' के नाम से प्रकाशित ; रच०—तानाशाही

चंगुल, जुल्म का नंगा नाच, युद्ध में चर्चिल, फौलादीदस्त, हमारे सिपाही, जापानी सिपाही, पैसिफिक की लड़ाई, विहार में युद्धोद्योग, हिटलर के कारनामे, जापान का रहस्यभेद, हमारा मित्र चीन, हम जीतेंगे, हिटलर का पंजा, पाँचवाँ दस्ता आदि युद्ध संबंधी ३१ पुस्तकों की रचना; प०—भट्टाचार्जी लेन, अपर बाजार, चौक, राँची।

शिवपूजनसहाय—विहार के सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक विद्वानों में एक, अध्ययनशील लेखक, विचारशील आलोचक और निबंधकार ; ज०—१८९३, उनवाँस गाँव, शाहाबाद ; शि०—१९०३ कायस्थ जुबिली एकेडेमी हाई स्कूल और कलकत्ता विश्वविद्यालय ; ज्ञा०—उर्दू, फारसी; सा०—१९१३ में, बनारस - दीवानी अदालत में नकलनवीस ; १९१५ में कायस्थ जुबिली एकेडेमी में ; १९१७ में आरा टाउन हाई स्कूल में, राष्ट्रीय विद्यालय में हिंदी शिक्षक ; भूत० सपा०—मासिक 'मारवाड़ी - सुधार' आरा १९२०, 'मतवाला-मंडल' कलकत्ता १९२३, 'माधुरी' लखनऊ १९२४, मासिक 'गंगा' सुलतानपुर १९३०, पाक्षिक 'जागरण' काशी १९३२, मासिक 'बालक' लहरियासराय की ओर से काशी में १९३४ से; समय समय पर मासिक 'आदर्श' कलकत्ता, मासिक "समन्वय', मासिक 'उप-न्यास-तरंग', साप्ता० 'मौजी' कलकत्ता और 'गोलमाल' पटना ; काशी-नागरी प्रचा-रिणी सभा की ओर से 'द्विवेदी अभिनंदन-ग्रंथ' के १९३३ में, तथा पुस्तकभंडार, लहरियासराय की ओर से 'जयंती-स्मारक-ग्रंथ' का १९३८ से ४१ तक संपादन किया ; अब आरानागरी प्रचारिणी सभा की ओर से देशपूज्य

संचालक-संस्थापक ; भारत-माता-मंदिर की नींव रखी ; रच०—पृथ्वी प्रदक्षिणा ; वि०—आपकी रचना अपने विषय की हिंदी में सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है ; इस समय उसका मूल्य बीस रुपए हैं ; स्व० द्विवेदीजी ने इस ग्रंथ की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी ; प०—बनारस।

शिवप्रसाद व्यास 'उन्मत्त' ; ज०—१६१४ ; रच०—'इधर-साधन उधर-सिद्धि', मंत्र-शास्त्र, मोती-माला ; अप्र०—मानसिक योग-कविताएँ ; प०—शान्ति कुटी (विक्रमगंज), फूलबाग नरसिंहगढ़ राज्य (मालवा)।

शिवशंकर पांडेय—मध्यप्रांतीय प्रसिद्ध लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१६०७ ; लेख०—१६३२ ; वि०—गो-साहित्य और कृषि-संबंधी विषयों पर बहुत लिखा है ; प०—पांडेयबंधु-आश्रम, इटारसी।

शिवसहाय चतुर्वेदी—सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक ; ज०—१८८८ ; शि०—नार्मल पास, ज्ञा०—बँगला, गुजराती, मराठी ; रच०—मेरे गुरुदेव, आदर्शचरितावली, मनोरंजक कहानियाँ, सोने का चाँद, अन्योक्ति कुसुमांजलि, राजा और रानी, भारतीय नीति कथा, आर्थिक सफलता, कर्मक्षेत्र, बेलून-विहार, आर्यजाति का इतिहास, स्त्रियों का कार्यक्षेत्र, छाया दर्शन, रामकृष्ण के सदुपदेश, यूरोप में बुद्धि-स्वातंत्र्य, बच्चों के सुधार के उपाय, जननी जीवन, शारदा या आदर्श बहू, स्वास्थ्य संदेश, सतीदाह, वाणिज्य या व्यवसाय प्रवेशिका, गृहिणी-भूषण, बुंदेलखंडी कहानियाँ ; पता—देवरी, सागर।

शिवस्वरूप वर्मा, एम० ए०, बी०, एल० ; प्रसिद्ध विद्वान् और प्रतिभाशाली लेखक ; द्वितीय आरा जिला हि० सा० सम्मे० के अध्यक्ष ;

अप्र० रच०—सामयिक विषयों पर लिखे अनेक साहित्यिक और आलोचनात्मक निबंधसंग्रह ; प०—आरा।

शुकदेव दुबे, विशारद—बलिया निवासी अध्ययनशील तरुण कहानी लेखक और कवि ; ज०—१९१६ ; रच०—साहित्यिक पत्रों में छपे लेखों और कविताओं के दो संग्रह ; प्रि० वि०—साहित्य, विज्ञान, अर्थ और समाज शास्त्र ; प०—नगवा, बलिया।

शुकदेव पांडे, एम० एस०—सी०, हिन्दी के सच्चे पुजारी गणितज्ञ और प्रकांड विद्वान् ज०—१८९३ ; शि०—म्योर कालेज इलाहाबाद ; रच०—वैज्ञानिक शब्दावली (ज्योतिष और गणित), गणित, बीजगणित, त्रिकोणमिति ; प०—प्रिंसिपल, बिड़ला कालेज पिलानी।

शुकदेवप्रसाद तिवारी 'निर्बल', वि० भू०—सहृदय सुकवि और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता; ज०—१८९१; सा०—सत्याग्रह आन्दोलन में जेल जा चुके हैं ; स्थानीय कांग्रेस (तहसील) के उपसभापति, स्थानीय म्यु० कमेटी के मंत्री; संपा०—'हिंदू' ; रच०—ग्राम-गीत और होली की राख ; प्रिय वि०—इतिहास· प०—'निर्बल - निकेतन, सोहागपूर, सी० पी०।

शुकदेवसिंहजी 'सौरभ' उदीयमान हिन्दी सेवक और हिन्दी की सेवा में तन-मन से संलग्न ; ज०—१९०१ ; रच०—शरशय्या (कविता), साकेत संताप (कविता), अमरत्व (कविता), मिलन (उपन्यास), आदर्श-जीवन (उपन्यास), हम क्या चाहते हैं ! (उप०),जीवन संग्राम (उपन्यास) आदि, प०—टीकमगढ़।

शेषमणि त्रिपाठी—एम० ए० ; सा० र०, बी०

टी०—सुप्रसिद्ध विद्वान् हिंदी साहित्य सेवी, संपादक और लेखक ; ज०—१८६८ कोटिया, बस्ती; शि०—प्रयाग, आगरा, काशी; ज्ञा०—संस्कृत ; शिक्षाविभाग में आजमगढ़, बस्ती, गोरखपुर, देवरिया और सुल्तानपुर आदि स्थानों के इंस्पेक्टर तथा इंचार्ज डिपुटी इंसपेक्टर, रच०—अकबर की राज्य-व्यवस्था, वेणी विमर्श, शिक्षा का व्यंग, स्काउट, रोवर स्काउटों की दीक्षा संस्कार, और माता का हृदय, माघ विमर्श, दंडीविमर्श, आलमगीर के पत्र, निबंध-निचय और तैराकी; आपके लेख कादम्बरी, मर्यादा, बस्ती गजट, सम्मेलन पत्रिका विज्ञान और यू० पी० एजुकेशन में छपे ; प०—ठि० नागरी प्रचारिणी सभा, गोरखपुर।

श्रीकांत ठाकुर, वि०लं०—यशस्वी पत्रकार ; संपादक—विश्वमित्र दैनिक ; रच०—नवीनशासनपद्धति ; प०—विश्वमित्र कार्यालय, बंबई।

श्रीकृष्णराय हृदयेश—गाजीपुर निवासी सुप्रसिद्ध कवि, यशस्वी लेखक तथा सहयोगी कार्यकर्ता ; ज०—१९११ ; सा०—'नागरी प्रचारिणी सभा', गाजीपुर, के व्यवस्थापक और प्रधान मंत्री ; रच०—'युवक से' और हिमांशु ; प०—अध्यापक, एम० ए० वी० हाई स्कूल, गाजीपुर।

श्रीधर पंत, एम० ए० (संस्कृत, हिंदी), बी०टी०—साहित्यकेअध्ययनशील विद्वान् परंतु, लेखन-कार्य की ओर से उदासीन ; रच०—तुलसी-मंजरी (तुलसी-काव्य-संकलन) ; प्रि० वि०—संगीत और साहित्य ; प०—अध्यापक, हिंदी विभाग, कालेज, बरेली।

श्रीनाथपालित, विशारद—प्रसिद्ध लेखक और विद्वान् ; ज०—१९०६ ;

शि०—विशारद ; सा०—श्रीकेसरवानी हिन्दी पुस्तकालय का निर्माण, म्युनिस्पल कमिश्नर, जातिय सभाओं के मंत्री ; कांग्रेस के सदस्य, गोरक्षा संस्था के सदस्य और उसके प्रचारक; सा०—केशरी के वर्तमान संपादक ; रच०—द्वन्द्वात्मक भौतिक अथवा समाजवादी की फिलासफी; प्रि० वि०—साहित्य और अर्थशास्त्र; प०—३६, कचहरी रोड, गया।

श्रीनाथ मिश्र, सा० रत्न—साहित्य-प्रेमी छायावादी कवि और लेखक ; ज०—१७ जूलाई, १६०३ ; अप्र० रच०—कलकंठी, कलंकिनी, मधुवन ; प०—अध्यापक म्यूनिसिपल स्कूल, गाजीपुर।

श्रीनाथ मोदी—प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक और साहित्य-प्रेमी लेखक ; ज०—२० जून, १६०४, जोधपुर ; सा०—हिंदी प्रचारिणी सभा जोधपुर के संस्थापकों में हिंदी-परीक्षार्थी सहायक पुस्तकालय की स्थापना ; जादू की लालटेन द्वारा चार वर्ष तक ग्रामों में प्रचार-कार्य , तेईस वर्ष की सरकारी नौकरी (निरीक्षक गवर्नमेंट टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल, जोधपुर) छोड़कर हिंदी-प्रचार कार्य स्वीकारा ; ज्ञान भांडार नामक प्रकाशन संस्था जोधपुर में स्थापित की ; रच०—अर्द्ध भारत की समस्या, उगता राष्ट्र, पंचों की बड़ी पूजा, पंचों की कुकडूँ-कूँ, मुनिज्ञान सुंदर, चियाँ मियाँ, तीन भालू, स्त्रियों के शुभगीत—२० भाग, सुधार-संगीत—४ भाग, ज्ञान-माला—२६ ट्रैक्ट, ग्राम-सुधार-नाटक, धनवान् बनने का सरल उपाय, जिनगुण-माला, हंसमाला—१७ ट्रैक्ट ; प०—राजकंपनी, चौक, कानपुर ,

श्रीनाथसिंह, ठाकुर—

यशस्वी पत्रकार, सुलेखक और सहृदय विद्वान् ; ज०—१९०१ ; सा०—संपादक—गृहलक्ष्मी १९२४, शिशु १९२४, देशबंधु १९२६, बालसखा १९२६ से अबतक, साप्ताहिक व दैनिक अभ्युदय १९३१ ; सरस्वती १९३४-३८, देशदूत १९३९ से अब तक, हिंदू-उर्दू 'हल' १९३९ से अब तक ; १९४० में निजी पत्र 'दीदी' निकाला ; 'दीदी प्रेस' स्थापित किया १९४२ ; र०—प्रजामंडल, जागरण, उलझन, एकाकिनी ; अनेक सुंदर बालोपयोगी पुस्तकें ; प०—'दीदी' कार्यालय, प्रयाग।

श्रीनारायण चतुर्वेदी 'श्रीवर', एम० ए० एल० टी०—हिंदी भाषा के प्रसिद्ध लेखक तथा विद्वान् ; ज०—जनवरी १८९५ ; शि०—प्रयाग ; लीग आफ नेशन्स जेनेवा की शिक्षा विशेषज्ञ समिति के सदस्य १९२६—३० ; वर्ल्ड फेडरेशन आफ एजुकेशनल एसोसिएशंस, टोरंटो के भारतीय सदस्य ; व्यवस्थापक शिक्षाविभाग एवं कृषि औद्योगिक प्रदर्शनी लखनऊ; र०—कई कविता-संग्रह, अनेक साहित्यिक लेख-संग्रह ; वि०—इस समय एजुकेशन एक्सपैंशन आफिसर हैं ; प०—प्रयाग।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए० ;—हिंदी के सुपरिचित लेखक और विद्वान् ; ज०—जुलाई १९१२ ; कई साल तक 'सबकी बोली' और राष्ट्रभाषा समाचार के संपादक रहे ; १९३९ से १९४२ तक समिति के प्रधान मंत्री रहे र०—सेगाँव का संत—नि०, रोटी का राग और मानव नामक कविता-संग्रह ; वि०—१९३५ में आई० सी० एस० के लिए इँगलैंड यात्रा ; प०—प्रिंसपल, गोविंदराम सेकसरिया कालेज अव कामर्स, वर्धा।

श्रीराम मितल एस० ए०; बी० एस० सी० , 'विशारद' आपकी विशेष रुचि हिन्दी साहित्य के उन्नति में है, हिन्दी के एक उदीयमान कवि तथा लेखक ; ज०—१६१० ; शि०—आगरा कालेज ; रच०—गणित भाग २ और न्यू स्कूल रेखागणित (प्रथम व द्वि० भाग); प्रि० वि०—विज्ञान और गणित ; प०—बिड़ला कालेज, पिलानी ।

श्रीराम मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, एडवोकेट—साहित्य-प्रेमी विद्वान् और कुशल लेखक, आनरेरी असिस्टेंट कलक्टर, प्रेसिडेंट बार एशोसियेशन, फैजाबाद; ज०—१८८६; मं०—साकेत साहित्य समिति, फैजाबाद; संस्था०—आदर्श ए० बी० स्कूल फैजाबाद ; शि०—देहली, शाहजहाँपुर, बनारस, इलाहाबाद; सभा०—हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन की डिविजनल कमेटी ; र०—सर्पिणी, हरिविलास रामायण; प०—श्रीनिकेतन, फैजाबाद ।

श्रीराम शर्मा, बी० ए०—सुप्रसिद्ध शिकार - साहित्यकार, यशस्वी कहानी-लेखक, स्वतंत्रविचारक और सफल-पत्रकार ; ज०—१८६५ ; सा०—मासिक 'विशाल-भारत' कलकत्ता के संपादक ; रच०—शिकार, बोलती प्रतिमा, प्राणों का सौदा, हमारी गाएँ, झाँसी की रानी; प०—'विशाल भारत' कार्यालय कलकत्ता ।

श्रीराम शर्मा—सा० र०—समालोचक निबंध-लेखक, तथा विचारक ; ज०—१६१० ; रच०—विचार-धारा—प्रथम भाग ; अप्र०—पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे आलोचनात्मक लेखों के दो संग्रह ; वि०—विदर्भ प्रांतीय हिंदी साहित्य नामक संस्था गत वर्ष आपने स्थापित की है और बड़े उत्साह से उसके साहित्य विभाग का मंत्रित्व

कर रहे हैं। प०—नार्मल स्कूल के सामने, अकोला, बरार।

श्रीराम शुक्ल, सा० वि०—सुप्रसिद्ध चित्रकार तथा साहित्य-प्रेमी विद्वान्; ज०—१६०४; सा०—'काव्य सुमनमाला' के संचालक—इसमें लगभग ४ काव्य-ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं; भारतेंदु अभिनयमंडल के डाइरेक्टर; रच०—रत्नमाला, कारमीरकेसरी, शुक्लसुमन, भाग्यविजय; प०—प्रेस कंट्रोल आफिस, बड़वाहा, इंदौर।

सकलनारायण शर्मा, म० म०; आरा-निवासी सुप्रसिद्ध विद्वान्, विचारशील साहित्यिक ओजस्वी सुवक्ता; ज०—१८७१, आरा; ना० प्रचा० स० आरा के प्रधान संस्थापक; लगभग २५ वर्ष तक 'शिक्षा' के संपादक; बिहार प्रां० हिं० सा० सम्मे० के चतुर्थ अधिवेशन (छपरा) के सभापति; रच०—हिंदी-सिद्धांत प्रकाश, सृष्टितत्त्व, प्रेम तत्त्व, आरापुरातत्त्व, व्याकरण-तत्त्व, वीरबाला-निबंध-माला, राजारानी (उप०), अपराजिता (उप०), जैनेंद्रकिशोर (जी०); प०—आरा, बिहार।

सगुणाजैनाचाद्कर, एम० ए०, सा० र०—साहित्य प्रेमिका, कहानी और निबंध-लेखिका; ज्ञा०—अंग्रेजी, मराठी; सा०—अहिंदी प्रांत में बालिकाओं में हिंदी-प्रेम जागरित करती हैं; अप्र० रच०—कई मराठी ग्रंथों के अनुवाद; प०—प्रधान अध्यापिका, सागर महिला विद्यालय, सागर, सी० पी०।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन—यशस्वी कवि, कहानीकार और सुलेखक; ज०—७ मार्च १९११ कसिया गोरखपुर; लेख०—१९२४, 'विशालभारत' के भू० पू० संपा०; रच०—विपथगा;

शेखर—एक जीवनी, भग्नदूत, विश्वप्रिया, एकायन, श्री-फ्लावर्स, श्राफ्टर डान, कैप्टिव ड्रीम्स, प्रिजिन डेज़ एंड अदर पोयम्स; अप्र०—पतन, वंदी, स्वप्न, त्रिशंकु, वेश, कम्युनिज़्म क्या है, ऐंगिल्स; प०—दिल्ली।

सत्यजीवन वर्मा 'श्री-'भारतीय', एम० ए०—हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध महारथी और समालोचक; ज०—१८९८ ; शि०—प्रयाग, बनारस, लखनऊ ; सा०—'हिंदी लेखक संघ' की स्थापना १९३४ ; 'लेखक' का संपादन-प्रकाशन ; हिंदुस्तानी एकेडेमी के सुपरिंटेंडेंट; 'दुनिया' के संपादक-प्रकाशक; 'शारदा प्रेस' के संस्थापक ; रच०—वीसलदेव-रासो, सूर-रामायण, चित्रावली, नयन, मुरली-माधुरी, मुनमुन, मिस पैंतीस का पतिनिर्वाचन, एलबम, विचित्र अनुभव, लेखनी उठाने से पूर्व, आकाश पर अधिकार, प्रसिद्ध उड़ाके ; अनु०—प्रेम की पराकाष्ठा, स्वप्नवासवदत्ता, प्रायश्चित्त ; प०—शारदा प्रेस, नया कटरा, प्रयाग।

सत्यदेव परिव्राजक, स्वामी—प्रसिद्ध पर्यटन-प्रेमी, कुशल गद्य लेखक और व्यंग्य-पूर्ण कविताओं के रचयिता ; प०—लाहौर।

सत्यनारायण—सुप्रसिद्ध राष्ट्रभाषा प्रेमी और प्रचारक; दो वर्ष १९३७-३८ तक राष्ट्र-भाषा प्रचार-समिति, वर्धा के प्रधान मंत्री रहे ; इस समय हिंदी प्रचार सभा मद्रास के प्रधान मंत्री हैं; प०—मद्रास।

सत्यनारायण—डाक्टर, पी-एच० डी०—मलखाचक निवासी सुंदर प्रतिभाशाली साहित्यिक ; रच०—आवारे की योरप यात्रा, रोमांचक रूस में, अपराजित अबी-सीनिया, युद्धयात्रा, हवाई-युद्ध, लड़ाई के मोर्चे पर, उन्नीस सौ चालीस ; वि०—

अल्पायु में ही सारे योरप का भ्रमण करके आपने जर्मनी से पी-एच० डी० की डिग्री प्राप्त की ; अपनी समस्त पुस्तकों का आप स्वयं ही बँगला में अनुवाद कर रहे हैं ; प०—सारन, छपरा ।

सत्यनारायण शर्मा—प्रसिद्ध हिंदी विद्वान् ; ज०—१६२१ ; सा०—संपादन-कार्य—'नवजागृतिका'—हिंदी साप्ताहिक पत्रिका, आसाम ; रच०—'इंकलाब जिंदाबाद', "आत्महंता", "तूफ़ान", "टूटती हुई जंजीर"; अप्र०—दार्शनिक पुस्तकें; प०—राँची, (सी० पी०) ।

सत्यनारायण शर्मा, व्या० आ०, सा० वि०—अहिंदी प्रांत में हिंदी का प्रचार करने वाले हिंदी प्रेमी विद्वान् ; लंका में ढाई वर्ष तक हिंदी प्रचार; लंका नागरीप्रचारिणी सभा का संस्थापन ; रच०—प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए सिंहली भाषा की पाँच पुस्तकें लिखीं ; अप्र०—हिंदी-सिंहली कोष ; प०—प्रधानाचार्य राष्ट्रीय विद्यालय, खड्गप्रसाद कटक, स्टेशन मीरामंडी, बी० एन० आर० ।

सत्यपाल—अत्यंत सफल गीतों के रचयिता और साहित्य-प्रेमी विद्वान् ; सा०—स्थानीय हिंदी - प्रचारिणी सभाओं के सहायक ; प०—प्रिंसिपल, गोपाल आर्ट्स कालेज, लाहौर ।

सत्यप्रकाश डाक्टर, डी० एस-सी०, एफ़० ए०, एस - सी०—अध्ययनशील विद्वान्, साहित्य-प्रेमी लेखक और भाषा - वैज्ञानिक ; संपा०—समाचार पत्र शब्द-कोष ; रच०—सृष्टि की कथा ; अप्र०—अनेक सामयिक निबंध-संग्रह ; प०—प्रयाग ।

सत्यप्रकाश 'मिलिंद', सा० र०. बी० ए०—उदीयमान लेखक और साहित्य-सेवी ; ज०—१६२२ ;

शि०—प्रयाग विश्वविद्यालय; सा०—साम्यवाद का समर्थन ; अप्र० रच०—प्रयोग कालीन वचन, आधुनिक साहित्य और कवि, यामा में नई सूझ, सिगरेटशाला ; प्रि० वि०—साहित्य में वादों की प्रतिक्रिया ; प०—अनूप शहर ।

सत्यव्रत शर्मा 'सुजन', एम० ए०, सा० आ० ; मुस्तफापुर-निवासी प्रसिद्ध कवि और विद्वान् ; मधुवनी-कालेज में हिंदी के अध्यापक ; प्रका० रच०—लतिका ; अप्र० रच०—अनेक निबंध और कविता संग्रह प०—मधुवनी ।

सत्याचरण, एम० ए०, बी० टी०—प्रयाग निवासी प्रमुख हिंदी लेखक, आलोचक तथा सफल संपादक; सा०—बोर्ड आफ हाई स्कूल और इंटर मीडिएट कमेटी के भू० प्रधान तथा प्रांतीय प्रधानाध्यापकों के वर्तमान प्रतिनिधि ; रच०—काव्य कल्पतरु, टार्च बियरर आदि संपादित पाठ्यपुस्तकें तथा अनेक प्रकाशित और अप्रकाशित लेख संग्रह ; प०—प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाई स्कूल, इलाहाबाद ।

सत्येंद्र, एम० ए०—प्रसिद्ध विद्वान्, समालोचक तथा पत्रकार ; ज०—१९०७ ; शि०—आगरा ; सा०—धर्मवीरदल, मित्रसभा के संस्थापक, नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के कई समारोहों में सक्रिय भाग लिया ; साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य, हिंदी साहित्य परिषद् मथुरा, सुहृदय साहित्य गोष्ठी, ब्रजसाहित्य मंडल के संस्थापक ; संपा०—उद्धारक, ज्योति, साधना, ब्रजभारती, आर्यमित्र ; रच०—साहित्य की झाँकी, गुप्तजी की कला, नागरिक कहानियाँ कुनाल, मुक्तियज्ञ, वसंत-स्वागत, बलिदान, विज्ञान की करामात,

भारतवर्ष का इतिहास ; अप्र०—प्रेमचंद व्यक्ति और कला, रचना कौशल और कला, मानव-वसंत, हिंदी एकांकी, इतिहास और विवेचन, विक्रम का आत्मा-मेध ; पं०—पोद्दार कालेज, नवलगढ़, (जयपुर)।

सद्गुरुशरण अवस्थी, एम० ए०—यशस्वी समालोचक और कहानीकार ; ज०—१६०१ ; शि०—कानपूर, आगरा ; का०—अध्यक्ष, क्राइस्टचर्च कालेज, कानपूर ; रच०—अमित पथिक, गौतम बुद्ध, त्रिमूर्ति, फूटा शीशा, एकादशी, विचार-विमर्श, गद्यगाथा, तुलसी के चार दल, मुद्रिका, दो नाटक, शकुंतला परिणय, विभीषण भ्रम, महाभिनिष्क्रमण, सुदामाचरित, सती का अपराध, कैकेयी, बलि-वामन, प्रह्लाद, शंबूक, त्रिशंकु आदि ; वि०—प्रसिद्ध उपन्यास, नाटककार तथा पाठ्य-पुस्तक रचयिता ; प०—बी० एन० एस० डी० कालेज होस्टल, कानपूर।

सभाजीत पांडेय 'अश्रु', बी० एस-सी०—भावुक कवि; ज०—१६१४ ; शि०—कानपुर ; प्रि० वि०—साहित्य ; रच०—'सारिका' ; अप्र० रच०—उपवन, कलश-कण, आदि ; प०—गाजीपुर।

सभामोहन अवधिया "स्वर्ण सहोदर", सा० वि०—बाल-साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक और अध्ययन-शील साहित्य-सेवी ; ज०—१६०२ ; सा० —संस्था०—'ग्राम-सेवादल' और 'अयोध्यावासी स्वर्णकार सभा' ; रच०—'मंडला-जल-प्रलय', 'बच्चों के गीत', 'ग्राम-सुधार के गोंडी-गीत', 'हकीकतराय', 'वीर बालक बादल', 'ललकार', 'वीर शतमन्यु', 'बाल-खिलौना' आदि कई बालोपयोगी पुस्तकें ; तथा अन्य अप्रकाशित साहित्यिक रच० ;

प०—हेडमास्टर, हिंदी मिडिल स्कूल, अमगवाँ निवास, मंडला।

सरदारसिंह चौहान, कुँवर, सा० वि०—गद्य के उदीयमान लेखक ; ज०—१९१२ ; अप्र० रच०—प्रतिबिंब (निबंध-संग्रह) प०—स्याना, ग्वालियर राज्य।

सरयूपंडा गौड़—जगदीशपुर-निवासी हास्यरस के प्रसिद्ध लेखक और कुशल कहानीकार; भूत० संपा०—मासिक 'आर्य - महिला'—काशी ; रच०—लेखक की बीवी, मिस्टर तिवारी का टेलीफोन - कॉल, कोर्टशिप, अश्रुगंगा, भूली हुई कहानियाँ, वेदना ; अप्र०—अनेक सुंदर हास्यरस की कहानियों के संग्रह ; प०—जगदीशपुर।

सरयूप्रसाद पांडेय—बाल-साहित्य के कुशल लेखक और अध्ययनशील विद्वान् ; ज०—१८६६ ; रच०—'बच्चों की मिठाई' और 'राजर्षि' ; प०—शाहगंज, जौनपुर।

सर्वदानंदवर्मा—भू० पू० शिक्षा मंत्री श्रीमान् संपूर्णानंदजी के सुपुत्र, यशस्वी उपन्यासकार तथा प्रतिभाशाली कवि; रच०—संस्मरण, नरमेध, नरक, रानी की डायरी, निकट की दूरी ; प०—बनारस।

स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी, बी० ए०—उदीयमान कहानी लेखक और कवि ; ज०—१९२० ; सा०—भू० सहा० मं० तथा वर्तमान अर्थ मं०, 'प्रांतीय सम्मेलन'; संपा०—"आलोक", सह० सं० "अग्रदूत" ; अप्र० र०—'गौतम बुद्ध' (ना०) तथा अन्य कहानी और कविता-संग्रह ; वि०—'मद्य-निषेध' कविता पर साहित्य सम्मेलन द्वारा पुरस्कृत ; प०—रायपुर, सी० पी०।

सहजानंद सरस्वती, संन्यासी—प्रसिद्ध विद्वान् और

सुवक्ता ; किसान आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्ता ; संचा० और संपा० 'लोकमत' । रच०—ब्रह्मर्षि-वंश-विस्तार, कर्मकलाप आदि; प० बिहटा-बिहार।

संकटाप्रसाद वाजपेयी, धर्मभूषण, रायबहादुर, बी० ए०, एल-एल० बी०—हिंदी के प्रकांड पंडित, सफल प्रचारक और विद्वान् लेखक ; ज० १८८६ ; शि०—लखनऊ तथा प्रयाग ; सा० का०—सन् १९१७ में बनारस हिंदू-यूनीवर्सिटी कोर्ट के सदस्य निर्वाचित हुए, १९१८ से जिला बोर्ड का अवैतनिक कार्य, तदुपरांत अवैतनिक मैजिस्ट्रेट, भू० प्रतिनिधि केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा, १९१९ में नगर बोर्ड के चेयरमैन नियुक्त हुए, सह० संस्था० सहकारी बैंक, खीरी, सहकारी विभाग की प्रांतीय समिति के सदस्य, १९२६ में प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य, खीरी प्रांत के शिक्षा विभाग के भू० चेअरमैन, जिला बोर्ड के कर्मचारियों की प्रांतीय सभाओं के भू० सभापति, हिंदुस्थान स्काउट एसोसिएशन के सभापति तथा सेवा समिति के आजीवन सभापति, मं० स्थानीय अनाथालय तथा पुस्तकालय, गोशाला समिति के सभापति, सदस्य प्रांतीय सहकारी बैंक और गन्ना एडवाइजरी कमेटी, लखनऊ बोर्ड, उपसभा० खीरी प्रांतीय संकीर्तन और रामायण मंडल, भू० उप सभा० 'श्री सनातन धर्म सभा हाईस्कूल' भू० मैनेजर 'धर्मसभा हाईस्कूल' तथा संस्कृत पाठशाला ; ज्ञा०—हिंदी, अँग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य के उच्च कोटि के विद्वान् और समालोचक ; वि०—सार्वजनिक कार्यों में संलग्न होते हुए भी साहित्य तथा समाजसेवा, स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में वार्षिक विवरण तथा रिपोर्ट भेजना, संपादक 'कान्यकुंज' पत्रिका ; सभा०

स्थानीय कविमंडल ; सदस्य नागरी प्रचारिणी सभा और हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग; प०—लखीमपुर, खीरी।

संतराम, बी० ए०—महिला-साहित्य के लेखक, उनकी समस्याओं पर विचार करनेवाले यशस्वी विद्वान् पत्रकार ; ज०—१८८६ होशियारपुर; सा०—ऊषा का संपादन-प्रकाशन १९१५-१७; 'भारती', युगांतर के संपादक रह चुके हैं; रच०—एकाग्रता और दिव्य-शक्ति, मानसिक आकर्षण द्वारा व्यापारिक सफलता, अल-बरूनी का भारत—२ भाग, मानवजीवन का विधान, भारत में बाइबिल—२ भाग, कौतूहल भांडार, आदर्शपत्नी, आदर्शपति, दंपति मित्र, विवाहित प्रेम, बालक, शिशु-पालन, रतिविज्ञान, रति-विलास, इत्सिंग की भारत-यात्रा, पंजाबी गीत, अतीत कथा, वीर गाथा, कामकुंज, दयानंद, स्वर्गीय संदेश, अंत-र्जातीय विवाह, नीरोग कन्या, सुशील कन्या, रसीली कहा-नियाँ, सुंदरी सुबोध, सद्‌गुणी बालक, बाल सद्‌बोध, बच्चों की बातें, आदर्शयात्रा, सद्-गुणी पुत्री, विश्व की विभू-तियाँ, स्वदेश-विदेश यात्रा, जानजोखिम की कहानियाँ, रणजीत चरित, महिलामणि-माला, वीर पेशवा, गुरुदत्त लेखावली, लोकव्यवहार, कर्म-योग ; प्रि० वि०—सामा-जिक ; प०—साहित्यसदन, कृष्णनगर, लाहौर।

संतोकलाल माणिक-लाल भट्ट—अहिंदी प्रांतों में हिंदी का प्रचार करनेवाले सुप्रसिद्ध विद्वान् ; ज०—२५ जनवरी १८९५ ; शि०—बंबई, वर्धा ; सा०—राष्ट्र-भाषाप्रचार समिति वर्धा की ओर से प्रामाणिक प्रचा-रक' की हैसियत से हिंदी का विशेष प्रचार किया; रच०—गजल में गीता, हिंदुस्तानी

प्रारंभ; प्रि० वि०—साहित्य; प०—गवर्नमेंट ट्रेनिंग कालेज, सूरत।

संपतकुमार मिश्र—संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान् और हिंदी के प्रचारक; भू० पू० संपादक "माहेश्वरीबंधु"—कलकत्ता (१९२६–२९); 'मारवाड़ी ब्राह्मण सभा' और मारवाड़ी मित्र मंडल के प्रधान मंत्री; 'सनातन' और 'भारतीय धर्म' के प्रधान संपादक और राजस्थान क्षत्रिय महासभा के सहायक मंत्री; प०—अजमेर।

संपूर्णानंद, बी० एस-सी०, एल० टी०—भू० पू० शिक्षामंत्री; विख्यात राजनीतिक नेता, और सुलेखक; ज०—१८९४; शि०—प्रयाग; सा०—संपा०—मर्यादा १९२१, टुडे १९३०; प्रधान मंत्री यू० पी० कांग्रेस कमेटी १९२६–२८; एम०एल०ए०; १९२७–१९२८ कांग्रेस-सोशलिस्ट पार्टी के बंबई अधिवेशन के अध्यक्ष; रच०—साम्यवाद, अंतर्राष्ट्रीयविधान, सम्राट् हर्षवर्धन, चेतसिंह और काशी का विद्रोह, महादानी सिंधिया, चीन की राज्यक्रांति, मिश्र की राज्यक्रांति, भारत के देशी राष्ट्र, देशबंधु चितरंजनदास, महात्मा गांधी, वि०—'साम्यवाद' पर आपको पुरस्कार मिला; प०— काशी।

साधुराम शुक्ल—होनहार हिंदी लेखक; ज०—१९१९; शि०—विशेषतया लखीमपुर; सा०—भू० मं० 'स्थानीय छात्र संघ' तथा 'श्री सनातन-धर्म-सभा-कुमार-सम्मेलन' तथा 'हरिजन-सेवक-संघ'; का०—हिंदी भाषा और नागरीलिपि का प्रचार तथा हास्यरसपूर्ण लेख, कहानी और कविताओं की रचना; अप्र० रच०—'अज्ञेयवाद' तथा अन्य लेख और काव्य-संग्रह; प०—मं० 'हरिजन सेवक संघ', लखीमपूर, खीरी।

साँवलिया बिहारीलाल वर्मा, एम० ए०, बी० एल—देशाटन प्रेमी, अर्थशास्त्री और

सुलेखक ; ज०—१८६६ ; रच०—यूरोपीय महाभारत, गद्य चंद्रोदय, गद्यचंद्रिका, लोकसेवक महेंद्रप्रसाद ; पटना कालेज के भूतपूर्व प्रोफेसर ; वि०—आजकल नैपाल पर एक बड़ी सुंदर पुस्तक लिख रहे हैं ; प०—मथुराभवन छपरा।

सावित्री दुलारेलाल, एम० ए०—सर्वप्रथम देव-पुरस्कार विजेता श्रीदुलारेलाल भार्गव की धर्मपत्नी ; शि०—लखनऊ और आगरा विश्व-विद्यालय ; भूत० संपा०—मासिक 'सुधा' और 'बाल-विनोद' ; अप्र० रच०—अनेक सुंदर गीत-संग्रह ; वि०—अनेक बार आल इंडिया रेडियो पर कविता-पाठ ; कई कवि सम्मेलनों में सभानेत्री ; प०—कविकुटीर, लाटूश रोड, लखनऊ।

साह मदनमोहन—सिंधिया राज्य के जागीरदार और साहित्य-प्रेमी ; ज०—१८६४ ; विशारद (सं० १९७४) ; संयोजक—सा० सम्मे० परीक्षा-केंद्र, लखनऊ (१९७६–७८) ; लक्ष्मण साहित्य भंडार तथा लक्ष्मण पत्रिका के संचालक (१९७४–८१) ; रच०—रघुनाथराव नाटक, राघव-गीत ; प०—मिर्जा मंडी, लखनऊ।

सिद्धिनाथ दीक्षित 'संत', ज०—१८८९ ; ज्ञा०—हिंदी, उर्दू, मराठी, बँगला ; भू० पू० संपादक हिंदी केसरी (१९०७–९), सुधानिधि (१९१०–२२), 'साहित्य कार्यालय' के संचालक; रच०—आदर्श विद्यार्थी मिथिला विनोद, सम्मेलन के रत्न, अनुभूत सुधासार ; प०—दारागंज, प्रयाग।

सिद्धिनाथ माधव आगरकर, बी० ए०—हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान् और गंभीर लेखक ; ज०—२६ जून १९११; सा०—संपादन-कर्मवीर, मध्यभारत, प्रणवीर,

पुनः कर्मवीर, प्रणवीर ; अब 'स्वराज्य' के प्रधान संपादक हैं; रच०—कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, विद्यार्थियों का स्वास्थ्य; अनु०—लोकमान्य तिलक का जीवन - चरित, मानसोपचार पद्धति, वीर सावरकर का जीवन चरित्र, अहंभाव की गूँज ; वि०—'निरंजन' के नाम से हास्य रस की कई कहानियाँ तथा व्यंग्य-परिहास लिखे; प०—खंडवा, मध्यप्रांत।

सिद्धिनाथ मिश्र, राय साहब, बी० ए०, बी० टी०—ख्यातिप्राप्त अनुभवी शिक्षण-शास्त्री ; हाई स्कूल के पुराने हेडमास्टर; रच०—हिंदी अंग्रेजी अनुवाद, रचना और इतिहास की पाठ्य पुस्तकें ; प०—पटना।

सिद्धनाथ शर्मा—साहित्य-प्रेमी विद्वान् और कवि ; ज०—१८६१ ; रच०—सिद्धामृत सत्य-कथा, वाल-संध्या, सत्यदेवपूजनविधि ; प०—राजपुरोहित, पिपलौदा स्टेट, मालवा।

सियाराम, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील-साहित्य-प्रेमी हिंदी - प्रचारक और लेखक ; ज०—१९१० ; सा०—स्थानीय आर्यकुमार-सभा, हिंदू सभा, और हिंदी प्रचार मंडल के उत्साही कार्य-कर्त्ता ; हिंदी विद्यापीठ के अवैतनिक अध्यापक ; प्रि० वि० —राजनीति, गणित, विज्ञान ; प०—अध्यापक, हिंदी विद्यापीठ, बदायूँ।

सियारामशरण गुप्त—सुप्रसिद्ध कवि, सुलेखक और उपन्यासकार ; ज०—१८९५; ज्ञा०—अंग्रेजी, बँगला, संस्कृत, गुजराती, मराठी ; रच०—उप०—गोद, नारी; कहा०—अंतिम-आकांक्षा, मानुषी ; ना० ; पुण्यपर्व ; काव्य—मौर्यविजय, दूर्वादल, आत्मोत्सर्ग, अनाथ, विषाद, आर्द्रा, पाथेय, मृण्मयी, बापू, उन्मुक्त, निष्क्रिय प्रतिशोध, कृष्णा-

कुमारी ; झूठसच-निबंध ; प०—चिरगाँव, झाँसी।

सिंहासन तिवारी 'कांत'—सा० र० ; ज०—१६१९ ; ज्ञा०—अंग्रेजी, संस्कृत, हिंदी, बंगला, प्रधानाध्यापक राष्ट्रभाषा विद्यालय; र्च०—शांति; अप्र०—युगांतर, बलिदान, मानस-ऊर्मि ; प०—राष्ट्रभाषा-विद्यालय, परमहंसाश्रम, बरहज, गोरखपुर।

सीताराम पांडेय, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध हिंदी विद्वान् और सुलेखक ; शि०—मध्यप्रदेश, जबलपुर ; सा०—कांग्रेस के उत्साही कार्यकर्त्ता, भूत० प्रधान अध्यापक, श्रीतिलक राष्ट्रीय विद्यालय ; भूत० अध्यापक राबर्ट्सन कालेज, जबलपूर ; संस्था—मित्र मंडल ; भूत० सदस्य हिंदी सा० सम्मे० तथा भू०स्वागताध्यक्ष, कविसम्मेलन मध्यप्रांत ; वि०—आप कविता अवधी,ब्रजभाषा और खड़ीबोली तीनों में करते हैं ; र्च०—काव्योद्यान तथा अन्य साहित्यिक, राष्ट्रीय और सामाजिक काव्य तथा लेख संग्रह ; प०—शिक्षक, साधूराम हाई स्कूल, जबलपुर।

सुकुमार पगारे—लब्ध-प्रतिष्ठ कहानी लेखक; तथा पत्रकार ; ज०—१९१४ खंडवा; सा०—सह० संपा०—कर्मवीर १९३४-३५; मंत्री—हरिजन सेवक संघ १९३६-३८; किसान कैंपत्रिपुरी कांग्रेस; राष्ट्रीय प्रिंटिंग प्रेस के संस्थापक; र्च०—लगभग ५० कहानियाँ प्रतिष्ठित पत्रों में प्रकाशित; अप्र०—आश्रम—उप०; प०—खंडवा, मध्य-प्रांत।

सुखदेवबिहारी मिश्र, रा० ब०, बी० ए०,—साहित्य संसार में सुविख्यात मिश्र बंधुओं में से एक; ज०—अप्रैल १८७८ इटौंजा ; शि०—लखनऊ ; सा०—सीतापुर कान्यकुब्ज कांफ्रेंस के

सभापति १९१३ ; छतरपुर राज्य के दीवान १९१५-२२ ; लखनऊ और प्रयाग विश्व-विद्यालय की कोर्ट के सम्मानित सदस्य ; रच०—भारतीय इतिहास पर हिंदी साहित्य का प्रभाव ; अपने बड़े भाई डा० श्यामविहारी मिश्र के साथ मिलकर अनेक साहित्यिक ग्रंथों की रचना की जिनका हिंदी संसार में काफी सम्मान है ; प०—गोलागंज, लखनऊ।

सुखसंपतिराय भंडारी—लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार; इतिहासज्ञ तथा राजनैतिक नेता ; ज०—१८६५ ; सा०—संपादक—वेंकटेश्वर समाचार १९१३ ; सद्धर्म प्रचारक—१९१४, पाटलिपुत्र-१९१५, मल्लारि मार्तंड–१९१६, नवीन भारत १९२३, किसान १९२६-३०; अ० भा० कांग्रेस कमेटी के सदस्य, 'हिंदी इंगिलश-डिक्शनरी' के यशस्वी संपादक; रच०—भारतदर्शन, तिलक-दर्शन, भारत के देशी राज्य, राजनीति विज्ञान ; वि०—इसके अतिरिक्त लगभग अठारह पुस्तकें लिखी हैं जिनका हिंदी संसार में काफी मान है; भारत के देशी राज्य पर इंदौर दरबार से ५०००) का पुरस्कार मिला ; इनकी हिंदी इंग्लिश डिक्शनरी (तीन भाग) की अनेक विद्वानों और वाइसराय महोदय ने भी भूरि भूरि सराहना की है ; प०—डिक्शनरी पब्लिशिंग हाउस, ब्रह्मपुरी, अजमेर।

सुगणचंद्र शर्मा शास्त्री, सा०र०—प्रसिद्ध हिंदी लेखक; शि०—प्रयाग और पंजाब ; भू० पू० प्रधान पदाधिकारी पटियाला संस्कृत विद्यालय ; भू० पू० संस्कृत-प्रधानाध्यापक 'हाईस्कूल' में; हिंदू महासभा के "हिन्दू आउट लुक" में भू० सहकारी संपा० ; सार्व०—लगभग ५० आदमियों को हिंदी

लिपि से साक्षर कराया; जिनमें कई मुसलमान हैं कई पंजाब के परीक्षार्थियों की सहायता; तथा साहित्य और समाज संबंधी अनेक लेखों की रचना प०—लाहौर।

सुजानसिंह रावत—विचारवान्, बहुश्रुत, साहित्य-रसिक और कवि; ज०—१८४८; ज्ञा०—संस्कृत, फारसी; रच०—गजेंद्र-मोक्ष; अप्र०—अनेक फुटकर कविताओं के तीन-चार संग्रह; प्रि० वि०—इतिहास और काव्य; वि० लगभग पचास वर्ष के दीर्घ काल से हिंदी-सेवा में संलग्न; मेवाड़ के 'बत्तीस' सरदार हैं; प०—स्वामी भगवानपुरा, मेवाड़।

सुतीक्ष्ण मुनिजी उदासीन—सनातन धर्मोपदेशक—हिंदी के विशेष प्रेमी और सुलेखक; ज०—१८६०; ज्ञा०—हिंदी, संस्कृत, गुरुमुखी, अंगरेजी, उर्दू; सा०—भूतपूर्व प्रधान मंत्री, गुरु श्रीचन्द्र उदासीन, उपदेशक सभा तथा स्वतंत्र प्रचार कार्य; रच०—"गुरू मत का सच्चा प्रचार", जगत गुरू की जीवनी, "सच्चा इतिहास समाचार", "मुनि परशुराम सूत्र की टीका", "जगद् गुरू का संतोपदेश", "हिन्दू धर्मरक्षा भजनावली", जीवनी बाबा हरीदासजी उदासीन, "सच्चे का बोलबाला, आदि; प्रि० वि०—हिंदू, हिंदी, हिन्दुस्तान की उन्नति; प०—श्रीसाधु बेला तीर्थ, सक्खर, सिंधु।

सुदर्शन—यशस्वी कहानी लेखक, औपन्यासिक तथा नाटक एवं गीतिकार; रच०—सुदर्शन-सुमन, सुदर्शन सुधा, तीर्थ यात्रा, सुप्रभात, पुष्प-लता, गल्पमंजरी, चार कहानियाँ, भाग्यचक्र, बच्चों का हितोपदेश, राजकुमार सागर, झंकार; वि०—इस समय सिनेमा-क्षेत्र में गीत लिख रहे हैं; इस क्षेत्र में भी आपने काफी यश पाया है;

प०—बंबई।

सुदर्शनाचार्य—साहित्य-प्रेमी लेखक और नाटककार; रच०—अनर्घनल - चरित्र नाटक; अप्र०—दो लेख-संग्रह; प०—लुधियाना।

सुंदरलाल गर्ग—प्रसिद्ध लेखक, साहित्य-प्रेमी विद्वान् और पत्रकार; भूतपूर्व संपादक, साप्ताहिक, 'नवज्योति'; प०—अमर प्रेस, अजमेर।

सुंदरलाल दुबे "निर्बल-सेवक"—साहित्य - प्रेमी लेखक और सार्वजनिक कार्यकर्त्ता; ज०—१९००; सा०—प्राथमिक हिंदी शाला में प्रधानाध्यापक हैं; संस्था०—निर्बल - सेवक -औषधालय; और हिंदी - साहित्य-समिति; रामायण मंडल के मंत्री; रामायण - परीक्षा - केंद्र के व्यवस्थापक; अप्र० रच०—गरीब ग्रामीण; प्रि० वि०—साम्यवाद; प०—निर्बल-सेवक - आश्रम, सोहागपुर।

सुंदरलाल सक्सेना—खड़ी बोली के उदीयमान कवि और अध्ययनशील विद्यार्थी; ज०—१९१६; रच०—श्रीकृष्णजन्म (काव्य) अप्र०—संस्कृत के कुन्दमाला नाटक का अनु०; प०—कोटरा, जालौन।

सुधाकर झा, डाक्टर, एम० ए०, पी-एच० डी० (लंदन)—तुलनात्मक भाषा-विज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान्, साहित्य-प्रेमी लेखक और कवि; ज०—फरवरी, १९०६; १९३१ में पी-एच० डी० की डिग्री के लिए विलायत गए; विभिन्न भाषाओं के अध्ययनार्थ योरोपीय देशों की राजधानियों में भ्रमण किया; अप्र० रच०—विद्वत्तापूर्ण आलोचनात्मक लेखों और सुंदर श्लोकों के दो - तीन संग्रह; प०—अध्यापक, पटना कालेज, पटना।

सुधींद्र, एम० ए०—सा० र०; सुप्रसिद्ध कवि और गीतकार; ज०—१९१२;

भू० पू० संपादक हिंदी पत्रिका, जीवन साहित्य ; रच०—शंखनाद, मेरे गीत, प्रलयवीणा, जौहर, अमृत-लेखा, अमरगान ; अप्र०—सुहागिनी, जनार्दन के चरण, छायालोक, तीर्थरेणु, झलक, नवतारा ; प०—हिंदी प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ, पो० निवाई, जयपुर राज्य ।

सुबोधचंद्र शर्मा 'नूतन' 'प्रभाकर', सा० वि०—प्रसिद्ध हिंदी लेखक ; ज०—१९०६, जबलपुर ; सा०—अध्यापन का कार्य कर रहे हैं ; गुजराती की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद, विविध विषयों पर अनेक लेख रच० ; अप्र०—त्योहारों की कहानियाँ, नूतन हिंदी प्रवेश, प्रेमसागर की कहानियाँ, हमारा उद्धार कैसे हो ? ; प्रि० वि०—शिक्षा साहित्य, बाल-मनोविज्ञान ; प०—प्रधान संपादक "शिक्षा सुधा", मंडी धनौरा, मुरादाबाद (यू० पी०) ।

सुबोध मिश्र 'सुरेश'—उदीयमान कवि, हास्यलेखक और नाटककार ; ज०—१९१८ ; शि०—राँची ; सा० संचा०—अन्नपूर्णा मंडल जिसकी दो शाखाएँ हुईं (१) अन्नपूर्णा पुस्तकालय और (२) अन्नपूर्णा दातव्य औषधालय ; सह० संपा० "अन्नपूर्णा", हस्तलिखित ; वर्तमान मिश्रा ड्रामेटिकल क्लब के जन्मदाता; भूत० प्रधान संपा० "छोटा नागपूर संवाद" ; ज्ञा०—हिंदी, गुजराती, मराठी और बँगला ; वि०—कुशल पत्रकार तथा सफल नाट्यकार और चित्रकार ; रच०—प्रारंभ में स्टेज पर खेले जानेवाले नाटक जिनमें समाज की बलिवेदी, वोट की चोट और कांग्रेसी हौवा प्रसिद्ध हैं ; इसके अतिरिक्त सुरेश रुद्रनारायण, लंकेश, लालभाई और पैरोडी नामक अन्य नाट्य, चित्रपट, साहित्य तथा

बालोपयोगी अनेक अप्र० संग्रह ; प०—संपादक, "भारती", हजारीबाग।

सुभद्राकुमारी चौहान, एम० एल० ए०—राजनीतिक और साहित्य-क्षेत्र में काम करनेवाली प्रथम हिंदू महिला, अत्यंत लोकप्रिय कवयित्री और सुप्रसिद्ध कहानी-लेखिका ; रच०—काव्य—मुकुल, सभा के खेल (बालोपयोगी), झाँसी की रानी, त्रिधारा; कहानी—बिखरे मोती, उन्मादिनी ; संपा०—कहानी - कल्पद्रुम ; वि०—'मुकुल' पर प्रथम और बिखरे मोती पर द्वितीय सेक्सरिया तथा 'तीन-बच्चे' नामक कहानी पर काशीराम पुरस्कार आपको मिला प०—जबलपुर।

सुमति शंकरलाल कवि डी० एच० वी० एम०—विदुषी हिंदी लेखिका और सेविका ; ज०—१९०० ; सा०—दीन, निराश्रितों को सहायता दिया करती हैं, विद्यार्थियों को परीक्षाओं के लिए तैयार करने में सहायता भी देती हैं; आपने अनेक पुरस्कार भी पाए हैं ; आप साप्ताहिक पत्रों में 'हिंदी ही हिन्द की एक भाषा हो सकती है' के बारे में लेख भेजती हैं, आपने "पियाउ-अने बीजी बातों" लिखी हैं ; प्रि० वि०—गृहकार्य ; प०—नांहोल, (अहमदाबाद), ए० पी० रेलवे।

सुमित्राकुमारी सिनहा—बुद्धिमती महिला, कवयित्री और सुलेखिका ; ज०—१९१३ ; रच०—अचल-सुहाग, वर्षगाँठ, आशापर्व, विहाग ; वि०—आप हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री महेशचरण सिनहा की सुपुत्री और चौधरी राजेंद्रशंकर की धर्मपत्नी हैं ; प०—युगमंदिर, उन्नाव।

सुमित्रानंदन पंत—

नए युग के प्रवर्तक, यशस्वी रहस्यवादी कवि और सुलेखक ; ज०—२४ मई १६०० कौसानी-अल्मोड़ा ; कई वर्ष तक 'रूपाभ' मासिक का संपादन किया ; रच०—उच्छ्वास, गुंजन, ग्रंथि, पल्लव, वीणा, ज्योत्स्ना, युगांत, युगवाणी, पल्लविनी, हार-उप० ; प०—अल्मोड़ा।

सुमेरचंद्र जैन, शास्त्री, सा० र०—न्यायतीर्थ, प्रसिद्ध जैनी हिंदी लेखक ; शि०—आगरा, बंगाल और बंबई ; रच०—'शकुन सिद्धांत दर्पण' 'धर्मशिक्षा' और 'भणाभर' ; कई आलोचनात्मक साहित्यिक लेख ; प०—संचालक, वीर सरस्वती भवन, सरधना मेरठ।

सुरेंद्र झा 'सुमन' ; सा० आ०—विहार के यशस्वी पत्रकार, सुकवि और सुलेखक ; 'मिथिला-मिहिर' के संपादक ; अनेक स्फुट कहानियाँ और कविताएँ ; प०—दरभंगा।

सुरेशचंद्र जैन—आरा-निवासी सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक; बिहारी कहानी-लेखकों की श्रेष्ठ कहानियों के संग्रह, 'प्रतिबिंब' के सफल संपा०; रच०—जल-समाधि; अप्र० रच०—दो-तीन कहानी-संग्रह। प०—आरा।

सुरेश्वर पाठक, वि० लं०—रतैठानिवासी सुंदर लेखक ; ज०—१६०६ ; 'देश' के भू० पू० सहकारी संपादक ; इस समय 'प्रभाकर' का संपादन कर रहे हैं ; रच०—बंग विजय, रचना-विजय, शबरी ; कई पाठ्य-पुस्तकें ; प०—पटना।

सुरेशसिंह कुँवर, बी० एस-सी०—उदीयान लेखक, ग्राम-सुधारक ; ज०—१६१२; रच०—कृषि सुधार ; प०—बलवंत राजपूत कालेज, आगरा।

सूर्यकांत शास्त्री, डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्०—

सुप्रसिद्ध अध्ययनशील विद्वान् संस्कृतसाहित्य के प्रकांड पंडित और कुशल आलोचक; शि०—ज्वालापुर महाविद्यालय; सा०—पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी-संस्कृत परीक्षासमिति के सदस्य; रच०—"हिंदीसाहित्य का इतिहास" तथा अनेक पाठ्य-पुस्तकें; प०—अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, ओरियंटल कालेज, लाहौर।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'—सार्थक उपनामधारी युगांतर कवि और गंभीर सुलेखक; ज०—१८९६; ले०—१९१९; मतवाला का एक वर्ष तक संपादन किया; रच०—परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता; उप०—अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा; कहा०—लिली, सखी, सुकुल की बीबी स्के०—कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा; आलो०—प्रबंधप्रतिमा, रवींद्र-कविता कानन, प्रबंधपरिचय, हिंदी बंगला शिक्षा, महाभारत, राणाप्रताप, भीष्म, प्रह्लाद, ध्रुव, शकुंतला; अनु०—श्रीरामकृष्ण चरितामृत ४ भाग, परिव्राजक, स्वामी विवेकानंद के भाषण, देवी चौधरानी, कपालकुंडला, आनंदमठ, चंद्रशेखर, कृष्णकांत का विल, दुर्गेशनंदिनी, रजनी, युगलांगुलीय, राधारानी, तुलसीकृत रामायण की टीका, वात्स्यायन कृत कामसूत्र; अप्र०—गोविंददास पदावली, चमेली, रसअलंकार; प०—उन्नाव।

सर्यदेवनारायण श्रीवास्तव—कुशल कहानी लेखक अभिनेता तथा नाटककार; रच०—सरिता, चुंबक, देशभक्त, पराया पाप, समाज की चिता, होमशिखा, करुणपुकार, अतीत भारत, ठंडी आग; प०—समस्तीपुर, दरभंगा।

सूर्यनारायण दीक्षित एम० ए०, एल-एल० बी०, एडवोकेट—सफल अनुवादक एवं प्रसिद्ध लेखक; ज०—१८८२ ; शि०—लखीमपुर-खीरी, बरेली, सेंट्रल हिंदू कालेज, केनिंग कालेज, लखनऊ; वि०—राजपूताना के एक स्टेट के दीवान, तदुपरांत महाराणा कालेज श्रीनगर-काश्मीर में अंग्रेजी के प्रोफेसर रहे; अब वकालत कर रहे हैं ; रच०—'मनहरण' उपन्यास का हिंदी में अनुवाद, चंद्रगुप्त नाटक का भी बंगला से हिंदी में अनुवाद तथा अनेक रोचात्मक, आलोचनात्मक तथा गंभीर लेख, स्त्री शिक्षा ; प०—वकील, लखीमपुर, खीरी।

सूर्यनारायण व्यास, ज्योतिषाचार्य—ज्योतिष के प्रकांड पंडित और सुलेखक ; ज०—मार्च १९०१ उज्जैन ; ज्ञा०—संस्कृत, गुजराती, मराठी, फारसी, प्राकृत, पुरातन लिपि ; नर्मदा वैली रिसर्च सोसाइटी के सदस्य, संस्कृत हिंदी में कई पुस्तकें प्रकाशित ; 'कालिदास की अलका' और 'वाल्मीकि की लंका' नामक दो निबंध साहित्य की स्थायी चीज हैं, यूरोप यात्रा पर एक पुस्तक प्रकाशित हो रही है ; इस समय 'विक्रम' के संपादक हैं ; प०—उज्जैन।

सूर्यभानु, एम० ए० (लंदन)—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान् और ख्यातिप्राप्त लेखक; सा०—पंजाब विश्वविद्यालय के फेलो ; अप्र० रच०—अनेक साहित्यिक विषयों पर मननशील लेख-संग्रह ; प०—हेडमास्टर, डी० ए० वी० हाई स्कूल, लाहौर।

सूरजमल गर्ग—बी० ए०, एल-एल० बी०, सा० र० ; रच०—वाद परिचय; प०—वकील, हाई कोर्ट, ६२ मेन स्ट्रीट, मह्न, मध्यभारत।

सोमदेव शर्मा शास्त्री, सा० आ०—ज०—१९०७ ; शि०—अलीगढ़ ; ले०—१८ जनवरी १९२६; रच०—आयुर्वेद प्रश्नोत्तरावली, आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास, आयुर्वेद-प्रकाश की संस्कृत तथा हिंदी व्याख्या; अप्र०—काव्य मीमांसा का अनुवाद, वाग्भट्ट रचित, अष्टांगसंग्रह की हिंदी व्याख्या, सोमसुधा ; संपादक—अश्विनीकुमार (१९३६-४०) ; प्रि० वि०—वैदिक संस्कृति तथा आयुर्वेद साहित्य का अन्वेषण ; प०—ग्राम मई, पो० निसावर, मथुरा।

सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०, यशस्वी राष्ट्रीय कवि एवं पत्रकार ; दैनिक अधिकार का कई वर्षों तक सफलता-पूर्वक संपादन किया ; रच०—भैरवी, चित्रा ; अप्र०—कई सुंदर कविता-संग्रह ; प०—बिंदकी।

हजारीप्रसाद द्विवेदी—शास्त्राचार्य, शांतिनिकेतन में अध्यापक, समालोचक और विद्वान् ; 'विश्वभारती पत्रिका' और अभिनव भारती ग्रंथ-माला के संपादक ; रच० — मौलिक — सूर-साहित्य, हिंदी साहित्य की भूमिका, पंडितों की कहानियाँ, कबीर ; अनु०—विश्व-परिचय, मेरा बचपन ; लाल कनेर, प्रबंध चिंतामणि, प्रबंधकोश, पुरातन प्रबंध संग्रह ; अप्र०—प्राचीन भारत का कला विकास ; वि०—बंबई हिंदी विद्यापीठ के पदवी दान समारोह के आप सम्मानित अध्यक्ष चुने गए ; प०—हिंदी भवन, शांतिनिकेतन, बंगाल।

हनूमानप्रसाद पोद्दार—'कल्याण' के यशस्वी संपादक और सुप्रसिद्ध लेखक; ज०—१८८८ ; अठारह वर्षों से धार्मिक कल्याण और कल्याण कल्पतरु (अंग्रेजी संस्करण)

का संपादन कर रहे हैं; अनेक; धार्मिक पुस्तकें लिखी और संपादित की हैं; प०—गीताप्रेस, गोरखपुर।

हरदास शर्मा 'श्रीश'—प्रसिद्ध कवि; ज०—१६०४; ज्ञा०—उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी; सा०—सम्मेलन - परीक्षा-प्रचार; स०—सम्मेलन-विद्वान् परिषद्; स्था०—सकरार - साहित्य - मंडल; र०—अनेक अप्रकाशित कविता-संग्रह जिनमें 'सतसई' भी है। प्रि० वि०—वीररस की राष्ट्रीय कविताएँ, प्रकृति-प्रेमी हैं; प०—हेडमास्टर, सकरार, झाँसी।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी, ज्योतिषाचार्य—यशस्वी पंचांग-कार, लब्धप्रतिष्ठ ज्योतिष-विद्वान् तथा सुलेखक; ज०—१६०६; शि०—उज्जैन तथा जयपूर; सा०—भू० संपा०—श्रीमार्तण्ड पंचाङ्ग; इसके अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक सेवाओं द्वारा हिंदी प्रचार; स्थानीय रियासतों में राष्ट्रभाषा हिंदी आप ही के प्रचार का उद्योग है; र०—चेतावनी समीक्षा जिसकी दो हजार प्रतियाँ बिना मूल्य वितरित हुईं तथा २५०) का उदयपूर की ओर से पारितोषिक मिला; इसके अतिरिक्त श्रीसप्तपदी हृदय और श्रीपरशुराम-स्तोत्र का अनुवाद तथा गौतम आदि अन्य रचनाएँ प्रि० वि०—ज्योतिष; प०—संपादक 'श्रीस्वाध्याय', सोलन, शिमला।

हरनामसिंह चौहान—इतिहास - प्रेमी विद्वान् और सुलेखक; ज०—१८८६; र०—आर्यन-विजय, भारत राजवंशी इतिहास, चौहान-चंद्रिका, परमार मार्तण्ड और तकली गान; प्रि० वि—इतिहास; प०—मालापुरा सोहागपूर, सी० पी०।

हरशरण शर्मा, सा० र०—सुप्रसिद्ध लेखक और

हिंदी प्रचारक ; शि०—रीवाँ तथा प्रयाग ; हिंदी साहित्य के और सम्मेलन के विद्यार्थियों में अवैतनिक अध्यापन ; रच०—'मानसतरंग', सुषमा', 'मधुरी', अनेक ग्रामसंबंधी सामाजिक और साहित्यिक लेख ; प०—रीवाँ।

हरिकृष्ण 'जौहर'—उर्दू के हिंदी साहित्यकार, सुलेखक, नाटककार और औपन्यासिक; ज०—१८८०; ज्ञा०—उर्दू-संस्कृत, अंग्रेजी, फ़ारसी, बंगला, मराठी तथा गुजराती ; ले०—१८६३ ; सा०— संपादन – मित्र, उपन्यासतरंग, द्विजराज . वेंकटेश्वर समाचार, भारत-जीवन, बंगवासी ; नागरी प्रचारिणी सभा, कलकत्ता की स्थापना ; मदनथियेटर्स लिमिटेड में नाटककार रहे ; कई कंपनियों में स्टेज और फिल्म के लिए नाटक लिखने का काम किया ; रच०— उप०—कानिस्टेबुल वृत्तांत माला, भूतों का मकान, नर पिशाच, भयानक भ्रमण, मयंकमोहिनी, शीरीं फरहाद, जादूगर ; ऐति०—अफगानिस्तान का इतिहास, जापानवृत्तांत, देशी राज्यों का इतिहास, रूस-जापान-युद्ध, सागर-साम्राज्य, सिक्ख-इतिहास, नेपोलियन ; वि-विध—हाजी बाबा, सर्वे सेटिलमेंट, ट्रांसलेशन एंड रीट्रांसलेशन, भूगर्भ की सैर, विज्ञान और बाजीगर, फकीर मंसूर ; अनु०—श्रीमद्भागवत, महाभारत, अध्यात्मरामायण, कल्कि-पुराण, मार्कंडेय पुराण, काशी, याज्ञवल्क्य संहिता, अत्रि-संहिता, हारीत संहिता ; ना०—सावित्री - सत्यवान, पति-भक्ति, प्रेमयोगी, वीर-भारत, कन्याविक्रय, चंद्र-हास, सतीलीला, भार्यापतन, प्रेमलीला, औरत का दिल, ऊषाहरण, देश का लाल, सालिवाहन ; प०—'वेंकटे-

श्वर समाचार' आफिस, बंबई।

हरिकृष्ण राय, सा० र०—सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक; संस्थापक "हिंदी प्रचारिणी सभा", बलिया और—सम्मेलन-परीक्षा केन्द्र, बैरिया (बलिया), "श्री भवनाथ पुस्तकालय" वाजिदपुर; र० 'राष्ट्र भाषा' और 'तुलसी छंदोमंजरी' तथा अनेक साहित्यिक आलोचनात्मक लेख; प०—हेडमास्टर, मिडिल स्कूल, बलिया।

हरिकृष्ण त्रिवेदी—यशस्वी पत्रकार और सुलेखक; ज०—१६१६; शि०—अलमोड़ा; सा०—"सैनिक" पत्र का संपादन; राजनीतिक व आर्थिक विषयों पर लेख; सुभाषचन्द्रजी की जीवनी, "हंस" कार्यालय में कार्य; प्रबोधकुमार कृत "महाप्रस्थानिरपथे" का हिंदी अनुवाद, कहानियाँ; इस समय 'हिंदुस्तान' दैनिक के संपादकीय विभाग में; प०—दिल्ली।

हरिदत्त दुबे, एम० ए०—सुप्रसिद्ध साहित्यप्रेमी और अध्ययनशील सुलेखक; ज० १८६६; शि०—सागर जबलपुर; सा०—परीक्षक 'साहित्यरत्न' परीक्षा; र०—अनेक पाठ्य पुस्तकें तथा अप्रकाशित लेख और काव्यसंग्रह; ज्ञा०—हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत; वि०—हिंदी और अंग्रेजी के प्रभावशाली लेखक और कार्यकर्ता; प०—हिंदी अध्यापक, राबर्सटन कालेज, जबलपुर।

हरिदत्त शर्मा, शास्त्री, वेदांताचार्य—आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० भीमसेन शर्मा दर्शनाचार्य के सुपुत्र, और अध्ययनशील लेखक; सा०—हिं० सा० सम्मे० की कार्यकारिणी के उत्साही और प्रतिष्ठित सदस्य; सा०—दिवाकर, ब्राह्मण आदि पत्रों के सम्पादक;

चि०—संस्कृत कविता में प्रवीण ; प०—मुख्याधिष्ठाता, महाविद्यालय, ज्वालापुर ।

हरिनामदास महंत, परिव्राजकाचार्य ; ज०—१८८० ; शि०—सक्खर ; सा०—सनातन धर्म युवक सभा, पंचायती गौशाला के सभापति ; सिंध हिंदी विद्यापीठ सक्खर सिंध के संस्थापक—सभापति ; र०—विचार-माला, ओरिजिन एंड ग्रोथ आफ उदासी, विष्णुसहस्रनाम, कृष्णजी मुरली, धन्य सद्गुरु, प्राचीन मुनियों का पुरुषार्थ, गुरुवनखंडी जपुजी, जीवन-चरितामृत, जगद्गुरु श्रीचंद्र-जी की माया-सटीक ; प्रि० वि०—हिंदू - संस्कृति तथा हिंदी प्रचार ; प०—श्रीसाधु-बेला तीर्थ, सद्गुरु वनखंडी आश्रम, सक्खर, सिंध ।

हरिनारायण शर्मा, पुरोहित, बी० ए, विद्या-भूषण—परमादरणीय वयोवृद्ध विद्वान् और सहृदय साहित्यिक ; ज० १८६४ ; सा०—जयपुर में हिंदी का प्रचार करने का विशेष प्रयत्न किया ; पारीक पाठशाला हाई स्कूल को सात हजार का दान दिया ; बालाबक्श राजपूत चारणमाला के संस्थापक ; र०—संपा०—विशूचिका निवारण, तारागण सूर्य हैं, महामति मि० ग्लेडस्टन, सतलड़ी, सुंदर सार, महाराजा मिर्जा राजा मानसिंह प्रथम, महाराजा मिर्जा जयसिंह प्रथम, व्रजनिधि ग्रंथावली, सुंदर ग्रंथावली, महाकवि गंग के कवित्त, गुरु गोविंदसिंह के पुत्रों की धर्म-बलि ; प० जयपुर ।

हरिप्रसाद द्विवेदी 'वियोगी' हरि—द्वैतवादी सहृदय साहित्यिक, भावुक गद्यगीतकार, कवि तथा लब्धप्रतिष्ठ समालोचक; ज०—१८९६ ; छत्रपुर राज्य; प्रयाग में रहकर सम्मेलन पत्रिका और सूरसागर का

संपादन किया ; १९३२ से गांधी सेवा - संघ के सदस्य हुए और 'हरिजन- सेवक' का संपादन किया ; रच०—प्रेमशतक, प्रेमपथिक, प्रेमांजलि, प्रेमपरिचय, संक्षिप्त सूरसागर, तरंगिनी, शुकदेव, श्रीछद्मयोगिनी, साहित्य-विहार, कविकीर्तन, अनुराग वाटिका, ब्रजमाधुरीसार, चरखा स्तोत्र, महात्मा गांधी का आदर्श, बढ़ते ही चलो, चरखे की गूँज, वकील की रामकहानी, असहयोग वीणा, वीरवाणी, श्रीगुरु-पुष्पांजलि, वीरसतसई, पगली, मंदिरप्रवेश, विश्व-धर्म, प्रबुद्धयामुन, विहारी-संग्रह, सूरपदावली, वृत्त-चंद्रिका, भजनमाला, योगी अरविंद की दिव्यवाणी, बुद्धवाणी, संतवाणी, ठंडे छींटे, प्रेमयोग, गीता में भक्ति-योग, भावना, प्रार्थना, अंतर्नाद, विनयपत्रिका की टीका, तुलसी सूक्तिसुधा, हिंदी-गद्य रत्नावली, हिंदी पद्यरत्नावली, मीराबाई पदावली; प०—दिल्ली।

हरिभाऊ उपाध्याय—राजनीति-विशारद, राष्ट्रीयता के पुजारी, अनुवादक और सुवक्ता ; ज०—१८९२ ; शि०—काशी; ले०—१९१२; ज्ञा०—अंग्रेजी, गुजराती, मराठी और उर्दू ; भू० संपा०—'नवजीवन', त्याग-भूमि', 'मालव-मयूख', 'राज-स्थान' 'जीवनसाहित्य ; मौ० रच०—स्वतंत्रता की ओर, बुद्बुद और स्वगत, युगधर्म (जब्त); अनु०—रच०—जीवन का सद्व्यय, कांग्रेस का इतिहास, मेरी कहानी, आत्मकथा, सम्राट् अशोक और रागिनी, काबूर का जीवन-चरित्र ; प०—ठि० सस्ता साहित्य मंडल, कनाट सरकस, नई दिल्ली।

हरिमोहन झा, एम० ए०—कविवर जन-सीदन के सुपुत्र और हास्यरस के

यशस्वी सुलेखक; ज०—१९०८ ; र०—भारतीय-दर्शन परिचय, तीस दिन में संस्कृत, तीस दिन में अंग्रेजी, संस्कृत रचना-चंद्रोदय,संस्कृत-रचनाचंद्रिका,अनुवाद-चंद्रोदय, कान्यादान, उप० ; प०—प्रोफेसर आफ फिलासफी बी० एन० कालेज, पटना।

हरिवंशराय 'बच्चन'—यशस्वी हालावादी प्रगतिशील कवि ; ज०—२७ नवंबर १९०१ ; शि०—प्रयाग ; ले०—१९३० ; र०—तेरा हार, खैयाम की मधुशाला, मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशानिमंत्रण, एकांत संगीत, आकुलअंतर, प्रारंभिक रचनाएँ ; प०—प्रयाग।

हरिश्चंद्रदेव वर्मा, कुँवर, 'चातक'—सहृदय, भावुक और यशस्वी कवि ; ज०—१९०८ ; र०—नैवेद्य ; अप्र०—वासंती ; पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक सुंदर लेख तथा कविता-संग्रह; शीघ्र ही 'कामायनी' के ढंग का एक सुंदर महाकाव्य प्रकाशित करनेवाले हैं ; प०—शांतिकुटीर, अतरौली, छिबरामऊ (फर्रुखाबाद)।

हरिशरण शर्मा 'शिव', सा० र०—प्रसिद्ध गद्य-पद्य लेखक ; ज०—१९०२, माधवगढ़ ; र०—मानस-तरंग (गद्य काव्य), सुषमा और मधुश्री (काव्य); प०—एकांउटेंट, डाइरेक्टर आव एजुकेशन, रीवाँ राज्य।

हरिशंकर शर्मा—कविवर 'शंकर' जी के सुपुत्र, पत्रकार कला के आचार्य, महृदय विद्वान् और यशस्वी सुलेखक ; भू० पू० संपा०—आर्यमित्र, प्रभाकर, सैनिक, साधना ; र०—चिड़िया घर, पिंजड़ा पोल, गौरव-गाथा चार भाग, जीवन-ज्योति, स्वर्गीय सुमन, विचित्र विज्ञान, मेवाड़महिमा, महकते मोती, मेवाड़ गौरव ;

संपा०—हिंदी गद्य विहार, सुदामा चरित; प०—आगरा।

हरिहर निवास द्विवेदी, एम० ए०, एल-एल० बी०—साहित्य-प्रेमी प्रसिद्ध विद्वान् और अध्ययनशील आलोचक; ज०—८ जुलाई, १९१२, शिवपुरी ; शि०—ग्वालियर, कानपुर, नागपुर ; सा०—पोहरी और मुरार में सम्मे० की परीक्षाओं के केंद्र खुलवाए; रच०—महात्मा कबीर, महारानी लक्ष्मीबाई, हिंदी साहित्य, श्रीसुमित्रानंदन पंत और गुंजन ; शासन - शब्द-संग्रह, ग्वालियर राज्य के विधानों तथा शासन कार्य में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का संग्रह, कानून इकशफा-टीका, कानून सिवे वुलूग-टीका ; अप्र०—राजनीति विज्ञान, प्रसाद और कामायनी, हिंदी साहित्य की एक शताब्दी—१९०० से २००० ; प०—कोडीफिकेशन आफीसर, ग्वालियर राज्य।

हरिहर शर्मा—कर्मनिष्ठ राष्ट्रभाषा-सेवी ; १९३८-४० तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के परीक्षामंत्री रहे ; इस समय स्वतंत्ररूप से हिंदी प्रचार कर रहे हैं ; प०—वर्धा।

हरिकृष्ण प्रेमी—सुप्रसिद्ध कवि, साहित्य-प्रेमी, सुलेखक और विचारशील पत्रकार ; ज०—गुना, ग्वालियर ; लेख०—१९२७ ; भूत० सहायक संपा०—'त्यागभूमि', 'कर्मवीर' और मासिक 'भारती' लाहौर ; एक वर्ष बंबई में रहकर फिल्मों के कथानक, संवाद और गीत लिखे ; लाहौर में भारती प्रेस की स्थापना की ; अपनी पुस्तकें प्रकाशित कीं ; मासिक 'सेवा' भी निकाली ; सामयिक साहित्य-सदन लाहौर के संस्थापकों में एक, मासिक 'शिक्षा' के वर्तमान संपादक ; रच०—आँखों में, जादूगरनी अनंत के पथ पर, अग्निगान,

प्रतिभा ; नाटक—पाताल-विजय, रक्षाबंधन, 'शिवा-साधना, प्रतिशोध, आहुति, विषपान, 'मित्र - विषपान, छाया, बंधन ; एकांकी—मंदिर ; प०—लाहौर ।

हरीराम त्रिवेदी 'हरि'—सा० आ० ; ज०—१८७३ ; ज्ञा०—संस्कृत, हिंदी, उर्दू ; ब्रजभाषा के मर्मज्ञ ; वि०—ख्याल, लावनियाँ बहुत बनाईं, प्रसिद्ध समस्या - पूरक हैं ; रच०—कैकेयी, हरदौला, कंससभा, प०—रतेह, दमोह, सी० पी० ।

हरेकृष्ण भवन, बी० ए०, एल-एल, बी० ऐडवो-केट—स्वतंत्र विचारक, गंभीर विद्वान् और मननशील लेखक ; ज०—१४ जनवरी, १८८० ; शि०—लखनऊ ; ज्ञा०—उर्दू, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी ; सा०—म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के समय समय पर सदस्य ; १८६६ से १९१९ तक कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में प्रतिनिधि ; हिंदू यूनियन क्लब और प्रेम-सभा के संस्थापकों में ; अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के लखनऊ अधिवे-शन में प्रमुख सहयोग ; जातीय मासिक 'खत्री हितैषी' के प्रधान संपादक—१९३६ से ४१ तक काली-चरण हाई स्कूल के मैनेजर और हितैषी; अप्र०—रच०—'सिद्धांत-निर्णय (नाटक—यह एक बार खेला भी जा चुका है), शंकराचार्य की शतश्लोकी, ऋग्वेद के कुछ अंश और ईशोपनिषद् का पद्यानुवाद ; 'प्रि० वि०—दर्शन और कविता ; प०—चौक, लखनऊ ।

हर्पुल मिश्र, कविराज—बी० ए०, प्रभाकर—प्रसिद्ध सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, साहित्य प्रेमी और अध्ययनशील कवि ; शि०—पंजाब विश्व-विद्यालय ; सा०—छत्तीस-गढ़ श्रमजीवी संघ के १९३८

से अध्यक्ष ; स्थानीय कांग्रेस कमेटी के भूत० सभापति ; धुईखदान स्टेट कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष ; तथा गांधीजी से मिलने के लिए स्थानीय प्रतिनिधि ; सत्याग्रह आंदोलन में दो बार जेल - यात्रा ; रायपुर हिंदू सभा के भूत० मंत्री ; लेख०—१९३० ; रच०—हपु ́लधर्म-विवेचन; अप्र०—आयुर्वेद - साहित्य - संबंधी विभिन्न लेख-संग्रह; प०—बालाघाट, सी० पी० ।

हृषीकेश चतुर्वेदी—सहृदय कलाप्रेमी, विद्वान् ; हिंदी लेखक और मातृभाषा के अनन्यसेवक ; ज०—१९०८ ; ले०—१९२२ ; रच०—विजया - वाटिका, गीतांजलि, रसरंग, संयुक्त वर्ण विज्ञान, मेघदूत, वृद्ध नाविक; अप्र०—गीता, भंग का लोटा, गागर में सागर ; वि०—हाल ही में आपने ललित कला-प्रदर्शनी का उद्घाटन किया था जिसमें अनेक विचित्र वस्तुओं और हस्त-लिखित दुष्प्राप्य ग्रंथों का प्रदर्शन किया गया था ; प०—आगरा ।

हृषीकेश शर्मा—अध्यापन द्वारा अहिंदी प्रांतों में प्रचार-प्रसार करनेवाले विद्वान् साहित्य सेवी ; सबकी 'बोली' के प्रबंध संपादक रहे ; इस समय 'राष्ट्रभाषा प्रचार' के प्रबंध संपादक हैं ; प०—नागपुर ।

हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय', सा० प्रा०—परसिया-निवासी प्रसिद्ध कवि और पत्रकार ; 'बालक', 'कर्मयोगी', 'आरती' आदि के यशस्वी लेखक ; 'बालक' के संपादकीय विभाग में वर्तमान; अप्र० रच०—अनेक गद्य-पद्य-संग्रह; प०—पुस्तकभंडार लहरिया सराय, विहार ।

हलधारीराम गुप्त 'हल-धर'—प्रसिद्ध ग्रंथकार; रच०—कंगाल की बेटी,

त्यागी भारत, छोटा नागपुर का इतिहास, बालक-विनोद, बालिका-विनोद ; प०—हिंदी शिक्षक, राँची।

हंसराज भाटया—, एम० ए०—हिंदी साहित्य के उदीयमान लेखक ; ज०—१६०४ ; सा०—अध्यापक का कार्य, हिंदी की सेवा में साहित्यिक विषयों पर मनन ; रच०—शिक्षा - मनोविज्ञान तथा अनेक अप्रकाशित लेखों का संग्रह ; वि०—आपको इन पुस्तकों पर पुरस्कार भी मिला है ; प्रि० वि०—बाल शिक्षा, मनोविज्ञान, हास्यात्मक निबंध ; प०—बिड़ला कालेज, पिलानी।

हंसकुमार तिवारी—चंपानगर निवासी, प्रसिद्ध कवि, कहानी लेखक, निबंधकार, समालोचक और पत्रकार ; किशोर, बिजली, छाया के भूतपूर्व संपादक ; इस समय 'ऊषा'-साहा० का संपादन कर रहे हैं ; रच०—कला, स्फुट कविताएँ और आलोचनात्मक निबंध ; प०—'ऊषा' कार्यालय, गया।

हिरण्मय, सा० र०—हिंदी के यशस्वी प्रचारक और विद्वान् लेखक ; सार्व०—हाई स्कूल टेक्स्ट बुक कमेटी, मैसूर की हिंदी सबकमेटी के भू० पू० सदस्य ; साहूकार धर्मप्रकाश डी० वनुभय्यों हाईस्कूल मैसूर के भू० अध्यापक ; कर्नाटक प्रांतीय हिंदी प्रचार सभा की कार्यकारिणी समिति बँगलोर के भू० सदस्य ; रच०—'ज्योतिषाचार्य' की चार पुस्तकें ; (कन्नड भाषा से हिंदी में अनुवादित) तथा अनेक साहित्यिक लेख विशेषतः हिंदी प्रचारार्थ ; प०—कोचीन, मैसूर।

हीरादेवी चतुर्वेदी—प्रसिद्ध महिला लेखिका ; ज०—१६१५ ; शि०—हिंदी मिडिल तथा अँगरेजी की प्रारंभिक शिक्षा ; रच०—मंजरी, नीलम, मधुवन ; इस

पर २०) पुरस्कार भी मिला है ; प्रि० वि०—कविता, प०—मार्फत पं० देवीदयाल चतुर्वेदी, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

हीरालाल डाक्टर, एम० ए०, एल-एल० डी०—सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक ; ज०—१८६६ ; रच०—जैन-शिला लेख संग्रह ; अनेक खोजपूर्ण ग्रंथ ; अपभ्रंश साहित्य में अभूतपूर्व खोज करने पर 'डाक्टर आफ लाज'की उपाधि मिली; इस समय जैन सिद्धांत भास्कर के संपादक हैं; प०—प्रयाग।

हीरालाल—प्रसिद्ध जैनी लेखक; ज०—११ मई १९१४; 'जैन प्रचारक' का कई वर्षों से सफल संपादन किया है ; कई जैन-ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया है ; प०—धर्माध्यापक, हीरालाल जैन हाई स्कूल, दिल्ली।

हेमंतकुमार वर्मा—उदीयमान कवि; ज०—१९११; लेख०—१९४० ; अप्र०—रच०—लवकुश, वीरनारायण, नीराजना, कीर्ति, हिमकण, धूमिल चित्र ; प्रि० वि०—चित्रकला ; प०—६४७ मालदारपुरा, जबलपुर।

होमवतीदेवी—प्रसिद्ध कवयित्री और महिला सुलेखिका; ज०—१९०६ मेरठ ; रच०—उद्गार, अर्घ्य, प्रतिच्छाया, अंजलि के फूल; प०—स्वप्नलोक, नेहरूरोड, मेरठ।

क्षेमचंद्र 'सुमन'—उदीयमान लेखक और अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी ; शि०—महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक ; रच०—हिंदी की कई पुस्तकें लिख चुके हैं ; वि०—'आर्यमित्र' के सहकारी सम्पादक, 'साधना' आदि पत्रिकाओं में भी कार्य कर चुके हैं; प०—ज्वालापुर।

त्रिवेदीप्रसाद, बी० ए०—ज०—१९०७ ई० ; सं०—बालकेसरी ; रच०—विसर्जन ; भैया की कहानी,

मिठाई का दोना, बालमोद, रचना-तत्व, सरल व्याकरण ; प०—मीरगंज आरा, बिहार।

त्रिलोचन शास्त्री—उदीयमान कवि और साहित्य-प्रेमी; ज०—१६१६; ज्ञा०—उर्दू, अँगरेजी, बँगला, असमिया, उड़िया, गुजराती, मराठी, तामिल और वर्मी ; सा०—कई पत्रों के भूत० सहकारी संपादक ; रच०—धरती, गीत गंगा (काव्य), प्रवाह, खँडहर, ठूंठ—उप०, जीवित सपने—रेखाचित्र, मगध-पतन—ना०, और काव्यभूमि—आलो०; प०—'प्रदीप'-प्रेस, मुरादाबाद।

त्रिवेदीप्रसाद वाजपेयी एम० ए०, एल० टी०, सार० र०—सफल सम्पादक तथा हिंदी प्रचारक ; ज०—स० १६०३ भगवंतनगर हरदोई ; शि०—प्रयाग काशी; कानपुर, उज्जैन; अप्र० रच०—विविध पत्रपत्रिकाओं में बिखरे अनेक सामायिक निबंधों के संग्रह ; प०—विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर।

ज्ञानचंद जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध कहानीकार और सुलेखक ; पत्र-पत्रिकाओं में अनेक सुंदर कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं ; श्रीविनोदशंकर व्यास के साथ कहानी—एक कला नामक पुस्तक लिखी है प०—प्रयाग ।

ज्ञानवती वर्मा, सा० र०—सुप्रसिद्ध महिला कवयित्री ; शि०—लखनऊ, पंजाब ; रच०—निर्भर ; कई कविताएँ ; वि०—कविता द्वारा हिंदी सेवा के अतिरिक्त विद्यार्थियों को हिंदी-साहित्य का निःशुल्क शिक्षादान ; प०—लखनऊ।

प्रथम खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

(ख) खंड

सरकारी और गैर सरकारी

संस्थाओं का

परिचय

सरकारी संस्थाएँ

दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत और हिंदी दोनों एक ही विभाग के अधीन हैं जिसका संचालन 'बोर्ड आव स्टडीज इन संस्कृत एंड हिंदी, द्वारा होता है; इसके सात सदस्य ये हैं—म० म० पं० लक्ष्मीधर शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० ; पं० नरेंद्र-नाथ चौधरी, एम० ए०, काव्यतीर्थ ; पं० कैलाशनाथ चौधरी, एम० ए०, एम० ओ० एल० ; प्रो० रामदेव, एम० ए० ; श्रीहरिवंश कोचर, एम० ए० ; मिस प्रभासेन, एम० ए० ; श्री० एन० के० सेन, रजिस्ट्रार ; ये सभी संस्कृत-साहित्य के प्रेमी और उसके अध्यापक हैं ; यूनीवर्सिटी ने हिंदी आनर्स का कोर्स बना लिया है जिसके लिए सा० आ० पं० रामधन शर्मा शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० कई वर्षों से प्रयत्न कर रहे थे ; परंतु अभी तक आनर्स की पढ़ाई का किसी कालेज में प्रबंध नहीं है ; उक्त बोर्ड कोर्स भी बनाता है।

विश्वविद्यालय के अंतर्गत हिंदी की दशा—(क) प्रिपे-रेट्री क्लास में हिंदी का सौ अंक का एक प्रश्नपत्र अनि-वार्य है ; (यह कक्षा अब ११ वीं के नाम से बोर्ड के अंतर्गत स्कूलों में चली गई है और इस वर्ष से विश्व-विद्यालय का इससे कोई संबंध नहीं रह जायगा) ; (ख) बी० ए० में (त्रिव-र्षीय योजना के अनुसार) सौ अंकों के दो प्रश्नपत्र अनिवार्य हैं ; (ग) बी० ए० (आनर्स०) बारह प्रश्नपत्रों में से छः हिंदी के होते हैं।

दिल्ली, बोर्ड आव हायर सेकेंडरी एजुकेशन के

अधीन नवीं, दसवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं की पढ़ाई होती है; इसका कोर्स बनानेवाली समिति के पाँचों सदस्य ये हैं—म० म० पं० लक्ष्मीधर शास्त्री ; श्रीरामदेव, एम० ए० ; श्रीकिरणचंद्र, एम० ए० ; मिस प्रभासेन, एम० ए० ; और श्रीकैलाशनाथ कौल, एम० ए० ; बोर्ड के अधीन स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई के दो रूप हैं—नवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक तीन वर्षों में भाषा का ७५ अंक का एक पर्चा अनिवार्य है ; हिंदी एक वैकल्पिक विषय के रूप में भी रखी गई है ; किंतु साइंस के विद्यार्थी यह वैकल्पिक हिंदी नहीं ले सकते।

पहली से आठवीं कक्षाओं तक के लिए एक अलग बोर्ड है जो समयानुसार कुछ व्यक्तियों की एक समिति बनाकर विभिन्न विषयों का पाठ-क्रम निर्धारित कर लेता है।

पटना विश्वविद्यालय की हिंदी कमेटी के सदस्यों के नाम—डा० श्री आई० दत्त पटना कालेज, श्रीजनार्दन-प्रसाद झा 'द्विज' राजेंद्र कालेज छपरा, राय श्रीब्रज-राज कृष्ण आनंदबाग पटना, डा० जनार्दन मिश्र बी० एन० कालेज पटना, राजा श्री-राधिकारमणप्रसादसिंह सूर्य-पुरा शाहाबाद, श्रीकृपानाथ मिश्र साइंस कालेज पटना, श्रीमुहम्मद अब्दुल मनन पटना कालेज, श्रीविश्वनाथ-प्रसाद पटना कालेज, श्रीरुद्र-राज पांडेय प्रिंसिपल त्रिचंद कालेज काठमाँडू नैपाल, श्री-धर्मेंद्र ब्रह्मचारी पटना कालेज, श्रीशिवपूजनसहाय राजेंद्र कालेज छपरा, श्रीशिवस्वरूप वर्मा पटना सिटी स्कूल, श्री-देवनारायणसिंह नवाब स्कूल शिवहर मुजफ्फरपुर।

पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी को १८६४ में स्व० बाबू नवीन चंद्रराय के उद्योग

से स्थान मिला ; कुछ समय पश्चात् से ही यहाँ 'हिंदी प्रोफीशेंसी' और 'हाई प्रोफीशेंसी' नामक परीक्षाएँ प्रचलित हैं ; अब 'हिंदी रत्न', 'प्रभाकर' और 'भूषण' नाम की परीक्षाएँ औरभी चलती हैं।

इसके अंतर्गत 'हिंदी संस्कृत बोर्ड आव स्टडीज' है जिसके सदस्य ये हैं—डा० लक्षमण-स्वरूप अध्यक्ष संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर (संयोजक), श्रीकैलाशनाथ भटनागर एम०·ए० सनातन-धर्म कालेज लाहौर, श्रीहंस-राज अग्रवाल एम० ए० गवर्नमेंट कालेज लाहौर. ला० सूरजभानु एम० ए० हेडमास्टर डी० ए० वी० हाई स्कूल लाहौर, प्रो० गौरी-शंकर एम० ए० गवर्नमेंट कालेज लाहौर, प्रो० गुलबहार-सिंह १२ टैंप रोड लाहौर, श्रीश्रीशरणदास मनीत एम० ए० फार्मेन क्रिश्चियन कालेज लाहौर।

बंबई विश्वविद्यालय—मैट्रिक और इंटरमीजिएट की हिंदी कमेटी के चार सदस्य हैं–श्रीदीवानबहादुर के० एम० एम० झवेरी, एम० ए०, एल-एल० बी० (चेयरमैन); श्री प्रो० बी० डी० वर्मा, एम० ए० ; डा० मोतीचंद्र, एम० ए०, पी-एच० डी० ; और श्रीरणछोड़लाल ज्ञानी एम० ए०, एम० आर० ए० एस०; ज्ञानीजी प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम के क्युरेटर और बंबई हिंदी - विद्यापीठ के परीक्षामंत्री हैं।

मद्रास विश्वविद्यालय में हिंदी, मराठी, उड़िया, बंगाली, आसामी, बर्मी और सिंहली आदि भाषाओं के लिए एक संयुक्त बोर्ड है ; हिंदी प्रधान है बाकी भाषाएँ साथ कर दी गई हैं ; यही बोर्ड विश्वविद्यालय को परीक्षा, पाठ-क्रम, पाठ-पुस्तकें, परीक्षक - नियुक्ति आदि के लिए सिफारिश करता है ;

इनका अंतिम निर्णय सिनेट करती है ; हिंदी बोर्ड से सदस्य हैं सर्वश्री ए० चंद्रहासन एम० ए०, एस० आर० शास्त्री बी० ओ० एल०, पी० के० नारायण नायर बी० ओ० एल०, मंदाकिनी बाई प्रभाकर, रघुवरदयालु मिश्र सा० वि० ; इस संयुक्त बोर्ड के सभापति रा० ब० श्री- आर० कृष्णराव भोंसले हैं ; विश्वविद्यालय पुस्तकालय के लिए 'विद्वान् समिति' में हिंदी के सदस्य श्री ए० चंद्रहासनजी हैं ; विश्वविद्यालय की ओर से ये परीक्षाएँ हिंदी में चलाई जाती हैं—मैट्रीकुलेशन—हिंदी दूसरी भाषा है ; इंटरमीडिएट—दूसरे वर्ग में हिंदी दूसरी भाषा और तीसरे वर्ग में तीसरी भाषा है ; बी० ए०—दूसरे वर्ग में हिंदी दूसरी भाषा है और तीसरे में ऐच्छिक विषय ; बी० एस-सी०—प्रथम वर्ग में हिंदी ऐच्छिक विषय है ; एम० ए०—(ब्रांच xii) में हिंदी भाषा और साहित्य ; 'विद्वान्' उपाधि परीक्षा (पार्ट ७ ब) हिंदी प्रधान भाषा है 'विद्वान्' परीक्षा 'साहित्यरत्न' के समकक्ष है ; मद्रास प्रांत से लगभग दो सौ सज्जन 'विद्वान्' हो चुके हैं और पाँच जिनमें दो देवियाँ भी हैं, एम० ए० ।

स्कूलों में पाठ - पुस्तकें निर्धारित करने के लिए चालीस सदस्यों की 'मद्रास टेक्स्ट बुक्स कमेटी' नामक एक बड़ी समिति है जिनमें दो सदस्य—श्री जे० जे० रुद्रा और श्री ए० चंद्रहासन—मुख्यतः हिंदी के लिए हैं ; इस समिति की कार्रवाई गोपनीय समझी जाती है ।

मद्रास विश्वविद्यालय के अधीन जिन कालेजों में इंटरमीडिएट और बी० ए० में हिंदी पढ़ाई जाती है उनके नाम ये हैं—महाराजा कालेज इरणाकुलम् (अध्यापक श्र

ए० चंद्रहासन एम० ए०); वीमेंस क्रिश्चियन कालेज मद्रास (अध्यापक श्री एस० आर० शास्त्री, बी० ओ० एल०) ; संत टामस कालेज त्रिचूर (अध्यापक श्री पी० के० नारायण नैन, बी० ओ० एल०) ; संत एलोसियस कालेज मँगलोर (अध्यापक श्री टी० श्रीनिवास पाई, बी० ए०, विद्वान्) ; क्वींस मारिग्न कालेज मद्रास (अध्यापिका श्रीमती मंदाकिनी बाई, प्रभाकर) संत तेरिसस कालेज, इरणाकुलम् (अध्यापक मिस ए० पद्मिनी, एम० ए०)।

त्रावनकोर के स्कूलों में पुस्तकों पर विचार करने के लिए 'त्रावनकोर हिंदी सिलेबस कमेटी' है जिसके सदस्य ये हैं—श्रीयेशुदास, एम० ए०; डा० के० एल० मुडगिल डी० एस-सी० और श्री ए० चंद्रहासन, एम० ए०।

मध्यप्रांत की हिंदी कमेटी के सदस्य—श्री आर० डी० पाठक राबर्टसन कालेज जबलपुर, डा० बी० पी० मिश्र बैजनाथ पारा रायपुर, श्री एच० एल० जैन किंग एडवर्ड कालेज अमरावती, श्री बी० पी० वाजपेयी हितकारिणी सिटी कालेज जबलपुर, श्री एच० डी० दुबे राबर्टसन कालेज जबलपुर, श्री एस० पी० तिवारी सिटी कालेज नागपुर, श्री बी० एन० शुक्ल राजकुमार कालेज रायपुर, श्री आर० एन० पांडेय छत्तीसगढ़ कालेज, रायपुर।

युक्तप्रांत बोर्ड आव हाई स्कूल ऐंड इंटरमीजिएट एजुकेशन की हिंदी कमेटी के सदस्य—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग विश्वविद्यालय (संयोजक); डा० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' प्रयाग विश्वविद्यालय ; प्रो० श्रीधरसिंह गवर्नमेंट इंटरकालेज, फैजाबाद ; प्रो० सद्-

गुरुशरण अवस्थी, बी० एन० एस० डी० कालेज, कानपुर ; पं० श्रीशंकर याज्ञिक, हेड-मास्टर डी० ए० वी० हाई स्कूल, अलीगढ़ ; पं० रामबहोरी शुक्ल, क्वींस कालेज, बनारस ; श्रीगोविंदबिहारी शारावल, सनातन धर्म इंटर कालेज, मुजफ्फरनगर ।

राजपूताना (अजमेर-मारवाड़ सहित) मध्य भारत और ग्वालियर के हाई स्कूल और इंटरमीडिएट बोर्ड की हिंदी कमेटी के सदस्य—श्रीरामकृष्ण शुक्ल एम० ए० महाराजा कालेज जयपुर, श्रीनरोत्तमदास स्वामी एम० ए० डूँगर कालेज, बीकानेर और श्रीसोमनाथ गुप्त एम० ए० जसवंत कालेज जोधपुर (संयोजक) ।

हिंदुस्तानी एज्युकेशन प्रॉविंशियल बोर्ड, लोक-कल्याण, ७७ शनवर पेठ, पूना—बंबई प्रांतीय स्कूलों के लिए अनिवार्य हिंदुस्तानी का कोर्स बनाता है ; इसके पंद्रह सदस्य ये हैं—श्रीकाका साहब कालेलकर, सभापति, हि० भारतीय भाषासंघ, वर्धा; प्रो० डी० वी० पोतदार बी० ए०, स्थानापन्न सभापति, लोक-कल्याण, ७७ शनवर, पूना २ ; प्रो० वी० डी० वर्मा, एम० ए०, फर्गुसन कालेज, आनंदभवन, पूना ४ ; श्री सैयद नूरुल्ला, एम० एड०, बार-एट-ला, प्रिंसिपल सेकेंडी ट्रेनिंग कालेज, बंबई ; प्रो० एन० आर० पाठक, ११ ए, न्यू मारवाड़ी लेन, बंबई ४ ; श्री आर० आर० दिवाकर, एम० ए०, एल-एल० बी०, हुबली ; श्रीनरहरिदास पारीख, हरिजन - आश्रम, साबरमती ; श्री बी० जे० अकाड, बी० ए०, एस० टी० सी०, २४ लाजपतराय रोड, विले पारले वेस्ट, बंबई ; खान साहब एन० के० मिरजा बी० ऐग०, एस० टी० सी० डी० हेडमास्टर ऐंग्लो उर्दू

हाई स्कूल, पूना ; जनाब सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी, 'बॉबे क्रॉनिकिल' - संपादक, रेड हाउस, बंबई ४ ; श्रीमती पेरिन कैप्टेन, मंत्री हिंदी प्रचार-सभा, अदेनवाल मैन-सन, चौपटी-सी-फेस, बंबई ; श्रीसिद्धनाथ पंत, ठि० कर्नाटक प्रॉविंशियल हिंदी प्रचार-सभा, धारवाड़ ; प्रो० एन० ए० नादवी, एम० ए०, इसमाइल यूसुफ कालेज, अँधेरी, बंबई ; श्री वी० वी० अतीतकार, बी० ए०, मंत्री तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पूना ; श्री एच० जे० वारिया बी० ए०, एल-एल० बी०, नॉन मेंबर ज्वाइंट सेक्रेट्री, हिंदुस्तानी बोर्ड और पर्सनल असिस्टेंट टु एजुकेशनल इंस्पेक्टर, सेंट्रल डिवीजन, पूना ।

गैर सरकारी संस्थाएँ

असमीया हिंदी साहित्य परिषद्, गुवाहाटी; साहित्य-समन्वय और सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन के हेतु फरवरी १९४२ में स्थापित ; डा० बाणीकांत ककति, एम० ए० पी०-एच० डी० ; अध्यक्ष और श्रीविरिञ्चिकुमार बहुवा, 'सत्यकाम' एम० ए०, बी० एल० मंत्री हैं ; असमीया और हिंदी में ऊँची से ऊँची संयुक्त परीक्षाओं का पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन तथा 'असम-दर्शन' नामक ग्रंथ का संपादन हो रहा है ; 'काव्य और अभिव्यंजना' प्रकाशित हो चुकी है ।

उप - हिंदी केंद्र सभा, बंबई—जनवरी १९४१ में राष्ट्रभाषा और उसके उच्च साहित्य-प्रचार के लिए स्थापित ; सभा के अंतर्गत हिंदी विद्यापीठ चलता है ; सम्मेलन से यह संबद्ध है ; श्री-मोहनलाल शास्त्री मंत्री हैं ।

कवि-मंडल, लखीमपुर ; हिंदी में नवीन कवियों को काव्य लिखने का प्रोत्साहन देने तथा जनता में काव्य की ओर अभिरुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से स्थापित ; मासिक बैठकों द्वारा जनता में काव्याभिरुचि उत्पन्न करता है ; कई 'काव्यकुंज' नामक पुष्प प्रकाशित हुए ; रामनाथ मिश्र मंत्री तथा रायबहादुर पं० संकटाप्रसाद वाजपेयी सभापति हैं ।

कवि-वासर, सागर पोखरा, बेतिया, : चंपारन—स्थानीय एकमात्र हिंदी संस्था; हिंदी-साहित्य प्रचार के उद्देश्य से १९४१ में स्थापित ; चंपारन में काफी प्रचार कार्य कर रही है ; 'कविता' नामक मासिक पत्रिका निकालने की योजना है; श्री बंबहादुर सिंह नैपाली प्रधान मंत्री हैं ।

केंद्रीय सहकारी शिक्षा-प्रसार मंडल, इटावा बा० ब्रजेंद्र मित्र तथा सुधेशकुमार जी 'प्रशांत' द्वारा २१-९-३९ में स्थापित ; संस्था के अधीन एक केंद्रीय पुस्तकालय है जिसकी पुस्तकें ६० ग्रामों में भेजी जाती हैं ; बा० सूर्य नारायण अग्रवाल प्रधान हैं और बा० ब्रजेंद्र मित्र मंत्री ।

कोचिन हिंदी प्रचार समिति, इरनाकुलम्—कोचिन स्टेट में राष्ट्रभाषा प्रचारार्थ स्थापित ; दक्षिण भारत हिंदी - प्रचार - सभा मद्रास की प्रमुख शाखा ; श्रीयुत वी० कृष्ण मेनोन, बार-एट-ला इसके प्रधान और श्रीयुत ए० चंद्रहासन मंत्री हैं ; कार्यकारिणी समिति में दो स्त्रियाँ भी हैं ; कोचिन स्टेट में तीन कालेज और उनचास हाई स्कूल हैं ; समिति के उद्योग से तीनों कालेजों और इकतीस स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है ; पाठक्रम और पाठपुस्तकों ; लिए कालेज मद्रास विश्व-विद्यालय के अधीन हैं ; परंतु

हाई स्कूल में 'हिंदी अध्यापक संघ' जिसके सभापति श्रीयुत ए० चंद्रहासनजी हैं, द्वारा निर्धारित पुस्तकें रखते हैं।

ग्राम्य सुधार नाट्य परिषद्, गोरखपुर—गाँवों में सुंदर-सुंदर हिंदी नाटकों का अभिनय करके राष्ट्रभाषा का प्रचार करना प्रधान उद्देश्य है; कई नाटक प्रति-वर्ष परिषद् के सदस्यों द्वारा खेले गए हैं।

ग्राम सेवा मंडल हिसार, पंजाब—स्थानीय विद्याप्रचारिणी सभा से संबंधित; गाँवों में हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से १९३३ में स्थापित; मण्डल द्वारा ग्राम सेवक नामक मासिक पत्र मई १९३६ से निकल रहा है जो विज्ञापन नहीं लेता; हिंदी सरल होती है, श्रीकन्हैयालाल संपादक और श्रीठाकुरदास मंत्री हैं; लगभग पचीस हजार रुपए हिंदी प्रचार के लिए खर्च किए हैं।

जनता शिक्षण मंडल, खिरोदा, पूर्व खानदेश—१९३० में श्रीधनाजी नाना चौधरी द्वारा स्थापित 'सेवाश्रम' का पुनरुद्धारित रूप; १९३८ में उक्त 'मंडल' के नाम से स्थानीय गाँवों में राष्ट्रभाषा, शिक्षा और खादी प्रचार इत्यादि के उद्देश्य से स्थापित; रा० प्र० समिति वर्धा और हिं० सा० सम्मेलन की कुछ परीक्षाओं की शिक्षा-व्यवस्था भी है; अनेक प्रचारक अवैतनिक काम करते हैं; संचालक श्री पं० म० वोंडेजो हैं।

टी० ग्राम वाचनालय प्रचार फंड, बड़वाहा, इंदौर—गाँवों में हिंदी प्रचार प्रसार के उद्देश्यों से स्थापित; इंडियन लाइब्रेरी एसोसिएशन कलकत्ता, मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर से संबंधित; लेखकों के लिए इस संस्था की ओर से 'ग्राम पुस्तकालय-योजना' शीर्षक

विषय पर निबंध लिखनेवाले को पुरस्कार की घोषणा की गई है।

तुलसी साहित्य प्रचारिणी समिति, हनुमान फाटक, काशी;पं०गयादत्त मिश्र सभापति और श्री भागवत-मिश्र मंत्री हैं; तुलसी साहित्य का प्रचार, उद्धार और प्रकाशन उद्देश्य है।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास—सभा के जन्मदाता तथा आजीवन अध्यक्ष महात्मा गाँधी हैं; सभा के सभी कार्यालय मद्रास के त्यागराय नगर में अपने ही एक विस्तृत अहाते में हैं; करीब एक सौ से अधिक कार्यकर्ता भिन्न-भिन्न विभागों में कार्य करते हैं; सभा का कार्य इस समय लगभग ६०० केंद्रों में है जिनको प्रांतीय सरकार, मैसूर तिरुवांकूर और कोचीन देशी राज्यों का सहयोग प्राप्त है; हिंदी परीक्षाओं में स्कूल, कालेजों के छात्रों के अतिरिक्त लगभग ९००० महिलाएँ भी प्रतिवर्ष सम्मिलित होती हैं; सभा का सारा कार्य व्यवस्थापिका समिति के अधीन है; इस समिति के अंतर्गत कार्यकारिणी समिति सभा की योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए, निधिपालक मंडल संपत्ति का प्रबंध करने के लिए, शिक्षा-परिषद् हिंदी प्रचार-शिक्षण परीक्षा-साहित्य निर्माण का कार्य करने के लिए है; सारे प्रांतों का प्रचार कार्य प्रांतीय सभाएँ करती हैं; प्रचार प्रणाली में प्रचारक सम्मेलन, प्रमाण पत्र वितरणोत्सव, यात्री दलों का भ्रमण-शिविर संचालन, वाद-विवाद सभाएँ, नाटक-प्रदर्शन, वाचनालयों और पुस्तकालयों की स्थापना एवं संचालन, हिंदी विद्यालय-प्रेमी मंडल-प्रचार संघ, प्रचार-सप्ताह आदि साधन काम में लाए जाते हैं; योग्य प्रचारकों का

संगठन करने के लिए सभा ने प्रामाणिक प्रचारक योजना बनाई है जिसमें ६०० प्रचारक अपनी योग्यता, चरित्र-बल, लगन और राष्ट्रीय भावनाओं के कारण जनता में विशिष्ट स्थान प्राप्त किए हुए हैं; परीक्षा विभाग में लगभग २२५ परीक्षक काम करते हैं; प्रकाशन विभाग से १२५ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अक्षर बोध से लेकर कोष तक शामिल हैं; सभा का पुस्तकालय और वाचनालय भी अति लोक-प्रिय है; सभा की एक अत्यन्त उपयोगी तथा परिणामकारक प्रवृत्ति उसका विद्यालय विभाग है; इस समय मद्रास, कोयंबटूर और धारवाड़ में विद्यालय हैं; इन विद्यालयों के उपाधिधारियों को सरकार और राज्यों ने मान्यता दी है; दक्षिण के विश्वविद्यालयों में हिंदी को इसी सभा के प्रयत्न से स्थान मिला है; सभा दक्षिण भारत की सर्वप्रिय संस्था है और अब इस बात की योजना कर रही है कि कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ आरम्भ की जायँ जिनके द्वारा अन्य प्रांतीय संस्कृति तथा साहित्य की चर्चा हो और राष्ट्रीय साहित्य के संवर्द्धन में वह सहायक हो सके।

देवनागरी परिषद्, धामपुर—हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए १९४० में स्थापित; हिंदी-प्रसार-प्रचार के लिए विशेष प्रयत्न करती है।

नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा—१९१० के आसपास स्थापित; सभा के पास अपनी पर्याप्त भूमि है और निजी भवन भी; इसके पुस्तकालय में लगभग १०००० पुस्तकें हैं; बालपुस्तकालय, सार्वजनिक वाचनालय, चलता पुस्तकालय इसके मुख्य विभाग हैं; सम्मेलन परीक्षाओं

के लिए तीन अवैतनिक अध्यापक हैं; लगभग २०० विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है; 'सत्य-नारायण-स्मारक ग्रंथमाला' के अंतर्गत तीन पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं; फरवरी १९४२ में प्रांतीय हिं० सा० सम्मेलन बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन के सभापतित्व में बड़ी धूमधाम से मनाया गया; सदस्य २९ हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा, आजमगढ़—हिंदी भाषा और साहित्य की उन्नति तथा देवनागरी लिपि के प्रचारार्थ स्थापित; साहित्यिक गोष्ठियाँ, कवि-सम्मेलन आदि समय-समय पर होते हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी—हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली इस सर्वभारतीय संस्था की स्थापना हिंदी-भाषा प्रचार, प्राचीन साहित्य के उद्धार और नवीन अभिवृद्धि के उद्देश्य से १६ जुलाई, १८९३ में रा० ब० डा०, श्यामसुंदरदास, पंडित राम-नारायण मिश्र और रा० सा० ठाकुर शिवकुमारसिंह द्वारा हुई; इसके कार्यकर्त्ताओं के उद्योग से १८९८ में सरकारी कचहरियों में नागरी का प्रवेश हुआ और अदालती आवेदन पत्र तथा सम्मन आदि नागरी में लिखे जाने लगे; इस समय इसके सभासदों की संख्या लगभग १२०० है। इसके अंतर्गत 'आर्यभाषा पुस्तकालय' में २०० से ऊपर पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं; इसमें लगभग १८००० मुद्रित तथा लगभग १००० हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं; अन्य देशी-विदेशी भाषाओं के ग्रंथों की संख्या लगभग ५००० है; इस विशाल संग्रहालय से खोज का काम करने में सहायता लेनेवाले रिसर्च स्कालरों की संख्या बढ़ती जाती है।

१८९९ से संयुक्तप्रांतीय सरकार ने सभा को प्राचीन हिंदी ग्रंथों की खोज के लिए ४००) वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया; तत्संबंधी कार्य की सफलता देखकर सरकार यह धन समय-समय पर बढ़ाती गई और १९२१ से इसके लिए २०००) की सहायता प्रतिवर्ष मिलती है; इस धन से अनेकानेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का पता लगाया गया है।

भारतीय साहित्य और संस्कृति से संबंध रखनेवाली अमूल्य वस्तुओं के, जो समय समय पर विभिन्न स्थानों में पाई जाती हैं, संग्रह के लिए 'भारत कलाभवन' की स्थापना की; १९४० से इसमें राजघाट की वस्तुओं का अद्वितीय संग्रह हो रहा है; भारतीय पुरातत्त्व विभाग के डाइरेक्टर जनरल ने कलाभवन की उत्तरोत्तर समृद्धि एवं उन्नति से संतुष्ट होकर अब यह नीति निर्धारित कर दी है कि सारनाथ के अतिरिक्त काशी तथा आसपास के अन्य स्थानों से पुरातत्त्व-संबंधी जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं अथवा भविष्य में होंगी, वे सभा के कलाभवन में ही रहेंगी; भवन के दर्शकों की संख्या प्रतिवर्ष लगभग ५५०० रहती है।

सभा ने १८९७ से त्रैमासिक 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का प्रकाशन आरंभ किया जिसका संपादन एक मंडल द्वारा होता है। विविध विषयों के खोजपूर्ण निबंध इसमें प्रतिवर्ष प्रकाशित होते हैं।

सभा की ओर से नागरी प्रचारिणी ग्रंथमाला, मनोरंजन पुस्तकमाला, प्रकीर्णक पुस्तकमाला, सूर्यकुमारी पुस्तकमाला, देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला, बालाबख्श राजपूत चारणमाला, देवपुरस्कार ग्रंथावली, श्रीमहेंद्रुलाल गर्ग विज्ञानग्रंथावली, श्रीमती रुक्मिणी

तिवारी पुस्तकमाला आदि मालाएँ प्रकाशित होती हैं।

स्व० बाबू जयशंकरप्रसाद की साहित्य-परिषद् के लिए प्रदत्त निधि से १६३० में एक साहित्य-गोष्ठी स्थापित की गई थी। इसके अंतर्गत अनेक साहित्यिक उत्सव और व्याख्यानादि होते हैं।

सभा की ओर से राजा-बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार, बटुकप्रसाद-पुरस्कार, रत्नाकर-पुरस्कार, डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार, जोधसिंह पुरस्कार और डा० हीरालाल स्वर्ण-पदक, द्विवेदी स्वर्णपदक, सुधाकर पदक, (प्रथम, द्वितीय) ग्रीव्जपदक, राधाकृष्णदास पदक, बलदेवदास पदक, गुलेरी पदक और रेडिचे पदक आदि प्रदान किए जा रहे हैं।

सभा की ओर हिंदी-संकेत-लिपि विद्यालय का संचालन होता है; लगभग ५० विद्यार्थी अब तक शिक्षा पा चुके हैं।

विभिन्न नगरों और प्रांतों की लगभग पचीस संस्थाएँ सभा से संबद्ध हैं; कुछ को सभा की ओर से सहायता भी दी जाती है।

सभा के पदाधिकारियों में पं० रामनारायण मिश्र अध्यक्ष और श्रीरामचंद्र वर्मा मंत्री हैं।

सभा ने २६, ३०, ३१ जनवरी को अपनी स्वर्ण-जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई है। सभा को अ० भा० हिं० सा० सम्मेलन की जन्मदात्री होने का गौरव भी प्राप्त है।

नागरी प्रचारिणी सभा, गाजीपुर— उद्दे०—नागरी लिपि और साहित्य-प्रचार; सद० सं०—१२५; सा०—गत १० वर्षों से कचहरियों और जनता में लिपि प्रचार-कार्य; अनेक कवि-सम्मेलनों, साहित्य-गोष्ठियों, प्रतियोगिताओं की योजना की; साहित्यिकों की जयंतियाँ भी मनाईं।

नागरी प्रचारिणी सभा, भगवानपुर रत्ती, मुजफ्फरपुर,

बिहार—विश्वविभूति महात्मा गांधी और देशरत्न डा० राजेंद्र-प्रसाद तथा माननीय बाबू रामदयालुसिंह द्वारा स्थापित; समय-समय पर जयंतियाँ मनाईं; इसका खोज-विभाग विशेष महत्त्व का काम कर रहा है; वैशाली से प्राचीन हस्तलिखित हिंदी-ग्रंथ खोजे हैं; सभा के प्रयत्न से आस-पास दस पुस्तकालय भी खोले गए हैं; सभापति श्रीवैद्यनाथ-प्रसाद सिंह और मंत्री पं० रघुवंश झा हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा, मुरादाबाद—१९२५ में स्थापित; सदस्य संख्या लगभग २०० है; अदालत में नागरी प्रचार के लिए विशेष प्रयत्न सभा की ओर से हो रहा है; टाइप-राइटर योजना चालू है सम्मेलन से सभा संबद्ध है।

नागरी प्रचारिणी सभा, हरनौत—श्री० लालसिंहजी त्यागी के प्रयत्न से हरनौत में एक नागरी प्रचारिणी सभा की १९३६ में स्थापना हुई; उद्देश्य नागरी लिपिका प्रचार, राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा ऊँची शिक्षा का प्रबंध और गाँवों में पुस्तकालय स्थापित करना था; इनको कार्यान्वित करने के लिए एक महाविद्यालय खोलने की आवश्यकता हुई; गांधीजी के कथनानुसार सेवदह ग्राम में ग्रामवासियों के पूर्ण सहयोग से श्रीराजेन्द्र-साहित्य-महाविद्यालय की स्थापना हुई; हिंदी-शिक्षा और ग्रामसुधार इसके उद्देश्य हैं; संस्था के अंतर्गत दो पुस्तकालय हैं जिनमें लगभग १००० पुस्तकें हैं तथा अनेक मासिक व दैनिक समाचार पत्र आते हैं; हिंदी विश्वविद्यालय, प्रयाग की हिंदी परीक्षाओं का केन्द्र है; सभी विभागों में मिलाकर दस कार्यकर्ता हैं।

पुष्पभवन, पादम, मैनपुरी—हिंदी-साहित्य की अभिवृद्धि और भाषा-प्रचार के उद्देश्य से १९१० के लगभग

स्थापित ; भवन के अंतर्गत एक हिंदी-विश्वविद्यालय है ; सम्मेलन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाओं के भी यहाँ केंद्र हैं ; सम्मेलन से यह संबद्ध भी है ; श्रीछैल-बिहारीलाल इसके मंत्री हैं।

पंजाब प्रांतीय हिंदी-साहित्य सम्मेलन, लाहौर— पंजाब में साहित्यिक संगठन के उद्देश्य से स्थापित ; अब तक ८० सभाएँ सम्मेलन से संबद्ध हो चुकी हैं ; इस वर्ष स्थायी समिति ने वैतनिक प्रचारक रखने का निश्चय किया है; इसके तीन आजीवन सदस्य बन चुके है ; श्रीपरशु-राम शर्मा मंत्री हैं।

पंडित परिषद्, अयोध्या—साहित्य चर्चा के उद्देश्य से पं० सूर्यनारायण शुक्ल द्वारा स्थापित ; कई हिंदी तथा संस्कृत की परीक्षाएँ, जिनका पंजाब प्रांत में बहुत आदर है और पंजाब सरकार द्वारा वीकृत हैं, होती हैं।

प्रसाद परिषद्, काशी- कवि 'प्रसाद' की स्मृति में २२ मई १९३९ में स्थापित ; साहित्य-समारोहों, गोष्ठियों आदि का आयोजन करके हिंदी की उन्नति करना इसका उद्देश्य है ; अब तक परिषद् ने काशी में अच्छा काम किया है ; माननीय बाबू संपूर्णानंद-जी इसके सभापति और श्री-श्यामनारायणसिंह, बी०.ए०, इसके प्रधान मंत्री हैं।

बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मेलन, सरदार शहर— दिसंबर १९४० में स्थापित ; प्रथम वार्षिक अधिवेशन सर-दार शहर में और दूसरा रतन-गढ़ में मनाया गया ; सदस्य लगभग १००; विभिन्न स्थानों में इसके अधीन साहित्य-समितियाँ हैं जिनमें सम्मेलन परीक्षाओं की शिक्षा दी जाती है ; इस सम्मेलन द्वारा तीन पारितोषिक देने की योजना बनी है ; इस वर्ष हिंदी के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ पर 'श्रीगिरधारी-

लाल टाँटिया' पुरस्कार दिया जाना निश्चित हुआ है; बीकानेर राज्य के साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों की सूची तैयार की जा रही है ; एक 'कानूनी कोष' भी तैयार हो रहा है।

भारतीय कला-विद्यालय, दस्साँ स्ट्रीट, दिल्ली—पत्र-व्यवहार द्वारा लेखन-कला सिखाने की पहली संस्था; ७०० से अधिक विद्यार्थी ; इस संस्था के कार्यक्षेत्र के काफी विस्तृत होने की आशा है ; श्रीयज्ञदत्त शर्मा, एम० ए० इसके व्यवस्थापक हैं।

भारतीय साहित्य-सम्मेलन, दिल्ली—भारतीय साहित्य, विशेषतः हिंदी की उन्नति और भारतीय चिकित्सा-प्रचार के उद्देश्य से १६४० में स्थापित ; सदस्य तीस ; २०० परीक्षा उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं ; हिंदी विद्यालय, पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित करने की योजना है।

भारतीय विश्वविद्यालय, पादम, मैनपुरी—१६४० में स्थापित ; अनेक विद्वानों का सहयोग प्राप्त है ; हिंदी कोविद, साहित्य - भूषण, साहित्यालंकार तथा आयुर्वेद, भूषण की परीक्षाएँ ली जाती हैं।

भारतेंदु समिति, कोटा, राजपूताना—१६२६ के लगभग स्थापित; अदालती भाषा-सुधार, देहाती पुस्कालय-स्थापना आदि महत्त्व की समस्याओं पर विचार करके उन्हें कार्य-रूप देने का प्रयत्न किया जा रहा है ; सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र भी है; समिति हिं० सा० सम्मेलन से संबद्ध है।

भारतेंदु-साहित्य-संघ, मोतिहारी, बिहार—हिंदी भाषा तथा देवनागरी प्रचार के उद्देश्य से भारतेंदु दिवस १६४० को स्थापित ; सदस्य पचास ; चंपारन के प्राचीन-अर्वाचीन लेखकों की रचनाओं का अच्छा संग्रह है ; संथालों

में रोमनलिपि-प्रचार, जन-गणना में बिहारियों की भाषा 'हिंदुस्तानी' लिखने और इस नाम से 'कृत्रिम' भाषा तैयार करने की सरकारी नीति का विरोध ; सम्मेलन के परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा देता है।

भारतेंदु साहित्य समिति बिलासपुर (मध्यप्रांत)—भारतेंदु अर्धशताब्दी के अवसर पर १९३५ में स्थापित ; सदस्य संख्या दो सौ ; वसंत पंचमी को प्रति वर्ष तीन दिन तक साहित्य तथा संगीत सम्मेलन होता है ; सम्मेलन परीक्षाओं के विद्यार्थी तैयार किए जाते हैं ; पं० सरयूप्रसाद तिवारी इसके अध्यक्ष तथा पं० द्वारिकाप्रसाद तिवारी मंत्री हैं।

मध्यभारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, उज्जैन—प्रांत में साहित्यिक संगठन तथा पुनः जागरण के लिए स्थापित ; साहित्यिकों का इतिहास, मालवी एवं आवंती भाषा का इतिहास, विक्रम-द्विसहस्राब्दी, हिंदी विश्व-विद्यालय आदि सम्मेलन के विचारणीय विषय हैं, जिन्हें कार्यरूप देने के लिए प्रयत्न हो रहा है; श्रीरामस्वरूप संघ-मंत्री हैं।

मध्यभारत हिंदी-साहित्य-समिति, इंदौर—मध्यभारत में हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए १० जनवरी १९१५ को स्थापित ; समिति का संचालन दो सभाओं द्वारा होता है—साधारण सभा और प्रबंध-कारिणी समिति ; साधारण सभा में समिति के समस्त सदस्य रहते हैं; प्रबंधकारिणी समिति साधारण सभा द्वारा प्रतिवर्ष निर्वाचित की जाती है जिसमें १३ पदाधिकारी तथा २० सदस्य होते हैं ; प्रबंध-कारिणी समिति के अंतर्गत ७ सदस्यों का मंत्रि-मंडल विभिन्न विभागों का

कार्य-संचालन करता है। समिति की ओर से रा० च० डॉ० सरयूप्रसाद और सर सेठ हुकुमचंद नाम की ग्रंथमालाएँ प्रकाशित होती हैं; प्रतिवर्ष डॉ० सरयूप्रसाद स्वर्णपदक भी दिया जाता है; साहित्य-संकलन-विभाग में प्रतिवर्ष सम्मेलन की ऊँची परीक्षाओं के परीक्षार्थियों के लाभार्थ शिक्षा, व्याख्यान आदि की व्यवस्था होती है; समिति के अंतर्गत एक विद्यापीठ है जिसमें स्थानीय विद्वान् अवैतनिकरूप से शिक्षा देते हैं; समिति की ओर से मुख-पत्रिका-रूप में प्रकाशित 'वीणा' हिंदी साहित्यिक पत्रिकाओं में अपना स्थान रखती है; प्रचार-विभाग समय-समय पर साहित्यिक व्याख्यानों और अन्यान्य आयोजनों की व्यवस्था करता है; पुस्तकालय विभाग में लगभग १०००० पुस्तकें हैं और वाचनालय में १५० पत्र आते हैं।

यज्ञनारायण वाल हिंदी पुस्तकालय, बैना, पो० कड़सर, शाहाबाद—गाँवों में हिंदी प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित; लगभग ६००० पुस्तकें हैं; हिं० सा० सम्मेलन, श्री रामायण और श्री गीता परीक्षा-समिति की सभी परीक्षाओं के केंद्र यहाँ हैं और परीक्षार्थियों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है; पं० नेमधारी चौबे इसके प्रधान और पं० रामएकबाल पांडेय मंत्री हैं।

युक्त प्रांतीय राष्ट्रभाषा-प्रचारिणी सभा, नयागंज, कानपूर; १९४० में स्थापित; चलचित्रों, नाटकीय कंपनियों, सरकारी कार्यालयों में राष्ट्रभाषा को उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील; सभा द्वारा हजारों प्रतियाँ उन मुसलमान विद्वानों की सम्मतियों को वितरित की गई हैं जो निष्पक्ष होकर

हिंदी को 'लोकभाषा' मानते हैं; जन-गणना के अवसर पर भाषा के स्थान में हिंदी लिखाने की जनता से अपील की; शाहजहाँ नाटक मंडली को उनके शुद्ध नागरी भाषा में कथोपकथन कराने पर सम्मान पत्र दिया; सभा का सूत्रपात पं० सत्यनारायणजी पांडेय, एम० ए० ने किया था; सभा निजी भवन बनाने में भी प्रयत्नशील है।

युक्तप्रांतीय हिंदी पत्रकार सम्मेलन, पोस्टबाक्स ६१, कानपुर—अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन के संगठन को विशेष सुदृढ़ करने और युक्तप्रांत में पत्रकार कला की उन्नति करके स्थानीय पत्रकारों के हितों की रक्षा के उद्देश्य से स्थापित; हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के संपादकीय विभागों में काम करनेवाले सज्जन, पत्रों के संवाददाता और लेखक १) वार्षिक देकर इसके सदस्य हो सकते हैं; अ० भा० पत्रकार संघ से संबद्ध है; कार्य-संचालन के लिए १५ सदस्यों की समिति है; पत्र-संचालकों और रेडियो-अधिकारियों के पत्रकारों के प्रति उपेक्षित और अनुचित व्यवहारों पर असंतोष प्रकट करता हुआ यह सम्मेलन अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो रहा है; 'विशालभारत' के भूतपूर्व संपादक पंडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी इसके प्रधान और श्रीजयदेव जी मंत्री हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, कृष्णनगर, लाहौर—हिंदी भाषा और देवनागर लिपि के प्रचार के उद्देश्य से स्थापित; स्थानीय अनेक हिंदी-प्रेमियों का सहयोग प्राप्त; अपने ध्येय की पूर्ति के लिए नाट्याचार्य श्री-तुलसीदत्त 'शैदा' की लिखी 'हिंदियों की राष्ट्रभाषा केवल हिंदी है' नामक प्रचार-पुस्तक

की २०००० प्रतियाँ हिंदू-जनता, स्थानीय विद्यालयों में मुफ्त बँटवाईं।

राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, ठि० भारती विद्यामंदिर नड़ियाद—राष्ट्रभाषा - प्रचार के उद्देश्य से जुलाई १९३९ में स्थापित ; आसपास के स्थानों में कई परीक्षाकेंद्र खोले और अनेक प्रचारक तैयार करके अपने कार्य को आगे बढ़ाया ; श्रीछोटू भाई सुथार इसके उत्साही कार्य-कर्त्ता हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचारक मंडल, सूरत—राष्ट्रभाषा और उसके साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए ९ मई १९३७ को पं० परमेष्ठीदास जैन द्वारा स्थापित ; मंडल के अंतर्गत 'हिंदी विद्यामंदिर' है जिसमें १२ पाठशालाएँ हैं जिनमें लगभग ५०० विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा पाते हैं ; मंडल के द्वारा 'राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर' का भी संचालन होता है जिसमें अध्यापकों को ट्रेनिंग दी जाती है ; मंडल के पुस्तकालय में ३३२२ पुस्तकें हैं और वाचनालय में ३५ पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं ; वाक्स्पर्धा तथा सभाएँ भी की जाती हैं ; मंडल के सभापति डा० चंपकलाल और प्रधान मंत्री परमेष्ठीदास जैन हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति गुवाहाटी, आसाम—प्रांत में राष्ट्रभाषा के व्यापक प्रचार के उद्देश्य से नवंबर १९३८ में स्थापित ; अध्यक्ष—प्रा० विरंचिकुमार बरुवा, एम० ए०, बी० एल० ; मंत्री-संचालक कमलनारायणदेव ; महिला प्रतिनिधि—श्रीमती शशिप्रभा ; इसकी व्यवस्थापक परिषद् में ६० सदस्य हैं; प्रचार, प्रकाशन - साहित्य-निर्माण, अध्यापन मंदिर, पुस्तकालय तथा वाचनालय, परीक्षा, अर्थ, अन्यान्य प्रवृत्तियाँ आदि आठ विभाग

हैं ; २६ प्रधान और ४२ सहायक, कुल ६६ कार्यकर्त्ता समिति के अंदर कार्य करते हैं ; प्रचार केंद्रों की संख्या ३६ है ; ८ हजार छात्र और १५०० छात्राएँ हिंदी का अभ्यास कर रही हैं ; हिंदी का प्रचार ५१ हाई स्कूलों और १५ एम० ई० स्कूलों में हो रहा है ; सहस्रों की संख्या में शिक्षार्थी परीक्षाओं में बैठते हैं ; १९३९ अगस्त में सरकारी हाई स्कूलों की ५, ६, ७ वीं कक्षाओं में हिंदुस्तानी पढ़ाने की व्यवस्था इस प्रांत के संयुक्त मंत्रिमंडल ने की और १०००) की सहायता समिति को दी ; १९४१ और ४२ में यह सहायता २४००) कर दी गई ; समिति प्रतिवर्ष कुछ न कुछ प्रचार-साहित्य तैयार करती है ; अब तक आठ पुस्तकें प्रकाशित की हैं ; समिति प्रचारक भी तैयार करती है ; २० प्रचारक अब तक तैयार किए जा चुके हैं ; हिंदी के १० और मारवाड़ी हिंदी के आठ पुस्तकालय भी इसके अंतर्गत हैं ; पाठ्यक्रम वर्धा रा० भा० प्र० समिति की परीक्षाओं का है ; रा० भा० प्र० समिति वर्धा की परीक्षाएँ तथा हाई स्कूलों की वार्षिक परीक्षाएँ भी होती हैं ; प्रांतव्यापी प्रचार आंदोलन के लिए समिति प्रतिवर्ष बारह चौदह हजार रुपए खर्च करती है ; प्रांतीय समिति के अंतर्गत १८ स्थानीय शाखा समितियाँ हैं जिनका संचालन महिलाएँ ही करती हैं और सबके अलग - अलग सदस्य तथा पदाधिकारी हैं , इन सभी समितियों के सदस्यों की संख्या ७०० है ; साहित्यिक समन्वय और सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन को दृष्टि में रखकर समिति ने असमीया हिंदी साहित्य परिषद् स्थापित की है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

वर्धा—१९३६ में नागपुर में अ० भा० हिं० सा० सम्मेलन के अवसर पर भाषा प्रचार के उद्देश्य से स्थापित; हिंदी प्रचारकों के तैयार करने के लिए राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर, वर्धा की स्थापना; प्रांतों में दौरा करके प्रचार-कार्य करना; राष्ट्रभाषा में प्रारंभिक,प्रवेश,परिचय,कोविद चार परीक्षाएँ समिति की ओर से अहिंदी-भाषियों के लिए होती हैं। इस समय समिति के अंतर्गत ४८२ केंद्र हैं; १९४२ की परीक्षाओं में ४०११५ विद्यार्थी बैठे थे; परीक्षाओं के लिए समिति ने १७ पुस्तकें प्रकाशित की हैं; १९३९ में शीघ्रलिपि व मुद्रा लेखन की भी सफल योजना की; समिति के पुस्तकालय में भेंट स्वरूप प्राप्त २९७१ पुस्तकें हैं; १९३९ में 'सब की बोली' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ फिर 'राष्ट्र-भाषा समाचार' मासिक पत्र प्रकाशित होने लगा; प्रामाणिक प्रचारकों की योजनानुसार ५३२ प्रमाण पत्र दिए जा चुके हैं; समिति के अंतर्गत आठ प्रांतों में प्रांतीय समितियाँ हैं; वर्तमान मंत्री-आनंद कौसल्यायनजी हैं।

राष्ट्रभाषा - प्रचारिणी समिति, हैदराबाद, सिंध—वर्धा-समिति की योजना के अनुसार परीक्षाएँ चलाती है; दादू नगर में इसका सम्मेलन गत वर्ष हुआ था; इसके प्रांतिक सभापति प्रो० एन० आर० मलकानी और मंत्री श्रीदेवदत्त कुंदाराम शर्मा हैं।

राष्ट्रभाषा प्रेमी मंडल, पूना—२२ अक्टूबर १९३९ में स्थापित; सदस्य संख्या १३२; मंडल के अंतर्गत एक निःशुल्क पुस्तकालय और वाचनालय है; मुरलीधर लोहिया इसके प्रधान हैं और अच्यालाल भावसार मंत्री।

राष्ट्रभाषा विद्यालय,

पूना—स्थानीय नगरपालिका द्वारा मान्य, राष्ट्र भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार के उद्देश्य से १६४० में स्थापित; राष्ट्रभाषा प्रेमी १) चंदा देकर सदस्य हो सकता है ; सदस्य संख्या १००; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा संचालित परिक्षाओं के लिए सुबह शाम नाममात्र शुल्क पर वर्ग चलाए जाते हैं ; प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क दी जादी है ; संस्था के सब कार्यकर्त्ता अवैतनिक हैं ; इसके विभाग—प्रकाश पुस्तकालय—१००० पुस्तकें हैं तथा हिंदी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाएँ भी आती हैं ; चर्चाविभाग विद्यार्थियों को बोलने की आदत डालने के लिए प्रति शनिवार को पूर्व - नियोजित विषयों पर चर्चाएँ होती हैं ; समय-समय पर हिंदी भाषा भाषियों के व्याख्यानों का आयोजन, कभी काव्यगायन भी होता है ; विद्यालय की ओर से 'सेवा' नाम की हस्तलिखित मासिक पत्रिका निकलती है इसमें विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा राष्ट्रभाषा प्रेमियों की रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं ; गरीबों को विशेष सुविधाएँ दी जाती हैं ; खद्दर, ग्रामोद्योग, स्वदेशी हरिजन सेवा, कला कौशल, चित्रकला संगीत, साहित्य का अध्ययन आदि प्रवृत्तियों को उत्तेजन दिया जाता है ; पुस्तकालय के लिए पुस्तकें, प्रचार के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता है ।

राष्ट्रीय विद्यालय, खड्गप्रसाद, कटक, उड़ीसा—सम्मेलन और वर्धा समिति की सभी परीक्षाओं की शिक्षा देने और राष्ट्रभाषा - प्रचारक तैयार करने के लिए मार्च, १६४२ में स्थापित ; राष्ट्रभाषा-प्रचारार्थ दो केंद्र स्थापित किए ।

रामायण प्रचार समिति बरहज, गोरखपुर ; महात्मा

बालकराम विनायक की संरक्षता में स्थापित हुई, बाद में गीता प्रेस गोरखपुर चली गई और गीता प्रेस के व्यवस्थापक की देख रेख में रही ; अब बरहज में राघवदास द्वारा संचालित होती है ; मुख्य ध्येय भारतीय संस्कृति तथा साहित्य का प्रचार देश विदेश में करना ; पाँच परिक्षाएँ होती हैं–शिशु परीक्षा, प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा प्रथम खंड, उत्तमा द्वितीय खंड ; समिति की रामायण परीक्षा के लगभग साढ़े तीन सौ केंद्र देश-विदेश में हैं ; दस हजार परीक्षार्थी प्रतिवर्ष सम्मिलित होते हैं।

रामायण मंडल, सोहागपुर—रामायण एवं हिंदी-प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से १९४० में स्थापित ; स्थानीय हिंदी - साहित्य - समिति से संबंधित।

लोकमान्य समिति, छपरा—हिंदी प्रचार और उसके साहित्य की उन्नति के लिए १९२९ में स्थापित ; राष्ट्रलिपि देवनागरी-प्रचार के प्रबल आंदोलन में समिति सराहनीय सहयोग देती है ; कचहरियों और अर्ध-सरकारी संस्थाओं में देवनागरी टाइप राइटर प्रचलित करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

व्रजसाहित्य - मंडल, मथुरा—हिंदी-जगत् में मांडलिक संगठन के उद्देश्य से १९-२० अक्टूबर, १९४० को स्थापित ; मंडल का विशेष अधिवेशन युक्त प्रांतीय साहित्य सम्मेलन के आगरा अधिवेशन के अवसर पर १२ फरवरी १९४२ को रा० ब० पं० शुकदेवबिहारी मिश्र की अध्यक्षता में हुआ ; मंडल के प्रधान डा० वासुदेवशरण अग्रवाल तथा मंत्री पं० मदनमोहन नागर, एम० ए० हैं।

विद्याप्रचारिणी सभा, हिसार, पंजाब—नवंबर १९२२ में प्रसिद्ध ऐडवोकेट

पं० ठाकुरदासजी भार्गव के सहयोग से स्थापित ; अनेक सभासद् हुए जिनके प्रयत्न से गाँवों में ३१ हिंदी पाठशालाएँ खोली गईं जिन्हें १६२८ से डि० हिसार ने स्वीकृत किया तथा सहायता दी ; इसी सभा के प्रयत्न से पंजाब प्रांत भर के डिस्ट्रिक्ट बोर्डों में हिसार के स्कूलों में सब से अधिक शिक्षा का प्रबंध है ; भार्गवजी ने भी सभा को ४० हजार का दान दिया ; बेकारी दूर करने के लिए पढ़ाई के साथ-साथ १६२६ में सभा ने अपने सातरोद विद्यालय के लिए स्व० लाला लाजपतरायजी की पुण्य स्मृति में लाजपतराय शिल्पशाला जारी की जिसमें सब तरह का कपड़ा बुनना, बिनाई, कताई और निवार आदि सिखाए जाते हैं ; सभा की ओर से ओषधि का भी प्रबंध है ; हरिजन छात्र और लड़कियों की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है ; सभा की पाठशालाओं द्वारा सात हजार से अधिक आदमियोंने हिंदी शिक्षा प्राप्त की। लगभग सवा लाख रुपया हिंदी - प्रचार के लिए इस सभा की ओर से खर्च हो चुका है।

विद्याविभाग, कांकरोली (मेवाड़)—हिंदी-प्रचार-प्रसार के लिए स्थापित ; विभाग के अंतर्गत, पुस्तकालय वाचनालय, सरस्वती भंडार, ग्रंथ - प्रकाशनविभाग आदि ६ विभाग हैं जिनका अपना - अपना महत्त्व है ; लगभग १५-१६ पुस्तकें प्रकाशित कीं ; कई उत्साही कार्यकर्ताओं द्वारा संचालन होता है।

विदर्भ प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन — अ० भा० हिं० सा० सम्मे० से संबद्ध यह प्रथम संस्था है जिसने विदर्भ प्रांत में हिंदी प्रचार किया है ; सदस्य

लगभग ४५० ; कई प्रौढ़ शिक्षणकेंद्र तथा प्रारंभिक हिंदी स्कूल स्थापित किए हैं ; श्रीप्रभुदयालजी अग्निहोत्री इसके आचार्य हैं।

विदर्भ हिंदी-साहित्य-समिति, अकोला, वरार—देशव्यापी व्यवहार और कार्यों को सुलभ करने, राष्ट्र-भाषा-प्रचार और साहित्य की उन्नति के उद्देश्य से १९४२ में स्थापित ; उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न ; अनेक उत्साही सहायक हैं ; साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन-कार्य भी आरंभ कर दिया है ; श्रीकुँवर-लालजी गेलेड़ा, बी० काम०, एल-एल० बी० इसके सभा-पति और श्रीश्रीराम शर्मा, सा० र० इसके साहित्य-मंत्री हैं।

विंदु विनायक मधुकरी कला कुटीर, शांति कुटीर ; महात्मा विनायकजी तथा विंदुजी की अमर कृतियों के प्रकाशन एवं प्रचार के उद्देश्य से १९४१ में स्थापित लक्ष्मीनारायण मिर्जापुर, प्रधान, युगलकिशोर जालान मंत्री, एवं पं० रामरक्षा त्रिपाठी साहित्यरत्न 'निर्भीक' कुटीर अध्यक्ष हैं।

विहार प्रांतीय हिंदी-प्रचारिणी सभा, पटना ; १९४१ में स्थापित; हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रचार करना तथा उसे उचित अधिकार दिलाने के लिए सत्प्रयास करना ; हिंदी भाषा की उन्नति करना, आवश्यक विषयों के ग्रंथों से उसे सुसज्जित करना और उसके प्राचीन एवं अर्वाचीन भाण्डार की सुरक्षा करना ; हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का सदुद्योग करना, आदि इसके उद्देश्य हैं ; सदस्य १७१ हैं ; सभा के तत्त्वावधान में १७ अगस्त १९४१ को विहार प्रांत में हिंदुस्तानी के विरोध में

हिंदुस्तानी विरोधी दिवस सफलतापूर्वक मनाया गया था ; सभा की ओर से सरकारी अधिकारीवर्ग के पास भाषा के प्रश्न को सुलझाने तथा हिंदुस्तानी कमेटी को तोड़नेके सम्बंध में प्रतिनिधि-मंडल भेजा गया था ; प्रांत के सोरहो जिले में अनेक जिला शाखाएँ स्थापित हैं।

वीरसार्वजनिक वाचनालय, इंदौर—राष्ट्रभाषा-प्रसार और युवकों में साहित्यिक अभिरुचि उत्तेजित करने के उद्देश्य से जूलाई १९२९ में स्थापित ; सदस्य ७९ ; विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय और प्रकाशन विभाग हैं ; प्रथम में सम्मेलन की उच्च परीक्षाओं के लिए शिक्षा दी जाती है ; अंतिम में जैन - साहित्य-संबंधी दो पुस्तकें प्रकाशित करके अमूल्य वितरित की गई हैं।

वीरेन्द्र-केशव-साहित्य-परिषद् टीकमगढ़, झाँसी—स्थापना १९३०; संस्थापक—रावराजा डाक्टर श्यामविहारी मिश्र तथा श्रीगौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' ; संरक्षक—ओरछा-नरेश महाराज वीरसिंह ; वर्तमान सभापति—श्रीबनारसी-दास चतुर्वेदी ; निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ—देवेन्द्र-पुस्तकालय—लगभग २००० पुस्तकें तथा अनेक पत्रपत्रिकाएँ ; सुधा - वाचनालय—स्त्रियों के लिए ; पद्मसिंह शर्मा पुस्तकालय, गतारा—ग्रामों के लिए; निवाड़ी पुस्तकालय, निवाड़ी ; कवीन्द्र केशव पुस्तकालय, ओरछा नगर तथा ग्रामों में हिंदी-प्रचारार्थ ; देव-पुरस्कार—प्रतिवर्ष २०००) का देव-पुरस्कार—एक वर्ष खड़ीबोली दूसरे वर्ष व्रजभाषा के काव्य के लिए दिया जाता है ; 'मधुकर'—संपादक बनारसीदास चतुर्वेदी ; सहा० संपादक श्रीयशपाल जैन, बी०.

ए०, एल०एल० बी०; स्थापना—अक्टूबर १६४० ; लेखकों को पारिश्रमिक दिया जाता है ; बुंदेलखंडी विश्वकोष—बुंदेलखंड का गौरवग्रंथ ; बुंदेलखंडी भाषाकोष, ग्रामगीतसंग्रह आदि।

शांति-स्मारक हिंदी-साहित्य-समिति, करेली, मध्य भारत—स्थानीय साहित्यिक हलचलों को प्रगतिशील करने के लिए स्थापित ; मंत्री श्रीराधेलाल शर्मा 'हिमांशु' हैं।

श्रमजीवी लेखकमंडल, लखनऊ—सभापति 'माधुरी' संपादक पंडित रूपनारायण पांडेय ; मंत्री, श्रीब्रजेंद्रनाथ गौड़ ; महिला मंत्रिणी कुमारी शांति हैं ; प्रतिनिधि मंत्री श्रीमामराज शर्मा हर्षित हैं। १० जून, सन् १६४२ को स्थापित; उद्देश्य—हिंदी लेखकों, संपादकों और प्रकाशकों के बीच मैत्री और सहयोग भावना स्थापित करना ; प्रतिभाशाली नवीन लेखकों को प्रकाश में लाना ; श्रमजीवी लेखकों को उचित पारिश्रमिक दिलाने का प्रयत्न करना ; दो सौ सदस्य भारत के हर प्रांत में हैं; संस्था का प्रधान कार्यालय लखनऊ में है और यहीं से पत्रों आदि को मैटर भेजा जाता है। यहाँ हर लेखक, पत्रसंपादक और पत्र का पता और पारिश्रमिक के नियम का साधारण ब्योरा रहता है ; परामर्शदाता हैं ; हर नगर में इसके प्रतिनिधि हैं ; यह अपने ढंग की अकेली संस्था है।

'अंशु'-साहित्य-मंडल, मकरार, झाँसी; जनवरी १६३५ में स्थापित ; हिंदी की सेवा करना, नवीन लेखकों और कवियों को प्रोत्साहन देना, लेखकों और कवियों की रचनाओं का पढ़ा जाना, संशोधन करना आदि उद्देश्य ; सदस्य-संख्या २५ है।

सरस्वती-परिषद्, हैदराबाद, सिंध—हिंदी-संस्कृत-साहित्य के प्रचार के लिए सन्

१६३२ में स्थापित; पं० मणि-शंकर जयशंकर शर्मा काव्यतीर्थ इसके सभापति और पं० देव-दत्त कुंदाराम शर्मा मंत्री हैं।

साकेत साहित्य समिति, फैजाबाद ; हिंदी-साहित्य की वृद्धि के उद्देश्य से १६४० में स्थापित ; समय-समय पर साहित्यगोष्ठी और गंभीर विषयों पर विचार करना, साहित्य की नवीन खोज की रिपोर्ट जनता को सुनाना तथा साहित्य-प्रदर्शिनी का नया आयोजन का काम भी समिति करती है।

साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब—लगभग १६ वर्ष पूर्व यह संस्था एक छोटे से पुस्तका-लय के रूप में स्थापित हुई ; उसका आधुनिक रूप निम्न विभागों सहित एक बृहत् रूप में है; केंद्रीय पुस्तकालय–इसमें लगभग दस हजार हिंदी की विविध विषयात्मक पुस्तकें ; इसके अतिरिक्त संस्कृत, गुरु-मुखी, उर्दू, अँगरेजी, गुजराती, बँगला, मराठी आदि भाषाओं की भी पुस्तकें हैं ; वाचनालय—पुस्तकालय के साथ; भारत की प्रमुख भाषाओं के लगभग ८६ पत्रपत्रिकाएँ ; पाठकों की दैनिक संख्या ८०; संग्रहालय—वाचनालय के ही भवन में हस्तलिखित ग्रंथों, भिन्न-भिन्न काल के विविध देशों के सिक्कों, डाक-टिकटों, शिल्पकारी की अनुपम वस्तुओं, विभिन्न देशवासियों के जीवन संबंधी प्राचीन व प्राकृतिक दृश्यो, जीवजन्तुओं के चित्रों, प्रतिमूर्तियों, महापुरुषों के चित्रों तथा आदर्श वाक्यों आदि से सुसज्जित ; निःशुल्क हिंदी पाठशाला—श्रीपुरुषोत्तम-दास टंडन के उद्योग से सन् १६४० से संचालित ; पंजाब हरिजन सेवकसंघ द्वारा १५) मासिक की सहायता ; पाठ-शाला में दो अध्यापक ; चलता पुस्तकालय—इस विभाग का संचालन एक कमेटी द्वारा; अनेक साप्ताहिक

तथा दैनिक पत्र ; इसके अंतर्गत ग्रामसाहित्य मंडल तथा अक्षरप्रचार योजना की गई है ; चौधरी पद्माराम की सहायता से चलता पुस्तकालय मंदिर का निर्माण हुआ ;

मासिक 'दीपक'—संपादक तेगराम; पंजाब, युक्तप्रांत, मध्यप्रांत, बिहार, उड़ीसा, बंबई, सिंध प्रांतों तथा बीकानेर, कोटा, बड़ोदा, जम्मू, काश्मीर तथा जोधपूर आदि द्वारा शिक्षाविभागों, स्कूलों, छात्रालयों, पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत; दीपक प्रेस—मासिक 'दीपक' तथा पुस्तकप्रकाशन के कार्यार्थ ; पुस्तकप्रकाशन—लगभग १२ पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है; प्रचार कार्य—देवनागरी लिपि के प्रचारार्थ लगभग पंद्रह हजार वर्णमाला चार्टों का दान; गुरुमुखी जाननेवालों के लिए 'हिंदी गुरुमुखी शिक्षक' और उर्दू जाननेवालों के लिए 'हिंदी उर्दू शिक्षक' पुस्तिकाएँ दी जाती हैं; परीक्षा विभाग—हिंदी-साहित्य-सम्मेलनकी परीक्षाओं, पंजाब विश्वविद्यालय की हिंदी परीक्षाओं तथा काश्मीर की परीक्षाओं का केंद्र ; नवीन परीक्षाओं के प्रबंध, एवं चालू पाठशालाओं की व्यवस्था तथा केंद्र-स्थापन कार्य के लिए अलग संस्था है ; पुष्पवाटिका जलाशय—पुस्तकालय एवं वाचनालय के लिए विशाल भव्य भवन, कार्यकर्ताओं के रहने के लिए खुले और स्वास्थ्यप्रद मकानों तथा साहित्य सेवियों के प्रबंध के लिए अनेक सुविधाएँ ; वि०—सदन के विभिन्न भागों में लगभग ४०००) वार्षिक व्यय होते हैं।

साहित्य सदन में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का ३० वाँ अधिवेशन हुआ; सम्मेलन को निमंत्रित करनेवाले इसी संस्था के सदस्य थे ; संस्था के प्राण श्रीस्वामी केशवानंद को इस अधिवेशन की सफलता का अधिकांश श्रेय है ।

साक्षरता परिषद्, (अखिल भारतीय), प्रयाग—विश्व-साक्षरता-परिषद् की भारतीय शाखा; भारतीयों में शिक्षा-प्रचार के हेतु कुँवर श्रीद्वारिकाजी शेरेजंग बहादुर शाह द्वारा १९३४ में स्थापित ; प्रति वर्ष वसंत-पंचमी को साक्षरता-समारोह मनाया जाता है।

सिंध प्रांतिक हिंदी आयुर्वेद-प्रचारिणी सभा, हैदराबाद, सिंध—हिंदी माध्यम से आयुर्वेद का प्रचार उद्देश्य है; हिंदी में आयुर्वेदीय ग्रंथों का प्रकाशन उद्देश्य है।

सुहृद्संघ, मुजफ्फरपुर—बिहार की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था ; हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार, साहित्य के अंगों की पुष्टि, हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने का उद्योग करने और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए विशाल संग्रहालय खोलने के उद्देश्य से १९२९ में स्थापित; जन्मदाता श्रीनीतीश्वरप्रसाद-सिंह ; हिंदी-सेवा की विभिन्न योजनाएँ बनाईं और सफलतापूर्वक उनका संपादन किया ; हिं० सा० सम्मे० और ना० प्र० सभा० काशी से संबंधित ; १४ जून १९३६ को प्रथम वार्षिकोत्सव प्रो० मनोरंजन, एम० ए० के सभापतित्व में ; नवंबर १९३६ में पुस्तकालय और वाचनालय की स्थापना; १९३७ के वार्षिक अधिवेशन के अंतर्गत साहित्य-परिषद्, कवि सम्मे० और हास्य-परिहास-सम्मे० ; चतुर्थ वार्षिकोत्सव में देशरत्न डा० राजेंद्रप्रसाद उपस्थित थे ; रेडियो की भाषा का तीव्र विरोध १९४० में किया ; इसी वर्ष ग्राम्यगीत, देहाती कहानियों, कहावतों, मुहावरों, अंधविश्वास आदि के संग्रह के लिए कमेटी; बिहार प्रांतीय निरक्षरता-निवारण-समिति के रोमन-लिपि-संबंधी प्रस्ताव के विरोध में प्रांत-व्यापी

सफल आंदोलन ; कचहरी में हिंदी-प्रवेश के लिए संघ के कार्यकर्त्ताओं ने वकीलों, मुख्तारों और कातियों से समय-समय पर वार्तालाप ; देहातों में निरक्षरता-निवारण के लिए काम ; पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए समिति ; हिंदुस्तानी के अनुचित और अस्वाभाविक रूप का अनवरत विरोध; श्रीकृष्णनंदनसहाय इसके वर्तमान सभापति और श्रीनीतीश्वरप्रसादसिंह मंत्री हैं।

सुहृद्-साहित्य-गोष्ठी, नीलकंठ, काशी—हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए १९४२ में स्थापित ; सम्मेलन की परीक्षाओंकी शिक्षा का निःशुल्क प्रबंध करती है।

हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़, बीकानेर—राजस्थान का सबसे बड़ा पुस्तकालय ; सन् १९१९ में सेठ सूरजमल नागरमल द्वारा स्थापित ; पुस्तकालय में १५००० पुस्तकें हैं और लगभग ७५ पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं ; पुस्तकालय की ओर से कई रात्रि-पाठशालाएँ, बालिका - विद्यालय, शिल्प एवं व्यायामशालाएँ खोली गई हैं ; इस पुस्तकालय द्वारा लगभग २७ ग्राम्य पाठशालाओं का संचालन भी होता है जिनमें हिंदी-प्रचार का समुचित प्रबंध है ; इस समय श्रीसूर्यमल माठोलिया प्रधान मंत्री और श्रीमोतीलाल पारीक, पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं।

हरियाणा हिंदी प्रचारिणी सभा, भिवानी, हिसार पंजाब—हिंदी-प्रचार के उद्देश्य से १९४१ में स्थापित ; सदस्य पचास ; डाक घर का काम हिंदी में कराती और निःशुल्क शिक्षा देती है; हरियाणा हिंदीसाहित्यमंडल की स्थापना करके प्रांतीय सम्मेलन किया ; समिति के प्रचार-मंत्री श्रीमुरलीधर दिनोदिया ने 'एकता'

साप्ताहिक निकाला ; सम्मेलन के अबोहर अधिवेशन में आर्थिक सहायता दी ; हस्त-लिखित मासिक 'हिंदी हितैषी' निकाला; इनकमटैक्स विभाग नई दिल्ली और लाहौर से रिटर्न फार्म नागरी में भिजवाने का प्रबंध किया; सभा का कार्य बड़े ढंग से हो रहा है।

हिंदी अध्यापक संघ, इरणाकुलम्—स्थानीय हिंदी प्रचारकों की संगठित संस्था है; पाक्षिक बैठकें होती हैं ; इनमें सब प्रचारक सम्मिलित परामर्श द्वारा कार्यक्रम और संगठित रूप से काम करने की व्यवस्था बनाते हैं ; अध्यक्ष श्री ए० चंद्रहासनजी हैं और मंत्री श्रीएन० कन्नन मेनोन।

हिंदी-प्रचार-मंडल, बदायूँ—हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान के प्रचार-प्रसार के लिए १९३७ में स्थापित ; १९४१ से इसके अंतर्गत एक विद्यालय चल रहा है जिसमें स्थानीय विद्वान् अवैतनिक शिक्षा देते हैं ; सम्मेलन, हिंदी विद्यापीठ विहार और अ० भा० आर्यकुमार सभा की परीक्षाओं का केंद्र है ; कचहरी का काम हिंदी में कराने के लिए प्रयत्नशील है ; प्रचार-कार्य में लगभग १००) प्रति वर्ष व्यय होता है ; हिं० सा० सम्मेलन और ना० प्र० सभा काशी से संबंधित भी है।

हिंदी-प्रचार-सभा, तामिलनाड—तामिल प्रांत में हिंदी प्रचार-प्रसार के संचालन और नियंत्रण के उद्देश्य से स्थापित; प्रधान कार्यालय त्रिचनापल्ली में है ; सभा की देखरेख में प्रांत के दस जिलों के सौ से अधिक केंद्रों में हिंदी-प्रचार हो रहा है ; डेढ़ सौ से अधिक अधिकारी प्रचारक काम कर रहे हैं ; सभा के प्रयत्न से सौ से अधिक स्कूलों में अनिवार्य रूप से हिंदी पढ़ाई जाती है ; सभा के दो सौ से अधिक सदस्य हैं ; प्रति वर्ष लगभग चार हजार विद्यार्थी दक्षिण

भारत हिंदी प्रचार सभा की परीक्षाओं में बैठते हैं ; श्री आर० श्रीनिवास अय्यर, वकील इस सभा के अध्यक्ष और श्रीअवधनंदन मंत्री हैं ; सभा की ओर से एक मासिक पत्रिका 'हिंदी पत्रिका' के नाम से निकलती है जिसके संपादक स्थानीय नेशनल कालेज के वाइस प्रिंसिपल श्रीअ० राम० अय्यर, एम० ए० और श्रीअवधनंदन हैं ; सभा प्रतिवर्ष १२०००) प्रचार कार्य पर खर्च करती है।

हिंदी-प्रचार सभा, मदुरा—हिंदी-प्रचार-प्रसार ; सभा की देखरेख में पचीस प्रचारक काम करते हैं जिनमें कई स्त्रियाँ भी हैं; सारे दक्षिण भारत में हिंदी-प्रचार का यह सबसे बड़ा केंद्र है।

हिंदी-प्रचार-सभा, हैदराबाद (दक्षिण)—स्थानीय प्रमुख संस्था ; पुस्तकालय, वाचनालय, परीक्षा, प्रचार इत्यादि इसके कई विभाग हैं; हैदराबाद रियासत में सरकार की ओर से हिंदी को शिक्षा का माध्यम नहीं स्वीकार किया गया है; फिर भी अनेक विद्यालयों में सभा के प्रयत्न से हिंदी-शिक्षा का समुचित प्रबंध है और सभा इसका क्षेत्र बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील है ; रियासत के बीस से ऊपर स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई होती है ; जनता में हिंदी-प्रचार का अधिकांश श्रेय सभा को ही है ; तीन-चार वर्ष से सभा की प्रारंभिक परीक्षाओं का प्रचार भी बढ़ रहा है ; समय समय पर साहित्यिक अधिवेशन करती है; वर्तमान सभापति राय श्रीहरीलालजी बागरे और मंत्री श्रीजितेंद्रनाथ बागर हैं।

हिंदी प्रचारिणी सभा, त्रिचनापली—सुदूर दक्षिण प्रांत में हिंदी-प्रचारक संस्था हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के अंतर्गत ; यहाँ से हिंदी की 'हिंदी पत्रिका' भी १९३८ से

निकल रही है; जिससे हिंदी का विशेष प्रचार किया जाता है; दक्षिण की हिंदी सभाओं में इस सभा का अच्छा स्थान है; श्रीअवधनंदन प्रधान मंत्री हैं।

हिंदी प्रचार संघ, पूना—राष्ट्रभाषा का देवनागरी लिपि द्वारा अखिल महाराष्ट्र में प्रचार के उद्देश्य से श्रीग० र० वैशंपायन द्वारा स्थापित; सम्मेलन के आदेशानुसार काम कर रहा है; अबोहर अधिवेशन में संघ के भिन्न-भिन्न स्थानों के सोलह कार्यकर्त्ता उपस्थित थे; इस वर्ष 'पूना वसंत व्याख्यान माला' में हिंदी में व्याख्यान कराने का प्रयत्न किया गया; सदस्य संख्या २१५; संघ की ओर से हिंदी शिक्षा के लिए दो स्थानों में वर्ग चलाए जाते हैं; इस वर्ष ३८७ नए विद्यार्थियों ने संघ में प्रवेश किया और ४२० राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं में सम्मिलित हुए।

हिंदी प्रचार समिति, तिरुवन्तपुर—१९३० में श्री-के० वसुदेवन पिल्ले द्वारा त्रिविड्रूम में स्थापित; ट्रावणकोर की धारा सभा में हिंदी पाठन का प्रस्ताव पास कराया; पीछे यह संस्था दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति के अधीन हुई; अब यह ट्रावणकोर राज्य के ४० केंद्रों में प्रचार कार्य करती है; दक्षिण भारत में हिंदी परीक्षाओं में बैठनेवाले परीक्षार्थिओं में सबसे अधिक संख्या इसी क्षेत्र से होती है; ट्रावणकोर की सरकार इस संस्था को ४०) रु० प्रतिमास सहायता देती है; श्रीराय रामकृष्णअयर० बी० ए०, बी० एल० इसके प्रधान और श्रीवासुदेवन पिल्ले वर्तमान मंत्री हैं।

हिंदी प्रचार समिति, छावनी, बँगलोर—राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को लेकर १९३४ में स्थापित; स्थानीय विद्यालयों में हिंदी के अधिकार दिलाने का प्रयत्न;

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा और हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रबंध; लगभग सौ विद्यार्थी प्रतिवर्ष परीक्षा में बैठते हैं; अनेक राष्ट्रभाषा-प्रेमियों का सहयोग प्राप्त; हिंदी-प्रेमियों की सुविधा के लिए पुस्तकालय और वाचनालय का प्रबंध है; विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तियाँ और पुरस्कार भी दिए जाते हैं; समिति का काम बड़ा संतोषप्रद है; श्रीलोकनाथजी इसके प्रमुख उत्साही कार्यकर्त्ता हैं।

हिंदी प्रचारिणी सभा, कृष्णनगर लाहौर—हिंदी के अधिकारों को सरकारी अन्याय और आघात से सुरक्षित रखने और उसके साहित्य की उन्नति करने के उद्देश्य से १९३३ में स्थापित; सभा की ओर से कई उपयोगी योजनाएँ प्रकाशित की गई हैं; पं० तुलसीदत्त 'शैदा' इसके प्रधान हैं और श्रीमूलजी मनुज, एम० ए० मंत्री।

हिंदी-प्रचारिणी-सभा, खुर्जा — राष्ट्रभाषा और साहित्य की उन्नति के लिए १९३९ में स्थापित; १५५ सदस्य हैं, स्थानीय म्यूनिसिपलबोर्ड में हिंदी-प्रवेश का सफल प्रयत्न; रेडियो-नीति-विरोधी आंदोलन किया; डाकघर, मुंसिफी, तहसील आदि में हिंदी-प्रचार का सतत प्रयत्न; डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बुलंदशहर की पाठशालाओं में हिंदी प्रचार।

हिंदी-प्रचारिणी सभा, बलिया; १९२३ में स्थापित; हिंदी प्रचार, कचहरियों में हिंदी प्रवेश का प्रयत्न; 'बलिया के कवि और लेखक', 'रसिक गोविंद और उनकी कविता' तथा 'सरस सुमन' आदि का प्रकाशन हुआ है; सदस्य ५०; सभा के अंतर्गत एक चलता-पुस्तकालय है जिसके मंत्री श्रीगणेशप्रसाद हैं।

हिंदी प्रचारिणी सभा, लायलपुर—हिंदी प्रचार-प्रसार और उसके अधिकारों की रक्षा करने के उद्देश्य से स्थापित; समय-समय पर अनेक साहित्यिक योजनाएँ बनाती है।

हिंदी भाषा प्रचारिणी समिति, पथरिया (सागर)—की श्रीशारदा शांति साहित्य सदन के अंतर्गत काम करती है; १९२० में साहित्य-गोष्ठी और १९२५ में चलता पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित हुआ; गांवों में हिंदी-प्रचार किया; दैनिक 'प्रभात' और मासिक 'प्रभात-संदेश' प्रकाशित करती है; दोनों हस्तलिखित होते हैं। अनेक साहित्यिक आयोजनों को कार्यरूप दिया; सदस्य १५०; १९२६ में शरद् व्याख्यान-माला और व्याख्यान विनोदिनी सभा चलाई; १९२७ में हस्तलिखित मासिक 'शिक्षा-सुधा' प्रकाशित की; १९३१ में ५०० व्यक्तियों में साक्षरता-प्रसार किया; १९३२ में १४ हिंदी शालाएँ स्थापित कीं; १९३३ में कुछ गांवों में पुस्तकालय और वाचनालय खोले; १९३४-३५ में गांवों में ९ सभाएँ स्थापित हुईं; रामगढ़ में नागरिक मंडल खोला गया; तीन वर्षों में ४१ नाटक खेले गए; अप्रैल १९३६ से मुंशी काशीप्रसाद की स्मृति में ग्रामसुधार साहित्य पर प्रति तीसरे वर्ष एक स्मृतिपदक की घोषणा की; १९३७ में एक प्रांतीय सम्मेलन किया गया; १९३८ में साक्षरता-प्रसार का विशेष कार्य हुआ; १९३९ में १५ ग्रामों में २१ सभाएँ हुईं; हस्तलिखित ग्रंथों की भी खोज की गई; १९४० में साक्षरता-प्रचारक शालाओं की संख्या ४५ से ९० तक हो गई; इस प्रकार समिति का काम निरंतर उन्नति कर रहा है।

हिंदी विद्यापीठ, उद-

यपुर—राजस्थान में राष्ट्र-भाषा प्रचार के लिए १९४० में स्थापित; दस से अधिक रात्रिपाठशालाओं का संचालन करती है; इस समय राजस्थान के प्राचीन साहित्य के शोध-खोज और संपादन प्रकाशन ही मुख्य लक्ष्य है; 'राजस्थान में हस्तलिखित ग्रंथों की खोज' (प्रथम भाग) प्रकाशित किया; इसके अंतर्गत 'सरस्वतीमंदिर' है जिसमें लगभग २५०० पुस्तकें हैं; संचालन लगभग पैंतीस साहित्यसेवी करते हैं; प्रधान मंत्री श्रीजनार्दनराय नागर, एम० ए० हैं।

हिंदी-विद्यापीठ, बंबई—राष्ट्रभाषा-प्रचार और उसके साहित्य की उन्नति के लिए स्थापित; शिक्षा, परीक्षा पुस्तकालय और वाङ्मय मंडल इसके प्रमुख और विभाग हैं; 'हिंदी-प्रथमा', हिंदी मध्यमा', 'हिंदी उत्तमा' और 'हिंदी भाषा-रत्न' (उपाधि परीक्षा) आदि परीक्षाएँ अहिंदी भाषियों के लिए विद्यापीठ द्वारा चलाई जाती हैं; 'हिंदी भाषा रत्न' नामक उपाधि परीक्षा हिं० सा० सम्मेलन द्वारा मान्य है और इसमें उत्तीर्ण विद्यार्थी सम्मेलन की मध्यमा में बैठ सकते हैं; विद्यापीठ की सभी कक्षाएँ निःशुल्क हैं और प्रवेशशुल्क भी नहीं लिया जाता है; प्रति वर्ष लगभग ५०० पुस्तकें पुस्तकालय में बढ़ती हैं; सदस्यों की संख्या लगभग १०० है; लगभग ५० सज्जन अध्यापन में सहायता देते हैं; लगभग ५० अहिंदी-भाषी अब तक 'हिंदी भाषा रत्न' परीक्षा पास कर चुके हैं; परीक्षाओं के लगभग चालीस केंद्र बंबई और आस पास के स्थानों में हैं; इसकी अध्यक्षिका श्रीमती लीलावती मुंशी, एम० एल० ए० और मंत्री श्रीभानुकुमार जैन हैं

हिंदी विद्यामंदिर, आबू-रोड—प्रसिद्ध राष्ट्रभाषा-प्रचारक-संस्था; १९२० में स्थापित; इसके अंतर्गत रात्रिपाठशाला, पुस्तकालय, वाचनालय, महिलाविद्यालय आदि संस्थाएँ हैं जिनमें हिंदी का विशेष प्रचार किया जाता है; संस्था के २०० सदस्य हैं; प्रधान संचालक पं० सीताराम शास्त्री और मंत्री श्रीरामेश्वर-प्रसाद हैं।

हिंदी शिक्षित समाज, अयोध्या; १९३७ में स्थापित; चार अंग—साहित्य विभाग, साहित्य चर्चा के लिए, परीक्षा विभाग विभिन्न परीक्षाओं की पढ़ाई का निःशुल्क प्रबंध; पुस्तकालय विभाग लगभग १००० पुस्तकें वाचनालय है, संग्रहालय विभाग में प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों का संग्रह है; श्रीनिवास अध्यापक, एम० ए०, एल-एल० बी० ऑनरेरी मजिस्ट्रेट सभापति, और सा० र० पं० रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक' मंत्री हैं।

हिंदी समाचारपत्र प्रदर्शनी, कसारट्टा रोड, हैदराबाद, दक्षिण—हिंदी समाचार पत्रों का संग्रह और प्रदर्शन, हिंदी पत्रकार कला के इतिहास का संकलन और प्रकाशन तथा हिंदी पत्रकारों की जीवन-संबंधी सामग्री और चित्रों का संग्रह तथा प्रकाशन के उद्देश्य से जनवरी १९३५ में स्थापित; इसमें लगभग २००० पत्रों के प्रथमांक, विशेषांक और अंतिमांक संगृहीत हैं; इस प्रकार हिंदी पत्रकार कला का एक प्रामाणिक संग्रहालय तैयार हो रहा है; स्थायी समिति के अध्यक्ष 'विशालभारत' के भूतपूर्व यशस्वी संपादक श्री-बनारसीदास चतुर्वेदी और मंत्री श्रीवंकटलाल ओझा हैं।

हिंदी साहित्य परिषद्, गोंडा—मार्च १९३१ में संथाल जिला हिंदी साहित्य

सम्मेलन के अवसर पर स्थापित; सदस्य संख्या १५० जिनमें ईसाई और मुसलमान भी सम्मिलित हैं; प्रांतीय सरकार और जिला बोर्ड से भी सहायता मिलती है; परिषद् द्वारा संथालों में देवनागरी लिपि का प्रचार खूब जोरों से जारी है; श्रीयुत बुद्धिनाथ झा 'कैरव' प्रधान हैं और बा० गिरिनाथ सिंह-जी मंत्री हैं; परिषद् विशाल भवन बनाने जा रही है।

हिंदी-साहित्य-परिषद्, मथुरा—हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि और प्राचीन धर्म-ग्रंथों की रक्षा के उद्देश्य से स्थापित; ब्रजसाहित्य-मंडल की स्थापना इसी के उद्योग से हुई है।

हिंदी साहित्य-परिषद्—मेरठ १६३६ में स्थापित; कवि सम्मेलनों, व्याख्यानों, गल्प सम्मेलनों, स्मृति दिवसों आदि की आयोजना करती है; भारतीय ग्रंथमाला में साहित्यिक विषयों की विवेचना का प्रबंध; और एक त्रैमासिक हस्तलिखित का प्रकाशन करती है; श्री० स० ही० वात्सायन, 'अज्ञेय', इसके प्रधान और श्रीकृष्ण-चंद्रशर्मा 'चंद्र' मंत्री हैं।

हिंदी साहित्य परिषद्, लखीमपुर; १६४० में स्थापित; नागरी लिपि और नागरी भाषा प्रचार करना उद्देश्य है; कचहरी में हिंदी प्रचार और हिंदी-टाइप करने का प्रयत्न; कहानी सम्मेलन, हास्य सम्मेलन, कवि सम्मेलन, निबंध सम्मेलन आदि का आयोजन भी हुआ करता है; श्रीवंशीधर मिश्र तथा पं० श्यामनारायण मिश्र के सदुद्योग से हिंदी टाइप राइटर योजना को कार्यरूप दिया जा रहा है; फलस्वरूप स्थानीय कचहरी का ३५ प्रतिशत काम हिंदी में होता है।

हिंदी साहित्य-परिषद्, श्रीनगर, काश्मीर—हिंदी-

प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित, संस्था के प्रधान पं० अमरनाथ काक हैं जो सम्मेलन के काश्मीर-प्रचार के प्राण हैं; परिषद् द्वारा सम्मेलन की कोविद और परिचय परीक्षाओं का प्रचार किया जाता है ; सदस्य १२५ के लगभग हैं।

हिंदी साहित्य - पुस्तकालय, मौरावाँ—साहित्य-सेवा तथा प्रचार के उद्देश्य से १९१८ में बाबू जयनारायण कपूर और श्री बलखंडी दीन सेठ द्वारा स्थापित ; कपूरजी ही इसके मुख्य संस्थापक, संचालक और स्तंभ है ; वर्तमान मंत्री बाब हृदयनारायण सेठ हैं ; अछूतों को निःशुल्क सहायता ; साहित्य-प्रचार के उद्देश्य से विभिन्न स्थानों में पुस्तकालय सेवाकेंद्र खोले और शाखाएँ स्थापित कीं ; 'जिला पुस्तकालय संघ' की योजना १९३५ में बनाई 'साक्षरता-समिति' भी स्थापित की ; १९३५ में साहित्य-परिषद्, कवि-सम्मेलन, लेख-प्रतियोगिता साहित्य-प्रदर्शनी और पुस्तकालय-परिषद् का विशाल आयोजन किया ; इसी के फलस्वरूप 'उन्नाव जिला पुस्तकालय' और 'अवध साहित्य-मंडल' की स्थापना की गई ; वस्तुतः यह संस्था ग्रामीणों में नवीन जीवन का संचार कर रही है।

हिंदी-साहित्य - मंडल, भिवानी, हिसार, पंजाब—भाषा-प्रचार और साहित्य की अभिवृद्धि के लिए स्थापित ; सदस्य सौ ; स्थानीय साहित्यिकों और हिंदी-प्रेमियों को एक सूत्र में बाँध कर हिंदी के लिए क्षेत्र तैयार किया ; निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध करता है ; अनेक साहित्यिक आयोजन किए हैं ; कार्य सुचारु रूप से होता है।

हिंदी साहित्य सभा, बाँदा—अदालतों में हिंदी प्रचार के लिए स्थापित ;

स्थापना काल १९१४ ; बाँदा की कचहरियों में हिंदी के अंतर्गत नागरी प्रचारक पुस्तकालय है जिसके ८० सदस्य हैं ; सभा में सम्मेलन की परीक्षाओं के लिए एक केंद्र भी है; गाँवों में हिंदी प्रचार किया; सभा के अध्यक्ष कुँवर श्रीहरप्रसादसिंह और मंत्री श्रीमथुराप्रसाद हैं।

हिंदी साहित्य - सभा, लश्कर, ग्वालियर—१९०२ में 'नागरी हितैषिणी सभा' के नाम से स्थापना; उसी वर्ष कैलाशवासी सरदार बलवंत भैयासाहबजी की सेवा में राजकाज में नागरी लिपि व्यवहार की स्वीकृति प्राप्त की ; १९०७ में क्षेत्र विस्तृत करने के उद्देश्य से 'हिंदी-साहित्य-सभा' नाम धारण किया ; १९३८ में उक्त नाम से रजिस्ट्री कराई ; इस समय राज्य के अनेक प्रमुख स्थानों में इसकी शाखाएँ हैं ; ग्वालियर में हिंदी को राजभाषा स्वीकार कराके महत्वपूर्ण प्रचार-कार्य किया है ; साहित्य-निर्माण के उद्देश्य से सभा ने 'हिंदी मनोरंजन-ग्रंथमाला' और 'बालसखा-पुस्तकालय' इत्यादि प्रकाशन-संस्थाओं को जन्म दिया ; 'हिंदी - उर्दू - कोष' और 'व्यावहारिक शब्द - कोष' प्रकाशित किया ; प्रांतीय सम्मेलन का आयोजन किया; इसके कई अधिवेशन राज्य के प्रमुख स्थानों में हुए; सभा के सतत प्रयत्न से १९३८ में हिं०सा०सम्मेलन का बाईसवाँ अधिवेशन बड़ी सफलता से हुआ ; १९११ में पुस्तकालय, १९१३ में चलता-पुस्तकालय स्थापित किए ; पुस्तकालय में अब २०५० पुस्तकें हैं ; वाचनालय में २२ पत्र आते हैं ; १९२८ में सम्मेलन की परीक्षाओं का केंद्र स्थापित किया; परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए अध्यापन का प्रबंध भी है ; निजी विशाल भवन

बनाने के लिए भी सभा प्रयत्नशील है।

हिंदी साहित्य - सम्मेलन, प्रयाग—साहित्य के अंगों की पुष्टि और उन्नति, देश-व्यापी व्यवहारों और कार्यों को सुलभ करने के लिए राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार, मुद्रण सुलभ और लेखन सुलभ बनाने के लिए राष्ट्रलिपि में सुधार, सरकारी प्रबंध देशी राज्यों और विद्यालयों में देवनागरी लिपि का प्रवेश, हिंदी की परमोच्च शिक्षा के लिए विद्यापीठ और हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना तथा हिंदी को संसार की उन्नतिशील अन्य-भाषाओं के समक्ष स्थान दिलाना आदि उद्देश्य लेकर १९१० में इसकी स्थापना हुई; हिंदी भाषा तथा देवनागरी लिपि को अंतर्प्रांतीय व्यवहार की दृष्टि से सर्वमान्य बनानेवाली सबसे बड़ी संस्था है; सम्मेलन का परीक्षा-विभाग सबसे महत्त्वपूर्ण है; इसकी परीक्षाओं में लगभग ४५०० विद्यार्थी प्रतिवर्ष बैठते हैं; सम्मेलन के अंतर्गत राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा अहिंदी प्रांतों में चलाई जानेवाली परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लगभग १४५०० परीक्षार्थी बैठते हैं; पंजाब और काश्मीर में भी सम्मेलन ने दो नई परीक्षाएँ चलाई हैं; सम्मेलन की परीक्षाओं को संयुक्तप्रांतीय इंटरबोर्ड, अजमेर बोर्ड और बिहार सरकार ने सम्मानित किया है; सम्मेलन की सबसे ऊँची परीक्षा 'साहित्यरत्न' है; सारे भारत में इसके १५ केंद्र हैं।

सम्मेलन के संग्रहालय को माननीय श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन हिंदी भाषा और नागरी लिपि तथा इनसे संबंध रखनेवाली अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित पुस्तकों का जहाँ तक संबंध है संसार के सर्वश्रेष्ठ

संग्रहालयोंकी कोटि का बनाना चाहते हैं ; इसमें संगृहीत मुद्रित पुस्तकों की संख्या लगभग १४००० और हस्त-लिखित की लगभग ६०० है ; वाचनालय में लगभग १०० पत्र पत्रिकाएँ आती हैं ; संग्रहालय में पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी, पं० रामदास गौड़, श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी आदि स्वर्गीय साहित्यिकों के पत्रों के अलबम भी तैयार हैं ; संग्रहालय भवन में सभी सभापतियों के तथा प्रसिद्ध साहित्यिकों और देशी-विदेशी मल्लों के चित्र हैं।

सम्मेलन के साहित्य-विभाग ने सौ से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित की हैं ; इसके अंतर्गत संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों एवं पुराणों के अनुवाद हिंदी में प्रकाशित कराने के लिए संस्कृत अनुवाद - विभाग, पारिभाषिक शब्द - संकलन के लिए शब्द-संचय विभाग, प्रकाशन को सुचारुरूप देने के लिए संपादन-विभाग स्थापित किए गए हैं।

प्रचार-विभाग के अंतर्गत श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टंडन के उद्योग से मिर्जापुर, आगरा, बरेली, गोरखपुर, मुरादाबाद और बाँदा में हिंदी टाइप-राइटर-योजना चल रही है ; अदालती सभी काम हिंदी में किए जाने का प्रबंध हो रहा है।

सम्मेलन से संबद्ध संस्थाओं की संख्या ५४ है ; इस वर्ष सम्मेलन के सभापति श्रीअमरनाथ झा और मंत्री डा० रामप्रसाद त्रिपाठी हैं।

हिंदी साहित्य सम्मेलन,सारण, मशरक—१९३७ में स्थापित ; जिले भर में शाखाएँ खोलने, जिले के लेखकों, कवियों, साहित्यिकों, प्रकाशकों आदि के परिचय की सूची ; रेलवे, डाक आदि सरकारी विभागों में व्यावहारिक अशुद्ध शब्दों के शुद्ध रूप प्रकाशन में प्रयत्नशील है ; प्रो० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी,

एम० ए० इसके प्रधान और श्रीजगदम्बाशरण शर्मा, एम० ए० मंत्री हैं।

हिंदी साहित्य समिति. देहरादून—१९३५ में स्थापित; सदस्य संख्या १५० से ऊपर है; समिति की ५५०१७) की संपत्ति है; श्री गौतमदेव सिद्धांतालंकार मंत्री हैं।

हिंदी साहित्य समिति, पिलानी—साहित्यिक अभिरुचि के उत्पादन और संवर्धन के उद्देश्य से १९४० में स्थापित; समिति की ओर से एक हस्तलिखित त्रैमासिक पत्रिका निकलती है और विद्वानों द्वारा भाषण तथा कविता पाठ का प्रबंध होता है; एक स्वाध्याय मंडल भी इसके निरीक्षण में है जिसके द्वारा विद्यार्थियों को अंतरप्रान्तीय साहित्य का निरीक्षण करने को मिलता है; आख्यायिकाओं, गद्य-काव्य और एकांकी नाटकों के लेखकों को समिति की ओर से पुरस्कार दिया जाता है; सम्मेलन परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों को भी सुविधा पहुँचाई जाती है; कैप्टेन श्रीशुकदेवजी पांडेय इसके प्रधान हैं और श्री-बुधमलजी 'अरुण' मंत्री।

हिंदी साहित्य समिति, भरतपुर—स्थानीय सबसे पुरानी संस्था; १९१२ में स्थापित; सभा के पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकें ८००० से ऊपर, हस्तलिखित हिंदी ग्रंथ ६०० और हस्तलिखित संस्कृत ग्रंथ १००० के लगभग हैं; समिति के कार्यकर्त्ताओं और कृपालु सहायकों के सदुपयोग से सप्तदश हिं० सा० सम्मेलन म० म०, डा० गौरीशंकर हीराचंदजी ओझा के सभापतित्व में बड़ी सफलता से हुआ; समिति के सतत प्रयत्न से राज्य की भाषा हिंदी स्वीकृत की गई; समय-समय पर साहित्यगोष्ठी, स्वाध्याय-मंडल आदि की आयोजना द्वारा साहित्यिक

अभिरुचि-वृद्धि का सुप्रयत्न समिति करती है ; समिति की वर्तमान प्रगति का अधिकांश श्रेय श्रीवालकृष्ण दुबे को है; समिति प्रकाशन-कार्य के लिए प्रयत्नशील है ; सदस्य-संख्या २२५; सम्मेलन से संबद्ध है।

हिंदी-साहित्य-समिति, सोहागपुर—अ० भा० हिं० सा० सम्मे०से संबंधित; हिंदी प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से १९२८ में स्थापित ; बीस सदस्य ; पं० सुंदरलाल दुबे 'निर्बल सेवक' इसके प्रधान मंत्री और पं० लक्ष्मीनारायण तिवारी वकील सभापति हैं।

हिमाचल हिंदी-भवन, दार्जिलिंग—सम्मेलन के भूत-पूर्व मंत्री प्रो० व्रजराज की प्रेरणा से ११ जून, १९३१ को पार्वतीय प्रांत में राष्ट्रभाषा और साहित्य के प्रचारार्थ पुस्तकालय और वाचनालय के रूप में स्थापित ; सम्मेलन की परीक्षाओं के प्रचार और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था; इसकी मुख्य शाखाएँ—पुस्तकालय में दो हजार से अधिक पुस्तकें हैं; वाचनालय में बीस पत्र आते हैं ; निःशुल्क हिंदी प्रचार विद्यालय—१९३२ से संचालित ; १९३५ में वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की परीक्षाओं का केंद्र ; शिक्षकों का अवैतनिक सहयोग ; हिंदी-साहित्य-परिषद्—साहित्यिक आयोजन होते हैं; हिंदी० मि०ई० स्कूल-हिंदी माध्यम से शिक्षा १९३४ से ; सहशिक्षा होती है ; संस्कृत पाठशाला १९३४ से विद्यार्थियों को बंगाल संस्कृत एसोसिएशन के लिए तैयार करती है ; निजी भवन बनाया जा रहा है ; लगभग ५०००) जमा हो चुके हैं ; शेष ५०००) के लिए हिंदी प्रेमियों से आशा है ; श्री जंगबहादुरजी इसके मंत्री हैं।

द्वितीय खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

(ग) खंड

हिंदी प्रकाशकों

का

परिचय

अग्रवालप्रेस, प्रयाग—प्रसिद्ध प्रकाशक ; लगभग तीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ, साहित्य-परिचय आदि मुख्य हैं ; श्रीरामस्वरूप गुप्त व्यवस्थापक हैं।

'अरुण'कार्यालय,मुरादाबाद—प्रसिद्ध प्रकाशक ; कई पुस्तकें प्रकाशित ; अरुण सीरीज एवं कहानी मासिक 'अरुण' का प्रकाशन भी किया है।

भारतीमंदिर, सिमली, पटना—प्रसिद्ध प्रकाशनसंस्था; १६४० के लगभग स्थापित ; प्रकाशित पुस्तकों में संस्कृत का अध्ययन मुख्य है ; लगभग दो वर्ष तक मासिक 'भारती' का प्रकाशन किया ; श्रीप्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त' अध्यक्ष हैं।

इंडियनप्रेस लिमिटेड, प्रयाग—हिंदी की सर्वश्रेष्ठ, प्राचीन, एवं प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशन-संस्था ; स्व० श्रीचिंतामणि घोष द्वारा स्थापित; अब तक सब विषयों में प्रायः ५०० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें सचित्र हिंदी महाभारत, सटीक रामचरित मानस, विश्वकवि रवींद्रनाथ आदि मुख्य हैं, 'सरस्वती-सीरीज' के अंतर्गत लगभग ७० पुस्तकें प्रकाशित; लगभग पैंतालीस वर्षों से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ मासिक 'सरस्वती', तीस वर्षों से बालोपयोगी मासिक 'बालसखा', कई वर्षों से उर्दू-हिंदी मासिक 'हल', साप्ताहिक 'देशदूत', सचित्र 'संसार', का प्रकाशन हो रहा है ; श्रीहरिकेशव घोष अध्यक्ष हैं।

उद्योग-मंदिर, जबलपुर—ललित और सरस साहित्य का प्रकाशन ; संस्था०—श्रीकेशवप्रसादजी पाठक, एम० ए०; ग्रंथ—त्रिधारा,मुकुल, बिखरे मोती, उन्मादिनी, सभा के खेल।

एजूकेशनल पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, लख-

नऊ—वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय ज्ञानवर्धक साहित्य के प्रकाशक ; १६३६ में स्थापित; 'हिंदी विश्वभारती' के नाम से एक अभूतपूर्व ज्ञानकोश का प्रकाशन किया जा रहा है जिसके २० खंड प्रकाशित हो चुके हैं ; अन्य प्रकाशित पुस्तकों में 'भारत-निर्माता, मानो न मानो, अंतर्राष्ट्रीय ज्ञानकोष विशेष प्रसिद्ध हैं ; कई सम्मानित विद्वानों द्वारा संचालित है।

✓ ओरियंटल बुकडिपो अनारकली,लाहौर—साहित्यिक-प्रकाशन-संस्था ; कई सामयिक एवं साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है ; श्रीकैलाश व्यवस्थापक हैं।

✓ किताबमहल, जीरोरोड, प्रयाग—प्रसिद्ध प्रकाशक ; लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें निबंध प्रबोध, वोल्गा से गंगा, अंबपाली आदि मुख्य हैं।

✓ किताबिस्तान, प्रयाग—सुरुचिपूर्ण-हिंदी - प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकें गेटप एवं सुंदर छपाई के कारण काफी समादृत हैं ; इनमें यामा, दीपशिखा, सहस्ररश्मि मुख्य हैं। लंदन में इन्होंने अपनी शाखा खोली है।

✓ गयाप्रसाद एंडसंस, आगरा—उच्चकोटि की साहित्यिक प्रकाशन संस्था ; १६०५ में स्थापित; हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, मराठी की लगभग १००० पुस्तकें प्रकाशित कीं ; श्रीयुत गयाप्रसाद अग्रवाल संस्थापक एवं श्रीयुत रामप्रसाद अग्रवाल मैनेजर हैं।

गीताप्रेस, गोरखपुर—धार्मिक साहित्य के यशस्वी प्रकाशक ; ढाई सौ के लगभग पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें अनेक पुस्तकें बहुत सस्ती और सुंदर छपी होने के कारण बहुत समादृत हैं ; लगभग अठारह वर्षों से मासिक 'कल्याण' और अंग्रेजी 'कल्याण कल्पतरु' का प्रकाशन होता है ;

श्रीघनश्यामदास जालान संचालक हैं।

गोसाहित्य प्रकाशन-मंडल, लहेरीटोला, गया—गो-संबंधी साहित्य के एकमात्र प्रकाशक; १६३४ में स्थापित; प्रकाशित पुस्तकों की संख्या अठारह है जो अपने विषय की अनूठी हैं; श्रीद्वारिकाप्रसाद गुप्त व्यवस्थापक हैं।

✓**गंगापुस्तकमाला कार्यालय, लखनऊ**—श्रेष्ठ साहित्य-प्रकाशन-संस्था; १६२० के लगभग श्रीदुलारेलाल भार्गव द्वारा स्थापित; ढाई सौ के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें मिश्रबंधुविनोद, हिंदी नवरत्न, बिहारी रत्नाकर, रंगभूमि आदि मुख्य हैं; लगभग सोलह वर्षों तक मासिक 'सुधा' और बारह वर्ष से 'बालविनोद' का प्रकाशन किया; इस समय श्रीमोतीलाल भार्गव अध्यक्ष हैं।

✓**ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर, पटना**—बिहार की प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था; लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साहित्यालोक, आर्यावर्त, सिंहसेनापति, प्रेमचंद: उनकी कृतियाँ और कला, साहित्यिकों के संस्मरण मुख्य हैं; कई वर्षों से मासिक 'किशोर' का प्रकाशन हो रहा है; श्रीदेवकुमार मिश्र अध्यक्ष हैं।

✓**चाँदकार्यालय, प्रयाग**—सामाजिक पुस्तकों के विख्यात प्रकाशक; लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनका अच्छा सम्मान है; अठारह वर्षों से मासिक 'चाँद' का प्रकाशन हो रहा है; इधर कई वर्षों से 'नई कहानियाँ' और 'रसीली कहानियाँ' नामक दो कहानी पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं; श्रीनंदगोपालसिंह सहगल व्यवस्थापक एवं स्वामी हैं।

✓**छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग**—नवयुवकोपयोगी साहित्य के

उत्साही प्रकाशक; १६१८ में स्थापित; लगभग १२० पुस्तकें अब तक प्रकाशित कीं जिनमें कविप्रसाद की काव्य साधना; ब्रह्मचर्य ही जीवन है, गुप्तजी काव्यधारा; नरमेध, साम्यवाद ही क्यों मुख्य हैं; इस पुस्तकमाला में बच्चों के लिए सरल भाषा में जीवनी-सीरीज भी निकाली गई है जिसमें लगभग सत्तर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; पं० गणेश पांडेय, प्रबंधक और श्रीकेदारनाथ गुप्त, एम० ए० संचालक हैं।

✓जासूसकार्यालय, बनारससिटी—जासूसी साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक; १८६४ में प्रकाशन आरंभ किया; प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग १८० है जिनमें प्रायः सभी बाबू गोपालराम गहमरी की लिखी हुई हैं; निकट भविष्य में गोपाल-ग्रंथावली निकालने का आयोजन है; बाबू गोपालराम गहमरी प्रबंधक हैं।

✓ जी० आर० भार्गव एंड संस, चँदौसी—प्रसिद्ध प्रकाशक; बीस के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें हिंदीसाहित्य निर्माता, राबिंसन क्रूसो, विक्रम की कहानियाँ मुख्य हैं; श्रीराधेश्याम भार्गव व्यवस्थापक हैं।

✓ज्योतिषनिकेतन, चौक, भूपाल—ज्योतिष तथा सामुद्रिकशास्त्र की पुस्तकों का प्रकाशन; २६ जून १६४१ में स्थापित; कई सुंदर पुस्तकें उर्दू और हिंदी में प्रकाशित; पं० ईशनारायण जोशी, शास्त्री व्यवस्थापक हैं।

✓ डी. आर. शर्मा एंड-संस, जोधपुर—प्रसिद्ध बालोपयोगी प्रकाशक; बीस के लगभग पुस्तकें प्रकाशित; श्रीगिजुभाई की बालोपयोगी पुस्तकों का अनुवाद यहाँ से प्रकाशित हुआ है जो काफी समादृत है।

✓'तरुण' कार्यालय, प्रयाग— नवयुवकोपयोगी

साहित्य-प्रकाशक ; तरुण सीरीज के अंतर्गत लगभग ६ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'दगा' मुख्य है ; मासिक 'तरुण' का कई वर्षों से प्रकाशन होता है; श्रीकृष्णानंदनप्रसाद व्यवस्थापक हैं

✓ **तरुणभारत ग्रंथावली, गाँधीनगर, कानपूर**—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक ; पहले प्रयाग में था अब कानपूर में है ; अनेक सुंदर पुस्तकें प्रकाशित जिनमें कई बहुत प्रसिद्ध हैं ; पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी अध्यक्ष हैं।

✓ **तारामंडल, रोसड़ा, दरभंगा**—प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था ; १६४० में स्थापित ; प्रकाशित पुस्तकों में आरसी, संचयिता, पंचपल्लव, खोटा सिक्का, आभा आदि मुख्य हैं ; ज्योतिषाचार्य श्रीयुगलकिशोर झा व्यवस्थापक और प्रसिद्ध कवि श्रीआरसीप्रसादसिंह प्रबंधक हैं।

/ **धर्मग्रंथावली, दारागंज, प्रयाग**—धार्मिक साहित्य-प्रकाशन-संस्था ; स्व० विद्याभास्कर शुक्ल द्वारा १६३३ में स्थापित ; अब तक लगभग पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित ; कई सुयोग्य विद्वानों द्वारा संचालित।

✓ **नरेंद्रसाहित्य कुटीर, दीतवारिया, इंदौर**—सत्साहित्य प्रकाशक; १६४० में स्थापित ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित जिनमें सूर ; एक अध्ययन, हिंदी नाट्य चिंतन, नारीहृदय की अभिव्यक्ति मुख्य हैं ; मासिक 'नवनिर्माण' का प्रकाशन भी होता है ; श्रीशिखरचंद जैन व्यवस्थापक हैं।

/ **नवयुगग्रंथ कुटीर, बीकानेर**—प्रसिद्ध बालोपयोगी प्रकाशक ; लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें सूरसमीक्षा, बौनों के देश में, दादी पर टैक्स, हवाई किला आदि मुख्य हैं ; श्रीशंभूदयाल सक्सेना अध्यक्ष हैं।

✓नवयुग साहित्य-निकेतन, आगरा — मौलिक राजनीति साहित्य का प्रकाशन; स्था०—जनवरी १९३८; संचा०—श्रीरामनारायण यादवेंदु, बी० ए०, एल-एल० बी०; प्रमु० प्रका०—औपनिवेशिक स्वराज्य, समाजवाद, गाँधीवाद, यदुवंश का इतिहास, भारतीय शासन प्रणाली।

✓नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ—हिंदी, अँग्रेजी, उर्दू आदि की सबसे प्राचीन प्रकाशन संस्था; १८५८ के लगभग मुंशी नवलकिशोर द्वारा स्थापित; डेढ़ हजार के लगभग पुस्तकें प्रकाशित; हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों में अधूरा चित्र, तारे, प्रोफेसर की डायरी, ठलुआ क्लब, आजाद-कथा, साहित्यकला, आदि मुख्य हैं; कई रीडरें और प्राइमरें पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं; लगभग २१ वर्षों से प्रसिद्ध साहित्यिक 'माधुरी' का प्रकाशन हो रहा है; रायबहादुर मुंशी रामकुमार भार्गव अध्यक्ष हैं।

✓नागरीनिकेतन, विजयनगर, आगरा—राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशक; १९३८ में स्थापित; अब तक तीन पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'जवाहर दोहावली' का काफी प्रचार है; पाँच रुपए में तीन वर्ष में पंद्रह रुपए के मूल्य की पुस्तकें देने की योजना निकट भविष्य में पूरी करने का आयोजन है; डा० श्रीश्यामसुंदरलाल दीक्षित संचालक हैं।

✓नागरी प्रचारिणी सभा, प्रकाशन विभाग, काशी—श्रेष्ठ साहित्यिक प्रकाशक; प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग दो सौ; ये पुस्तकें कई मालाओं में प्रकाशित हैं जिनका क्रम इस प्रकार है—मनोरंजन पुस्तकमाला ५४, सूर्यकुमारी पुस्तकमाला ११, देवीप्रसाद पुस्तकमाला १५, बारहट बालाबख्श राजपूत

चारण पुस्तकमाला ६, देव-पुरस्कार ग्रंथावली २, नागरी प्रचारिणी ग्रंथमाला ३३; महिला पुस्तकमाला ७; प्रकीर्णक पुस्तकमाला ६४; इन पुस्तकों में ये पुस्तकें बहु-मूल्य एवं श्रेष्ठ हैं—पृथ्वीराज-रासो मू० १००), बृहत् हिंदी शब्दसागर १००), द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ, १५); रत्नाकर ७); अनेक सुयोग्य विद्वानों द्वारा संचालित है।

नागरीभवन, श्रेष्ठ प्रकाशक, आगर मालवा—१६११ में स्थापित ; नागरी-प्रचार उद्देश्य है ; कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

✓नंदकिशोर एंड ब्रदर्स, चौक, बनारस—पाठ्य-पुस्तकों के साथ-साथ अब साहित्यिक प्रकाशन भी प्रस्तुत कर रहे हैं ; सूरदास (ले० स्व० पं० रामचंद्र शुक्ल) ; घनानंद कवित्त, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आधुनिक काव्यधारा, प्रसादजी के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, इनके प्रसिद्ध प्रकाशन हैं।

✓पी० सा० द्वादश-श्रेणी, अलीगढ़—प्रसिद्ध प्रकाशक ; कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें जेबी हिंदी कोष मुख्य है ; कई वर्ष तक मासिक 'शिक्षक' का प्रकाशन किया है।

✓पुस्तक-भंडार, काशी—श्रीसूर्यबलीसिंह द्वारा १६१७ में स्थापित ; लगभग ४० पुस्तकें प्रकाशित की हैं ; लव-लेटर्स, क्रांतियुग की चिन-गारियाँ, नारी-धर्म-शिक्षा, दहेज और किसान-सुख-साधन मुख्य हैं ; अब साहित्यिक प्रकाशन भी करने लगे हैं।

✓पुस्तकभंडार, लहेरिया सराय—बिहार की सर्वप्रसिद्ध प्रकाशन संस्था ; १६१६ के लगभग श्रीरामलोचनशरण द्वारा स्थापित ; लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित ; हाल ही में अपनी रजतजयंती के अवसर पर जयंती स्मारक ग्रंथ प्रकाशित किया है ; लग-

भग १६ वर्षों से बालोपयोगी मासिक 'बालक' का प्रकाशन कर रहा है ; श्रीवैदेहीशरण अध्यक्ष हैं।

पुस्तक मंदिर, हिंदी प्रचार सभा, मद्रास—सुदूर अहिंदी प्रांत की एक मात्र प्रकाशन-संस्था ; सभा के स्थापन-काल में ही स्थापित ; अनेक सुंदर पुस्तकें प्रकाशित जो पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं ; कई वर्ष तथा मासिक 'हिंदी प्रचारक', 'दक्षिण भारत' का प्रकाशन किया ; इस समय ६ वर्षों से 'हिंदी प्रचार समाचार' मासिक का प्रकाशन हो रहा है ; अनेक प्रवीण कार्यकर्ताओं द्वारा संचालित है।

पुष्पराज प्रकाशन भवन, उपरहटी, रीवाँ—रीवाँ राज्य की एकमात्र प्रकाशन-संस्था ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित ; आचार्य गिरिजा-प्रसाद त्रिपाठी व्यवस्थापक हैं।

प्रदीप-प्रेस, मुरादाबाद—प्रसिद्ध प्रकाशक ; कई पुस्तकें प्रकाशित ; कई वर्षों तक मासिक 'प्रदीप' एवं 'विश्व-शांति' का प्रकाशन किया ; श्रीजगदीश, एम० ए० द्वारा संचालित है।

प्रियतम पुस्तक भंडार, जयपुर—प्रसिद्ध प्रकाशक ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित जो व्यापार-क्षेत्र और कामर्स की हैं, कई खेलने योग्य नाटक भी हैं।

प्रेमा पुस्तकमाला जबल-पुर—सरस साहित्यका प्रकाशन; संचा०— श्रीरामानुजलाल श्रीवास्तवा; ग्रंथ—उमरखैयाम, प्रदीप, अश्रुदल, झारखंड-झंकार, मध्यप्रदेश में शिकार।

बुंदेल ग्रंथमाला, झाँसी—प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में बुंदेलवैभव, सुकवि-सरोज, गीतागौरव, काफी समादृत हैं ; श्रीपुरुषोत्तमनारायण द्विवेदी व्यवस्थापक हैं।

भारतपब्लिशिंग हाउस, आगरा—ग्रामसुधार-संबंध

साहित्य की प्रकाशन-संस्था ; १९६८ में स्थापित ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित ; श्री-महेंद्र द्वारा संचालित।

भारतीभंडार, आरा— बाल-साहित्य-प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में बाल-रणरंग, मेवे की झोली मुख्य हैं।

भारतीभंडार, लीडरप्रेस, प्रयाग—प्रसाद-साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग १००; 'प्रसाद' के पूरे सेट का प्रकाशन यहीं हुआ ; बच्चन, निराला, आदि की पुस्तकें भी यहीं से प्रकाशित ; प्रकाशित पुस्तकों में आँसू, कामायनी, स्कंदगुप्त, पर्दे की रानी, तुलारामशास्त्री, पलाशवन, इरावती, संन्यासी, आदि विशेष समादृत हैं ; दैनिक और साप्ताहिक 'भारत' का भी अनेक वर्षों से प्रकाशन होता है ; श्रीकृष्णराम मेहता अध्यक्ष हैं।

भारतीय ग्रंथमाला, वृंदावन—अर्थसाहित्य के एक मात्र प्रकाशक ; लगभग वीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अर्थशास्त्र शब्दावली, राजनीति शब्दावली, भारतीय अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि मुख्य हैं ; श्रीभगवान दास केला संचालक हैं।

भारतीय प्रकाशन मंदिर, आगरा—स्व० अध्यापक रामरत्न जी की पुण्य स्मृति में स्थापित; 'रत्नाश्रम' इसका दूसरा नाम है ; आशा—साप्ताहिक एवं नौनिहाल-मासिक का प्रकाशन किया ; कई विद्यार्थी-उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित ; श्रीश्यामाचरण लवानियाँ मैनेजर हैं।

भार्गव पुस्तकालय, बनारस—जासूसी एवं धार्मिक साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक ; लगभग ढाई सौ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें भाभी के पत्र, अभागे दंपति, राबर्ट ब्लेक की चार आना, छः आना, आठ आना और

एक रुपया सीरीज मुल्य हैं; तीन वर्ष तक महिलोपयोगी मासिक 'कमला' का प्रकाशन किया।

✓भूगोल कार्यालय, प्रयाग—भौगोलिक-साहित्य के एक मात्र प्रकाशक; १९१९ के लगभग स्थापित; अब तक करीब चालीस पुस्तकें प्रकाशित जिनमें भारतवर्ष का इतिहास काफी समादृत है; मासिक भूगोल और 'देश दर्शन' का भी अनेक वर्षों से प्रकाशन जारी है; श्रीरामनारायण मिश्र, बी०ए० अध्यक्ष हैं।

मदनमोहन, प्रकाशक, चँदौसी—परीक्षा-संबंधी पुस्तक-प्रकाशक; १९३२ से प्रारंभ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; स्वयं संचालक हैं।

मधुर मंदिर, हाथरस—हिंदू-संगठन में सहायक साहित्य का प्रकाशन करने के लिए १९४० में स्थापित; 'हिंदू गृहस्थ' नामक मासिक भी प्रकाशित होता है।

✓मनोरंजन पुस्तकमाला, जार्जटाउन, प्रयाग—कहानी साहित्य का उत्कृष्ट प्रकाशन करनेवाली संस्था; १९४३ में स्थापित; इस समय सजनी सीरीज का प्रकाशन हो रहा है जिनमें कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं; 'सजनी' नाम की एक पत्रिका भी निकल रही है; प्रसिद्ध कहानीकार श्रीनरसिंहराम शुक्ल व्यवस्थापक हैं।

✓महाबोधि सभा, सारनाथ, बनारस—बौद्धधर्म प्रचारक संस्था; १८९१ में स्थापित; अब तक लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित; 'धर्मदूत' नामक पत्र भी निकलता है; कई सुयोग्य बौद्धभिक्षुओं द्वारा संचालित।

✓माखनलाल दम्माणी, कोटगेट, बीकानेर—बालोपयोगी पुस्तकों के प्रकाशक; १९३४ से प्रकाशन किया;

लगभग पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें निबंध मंजरी, भूतों की डिबिया, साँप का ब्याह, नई कहानियाँ, दो देहाती आदि मुख्य हैं।

मानचंद बुकडिपो, पटनी बाजार, उज्जैन—१६०१ में स्थापित ; पाठ-ग्रंथों के अतिरिक्त कुछ ललित साहित्य संबंधी ग्रंथ भी छापे हैं ; दस पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

मानसरोवर साहित्य-निकेतन मुरादाबाद—प्रसिद्ध प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में राष्ट्रसंघ और विश्वशांति, वार - पैंफलेट आदि मुख्य हैं ; मानसरोवर बुलेटिन का भी प्रकाशन होता है।

✓मायाप्रेस, मुट्ठीगंज, प्रयाग—कहानी-साहित्य के ख्यातिनामा प्रकाशक; १६२६ में स्थापित ; मायासीरीज का प्रकाशन किया है जिसमें लगभग पैंतीस पुस्तकें छप चुकी हैं ; 'माया' और मनोहर कहानियाँ नामक दो कहानी पत्रिकाओं का प्रकाशन भी होता है ; श्रीक्षितींद्र-मोहन मित्र व्यवस्थापक हैं।

✓मारवाड़ी प्रेस, हैदराबाद (दक्षिण)—छपाई की यहाँ उत्तम व्यवस्था है ; हिंदी की छोटी-बड़ी कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं ; स्थानीय सबसे बड़े प्रकाशक हैं।

✓मास्टर बलदेवप्रसाद, सागर—प्रसिद्ध बालोपयोगी साहित्य के प्रकाशक;कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें नौनिहालोंकी टोली, महात्मा गांधी, पाँचजन्य आदि मुख्य हैं ; कई वर्षों तक बालोपयोगी पाक्षिक 'बच्चों की दुनिया' का प्रकाशन किया ; स्वयं अध्यक्ष हैं।

मिश्रबंधु कार्यालय जबलपुर—बालोपयोगी साहित्य की श्रेष्ठ प्रकाशन-संस्था; लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित

जिनमें सरल नाटकमाला, आदि मुख्य हैं ; श्रीनर्मदाप्रसाद मिश्र व्यवस्थापक हैं।

मोतीलाल बनारसीदास लाहौर—हिंदी - संस्कृत-प्रकाशक ; सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित जिनमें अनेक संस्कृत की पाठ्य पुस्तकें हैं ; हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों में सुदर्शन-साहित्य मुख्य है।

युगमंदिर उन्नाव—प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था ; अब तक लगभग १५ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें भारतेंदु युग, विहाग, वर्षगाँठ, बिल्लेसुर बकरिहा प्रसिद्ध हैं ; चौधरी राजेन्द्रशंकर अध्यक्ष हैं।

रामप्रसाद ऐंड संस, चौक आगरा—विद्यार्थी-उपयोगी साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक ; १६१० में स्थापित; लगभग १०० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें अनेक पाठ्यक्रम में हैं ; रामप्रसाद सीरीज का प्रकाशन भी किया है जिसमें प्रकाशित प्रेमचंद ग्राम समस्या मुख्य है ; बाबू हरिहरनाथ अग्रवाल व्यवस्थापक हैं।

रामनारायण लाल, प्रयाग—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक ; अब तक लगभग तीन सौ पुस्तकें प्रकाशित, जिनमें अनेक पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं ; प्रकाशित पुस्तकों में कामायनी: एक परिचय, हिंदी साहित्य का इतिहास, भारतेंदु - नाटकावली, सटीक वाल्मीकिय रामायण मुख्य हैं, स्वयं संचालक हैं।

रायसाहब रामदयाल अग्रवाल, प्रयाग—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक ; लगभग सवा सौ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें चित्रावली रामायण, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी गीतिकाव्य, हिंदी साहित्य का गद्यकाल मुख्य हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा—राष्ट्रभाषा - प्रचारक-प्रकाशन-संस्था ; समिति के स्थापनकाल में स्थापित ;

अनेक पुस्तकें प्रकाशित जो पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं ; कई वर्षों तक 'सब की बोली' मासिक का प्रकाशन किया ; अब 'राष्ट्रभाषा समाचार' प्रकाशित होता है ; कई सुयोग्य विद्वानों द्वारा संचालित है।

राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन मंदिर, दिल्ली—राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन-संस्था ; गांधी साहित्य का प्रकाशन मुख्य है ; कई पुस्तकें प्रकाशित ; श्री श्रीराम व्यवस्थापक हैं।

लहरी बुकडिपो, काशी—जासूसी साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक ; लगभग दो सौ पुस्तकें प्रकाशित जिनमें चंद्रकांता संतति, भूतनाथ, रक्तमंडल, सफेद शैतान, टार्जन सीरीज मुख्य हैं ; कई वर्षों तक मासिक 'लहरी' का प्रकाशन होता रहा ; श्रीदुर्गाप्रसाद खत्री संचालक हैं।

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा—प्रसिद्ध प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में छलना आदि मुख्य हैं ; लगभग दो वर्षों तक साहित्यिक मासिक 'मराल' का प्रकाशन भी किया ; श्रीराजनारायण अग्रवाल व्यवस्थापक हैं।

वाणी मंदिर, अस्पताल रोड, लाहौर—सुरुचिपूर्ण साहित्य-प्रकाशक ; १९३५ में स्थापित ; प्रकाशित पुस्तकों में अग्निवान, अनंत के पथ पर, प्रतिमा आदि मुख्य ; सुप्रसिद्ध श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी' संचालक हैं।

वाणी मंदिर, छपरा—साहित्यिक एवं बालोपयोगी पुस्तक-प्रकाशक ; स्व० ठा० मंगलसिंह द्वारा संस्थापित ; पचास के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें प्रेमचंद की उपन्यासकला, साकेत-समीक्षा आदि मुख्य हैं ; सुश्री विद्यावती देवी इस समय संचालिका हैं।

श्यामकाशीप्रेस, मथुरा—धार्मिक साहित्य प्रकाशक; १८७० में स्थापित; लगभग एक हजार पुस्तकें अब तक प्रकाशित; श्रीहीरालालजी संचालक हैं।

शिवाजी बुकडिपो, लखनऊ—बालोपयोगी साहित्य के प्रकाशक; १६४२ से प्रारंभ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; सुश्री राधाबाई पंडित व्यवस्थापिका हैं।

शिशुप्रेस, प्रयाग—प्रसिद्ध बालोपयोगी पुस्तक-प्रकाशक; १६१६ में स्व० श्रीसुदर्शनाचार्य द्वारा स्थापित; प्रकाशित पुस्तकों की संख्या साठ है; लगभग अट्ठाइस वर्षों से निरंतर मासिक 'शिशु' का प्रकाशन कर रहा है; इस समय श्रीसत्यवान शर्मा अध्यक्ष हैं।

श्रीराजराजेश्वरी साहित्यमंदिर, सूर्यपुरा शाहाबाद—प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था; प्रकाशित पुस्तकों में रामरहीम, टूटा तारा, सूरदास, पुरुष और नारी आदि मुख्य हैं; श्रीमान् राजा राधिकारमण प्रसादसिंह द्वारा संरक्षित है।

श्रीराममेहरा एंड कंपनी, माइथान, आगरा—प्रसिद्ध प्रकाशक; प्रकाशित पुस्तकों में आविष्कारों की कहानियाँ—तीन भाग, साहस के पुतले आदि मुख्य हैं; स्वयं व्यवस्थापक हैं।

श्रीसाधुबेलातीर्थ, सक्खर, सिंध—धार्मिक पुस्तक-प्रकाशन संस्था; १६१७ में स्थापित; कई पुस्तकें हिंदी, गुरुमुखी, अरबी आदि में प्रकाशित; कई सुयोग्य महात्माओं द्वारा संचालित।

सरस्वती प्रकाशनमंदिर, आरा—प्रसिद्ध बालोपयोगी प्रकाशन संस्था; लगभग तीन वर्ष तक 'बालकेसरी' मासिक का प्रकाशन हुआ; लगभग १० पुस्तकें प्रकाशित; श्रीदेवेन्द्रकिशोर जैन व्यवस्थापक हैं।

सरस्वती प्रकाशन मंदिर, प्रयाग—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में इतिहास प्रवेश, पाँच कहानियाँ आदि मुख्य हैं ; लगभग तीन वर्षों से कहानी-मासिक 'छाया' का प्रकाशन हो रहा है ; श्रीशालिग्राम वर्मा एम० ए० अध्यक्ष हैं।

सरस्वती प्रेस, बनारस कैंट—स्व० श्रीप्रेमचंदजी द्वारा स्थापित प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था ; १०० के लगभग पुस्तकें प्रकाशित ; जाग्रत-महिला-साहित्य, हंस पुस्तक-माला, गल्पसंसारमाला, प्रगतिशील पुस्तकें आदि अनेक पुस्तकमालाओं का सुंदर प्रकाशन ; श्रीप्रेमचंदजी द्वारा संचालित 'हंस', और 'कहानी' मासिक पत्रों का भी प्रकाशन हो रहा है ; कई वर्ष तक साप्ताहिक 'जागरण' का प्रकाशन भी हुआ ; इस समय श्रीश्रीपतराय व्यवस्थापक हैं।

सरस्वतीमंदिर, बनारस—प्रसिद्ध प्रकाशक, प्रकाशित पुस्तकों में आधुनिक काव्यधारा, रामचंद्र शुक्ल, प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन मुख्य है।

सस्ता-साहित्य-मंडल, दिल्ली—राष्ट्रीय एवं नैतिक साहित्य के विख्यात प्रकाशक; १९२५ में अनेक धनीमानी विद्वानों द्वारा स्थापित ; अब तक लगभग १५० पुस्तकें प्रकाशित ; सर्वोदय ग्रंथ-माला, टाल्सटाय ग्रंथावली, गांधी साहित्यमाला आदि कई सुंदर और सामयिक सीरीजों के अंतर्गत सुरुचि-पूर्ण पुस्तकें प्रकाशित कीं ; जीवनसाहित्य नामक एक पत्र भी कई वर्षों से प्रकाशित हो रहा है ; प्रकाशित पुस्तकों में मेरी कहानी, विश्व इति-हास की झलक, गांधी अभि-नंदन ग्रंथ ; संक्षिप्त आत्म-कथा आदि मुख्य हैं ; मार्तंड उपाध्याय इस समय व्यव-स्थापक हैं।

संगीत कार्यालय, हाथरस—संगीत-साहित्य के एक मात्र प्रकाशक ; १९३२ में स्थापित ; लगभग ग्यारह पुस्तकें प्रकाशित जो काफी समादृत हैं ; 'संगीत' मासिक का प्रकाशन भी कई वर्षों से होता है ; श्रीप्रभुलाल गर्ग प्रबंधक हैं।

साधनासदन, लूकरगंज, प्रयाग—राष्ट्रीय एवं स्त्रियोपयोगी पुस्तक-प्रकाशक; श्रीरामनाथ 'सुमन' द्वारा स्थापित ; प्रकाशित पुस्तकों में भाई के पत्र, घर की रानी, गांधीवाणी, आनंदनिकेतन मुख्य हैं।

सामयिक साहित्य-सदन—चैंवरलेन रोड, लाहौर—श्रेष्ठ कलाकारों के ललित साहित्य के प्रकाशनार्थ १९४३ में स्थापित ; लगभग २५ पुस्तकें छप चुकी हैं जिनमें ध्रुवयात्रा, ज्वारभाटा और पिंजरा कहानी-संग्रह—जयवर्धन (उप०) और विषपान (कविता) मुख्य हैं ; 'शिक्षा' नामक मासिक पत्रिका भी सदन की ओर से निकलती है।

साहित्य-कार्यालय, दारागंज, प्रयाग—सुप्रसिद्ध साहित्यिक-प्रकाशन संस्था ; १९२२ में स्थापित ; अब तक कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें 'पाँच महाकाव्य' काफी प्रसिद्ध हैं ; श्रीपं० सिद्धिनाथ दीक्षित 'संत', संचालक हैं।

साहित्यनिकेतन, दारागंज, प्रयाग—बालोपयोगी एवं स्त्रियोपयोगी पुस्तक-प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में रामू-श्यामू, भैंसासिंह, नर्त्तकी, महाभारत की कहानियाँ मुख्य हैं।

साहित्यनिकेतन, श्रद्धानंद पार्क, कानपूर—साहित्य-प्रकाशक ; १९३८ में स्थापित; कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें मानव, भारतीय वैज्ञानिक, सूर: जीवनी और ग्रंथ मुख्य हैं ; भविष्य में अनेक साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित

करने की सुंदर योजना है; सुप्रसिद्ध लेखक श्रीश्याम-नारायण कपूर, बी०एस्०-सी० संचालक हैं।

साहित्यरत्न भंडार, आगरा—सत्साहित्य-प्रकाशन संस्था; १९२० में स्थापित; चालीस से ऊपर आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साकेत: एक अध्ययन, प्रताप-समीक्षा; आधुनिक हिंदी नाटक आदि मुख्य हैं; श्रीमहेंद्रजी व्यवस्थापक हैं।

साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक; श्रीरामकिशोर गुप्त द्वारा स्थापित; लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित जिनमें साकेत, पंचवटी, मेघनादवध, भारत-भारती, झूठ-सच आदि मुख्य हैं; हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त और उनके अनुज बाबू सियारामशरणजी की प्रायः सभी रचनाएँ यहीं छपी हैं। श्रीचारुशीलाशरण गुप्त अध्यक्ष हैं।

साहित्यसागर कार्यालय, जानपुर—धार्मिक-साहित्य प्रकाशन-संस्था; १९१८ में अंबिकादत्त त्रिपाठी द्वारा स्थापित; पंद्रह पुस्तकें प्रकाशित; श्रीरामनारायण मिश्र व्यवस्थापक हैं।

साहित्य-सेवासदन, बनारस—प्रसिद्ध सत्साहित्य प्रकाशक; प्रकाशित पुस्तकों में अमरगीतसार आदि मुख्य हैं।

हिंदी-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, हीराबाग, बंबई—श्रीनाथूराम प्रेमी द्वारा १९१३ में स्थापित; सबसे पहला ग्रंथ स्व० पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी-कृत 'स्वाधीनता', जान स्टुअर्ट मिल की 'लिबर्टी' का अनु० निकाला था; अब तक इसकी विविध पुस्तक-मालाओं में लगभग २०० ग्रंथ निकल चुके हैं; रविबाबू द्विजेंद्रलालराय, शरच्चंद्र चटर्जी आदि के प्रसिद्ध ग्रंथ प्रका-

शित करने का सौभाग्य इसे प्राप्त हुआ है।

हिंदी पुस्तकभंडार, बंबई—प्रगतिशील पुस्तक-प्रकाशक ; प्रकाशित पुस्तकों में ईंट और रोड़े, वंदेमातरम्, कोयले आदि मुख्य हैं ; 'सहयोगी प्रकाशन' के नाम से कई पुस्तकों का प्रकाशन भी किया है ; मासिक 'पुस्तक पत्रिका' भी यहीं से निकल रही है ; श्रीभानुकुमार जैन अध्यक्ष हैं।

हिंदी प्रेस, प्रयाग—बालसाहित्य-प्रकाशक ; श्री-रघुनंदन शर्मा द्वारा संस्थापित ; लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित कीं, लगभग पंद्रह वर्ष तक बालोपयोगी मासिक 'खिलौना' और विद्यार्थी का प्रकाशन किया है।

हिंदीभवन, हास्पिटल रोड, लाहौर—पंजाब की ख्याति-प्राप्त प्रकाशनसंस्था ; लगभग बीस पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें साहित्य-मीमांसा, सुकवि - समीक्षा कामायनी का सरल अध्ययन मुख्य हैं ; श्रीदेवचंद नारंग प्रबंधक हैं।

हिंदीसाहित्य सम्मेलन, प्रयाग—हिंदी की मुख्य एवं श्रेष्ठ प्रचारक तथा प्रकाशन संस्था; माननीय श्रीपुरुषोत्तम-दास टंडन द्वारा स्थापित ; लगभग डेढ़ सौ पुस्तकें निम्न मालाओं में प्रकाशित—सुलभ साहित्यमाला में १०, बाल-साहित्यमाला में १२, आधुनिक कविमाला में ४, वैज्ञानिक पुस्तकमाला में ३, विविध १० ; अनेक सुयोग्य विद्वानों द्वारा संचालित ; सम्मेलन से त्रैमासिक सम्मेलन पत्रिका भी प्रकाशित होती है।

हिंदी-साहित्य - सदन, किरथरा, मक्खनपुर, मैनपुरी—प्रसिद्ध प्रकाशक ; कई प्रकाशित पुस्तकें जिनमें आर्यों का सौदा, शिकार, बोलती प्रतिभा मुख्य हैं।

हिंदुस्तानी बुकडिपो,

लखनऊ—ललित-साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक ; श्री-विष्णुनारायण भार्गव द्वारा संस्थापित ; पचीस के लगभग पुस्तकें प्रकाशित जिनमें श्रीमद्भागवत, आँखों की थाह, निकट की दूरी, लखनऊ-गाइड आदि मुख्य हैं ; इस समय श्रीभृगुराज भार्गव संचालक हैं।

क्षात्रधर्म साहित्यमंदिर, जयपुर—प्राचीन एवं अर्वाचीन राजस्थानी साहित्य के प्रकाशक ; अक्टूबर १९४० से संचालित ; प्रारंभ में 'क्षात्र-धर्म का प्रकाशन किया ; इस समय 'क्षात्रधर्म संदेश' नामक पत्र प्रकाशित हो रहा है ; कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं ; कुँवर श्रीभूरसिंह राठौर, संचालक हैं।

ज्ञान-प्रकाश-मंदिर, मछरा, मेरठ १९१८ में स्थापित ; महाकवि अकबर और उनका उर्दू-काल, मुगलों के अन्तिम दिन, टालसटाय की आत्म-कहानी ; कार्नेगी और उसके विचार, अरगल की रानी, कृषि चन्द्रिका आदि प्रकाशन प्रसिद्ध हैं।

ज्ञानमंडल, काशी—श्रेष्ठ सत्साहित्य प्रकाशन संस्था ; कई पुस्तकें प्रकाशित जिनमें हिंदी-शब्दसंग्रह, हिंदुत्व तथा कई पुस्तकें काफी प्रसिद्ध हैं। लगभग पंद्रह वर्षों से दैनिक व साप्ताहिक 'आज' का प्रकाशन होता है ; कई सुयोग्य व्यक्तियों द्वारा संचालित।

तीसरा खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

(घ) खंड

हिंदी पत्र-पत्रिकाओं

का

परिचय

अधिकार, प्रसिद्ध दैनिक राष्ट्रीय पत्र ; १६३६ से प्रकाशित ; प्रारंभ से श्रीसुरेशसिंह, श्रीसोहनलाल द्विवेदी, एम० ए० संपादक हैं; प०—आर्यनगर, लखनऊ।

अभ्युदय, साप्ताहिक—कहानी-प्रधान-पत्र ; १६४२ से प्रकाशित ; वा० मू० ७) ; श्रीनरोत्तमप्रसाद नागर प्रधान संपादक हैं ; प०—प्रयाग।

आज, दैनिक—प्रसिद्ध निर्भीक राष्ट्रीय पत्र ; प्रारंभ से ही श्रीबाबूराव विष्णुपराड़कर प्रधान संपादक हैं ; प०—ज्ञानमंडल यंत्रालय, काशी।

आज, साप्ताहिक—हिंदी के सर्वश्रेष्ठ दैनिक का साप्ताहिक-संस्करण ; निरंतर प्रकाशित ; वा० मू० ६) ; इस समय श्रीराजवल्लभसहाय संपादक हैं ; प०—बनारस।

आर्यमहिला, मासिक—सचित्र धार्मिक पत्रिका ; १६१८ से संचालित ; कई विदुषी महिलाओं एवं विद्वानों द्वारा संपादित ; वा० मू० ५) ; इस समय डा० आत्माप्रसादसिंह संपादक हैं; प०—जगतगंज, बनारस।

आर्यमित्र, साप्ताहिक—आर्य-समाजियों का एकमात्र प्राचीन पत्र ; लगभग पैंतीस वर्षों से निरंतर प्रकाशित ; तब से अब तक अनेक विद्वान् संपादन कर चुके हैं ; प०—हिल्टन रोड, लखनऊ।

आर्यसेवक, पाक्षिक—आर्य प्रतिनिधि सभा, विदर्भ प्रांत का मुखपत्र ; १६०६ में स्थापित ; भूत० संपा०—डा० शेरसिंह ; इस समय श्रीइंद्रदेवसिंह, एम० एस०-सी० संपादक ; प०—अकोला, बरार।

आर्यावर्त, दैनिक—बिहार का सबसे पुराना प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र ; अनेक सुयोग्य विद्वानों द्वारा संपादित ; प०—पटना।

आशा, मासिक—हस्त-

लिखित पत्रिका ; १६४० से संचालित ; श्रीमधुसूदन 'मधुप' संपादक हैं ; प०—स्नेहलतागंज, इंदौर।

ऊषा, साप्ताहिक—सचित्र-साहित्यिक पत्रिका ; १६४१ से प्रकाशित ; बिहार के प्रसिद्ध लेखक तथा कवि श्री-हंसकुमार तिवारी संपादक हैं ; प०—ऊषा प्रेस, गया।

एकता, साप्ताहिक—हरियाणा प्रांत का एकमात्र राष्ट्रीय पत्र ; १६४२ में स्थापित ; भू० संपा० श्रीमुरलीधर दिनोदिया, बी० ए०, इस समय श्रीरुद्रमलजी संपादक हैं ; वा० मू० ५) ; प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

कर्मवीर, साप्ताहिक—मध्यप्रांत का निर्भीक राष्ट्रीय पत्र ; पं० श्रीमाखनलाल चतुर्वेदी द्वारा संचालित ; वे ही प्रारंभ से प्रधान संपादक हैं ; प०—खंडवा, मध्य प्रांत।

किशोर, मासिक—बालोपयोगी सुंदर-सचित्र पत्र ; अप्रैल १६३८ से प्रकाशित ; वा० मू० ३) ; भूतपूर्व संपादक-सर्वश्रीप्रफुल्लचन्द ओझा 'मुक्त', रामदयाल पांडे, देवकुमार मिश्र, हंसकुमार तिवारी, रघुवंश पांडे ; प्रधान संपादक—पं० रामदहिन मिश्र ; प०—बाँकीपुर, पटना।

केसरी, मासिक—केसरवानी जातीय-पत्र ; दिसंबर १६३७ में स्थापित ; वा० मू० २) ; संपादक श्रीश्रीनाथ पालित ; प०—३६ कचहरी रोड, गया।

गोशुभचिंतक, पाक्षिक—गो-शुभचिंतक मंडल का मुखपत्र ; १६४२ से संचालित ; वा० मू० ३) ; श्रीखेदहरण शर्मा एवं श्रीगोवर्धनलाल गुप्त संपादक हैं ; प०—गया।

चातक, साप्ताहिक—साहित्यिक पत्र ; १६४० में स्थापित ; पहले मासिक था अब साप्ताहिक है ; अनेक विद्वान् लेखकों का सहयोग

प्राप्त ; लालत्रिभुवनसिंह 'प्रवासी' और हरिवंशसिंह, बी० ए० संपादक हैं ; आर्थिक स्थिति संतोषप्रद ; वा० मू० ३॥) ; प०—चातक-प्रेस, परतापगढ़ (अवध)।

चाँद, मासिक—स्त्रियोपयोगी प्रसिद्ध पत्रिका ; लगभग अठारह वर्षों से प्रकाशित; भू० संपा०—सर्वश्री रामरखसिंह सहगल, नंदकिशोर तिवारी, सत्यभक्त, श्रीमती महादेवी वर्मा ; इस समय श्रीनंदगोपालसिंह सहगल संपादक हैं ; स्त्री-संबंधी अनेक आंदोलनों में भाग लेकर पत्रिका ने अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली है ; वा० मू० ६॥) ; प०—२८ एडमांस्टन रोड, प्रयाग।

चित्रपट, साप्ताहिक—सिनेमा-पत्र ; १९३२ में श्रीऋषभचरण जैन द्वारा संचालित ; अब तक अनेक विद्वान् संपादक रह चुके हैं ; इस समय श्रीसत्येन्द्र श्याम, एम० ए० संपादक हैं ; प०—१२, दरियागंज, दिल्ली।

चित्रप्रकाश, साप्ताहिक—सिनेमा-पत्र ; प्रधान संपादक श्रीकरुणाशंकर; सहायक—श्री वीरेन्द्रकुमार त्रिपाठी ; कई वर्षों से प्रकाशित ; प०—दिल्ली।

चौरसिया ब्राह्मण, मासिक—जातीय पत्रिका ; १९३३ से संचालित ; वा० मू० १) ; पं० प्रह्लाददत्त ज्योतिषी संपादक हैं ; प०—रेवाड़ी, पंजाब।

छाया, मासिक—कहानीप्रधान पत्रिका ; तीन वर्षों से प्रकाशित ; वा० मू० ३) ; पहले श्रीनरसिंहराम शुक्ल संपादक थे, अब श्रीमान् पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी संपादक हैं ; प०—जार्जटाउन, प्रयाग।

जयाजी प्रताप, साप्ताहिक—ग्वालियर राज्य का मुखपत्र ; १९०५ में स्थापित ; वा० मू० ४) ; प्रधान संपा-

दक श्री बा० आ० देशमुख, बी० ए० ; प०—लश्कर, ग्वालियर।

जीवनसखा, मासिक—प्राकृतिक चिकित्सा का मुखपत्र ; फरवरी १६३६ में स्थापित ; भूत० संपा०—श्रीजानकीशरण वर्मा, श्रीव्रजभूषण मिश्र, एम० ए, श्रीविश्वंभरनाथ द्विवेदी, श्रीविट्ठलनाथ मोदी ; इस समय श्रीबालेश्वरप्रसाद सिनहा संपादक हैं ; वा० मू० २) प०—प्रयाग।

जीवनसाहित्य, मासिक—महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रचारक-पत्र ; अगस्त १६४० में स्थापित ; पहले साहित्यिक पत्र था, अब प्राकृतिक चिकित्सा का प्रसार मुख्य उद्देश्य है ; वा० मू० १॥) ; संपादक—श्रीकाका कालेलकर, श्रीहरिभाऊ उपाध्याय, श्रीमहावीरप्रसाद पोद्दार ; प०—गोरखपुर।

ज्योतिषसमाचार, मासिक—ज्योतिष-संबंधी पत्र ; १६२८ में स्थापित; श्रीप्रह्लाद्दत्त ज्योतिषी संपादक हैं ; वा० मू० २) ; प०—रेवाड़ी, पंजाब।

तरुण, मासिक—युवकोपयोगी प्रसिद्ध पत्र ; १६३६ से प्रकाशित ; वा० मू० ३) ; श्रीकृष्णनंदनप्रसाद इसके संपादक हैं ; प०—प्रयाग।

तारणबंधु, मासिक—आध्यात्मिक सिद्धान्तों का प्रचारक ; १६३६ से प्रकाशित; वा० मू० २॥) ; श्रीबाबूलाल डेरिया संपादक एवं श्रीरामलाल पांडेय प्रकाशक हैं ; प०—इटारसी ; सी० पी०।

दयानंद संदेश—मासिक-वैदिक धर्म का प्रचारक सचित्र पत्र ; अगस्त १६३८ में प्रकाशित ; वा० मू० पहले २≡), ३≡), ४) ; अब १॥) ; श्रीराजेन्द्रनाथ शास्त्री संपादक एवं सुश्री लीलावती 'गर्ग' संयुक्त संपादिका हैं ; प०—बुकनाला, बकसर, मेरठ।

दीपक, मासिक—पंजाब में शिक्षाप्रसार के लिए कई वर्षों से प्रकाशित ; वा० मू० २॥) ; श्रीतेगरामजी संपादक हैं ; प०—साहित्य सदन, अबोहर, पंजाब।

देशदूत, साप्ताहिक—प्रसिद्ध साहित्यिकपत्र, १९३९ से प्रकाशित ; प्रारंभ से ही श्रीज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' प्रधान-संपादक हैं ; वा० मू० ७॥) ; प०—इंडियन प्रेस, प्रयाग।

धर्मदूत, मासिक—बौद्ध धर्म के उद्देश्यों का प्रचारक पत्र ; मई १९३९ से प्रारंभ ; वा० मू० १) ; प०—सारनाथ; बनारस।

धारा, मासिक सत्साहित्यिक पत्रिका ; स्थापित १९४० ; प्रारंभ में श्रीचंद्रशेखर शास्त्री एवं श्रीसुगणचंद्र जी शास्त्री द्वारा संपादित; इस समय श्रीयज्ञदत्त, एम० ए० संपादक हैं ; प०—दिल्ली।

नई कहानियाँ, मासिक—कहानी प्रधान पत्रिका ; १९३९ से प्रकाशित ; वा० मू० ४॥) ; श्रीरामसुंदर शर्मा प्रधान संपादक हैं ; प०—२८ एडमांसटन रोड, प्रयाग।

नवयुग, साप्ताहिक—प्रसिद्ध सिनेमा-पत्र ; लगभग दस वर्षों से प्रकाशित ; कई विद्वान् संपादकों का सहयोग मिल चुका है ; प०—दिल्ली।

नवशक्ति, साप्ताहिक—प्रसिद्ध पत्र ; कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित ; प्रारंभ से ही श्रीदेवव्रत शास्त्री प्रधान संपादक हैं ; प०—नवशक्ति प्रेस, पटना।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका, त्रैमासिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका ; सभा के स्थापनकाल के समय से ही प्रकाशित ; वा० मू० १०) ; श्रीकृष्णानंद गुप्त प्रधान संपादक हैं ; प०—काशी।

परलोक, मासिक—विविध विषय विभूषित पत्र ; १९३३ में स्थापित ; वा० मू० २) ; श्रीकेदारनाथ शर्मा

संपादक हैं ; प०—ब्रह्मचर्याश्रम, भिवानी, पंजाब ।

प्रताप, दैनिक—प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र ; स्व० श्रीगणेशशंकर द्वारा संचालित ; इस समय श्रीहरिशंकर विद्यार्थी एवं श्रीयुगलकिशोर शास्त्री संपादक हैं ; प०—कानपुर ।

प्रताप, साप्ताहिक—प्रसिद्ध दैनिक का साप्ताहिक संस्करण; कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित; अनेक साहित्य-सेवियों का सहयोग प्राप्त है ; प०—कानपुर ।

ब्रजभारती, मासिक—ब्रजसाहित्यमंडल की मुखपत्रिका ; १९४० में स्थापित ; भू० पू० संपादक सर्वश्री सत्येंद्र, एम० ए०, जवाहरलाल चतुर्वेदी, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी; इस समय श्रीराधेश्याम ज्योतिषी और मदनमोहननागर, एम० ए० संपादक हैं; वा० मू० १); प०—मथुरा ।

बालक, मासिक—युवकोपयोगी प्रसिद्ध पत्र ; १९२७ के लगभग प्रकाशित ; भू० संपा०—सर्व श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी, शिवपूजन सहाय, अच्युतानंददत्त ; इस समय श्रीरामलोचनशरण संपादक हैं ; वा० मू० ३) ; प०—लहेरिया सराय, बिहार ।

बालविनोद, मासिक—बालोपयोगी पत्र ; १९३२ से प्रकाशित ; भू० संपा०—सर्वश्री दुलारेलाल, राजकुमार भार्गव ; इस समय श्रीमती 'सरस्वती', एम० ए० संपादिका हैं ; वा० मू० २॥) ; प०—कविकुटीर, लखनऊ ।

बालसखा, मासिक—बालोपयोगी सर्वश्रेष्ठ पत्र ; १९१६ से प्रकाशित ; प्रारंभ से ही श्री श्रीनाथसिंह संपादक हैं ; कई सुयोग्य विद्वान् सहकारी संपादक रह चुके हैं ; वा० मू० २॥) ; प०—इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

भक्ति, मासिक—आध्यात्मिक भक्तिसंबंधी पत्र ;

१६२७ में संचालित ; वा० मू० २) ; सुश्री सूरज देवी प्रभाकर एवं गोदावरी देवी संपादिका हैं ; प०—भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा, रेवाड़ी, पंजाब ।

भारत, दैनिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्र, कई वर्षों से प्रकाशित ; इसका साप्ताहिक संस्करण भी निकलता है ; प०—लीडर प्रेस, प्रयाग ।

भारत, साप्ताहिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्र ; कई वर्षों से प्रकाशित ; प०—प्रयाग ।

भारतीय धर्म, मासिक—भारतीय संस्कृति का पोषक धार्मिक पत्र ; १६४२ से प्रारंभ ; वा० मू० ३) ; श्री पं० पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी संपादक हैं ; प०—गुलाब वाड़ी, अजमेर ।

'मधुकर' पाक्षिक—बुंदेलखंडीय जनता में जाग्रति उत्पन्न करनेवाला विविध-विषय विभूषित पत्र अक्टूबर १६४० में स्थापित ; प्रधान संपादक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी और सहकारी श्री यशपाल जैन, बी० ए०, एल-एल० बी० ; वा० मू० ३), एक प्रति दस पैसा ; लेखकों को पारिश्रमिक दिया जाता है ; प०—वीरेंद्रकेशव साहित्य परिषद् टीकमगढ़, झाँसी ।

माधुरी, मासिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका ; स्व० मुंशी विष्णुनारायण भार्गव द्वारा स्थापित ; भूत० संपा० में सर्वश्री दुलारेलाल भार्गव, प्रेमचंद, कृष्णविहारी मिश्र, रामसेवक त्रिपाठी, मातादीन शुक्ल आदि विशेष उल्लेखनीय हैं ; वर्तमान संपादक हैं श्रीरूपनारायणजी पांडेय ; वा० मू० ७॥) है ; काग़ज़ के इस अकाल में 'माधुरी' की पृष्ठ-संख्या नहीं घटी है; प०—नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ ।

मनस्वी, मासिक—अमेठी राज्य का एक मात्र साहित्यिक

पत्र ; कई वर्षों से प्रकाशित ; वा० मू० १) ; भू० संपा०—श्रीक्षेमचंद्र 'सुमन' ; इस समय श्रीरामकिशोर, बी०ए० संपादक हैं ; प०—अमेठी-राज्य, सुल्तानपुर, अवध।

मनोहर कहानियाँ, मासिक—कहानी-प्रधान पत्र; १९३९ से प्रकाशित ; वा० मू० ३॥) ; श्रीक्षितींद्र मोहन मित्र प्रधान संपादक हैं ; प०—माया-प्रेस, प्रयाग।

माया, मासिक—कहानी प्रधान प्रसिद्ध पत्रिका ; १९३० से प्रकाशित ; वा० मू० ४॥); श्रीक्षितींद्रमोहन मित्र प्रधान संपादक हैं ; प०—माया-प्रेस, प्रयाग।

मीरा, साप्ताहिक—स्त्रियो-पयोगी प्रसिद्ध पत्रिका ; लगभग १९३९ से प्रकाशित; प्रसिद्ध पत्रकार श्री जगदीश-प्रसाद माथुर 'दीपक' संचालक व संपादक हैं ; प०—अमर-प्रेस, अजमेर।

युगांतर, साप्ताहिक—प्रसिद्ध पत्र ; १९४२ से प्रकाशित ; वा० मू० ६) ; श्रीवीरभारतीसिंह प्रधानसंपा-दक हैं ; प०—कानपुर।

योगी, साप्ताहिक—प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र ; लगभग दस वर्षों से निरंतर प्रकाशित; आरंभ से ही श्रीव्रजशंकर प्रधान संपादक हैं ; प०—योगी-प्रेस, पटना।

रसीली कहानियाँ, मासिक—कहानी - प्रधान पत्रिका ; १९३९ से प्रकाशित; वा० मू० ४) ; श्रीरामसुंदर शर्मा प्रधान संपादक हैं ; प०—२८ एडमांस्टन रोड, प्रयाग।

राजस्थान, साप्ताहिक—राजस्थान का एक मात्र प्रसिद्ध पत्र ; लगभग तीस वर्षों से प्रकाशित ; कई सुयोग्य विद्वानों का सहयोग प्राप्त है ; प०—अजमेर।

रानी, मासिक—विविध विषय-विभूषित प्रसिद्ध पत्रिका १९४२ से प्रकाशित ; वा०

मू० ३) ; प०—चितरंजन एवेन्यू, कलकत्ता।

रामराज्य, कानपुर—संस्कृति प्रधान साप्ता० ; संचालन १९४३ से ; संपा०—श्रीराघवेंद्र, एम० ए० ; मू० ६)।

रंगभूमि, मासिक—प्रसिद्ध सिनेमा-पत्रिका ; लगभग दस वर्षों से प्रकाशित ; पहले साप्ताहिक थी, अब मासिक है ; वा० मू० ७) ; श्रीधर्मपाल गुप्त, भास्कर, संपादक हैं ; प०—जामा मस्जिद, दिल्ली।

लोकयुद्ध, साप्ताहिक—साम्यवादी प्रसिद्ध पत्र ; १९४२ से प्रकाशित ; एक प्रति का मूल्य दो आना ; श्रीगंगाधर अधिकारी प्रधान संपादक हैं ; प०—१९० बी० आर० के० बिल्डिंगस्, खेतवाड़ी, मेनरोड, बंबई ४।

लोकमान्य, साप्ताहिक—राष्ट्रीयपत्र ; कई वर्षों से प्रकाशित ; वा० मू० ६) ; कई सुयोग्य विद्वानों का सहयोग प्राप्त है ; प०—दिल्ली।

लोकवाणी, साप्ताहिक—राष्ट्रीय पत्र ; स्व० श्रीजमनालाल बजाज की स्मृति में ११ फरवरी १९४२ में स्थापित ; वा० मू० ५) ; भूत० संपा०—देवीशंकर तिवारी ; इस समय श्रीपूर्णचंद्र जैन और श्रीराजेंद्रशंकर भट्ट संपादक हैं ; प०—जयपुर सिटी।

लोकवाणी, साप्ताहिक—राष्ट्रीय पत्र ; १९४२ से प्रकाशित ; वा० मू० ७) ; आरंभ से ही श्रीमदनमोहन मिश्र संपादक हैं ; प०—कुंडरी, लखनऊ।

वर्तमान, दैनिक—प्रसिद्ध पत्र ; कई वर्षों से प्रकाशित ; श्रीरामशंकर अवस्थी प्रारंभ से ही संपादक हैं ; प०—वर्तमान प्रेस, सिविल लाइंस, कानपुर।

विक्रम, मासिक—हिंदू-

संस्कृति का एकमात्र पोषक-पत्र ; १६४० से प्रकाशित ; वा० मू० ४॥) ; प्रारंभ में हिंदी के यशस्वी लेखक श्री 'उग्र' संपादक थे ; अब ज्योतिषाचार्य श्रीसूर्यनारायण व्यास हैं ; प०—उज्जैन।

विशाल भारत, कलकत्ता—स्थानीय सर्वश्रेष्ठ मासिक ; स्व० श्रीरामानंद चटरजी द्वारा संचालित ; कई वर्ष तक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने सफलतापूर्वक संपादन किया ; अब पं० श्रीरामशर्मा हैं ; चतुर्वेदीजी ने अनेक आंदोलनों के द्वारा इसे बड़ा लोकप्रिय बना दिया था ; शर्माजी उसी पद को निभाने में प्रयत्नशील हैं ; ग्रामोपयोगी वार्तों के साथ-साथ साहित्य-संबंधी लेख भी रहते हैं ; वा० मू० ६) है।

विश्वभारती पत्रिका, त्रैमासिक—शांतिनिकेतन की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका ; १६४२ से प्रकाशित ; श्री-हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्रधान-संपादक हैं ; प०—हिंदी-भवन, शांतिनिकेतन, बोलपुर, बंगाल।

विश्वमित्र, मासिक—सामयिक समस्याओं पर विचार करनेवाला प्रसिद्ध राजनीति-प्रधान पत्र ; श्री-मूलचंदजी अग्रवाल संचालक हैं ; वा० मू० ६) है ; प०—कलकत्ता।

विश्ववाणी, मासिक—प्रसिद्ध मासिक पत्रिका ; श्रीसुंदरलाल द्वारा संचालित; वा० मू० ६) ; श्रीविश्वंभर नाथ संपादक हैं ; प०—साउथ मलाका, प्रयाग।

वीणा, मासिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका ; १६२६ से प्रकाशित ; प्रारंभ से श्रीकालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' संपादक थे ; अब श्रीकमलाशंकर मिश्र संपादक हैं ; वा० मू० ४॥) प०—मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर।

वेंकटेश्वर समाचार, साप्ताहिक—संभवतः हिंदी का सबसे प्राचीन, समादृत राष्ट्रीय पत्र ; निरंतर प्रकाशित ; कई प्रसिद्ध साहित्यिक संपादक रह चुके हैं ; इस समय श्री-हरिकृष्ण जौहर, श्रीराज-बहादुरसिंह आदि संपादक हैं; प०—बंबई।

शांति, मासिक—स्त्री-उपयोगी पत्रिका ; अक्टूबर १९३० से संचालित ; वा० मू० ३) ; प्रधानसंपादक श्री-वासुदेव वर्मा एवं संचालिका सुश्री शांतिदेवी ; प०—मोहनलाल रोड, लाहौर।

शिशु, मासिक—बालो-पयोगी सुंदर पत्र ; १९१६ से प्रकाशित ; स्व० श्रीसुदर्शना-चार्य द्वारा संस्थापित ; इस समय श्रीसोहनलाल द्विवेदी, एम० ए० संपादक हैं ; वा० मू० २) ; प०—शिशु-प्रेस, प्रयाग।

शिक्षा, मासिक—शिक्षो-पयोगी संचित्र पत्रिका ; १९४१ में संचालित ; वा० मू० ४॥) ; प्रधान संपादक श्रीरामेश्वर 'करुण' हैं; प०—सामयिक साहित्य सदन, चेंबरलेन रोड, लाहौर।

शिक्षा सुधा, मासिक—शिक्षा-साहित्य की मासिक पत्रिका ; १९३४ से स्थापित ; कई सुयोग्य विद्वानों द्वारा संपादित ; इस समय श्री-गोविंददास व्यास 'विनीत' संपादक हैं; प०—गुप्त आदर्श मंडी धनौरा, मुरादाबाद।

शुभचिंतक, अर्द्धसाप्ता-हिक—प्रसिद्ध राष्ट्रीयपत्र ; कई वर्षों से निरंतर प्रकाशित; पहले साप्ताहिक था अब अर्द्धसाप्ताहिक है ; प०—जबलपुर।

श्रीरंगनाथ, साप्ताहिक—धार्मिक पत्र ; १९४२ में स्थापित ; श्रीमुरलीधराचार्य और श्रीबलदेव शर्मा संपादक; वा० मू० ३); प०—भिवानी, हिसार, पंजाब।

श्रीस्वाध्याय, त्रैमासिक—

धार्मिक विचारों से ओत-प्रोत साहित्यिक पत्र ; ३० जनवरी १९४१ से प्रारंभ ; वा० मू० २) ; सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी संपादक एवं व्यवस्थापक हैं ; प०—श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन, पंजाब।

सजनी, मासिक—कहानी प्रधान पत्रिका ; १९४३ से प्रकाशित ; वा० मू० ४) ; श्रीनरसिंहराम शुक्ल संपादक हैं ; प०—मनोरंजन पुस्तक-माला, जार्जटाउन, प्रयाग।

सनातन, त्रैमासिक—धार्मिक पत्र ; १९४२ से प्रकाशित ; वा० मू० १) ; संपादक-मंडल में श्री शाह गोवर्धनलाल पं० मोतीलाल शास्त्री, पं० सत्यनारायण मिश्र, पं० नित्यानंद शास्त्री, पं० शठकोपाचार्य हैं ; अवैतनिक संपादक श्री पं० संपतकुमार मिश्र हैं ; प०—जोधपुर।

सम्मेलन पत्रिका, त्रैमासिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका ; सम्मेलन के स्थापन काल के समय से प्रकाशित ; वा० मू० १) ; श्रीज्योतिप्रसाद मिश्र प्रधान संपादक हैं ; प०—प्रयाग।

सरस्वती, प्रयाग—हिंदी की कदाचित् सबसे पुरानी मासिक पत्रिका ; १८९९ में प्रकाशित ; प्रथम दो वर्ष तक पाँच संपादक रहे ; तीसरे वर्ष बाद् (अब रा० ब०, डाक्टर) श्यामसुंदर दास ने संपादन किया ; पश्चात् पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी संपादक हुए ; उन्होंने उसे अत्यंत लोकप्रिय किया ; कुछ समय तक उनके साथ श्रीपदुमलाल पुन्नालाल बख्शी रहे ; फिर पं० देवीदत्त शुक्ल और ठाकुर श्रीनाथसिंह ने काम सम्हाला ; शुक्लजी के साथ आज श्रीउमेशचंद्र देव काम कर रहे हैं ; प्रधानतः सामयिक समस्याएँ और जानकारी बढ़ानेवाले लेख छपते हैं ;

प्रचार-साहित्य अधिक रहता है; वा० मू० ४॥) है।

स्वतंत्र, साप्ताहिक—राष्ट्रीय एवं निर्भीक विचारों से ओत-प्रोत; स्व० जगदीशनारायण रूसिया की स्मृति में प्रकाशित; १६२१ में स्थापित; आर्थिक स्थिति संतोषप्रद; श्रीबनारसीदत्त शर्मा 'सेवक' प्रधान संपादक हैं; प०—स्वतंत्र जरनल्स लिमिटेड, झाँसी।

सुदर्शन, साप्ताहिक—प्रसिद्ध पत्र; कई वर्षों से प्रकाशित; वा० मू० पहले ३) अब ९); कई सुयोग्य व्यक्ति संपादक रह चुके हैं; प०—एटा।

संसार, दैनिक—नव-प्रकाशित श्रेष्ठ राष्ट्रीय पत्र; १६४३ से प्रकाशित; 'आज' के यशस्वी संपादक श्रीबाबूराव विष्णु पराड़कर इसके संपादक हैं; इसका साप्ताहिक संस्करण भी बड़ी सजधज से प्रकाशित होता है; प०—गायघाट, बनारस।

हल, मासिक—ग्राम-सुधार संबंधी एक मात्र मासिक; १६३६ से प्रकाशित; प्रारंभ से ही श्री ठाकुर श्रीनाथसिंह प्रधान संपादक हैं; वा० मू० १); इसका उर्दू संस्करण भी प्रकाशित होता है; प०—इंडियन-प्रेस, प्रयाग।

हलचल, साप्ताहिक—जमींदारों का एक मात्र पत्र; लगभग ६ वर्षों से प्रकाशित; वा० मू० ९); श्री आर० के० उपाध्याय प्रधान संपादक हैं; प०—हलचल प्रेस, गोंडा।

हिंदीविश्वभारती, त्रैमासिक—ज्ञान-विज्ञान का परिचय देनेवाली एकमात्र पत्रिका; १६३६ से प्रकाशित; अब तक २० खंड प्रकाशित हो चुके हैं; प्रति खंड का मूल्य २) है; रायसाहब पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी एम० ए० और श्रीकृष्ण वल्लभ द्विवेदी बी० ए० प्रधान संपादक हैं;

सहयोगी संपादक मंडल में कई विद्वानों का सहयोग है; प०—चारबाग, लखनऊ।

हिंदुस्तान, दैनिक—प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र; कई वर्षों से प्रकाशित; प्रसिद्ध साहित्य सेवियों द्वारा संपादित; इस समय श्रीमुकुटबिहारी स्थानापन्न संपादक हैं; प०—दिल्ली।

हिंदुस्तानी, त्रैमासिक—प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका; लगभग दस वर्षों से प्रकाशित; श्रीरामचंद्र टंडन एम० ए०, एल-एल० बी० संपादक हैं; प०—प्रयाग।

हिंदू, साप्ताहिक—हिंदू-राष्ट्र का समर्थक एकमात्र पत्र; १६३६ से आदरणीय भाई परमानंद द्वारा संस्थापित; प्रारंभ से ही श्री-हरिश्चंद्र विद्यालंकार संपादक हैं; प०—रीडिंग रोड, दिल्ली।

हिंदू गृहस्थ, मासिक—अपने विषय का एकमात्र-पत्र; १६४० से प्रकाशित; वा० मू० ३); श्रीदेवकीनंदन बंसल संपादक हैं; प०—मधुर मंदिर, हाथरस।

हुंकार, साप्ताहिक—राष्ट्रीयपत्र; कई वर्षों से प्रकाशित हो रहा है; प०—पटना।

होनहार, पाक्षिक—बालोपयोगी पत्र; १६४४ से प्रकाशित; वा० मू० ३); श्रीप्रेमनारायण टंडन, एम० ए० प्रधान संपादक हैं; प०—विद्यामंदिर चौक, लखनऊ।

'क्षात्र-धर्म संदेश', मासिक—क्षत्रियों में जाग्रति उत्पन्न करनेवाला एकमात्र मासिक; जनवरी १६४२ से संचालित; वा० मू० ३); आर्थिक स्थिति संतोषप्रद; भूरसिंह राठौर संपादक हैं; पहले जोधपुर से निकलता पर अब जयपुर से प्रकाशित; प०—क्षात्र-धर्म साहित्य-मंदिर, जयपुर।

चौथा खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

(ङ) खंड

हिंदी के प्रमुख पुरस्कार

और

पदक

(क) काशी नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से दिए जानेवाले पुरस्कार और पदक

उत्तम और मौलिक ग्रंथ-कर्ताओं को जो पुरस्कार और पदक सभा दिया करती है, उनकी निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट्स, संयुक्तप्रांत के पास जमा थीं; पर इस वर्ष भारत-सरकार ने नवीन विधान के अनुसार उन्हें अपने संरक्षण में कर लिया है। उक्त निधियों के ब्याज से ये पदक और पुरस्कार दिए जाते हैं।

विभिन्न पुरस्कार-पदकों की समुचित नियमावली का निर्माण करने के लिये सभा ने इस वर्ष एक उपसमिति बना दी है, जिसके द्वारा निर्मित रत्नाकर-पुरस्कार की नियमावली सभा की प्रबंध समिति के विचाराधीन है। शेष पुरस्कार-पदकों के लिए भी, आशा है, शीघ्र उपयुक्त नियमावलियाँ बन जायँगी और आगे से और अधिक व्यवस्थापूर्वक इनका कार्य होगा।

इस समय जिस प्रकार ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं, उसका विवरण निम्नलिखित है।

(१) बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार—श्रीमान् राजा बलदेवदास बिड़ला की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार सं० १९९७ से अध्यात्म, योग, सदाचार, मनोविज्ञान और दर्शन के सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। सं० १९९७ तक की विचारार्थ प्राप्त रचनाओं में निर्णायकों की सम्मति के अनुसार सर्वश्रेष्ठ कृति 'बाल-मनोविज्ञान' पर यह पुरस्कार इस वर्ष श्रीलालजी राम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी० को दिया गया। आगामी पुरस्कार १ माघ

१९९७ से २९ पौष २००१ तक प्रकाशित उपयुक्त विषयों के सर्वोत्तम ग्रथ पर दिया जायगा।

(२) बटुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार स्वर्गवासी राय बहादुर श्रीबटुकप्रसाद खत्री की दी हुई निधि से सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास या नाटक के लिये सं० १९९८ से प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। १ माघ सं० १९९४ से २९ पौष १९९८ तक की प्रकाशित विचारार्थ प्राप्त रचनाओं में निर्णायकों की सम्मति के अनुसार सर्वश्रेष्ठ रचना "नारी" के लेखक श्रीसियारामशरण गुप्त को इस वर्ष यह पुरस्कार दिया गया। अगला पुरस्कार १ माघ १९९८ से २९ पौष २००२ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर दिया जायगा।

(३) रत्नाकर पुरस्कार—(१) स्वर्गवासी श्रीजगन्नाथदास रत्नाकर की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार व्रजभाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिए सं० १९९८ से प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है। १ माघ १९९४ से २९ पौष १९९८ तक की प्रकाशित पुस्तकों पर विचार किया जा रहा है। अगला पुरस्कार १ माघ १९९८ से २९ पौष २००२ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तकपर सं० २००२ में दिया जायगा।

(४) रत्नाकरपुरस्कार (२)—यह दूसरा रत्नाकर-पुरस्कार भी २००) का है। यह पुरस्कार व्रजभाषा के सदृश हिंदी की अन्य भाषाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिए प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। इस बार यह पुरस्कार १ माघ १९९५से २९ पौष १९९९ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर दिया

जानेवाला है।

(५) डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार— श्रीरामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९६ से २९ पौष २००० तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००० में दिया जायगा।

(६) जोधसिंह पुरस्कार— उदयपुर के स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ सं० २००१ से पौष २९ सं० २००५ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० २००५ में दिया जायगा।

(७) विनायक नंदशंकर मेहता पुरस्कार— हिंदी के परम भक्त और भारतीय संस्कृतिके अनन्य उपासक स्वर्गवासी श्रीविनायक नंदशंकर मेहता की स्मृति में एक पुरस्कार दिए जाने का निश्चय हुआ है। पर इसकी व्यवस्था के लिये धन अपेक्षित है। यथेष्ट द्रव्य प्राप्त होते ही यह पुरस्कार दिया जाने लगेगा। स्व० मेहताजी के इष्ट-मित्रों और हिंदी-प्रेमियों से अनुरोध है कि वे इसके लिए धन से सभा की सहायता करें।

(८) डा० हीरालाल स्वर्णपदक—स्वर्गवासी राय बहादुर डा० हीरालाल की दी हुई निधि से एक स्वर्णपदक सभा द्वारा पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलोजी, भाषा-विज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर प्रति दूसरे वर्ष दिया जाता है। अगला पदक १ वैशाख ९८ से ३० चैत्र

१९९९ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक या निबंध पर सं० २००० में दिया जायगा।

(९) द्विवेदी स्वर्ण-पदक—स्वर्गीय आचार्य श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रदान की हुई निधि से प्रति वर्ष यह स्वर्णपदक हिंदी में सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। निर्णायकों की सर्व-सम्मति से इस वर्ष यह पदक श्री राय कृष्णदास को उनकी "भारत की चित्र-कला" नामक पुस्तक पर दिया जायगा।

(१०) सुधाकर पदक—स्वर्गीय श्रीगौरीशंकरप्रसाद ऐडवोकेट की दी हुई निधि से यह रौप्य-पदक बटुकप्रसाद पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(११) ग्रीव्ज पदक—श्रीरामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह रौप्य-पदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(१२) राधाकृष्णदास पदक—श्रीशिवप्रसाद गुप्त की दी हुई निधि से यह रौप्य-पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० १ पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(१३) बलदेवदास पदक—श्रीब्रजरत्नदास वकील की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० २ प्राप्त करनेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(१४) गुलेरीपदक—स्वर्गीय श्रीचंद्रधर शर्मा गुलेरी की स्मृति में श्रीजगद्धर शर्मा गुलेरी की दी हुई निधि से यह रौप्य-पदक जोधसिंह पुरस्कार पानेवाले सज्जज को दिया जाता है।

(१५) रेडिचे पदक—स्व० रेडिचे महोदय बनारस के कलक्टर थे तथा सभा को प्रत्येक कार्य में प्रोत्साह सहयोग प्रदान करते थे। सभा-भवन के लिए वर्तमान भूमि

उन्हीं की कृपा से प्राप्त हुई थी। उन्हीं की स्मृति में यह पदक बिड़ला पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जाता है।

(ख) सम्मेलन की ओर से दिए जाने वाले पुरस्कार

(१) मंगलाप्रसाद पारितोषिक—प्रति वर्ष १२००) का यह पुरस्कार हिंदी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा ; श्रीगोकुलचंद रईस इस पारितोषिक के दाता हैं ; इसका प्रारंभ संवत १९७१ में हुआ; अब तक इन विद्वानों को यह पुरस्कार मिल चुका है—पद्मसिंह शर्मा को 'बिहारी सतसई' पर १९७९ में ; गौरीशंकर हीराचंद ओझा को 'प्राचीन लिपिमाला' पर १९८० में ; प्रो० सुधाकर को 'मनोविज्ञान' पर १९८२ में ; त्रिलोकीनाथ वर्मा को 'हमारे शरीर की रचना' पर १९८३ में ; 'वियोगी हरि' को 'वीर सतसई' पर १९८४—८५ में ; प्रो० सत्यकेतु को 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' पर १९८६ में ; गंगाप्रसाद उपाध्याय को 'आस्तिकवाद' पर १९८७ में ; डा० गोरखप्रसाद को 'फोटोग्राफी की शिक्षा' पर १९८८ में ; डा० मुकुन्दस्वरूप को 'स्वास्थ्य-विज्ञान' पर १९८९ में; जयचन्द्र विद्यालंकार को 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा' पर १९९० में ; चन्द्रावती लखनपाल को 'शिक्षा मनोविज्ञान' पर १९९१ में ; स्व० रामदास गौड़ को 'विज्ञान हस्तामलक' पर १९९२ में ; अयोध्यासिंह उपाध्याय को 'प्रियप्रवास' पर १९९३ में ; मैथिलीशरण गुप्त को 'साकेत' पर १९९३ में ; स्व० जयशंकरप्रसाद को 'कामायनी' पर १९९४ में ; स्व० पं० रामचन्द्र शुक्ल को

'चिंतामणि' पर १९९५ में; वासुदेव उपाध्याय को 'गुप्त साम्राज्य का इतिहास' पर १९९६ में; श्रीसम्पूर्णानन्द को 'समाजवाद' पर १९९७ में; श्रीबलदेव उपाध्याय को 'भारतीय दर्शन' पर १९९८ में।

(२) सेकसरिया—महिला—पारितोषिक—प्रति वर्ष ५००) का यह पुरस्कार किसी महिला की रचित हिंदी की मौलिक रचना पर दिया जायगा।

श्रीसीताराम सेकसरिया इस पारितोषिक के दाता हैं। इसका प्रारंभ संवत् १९८८ से हुआ। यह पुरस्कार श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान को 'मुकुल' पर १९८८ में; दूसरी बार फिर उन्हीं को 'बिखरे मोती' पर १९८९ में; चन्द्रावती लखनपाल को 'स्त्रियों की स्थिति' पर १९९० में; महादेवी वर्मा को 'नीरजा' पर १९९१ में; रामकुमारी चौहान को 'निःश्वास' पर १९९२ में; दिनेशनंदिनी चोरड्या को 'शबनम' पर १९९४ में; सूर्यदेवी दीक्षित विदुषी उषा को 'निर्झरिणी' पर १९९४ में; तोरनदेवी शुक्ल लली को 'जागृति' पर १९९६ में; सुमित्राकुमारी सिनहा को 'विहाग' पर १९९७ में; तारादेवी पाण्डेय को 'आभा' पर १९९८ में मिल चुका है।

(३) मुरारका पारितोषिक—प्रति वर्ष ५००) का यह पुरस्कार समाजवाद विषय पर हिंदी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा; श्रीवसंतलाल मुरारका इस पारितोषिक के दाता हैं; इसका प्रारंभ संवत् १९९४ से हुआ; अब तक इन विद्वानों को यह पुरस्कार मिल चुका है—श्रीसम्पूर्णानंद को 'समाजवाद' पर १९९४ में; श्री-अमरनारायण अग्रवाल को 'समाजवाद' पर १९९५ में; श्रीराहुल सांकृत्यायन को

'सोवियत भूमि' पर १९९६ में ; श्रीरामनाथ सुमन को 'गांधीवाद की रूपरेखा' पर १९९८ में।

(४) रत्नकुमारी पुरस्कार—प्रति वर्ष २५०) का यह पुरस्कार हिंदी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जायगा ; श्रीमती रत्नकुमारी इस पारितोषिक की दात्री हैं ; इसका प्रारभ संवत् १९९५ से हुआ ; श्रीसेठ गोविंददास को उनके नाटक 'प्रकाश' पर संवत् १९९७ में और श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी' को 'स्वप्नभंग' पर संवत् १९९८ में यह पुरस्कार मिला है।

(५) श्रीराधामोहन गोकुलजी पुरस्कार—प्रति वर्ष २५०) का यह पुरस्कार 'समाजसुधार' विषय पर हिंदी को किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा ; यह पुरस्कार राधामोहन गोकुलजी की स्मृति में दिया है; इसका प्रारंभ संवत् १९९५ से हुआ ; श्रीसत्यदेव विद्यालंकार को 'परदा' नामक पुस्तक पर सं० १९९६ में और श्रीरामनारायण यादवेंदु, को 'भारत का दलित समाज' पर १९९८ में यह पुरस्कार दिया जा चुका है।

(६) नारंग पुरस्कार—हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से प्रति वर्ष १००) का यह पुरस्कार पंजाबनिवासी किसी हिंदी कवि को 'भारतीय संस्कृति' विषय पर उसकी रचित उच्चकोटि की कविता के सम्मानार्थ दिया जायगा; कविता कम से कम १०० पंक्तियों की अवश्य होना चाहिए; 'पंजाबनिवासी' शब्द से उस व्यक्ति का बोध होगा जिसका जन्म पंजाब में हुआ हो और जो साधारणतः उसी प्रांत में रहता हो ; श्रीगोकुलचंद नारंग इस पारितोषिक के दाता हैं ; इसका प्रारंभ संवत् १९९५ से हुआ; श्रीकाशीराम शास्त्री पथिक को 'मुक्तिगान' नामक कविता

पर यह पुरस्कार संवत् १९९८ में दिया गया।

(७) गोपालपुरस्कार–सम्मेलन के अधिवेशन में प्रति वर्ष ४०० रुपए का 'गोपाल पुरस्कार' हिंदी की किसी खोजपूर्ण मौलिक अद्वैत सिद्धांत के आधार पर लिखी हुई आचार शास्त्र-रचना (ETHICS) के सम्मानार्थ दिया जायगा ; श्रीराम-गोपाल मेहता इस पुरस्कार के दाता हैं ; इसका प्रारंभ २००० संवत् से हुआ।

(८) जैन-पारितोषिक—सम्मेलन के अधिवेशन में प्रति वर्ष ५०० रुपए का 'जैन-पारितोषिक' ग्रामोद्योग विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा ; श्रीधर्मचंद सरावगी इस पारितोषिक के दाता हैं। इसका प्रारंभ संवत् १९९७ से हुआ।

सम्मेलन के सभी पुरस्कारों के विशेष नियम

(१) पुरस्कार सम्मेलन के अधिवेशन में दिया जायगा अथवा अधिवेशन में पारितोषिक पाने के अधिकारी का नाम प्रकट कर दिया जायगा।

यदि किसी कारणवश कोई अधिवेशन के अवसर पर पारितोषिक लेने के लिए उपस्थित न हो सके तो प्रमाण-पत्र और पारितोषिक का रुपया स्थायी समिति के किसी अधिवेशन में दे दिया जायगा। प्रमाणपत्र पर तिथियाँ आदि वही रहेंगी जिस तिथि को सम्मेलन हुआ करेगा।

संकलित, संगृहीत और अनुवादित ग्रंथ मौलिक रचना के अंतर्गत न समझे जायँगे परन्तु स्वतंत्र रूप से सिद्धांत स्थापित करनेवाली व्याख्याएँ मौलिक रचना की श्रेणी में रक्खी जायँगी।

(२) पूरा पारितोषिक एक लेखिका को मिलेगा। एक

से अधिक लेखिकाओं में बाँटा न जायगा।

(३) पारितोषिक पानेवाले लेखक या लेखिका को पारितोषिक के साथ सम्मेलन के अवसर पर एक प्रमाण-पत्र भी दिया जायगा।

(४) प्रतिवर्ष स्थायी समिति द्वारा प्रत्येक पारितोषिक-समिति' का संगठन हुआ करेगा। इसमें कुल पाँच सदस्य रहेंगे, जिनमें एक दाता या उनके कोई प्रतिनिधि अवश्य होंगे। पारितोषिक-समिति नियमानुसार पारितोषिक-संबंधी सब प्रबंध करेगी। समिति का अधिवेशन दो सदस्यों तक की उपस्थिति में हो सकेगा। पत्र द्वारा आई हुई अन्य सदस्यों की सम्मतियाँ भी ग्राह्य होंगी।

(५) सब विषयों की रचनाओं पर पारितोषिक देने के लिए विचार किया जायगा।

(६) यदि किसी रचना के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति की इच्छा हो कि उस पर पारितोषिक के लिए विचार किया जाय तो उनका कर्त्तव्य होगा कि उसकी सात प्रतियाँ सम्मेलन-कार्यालय में निश्चित तिथि से पहले भेज दें। सब पुस्तकें सम्मेलन की सम्पत्ति होंगी।

नोट—पुस्तकें पहुँचने की अन्तिम तिथि ३१ वैशाख (सौर) है। प्रतिवर्ष सम्मेलन कार्यालय में इस तिथि तक पुस्तकें पहुँच जायँ।

(७) पारितोषिक के लिए केवल जीवित लेखक—लेखिकाओं की रचनाओं पर विचार किया जायगा। किन्तु यदि किसी की पुस्तक सूची में आ जाने के पश्चात् उसका देहावसान हो जाय तो भी उसकी रचना पर विचार किया जायगा और यदि पुरस्कार प्रदान करने का समिति निश्चय करे, तो उसके उत्तराधिकारी को दिया जायगा।

(८) निश्चित तिथि से १५ महीने से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाओं पर विचार न किया जायगा। प्रत्येक रचना पारितोपिक के लिए केवल एक बार भेजी जा सकेगी।

(६) पुरस्कार-निर्णय के लिए पाँच निर्णायक पारितोपिक-समिति नियुक्त करेगी। नियुक्ति से पहले विद्वानों और विदुषियों के नाम समाचारपत्रों में प्रकाशित सूचनाओं द्वारा माँगे जायँगे। उसके बाद समाचारपत्रों में अथवा अन्य रीति से प्रस्तावित नामों पर विचार कर समिति निर्णायकों की नियुक्ति करेगी।

(१०) पारितोपिक-समिति का कोई सदस्य निर्णायक नहीं हो सकेगा।

(११) पारितोपिक-समिति तथा निर्णायकों में कोई भी ऐसा लेखक या प्रकाशक न रह सकेगा, जिसकी लिखित या प्रकाशित रचना पारितोपिक के लिए विचारार्थ आई हो।

(१२) जो पुस्तकें विचारार्थ कार्यालय में आयँगी उनकी पहुँच प्रेपक के पास भेजी जायगी।

(१३) पारितोपिक-समिति को अधिकार होगा कि वह निश्चित तिथि तक आई हुई पुस्तकों के अतिरिक्त अपनी ओर से भी पुस्तकें निर्णय के लिए निर्णायकों के सामने रख सकें।

(१४) पारितोपिक-समिति को यह अधिकार होगा कि आई हुई पुस्तकों में से किसी पुस्तक को अयोग्य ठहरा कर निर्णायकों के पास न भेजे।

(१५) पारितोपिक-समिति को अधिकार होगा कि किसी वर्ष रचनाओं के आजाने पर यदि वह देखे कि कोई भी रचना पारितोपिक के योग्य नहीं है तो उस वर्ष पारितोपिक न दे।

(१६) प्रत्येक वर्ष पारि-

तोपिक-समिति पाँच अलग अलग सूचियाँ कार्यालय में बनवाएगी । १—उपर्युक्त नियम (६) के अनुसार आई हुई रचनाओं की सूची । २—नियम (३) का उल्लंघन कर आई हुई रचनाओं की सूची । ३—नियम (१४) के अनुसार अयोग्य ठहराई गई रचनाओं की सूची । ४—उन रचनाओं की सूची जिन्हें नियम (१३) के अनुसार पारितोपिक-समिति ने अपनी ओर से निर्णायकों के सामने भेजने का निश्चय किया है । ५—उन रचनाओं की सूची जिन पर निर्णायकों को विचार करना है ।

इन सब सूचियों में पृथक् क्रमसंख्या, रचना का नाम और रचयिता का नाम होगा। इनके अतिरिक्त उपर्युक्त सूची १, २ और ३ में कार्यालय में पहुँच की तिथि तथा प्रेपक का नाम और पता होगा। सूची ३ और ४ में उपर्युक्त ब्यौरों के अतिरिक्त पारितोपिक-समिति के निर्णय की तिथि दर्ज रहेगी।

(१७) उपर्युक्त पाँचवीं सूची तैयार हो जाने पर उसकी एक एक प्रति प्रत्येक निर्णायकके पास भेजी जायगी और सुविधानुसार निर्णायकों के पास रचनाएँ भेजने का प्रबन्ध किया जायगा ।

(१८) पुस्तकों पर विचार करके प्रत्येक निर्णायक अपनी सम्मति के अनुसार उनमें से एक सर्वोत्तम रचना चुन लेगा और पारितोपिक-समिति को अपनी सम्मति की सूचना साधारणतः उस तिथि से दो मास के भीतर दे देगा जब उसको पुस्तकें प्राप्त हों । इसके अतिरिक्त प्रत्येक निर्णायक उन रचनाओं के नाम भी लिखेगा जो उसकी सम्मति के अनुसार उत्तमता में द्वितीय और तृतीय हों । निर्णायक इन तीनों रचनाओं पर आलोचनात्मक तथा तुलनात्मक सम्मति देगा ।

(१९) सर्वोत्तम होने के

सम्बन्ध में सबसे अधिक निर्णायकों की सम्मतियाँ जिस रचना के पक्ष में होंगी उसकी लेखक - लेखिका पारितोषिक की अधिकारिणी होंगी। यदि निर्णायकों की उन सम्मतियों से जो रचनाओं के सर्वोत्तम होने के पक्ष में हैं यह निर्णय न हो सके कि मताधिक्य किस एक रचना के पक्ष में है तो उत्तमता मे द्वितीय तथा तृतीय स्थानों के लिए आई हुई सम्मतियों से भी सर्वोत्तम रचना का निर्णय किया जा सकेगा। जैसे पाँच निर्णायकों में दो ने एक रचना को सर्वोत्तम बताया और दो ने एक दूसरी रचना को और पाँचवें ने सर्वोत्तम एक अन्य रचना को बताया तब उन पुस्तकों में जिन्हें दो दो प्रथम स्थान मिले हैं जिस पुस्तक को अधिक द्वितीय स्थान मिले हैं उसके लिए मताधिक्य समझा जायगा। इसी प्रकार आवश्यकता पड़ने पर तृतीय स्थान सम्बन्धी सम्मति तक से मताधिक्य का निर्णय हो सकेगा।

(२०) मताधिक्य का पता लगते हुए भी यदि किसी रचना के सर्वोत्तम होने के पक्ष में दो निर्णायकों से कम की सम्मति हो तो पारितोषिक-समिति को अधिकार होगा कि पारितोषिक दे वा न दे।

(२१) यदि पारितोषिक-समिति को उचित जान पड़े तो वह निर्णायकों की सम्मति प्रकाशित कर सकेगी।

(२२) यदि पारितोषिक-समिति उचित समझे तो विचारार्थ उपस्थित की गई किसी पुस्तक की प्रकाशित लेखक-लेखिका के सम्बन्ध में यह जाँच कर सकती है कि उस पुस्तक को लिखने की योग्यता उक्त महिला में है अथवा नहीं।

(२३) यदि उपर्युक्त नियमों के अनुसार 'किसी

वर्ष पारितोषिक न दिया जा सके तो उस वर्ष पारितोषिक का रुपया स्थायी-समिति के निश्चयानुसार किसी पुरुष या महिला की लिखी पुस्तक के छापने के सहायतार्थ या उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिए दिया जा सकता है।

विभिन्न पारितोषिक समितियाँ

मंगलाप्रसाद पारितोषिक समिति—सर्वश्री गोकुलचन्दजी, रईस की गली, काशी; अमरनाथ झा, प्रयाग; चन्द्रशेखर वाजपेयी, प्रयाग; सत्यप्रकाश, प्रयाग; रामप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग, संयोजक।

सेकसरिया पारितोषिक समिति—सर्वश्री सीतारामजी सेकसरिया, कलकत्ता; चन्द्रावती त्रिपाठी, प्रयाग; भगवतीप्रसाद, प्रयाग; रामनाथ सुमन, प्रयाग; रामप्रसाद त्रिपाठी, प्रयाग, संयोजक।

मुरारका पारितोषिक समिति—सर्वश्री वसन्तलाल मुरारका, कलकत्ता; अमरनारायण अग्रवाल, प्रयाग; डा० रामनाथ दुवे, प्रयाग; श्रीनारायण चतुर्वेदी, प्रयाग; दयाशंकर दुवे, प्रयाग, संयोजक।

जैनपारितोषिक समिति—सर्वश्री धर्मचन्द सरावगी, ग्रामोद्योग संघ वर्धा के एक प्रतिनिधि, वाचस्पति पाठक, प्रयाग; डा० विश्वेश्वरप्रसाद, प्रयाग; दयाशंकर दुवे, प्रयाग, संयोजक।

राधामोहन पुरस्कार समिति—सर्वश्री राधामोहन गोकुलजी स्मारक समिति का एक प्रतिनिधि लक्ष्मीनारायण दीक्षित, प्रयाग; जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग; चन्द्रशेखर वाजपेयी, प्रयाग; रामचन्द्र टंडन, प्रयाग; संयोजक।

श्रीरत्नकुमारी पुरस्कार समिति—सर्वश्री रत्नकुमारी-

जी का एक प्रतिनिधि, सत्य-जीवन वर्मा, प्रयाग ; चन्द्रावती त्रिपाठी, प्रयाग ; कृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशी ; रामलखन शुक्ल, संयोजक।

श्रीनारंग पुरस्कार समिति—सर्वश्री गोकुलचंद नारंग, लाहौर; रामशंकर शुक्ल 'रसाल', प्रयाग; रामनाथ 'सुमन', प्रयाग; उदयनारायण तिवारी, प्रयाग ; रामलखन शुक्ल, प्रयाग, संयोजक।

(ग) देवपुरस्कार

हिंदी-प्रेमी , ओरछानरेश प्रदत्त २०००) का यह पुरस्कार एक वर्ष ब्रजभाषा और एक वर्ष खड़ी बोली के सर्वश्रेष्ठ काव्य पर दिया जाता है। प्रथम पुरस्कार श्रीदुलारेलालजी भार्गव को उनकी दोहावली पर मिला था ; द्वितीय डा० रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० को 'चित्ररेखा' पर तथा तीसरा श्रीश्यामनारायण पांडेय को उनकी 'हल्दीघाटी' पर मिला था , हिंदी का यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।

(घ) अन्य पुरस्कार

मध्य भारतीय हिंदी-साहित्य - समिति, इंदौर की ओर से ४१) और और ३१) के दो दो पुरस्कार प्रतिवर्ष समिति के जन्मदाता श्री डा० सरजूप्रसाद की स्मृति में दिए जाते हैं। इस वर्ष प्रथम पुरस्कार स्व० श्रीरामदास गौड़ द्वारा लिखित 'हमारे गाँव की कहानी' व 'हमारे सुधार और संगठन' नामक पुस्तकों पर और द्वितीय श्री कृष्णदत्तजी पालीवाल द्वारा लिखित 'सेवा-मार्ग और सेवा-धर्म' नामक रचना पर दिया गया।

दूसरा पदक आलोचनात्मक रचना पर दिया जाने को था। प्रथम पुरस्कार श्रीकृष्णविहारी की 'देव और विहारी' तथा द्वितीय श्रीमद्गुरुशरण अवस्थी की 'विचार-विमर्श' नामक पुस्तकों पर दिया गया।

अगले वर्ष राजनीतिशास्त्र और आख्यायिका पर दो-दो पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

पाँचवाँ खंड समाप्त

हिंदी-सेवी-संसार

(च) खंड

सामयिक समस्याएँ

१. हिंदी की प्रगति
२. जनपदीय कार्यक्रम
३. साहित्य-क्षेत्र में विकेंद्रीकरण
४. हिंदी-विश्वविद्यालय
५. विदेशों में हिंदी
६. योजना की रूप-रेखा

हिंदी की प्रगति

ले०—श्रीछुंगालाल मालवीय

हिंदी—भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिंदी—अबाधगति से निरंतर विकासोन्मुख है। उसके प्रबल प्रवाह तथा प्रसार के सामने किसका साहस है जो जम सके। भले ही अन्य भाषाएँ राजनैतिक बल पर थोड़े समय के लिए हिंदी से होड़ कर लें पर उसकी सहज शक्ति के सामने, उनका नत-मस्तक होना अवश्यंभावी है। हिंदी की व्यापकता, लोकप्रियता तथा सुगमता निर्विवाद सिद्ध है। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक चले जाइए, सर्वत्र हिंदी का बोल-बाला मिलेगा। यह देश-व्यापकता— विशेषरूप से उत्तर भारत में—उसे मिली शौरसेनी अपभ्रंश से जिसका प्रचार नवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक मध्यदेश तथा उसके संलग्न प्रांतों में रहा।

कौन जानता था इस भावमयी नव-मूर्ति में इतनी शक्ति आयेगी कि वह समस्त भारत को आक्रांत कर लेगी। पर नहीं, उसमें थी देववाणी संस्कृत की अमरशक्ति और महात्माओं का आशीर्वाद। उत्तरोत्तर विकास होने लगा। हर्ष के बाद जब भारत छिन्न-भिन्न हुआ उस समय हिंदी मध्यदेश और राजस्थान के चारणों की जिह्वा पर विलास करने लगी। पारस्परिक फूट या विदेशी आक्रमणों से इसका बाल भी न बाँका हुआ।

बारहवीं शताब्दी में पृथ्वीराज के साथ-साथ आर्यों का राजनैतिक गौरव-सूर्य अवश्य अस्त हो गया पर हिंदी हिंदी ही बनी रही। उसने आश्रय लिया उन राजाओं का जो अपने को आर्य और आर्यों की सभ्यता तथा संस्कृति का रक्षक समझते थे। इनका भी पतन हुआ। अब हिंदी के लिए एक ईश्वर को छोड़ अन्य कोई

आश्रय न रहा। कबीर, सूर, तुलसी आदि साधुओं की संगति से इसके भाग्य का उदय हुआ। भले दिन कहते किसको हैं! विदेशियों ने भी इसकी शरण ली और इसके सहयोग से उनकी शृंगारमयी लौकिक कथाओं मे आध्यात्मिकता का आभास दिखाई पड़ा। इस युग में हिंदी ने ही लौकिक से पारलौकिक को, निर्गुण से सगुण को, अनित्य को नित्य से एवं बाह्य जगत् को अंतर्जगत् से मिलाकर एक कर दिया। चमक उठा उसका रूप, प्रकट हो गई उसकी महिमा! फिर क्या था? कविगण लगे उसका नख से शिख तक शृंगार करने विदेशी मुस्लिम धीरे-धीरे स्वदेशी हो गए। सूफियों ने हिंदी साहित्य की सेवा की। सम्राटों ने कवियों का आदर किया।

समय पाकर मुगल शासन का पतन हुआ, हिंदू-राष्ट्र स्थापित हुए, परंतु ये स्थायी न रह सके और उनकी जगह देश पर पिछले विदेशियों से अधिक विदेशी अँगरेज जाति का भारत पर एक छत्र राज्य स्थापित हुआ।

हिंदी सचेत हो चुकी थी। उसने समझ लिया था कि राज-नैतिक क्षेत्र की उपेक्षा करना वांछनीय नहीं है। पहुँची फोर्ट विलियम के कालेज में। वहाँ जान गिलक्राइस्ट की देख-रेख में 'प्रेमसागर' के रूप में प्रकट हुई। यह दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण था इसलिए नहीं कि गद्य का रूप स्थिर हुआ वरन् इसलिए कि अब राजनैतिक क्षेत्र में भी पदार्पण हुआ। गद्य तो इसके पहले भी लिखा जा चुका था और जनता में प्रचलित था। मुंशी सदासुख-लाल का 'सुखसागर' और इंशा की 'रानी केतकी' इसके प्रमाण हैं। हिंदी ने जनता को पूरी तौर से अपना लिया था। भारतेंदु ढंके की चोट पर कहते हैं—

'निज भाषा उन्नति अहै जो चाहहु कल्यान'

माधव शुक्ल का राग देखिए—

'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान'

पर इस युग में एक बाधा हुई। हिंदी का ही दूसरा रूप—उर्दू तैयार हो गयी। लोगों ने इसको हिंदी का प्रतिद्वंद्वी मानकर इसका विरोध करना शुरू किया; पर यह भूल है। उर्दू वास्तव में हिंदी की विभाषा है। विदेशी लिपि के आधार पर स्थित यह अकृत्रिम रूप कब तक चलेगा? भले ही अरबी तथा फारसी के शब्दों के सहारे इसको नया तथा भिन्न रूप देने का प्रयत्न किया जाय, पर भारतीय वातावरण में यह टिक नहीं सकता। आज इस रूप के हिमायती कुछ बड़े-बड़े लोग हो गए हैं; उनकी रुचि से हिंदी जगत् सशंक अवश्य है और हिंदी को सरल तथा सुबोध-रूप यानी उनके शब्दों में 'हिंदुस्तानी' देने की पुकार मचा रहे हैं, पर मेरी समझ से भय की आशंका नहीं है। हमको अपनी भाषा का रूप स्थिर और उसका भण्डार रत्नों से भर देना चाहिए। यह निश्चय है कि जहाँ उर्दू है वहाँ हिंदी अपना घर बना रही है और वह दिन दूर नहीं है जब उर्दू भाषी भी हिंदी को अपनायेंगे।

प्रश्न ये हैं कि हिंदी का (१) रूप क्या हो और (२) उसमें कैसे साहित्य की आवश्यकता है।

भारत का भ्रमण करते हुए मैंने अनुभव किया कि संस्कृत के तत्सम शब्दों से मिली हुई हिंदी देश के पूर्वीय तथा दक्षिणी भागों में पूरी तौर से समझ ली जाती है, पर अरबी और फारसी के शब्दों से उन विभागों के लोग अरुचि दिखाते हैं। मुझे स्मरण है कि मैसूर निवासियों ने कहा था—"आपकी हिंदी की पुस्तकों में इतने विदेशी शब्द क्यों आ जाते हैं?" हमको स्मरण रखना चाहिए कि हमारे देश की सभ्यता तथा संस्कृति से

संस्कृत का बड़ा गहरा संबंध है, उसके शब्दों से हम परिचित हैं। अतः उनका प्रयोग भारतवासियों को नहीं खटकता पर 'ख़ूँरेज़ी' ऐसे शब्दों से अवश्य भय दिखाई देता है। किसी प्रांत की भाषा लीजिए। उसमें अधिकांश शब्द संस्कृत के तत्सम अथवा तद्भव रूप में दिखाई देते हैं। यही कारण है कि हमारे गद्य के निर्माताओं ने उन्हीं को अपनाया। डा० श्यामसुंदरदास तथा पं० रामचंद्र शुक्ल इसी शैली के प्रतिपादक हैं। हाँ, पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी कभी-कभी मिली जुली भाषा का प्रयोग करते थे; पर वह थे एक पत्रिका के संपादक। परिस्थिति को देखते हुए वह घर-घर हिंदी का प्रवेश करा रहे थे। भाव के अनुकूल शैली का प्रयोग करना भी एक कौशल है। इन तीन महारथियों ने जिस लगन और रक्त-तर्पण से हिंदी की सेवा की वह प्रत्येक हिंदी-सेवी के लिए अनुकरणीय है।

काव्य-क्षेत्र में देखिए। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, रामकुमारजी—सब संस्कृत की कोमल कांत पदावली का प्रयोग करते हैं और आज इन्हीं के बल पर हम हिंदी का दम भरते हैं। श्रीमैथिलीशरणजी आधुनिक युग के प्रतिनिधि हैं। वे भी इसी रंग में रँगे हैं। उनके काव्य भारतीयता के वर्णमय चित्र हैं; उनका सौष्ठव, शैली तथा कौशल सर्वथा स्तुत्य है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिंदी का यही रूप समीचीन एवं वांछनीय है पर इसका यह तात्पर्य नहीं कि हम आएदिन हिंदी को संस्कृत के तत्सम शब्दों से बोझिल बनाते जायँ और विदेशी तथा भली-भाँति घुले मिले शब्दों से परहेज करें। हमें जनता के साथ चलने का प्रयत्न करना चाहिए। इस दृष्टि से यदि कोई लेखक या पत्रकार मिली जुली भाषा का प्रयोग करता है तो उसकी साहित्य-सेवा भी उपेक्षणीय नहीं है। पं० प्रताप

नारायण मिश्र, भट्टजी, बालमुकुंद गुप्त, माधवराव सप्रे, गणेश-शंकर विद्यार्थी, कृष्णकांत मालवीय आदि ने हिंदी के प्रचार में जो सहयोग प्रदान किया वह किसी से कम नहीं है। हमारे क्षेत्र को विस्तृत करने का श्रेय ऐसे ही कार्यकर्ताओं को है। भूमि तैयार होगी इनके द्वारा और उसमें लहलहायेगी हमारी संस्कृत गर्भित हिंदी।

रही लिपि—उसके संबंध में वैज्ञानिकों का मत इतना स्पष्ट है कि उसमें दो मत नहीं हो सकते।

(२) कैसे साहित्य की आवश्यकता है—हिंदी गद्य तथा पद्य ने प्रशंसनीय उन्नति की है और सैकड़ों पुस्तकें प्रतिवर्ष निकलती हैं, पर कुछ को छोड़कर अधिकांश माखनलाल जी चतुर्वेदी के शब्दों में—

"पत्थरों से बोझीले, कंकड़ों से गिनती में अधिक,
खाली अंतःकरण में मृदंग से अधिक आवाज करनेवाले"।

इनसे उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती। हमें चाहिए विविध भाँति के जगमगाते हुए मूल्यवान् रत्न। इनकी उत्पत्ति तभी हो सकती है जब हमारी अध्ययनशील समाज इस ओर ध्यान दे और विविध विषयों से संबंध रखनेवाले ग्रंथों की रचना करे।

आलोचना साहित्य—इस विभाग में उन्नति दिखाई देती है पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, डा० श्यामसुंदरदास, पं० रामचंद्र शुक्ल, जगन्नाथप्रसाद भानु, कन्हैयालाल पोद्दार, मिश्रबंधु, अयोध्यासिंह जी, पं० रमाशंकर शुक्ल रसाल, पं० रमाकांत त्रिपाठी, पं० जगन्नाथप्रसाद मिश्र, बाबूराम बिथरिया, डा० रामकुमार, हजारी प्रसाद द्विवेदी, और गुलाबरायजी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महानुभावों की कृपा से हिंदी गौरवान्वित हो आज ऊँची से ऊँची कक्षा तक प्रतिष्ठित है और अनेक विद्यार्थी विभिन्न-विभिन्न

विद्यालयों में अपने आचार्यों की देख-रेख में अनुसंधान कर रहे हैं। इस आयोजना से भी हिंदी को कुछ ग्रंथ ऐसे मिले हैं जो आदरणीय हैं। पर अभी भी कार्य बहुत है। हमारा आलोचनात्मक विभाग अभी नहीं के तुल्य है। इनी-गिनी दो-चार पुस्तकों के आधार पर हिंदी अन्य भाषाओं से होड़ नहीं लगा सकती।

नाटक—आज चित्रपटों के प्रचार के सामने नाटकों का चलन कम होता जा रहा है। कतिपय लेखकों ने इस क्षेत्र में अपना कौशल दिखाया है पर रंगमंच की अनुपस्थिति से उनका महत्त्व विदित नहीं हो सका। प्रसादजी के नाटक साहित्यिक दृष्टि से उच्चकोटि के हैं। उनमें प्राचीन इतिहास की झलक, आर्यों का राष्ट्रीय गौरव और कला का नैपुण्य वर्तमान है। पर खेद है कि उनके अभिनय करने का साधन उपलब्ध नहीं है। हिंदी की उन्नति के साथ उनका महत्त्व प्रकट होगा। उग्रजी, पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, बा० आनंदीप्रसाद श्रीवास्तव, पं० राधेश्यामजी, बा० हरिकृष्ण, पंडित माधव शुक्ल, श्रीगोविंदवल्लभ पंत, डा० रामकुमार वर्मा इत्यादि ने अनेक नाटकों की रचना की है; पर खेद है कि उच्चकोटि के नाटक नहीं लिखे गए।

उपन्यास—यह क्षेत्र कुछ भरा-पुरा है। लेखकों की संख्या भी अगणित है; पर यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ये लोग कुछ इने-गिने विषयों को ही लेकर मँडराते हुए दिखाई पड़ते हैं। हाँ, मिर्जा अजीम बेग चगताई तथा श्रीभगवतीचरण वर्मा ने कुछ नवीनता दिखाई है पर अभी ऐसे उपन्यासों की कमी है जिनमें रोचकता के साथ ही संसार के ज्ञान, नई सूझ और उत्साह का विकास हो। हमारे यहाँ ऐसे उपन्यासों की बड़ी आवश्यकता है जो देश में जागृति पैदा करनेवाले या पाठकों के साहस, बल और

बुद्धि को बढ़ानेवाले हों। मेरा अभिप्राय है कि 'टाम काका की कुटिया' ऐसे कितने ग्रंथ है ? राबिंसन क्रूसो के ढंग की कितनी कहानियाँ लिखी गई हैं ? प्रेम के पचड़े तो बहुत गाये जा चुके। अब ऐसे कथानक और ऐसे चरित्र हमें पाठकों के सामने रखना चाहिए जो शेष-पर्यंकशायी भारतवासियों को जगानेवाले हों।

जीवनचरित्र, इतिहास, विज्ञान, भ्रमण वृत्तांत इन सब में एक नवीन स्फूर्ति की आवश्यकता है। मैं धन्यवाद देता हूँ कम्यूनिस्ट दल को जो इस दृष्टि से नवीन साहित्य का निर्माण कर रहा है। इण्डियन प्रेस, सस्ता साहित्य मंडल तथा गंगा-पुस्तकमाला के द्वारा भी काफी कार्य हो रहा है।

आज जैसी स्थिति है उसको देखते हुए एक आयोजना के अनुसार सम्मिलित होकर कार्य करने की आवश्यकता है। श्रीकालिदास कपूर ने एक दशवर्षीय योजना 'माधुरी' (दिसम्बर १९४३) में प्रकाशित की थी। वह ध्यान देने योग्य है। हमारे देश में अनेक प्रांतीय भाषाएँ हैं और कहीं-कहीं तो एक ही प्रांत में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं। कोई अपनी भाषा की उपेक्षा नहीं चाहता। फिर भी राष्ट्रीयता की दृष्टि से समस्त देश की एक भाषा का होना आवश्यक है। प्रसन्नता होती है यह देखकर कि हमारे माननीय नेताओं ने निष्पक्ष हो हिंदी को ही सर्वथा उपयुक्त माना और सुविधा के लिए उसका दूसरा रूप उर्दू भी स्वीकार किया। श्रीकालिदास कपूर ने जो योजना उपस्थित की है उसमें भारतवर्ष की आधुनिक परिस्थिति का ध्यान रखते हुए सबको प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया गया है। वह हिंदी और उर्दू दोनों को राष्ट्रीय भाषा का पद देना चाहते हैं और प्रांतीय भाषाओं एवं उनके साहित्य को भी सुरक्षित रखना चाहते हैं। इसी दृष्टि

से उन्होंने शिक्षा के क्रम पर भी प्रकाश डाला है। लेख के इस अंश से चाहे मैं पूर्णतया सहमत न होऊँ पर सिद्धांत ग्राह्य है।

इस संबंध में हिंदी और उर्दू के अतिरिक्त देश की प्रमुख भाषाओं—बँगला, गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयलम और कन्नड में नई साहित्यिक रचनाओं का होना तो देश के लिए हितकर मालूम होता है, परंतु इन भाषाओं के अंतर्गत जो जनपदीय बोलियाँ हैं—जैसे पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, बुंदेलखंडी, अवधी, व्रजभाषा, भोजपुरी, मैथिली, उड़िया, असमी, कोंकणी—इनमें जो अनुश्रुति गद्य अथवा पद्य में अभी तक बिखरा हुआ अप्रकाशित है उसका संग्रह करना उसे प्रकाशित करना, उसकी रक्षा करना, तो राष्ट्रीय साहित्य की सेवा का आवश्यक अंग हो सकता है परंतु इन बोलियों को प्रांतीय भाषाओं का पद देना, उनमें नए साहित्य का निर्माण करना, राष्ट्रीय शक्ति को बिखेरना मात्र होगा। हाँ, प्रारंभिक शिक्षा के हेतु पाठ्य पुस्तकों का इन बोलियों में होना कहाँ तक उचित है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

प्रगति हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा के पद पर पहुँचाने की ओर है। परंतु हिंदी का साहित्य इस पद के योग्य हो सके, इसके लिए संगठित योजना का बनना और फिर उसका कार्यान्वित होना, यह भार उन हिंदी-सेवियों और संस्थाओं पर है, जिनका विवरण इस ग्रंथ में है। यदि यह ग्रंथ इस पुनीत कर्तव्य के लिए हिंदीसेवी व्यक्तियों और संस्थाओं को संगठित करने में सहायता दे सके तो यह उसकी एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय सेवा होगी।

जनपदीय कार्यक्रम

ले०—श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल

हिन्दीसाहित्य के सम्पूर्ण विकास के लिए ग्राम और जनपदों की भाषा और संस्कृति का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। खड़ीबोली इस समय हम सबकी साहित्यिक भाषा और राष्ट्र भाषा है। हमारी वर्तमान और भावी संस्कृति का प्रकाशन इसी भाषा के द्वारा हो सकता है। विश्व का जितना ज्ञान-विज्ञान है उसको खड़ीबोली के माध्यम से ही हिन्दी साहित्यसेवी अपनी जनता के लिए सुलभरूप में प्रस्तुत कर सकता है। संसार के अन्य साहित्यों से जो ग्रंथ हमें अनुवादरुप में अपनी भाषा में लाने हैं उन्हें भी खड़ीबोली के द्वारा ही हम प्राप्त करेंगे। एक ओर साहित्य के विकास और विस्तार का अंतर्राष्ट्रीय पक्ष है जिसमें बाहर से ज्ञान-विज्ञान की धाराओं का अपने साहित्य-क्षेत्र में हमें अवतार कराना है। दूसरी ओर हमारा अपना समाज या विशाल लोक है। इस लोक का सर्वांगीण अध्ययन हमारे साहित्यिक अभ्युत्थान के लिए उतना ही आवश्यक है।

देश की जनता का नब्बे प्रतिशत भाग ग्राम और जनपदों में बसता है। उनकी संस्कृति देश की प्रधान संस्कृति है। हमारे राष्ट्र की समस्त परम्पराओं को लेकर ग्राम-संस्कृति का निर्माण हुआ है। ग्रामों के समुदाय को ही प्राचीन परिभाषा में जनपद कहा गया है। वह भौमिक इकाई जिसमें बोली और जन-संस्कृति की दृष्टि से जनता में पारस्परिक साम्य अधिक है, जनपद कही गई है। महाभारत के भीष्मपर्व (अ० ६), मार्कण्डेयपुराण और अन्य पुराणों में जनपदों की कई सूचियाँ पाई जाती हैं। उनमें से कितने ही छोटे-छोटे जनपद आधुनिक जिले और

कमिश्नरी के समान ही हैं। उनकी संख्या केवल भूगोल की एक सुविधा है, उसमें आपसी विग्रह या विभेद को स्थान नहीं है। जिस प्रकार विविध प्रान्तीय भेद होते हुए भी राष्ट्रीय दृष्टि से हमारा देश और उस देश में बसनेवाला जन अखंड है, उसी प्रकार प्रांतों के अंतर्गत विविध जनपदों में बसनेवाली जनता भी एक ही संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना का अभिन्न अंग है।

देश की यह मौलिक एकता जनपदीय अध्ययन के द्वारा और भी पुष्ट होती है। किस प्रकार एक ही धर्म के महान् विस्तार के अंतर्गत हमारा समाज युग-युगों से अपना शान्तिमय जीवन व्यतीत करता रहा है, किस प्रकार उसकी आध्यात्मिक और मानसिक प्रेरणाओं में सर्वत्र एक-जैसी मौलिक पद्धति है, किस प्रकार एक ही संस्कृत भाषा के आधार से दरदिस्तान की दरद और उत्तर-पश्चिमी प्रांत या प्राचीन गांधार की पश्तो भाषा से लेकर बंगाली, गुजराती और महाराष्ट्री तक अनेक प्रान्तीय भाषाओं का निर्माण हुआ है, और किस प्रकार इन भाषाओं के क्षेत्र में भी अगणित बोलियाँ परस्पर एक दूसरे से और संस्कृत से गहरा संबंध रखती हैं—यह सब विषय अनुसंधान के द्वारा जब हमारे सम्मुख आता है तब अपनी राष्ट्रीय एकता के प्रति हमारी श्रद्धा परिपक्व हो जाती है। अतएव राष्ट्रव्यापी ऐक्य का उद्‌घाटन करने के लिए जनपदों में बसनेवाली जनता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो सेवा करना चाहते हैं उनके कंधों पर जनपदीय अध्ययन का भार अनिवार्यतः हो जाता है।

जनपदीय अध्ययन की आवश्यकता का एक दूसरा प्रधान कारण और है। वही साहित्य लोक में चिरजीवन पा सकता है जिसकी जड़ें दूर तक पृथिवी में गई हों। जो साहित्यलोक की भूमि के साथ नहीं जुड़ा, वह मुरझाकर सूख जाता है। भूमि,

भूमि पर रहनेवाले मनुष्य या जन, और उन मनुष्यों की या जन की संस्कृति—ये ही अध्ययन के तीन प्रधान विषय होते हैं। एक प्रकार से जितना भी साहित्य का विस्तार है वह इन तीन बड़े विभागों में समा जाता है। जनपदीय कार्यक्रम में ये तीन दृष्टिकोण ही प्रधान हैं। हम सबसे पहले अपनी भूमि का सर्वांग-पूर्ण अध्ययन करना चाहते हैं। भूमि का जो स्थूल भौतिक रूप है उसका पूरा ब्यौरा प्राप्त करना पहली आवश्यकता है। भूमि की मिट्टी, उसकी चट्टानें, भूगर्भ की दृष्टि से भूमि का निर्माण, उस पर बहनेवाली बड़ी जलधाराएँ, उसको अपनी जगह स्थिर रखनेवाले बड़े-बड़े भूधर-पहाड़, अनेक प्रकार के वृक्ष, वनस्पति, नाना भाँति की ओषधियाँ, पशु, पक्षी—इस प्रकार के अनगिनती विषय हैं जिनमें हमारे साहित्यिकों को रुचि होनी चाहिए। अर्वाचीन विज्ञान की आँख लेकर पश्चिमी भाषाओं के दक्ष विद्वान् इन मार्गों के अध्ययन में कहाँ से कहाँ निकल गये हैं। हिन्दी में भी वह युग अब आ गया है जब हम अपनी भूमि के साथ घनिष्ठ परिचय प्राप्त करें और उसने माता की भाँति जितने पदार्थों को पाला पोसा है उन सबका कुशल प्रश्न उत्साह और उमंग से पूछें। भारतीय पक्षियों को प्रकृति ने जो रूप सौन्दर्य दिया है, उनके पंखों पर जो वर्णों की समृद्धि या विविध रंगों की छटा है उसको प्रकाश में लाने के लिए हमारे मुद्रण के समस्त साधन भी क्या पर्याप्त समझे जायँगे? हमारे जिन पुष्पों से पर्वतों की श्रोणियाँ भरी हुई हैं उनकी प्रशंसा के माहात्म्यगान का भार हिन्दी साहित्यसेवी के कंधों पर नहीं तो और किस पर होगा? अनेक वीर्यवती ओषधियाँ और महान् हिमालय के वनस्पतियों तथा मैदानों के दुधार महावृक्षों का नवीन परिचय साहित्य का अभिन्न 'अंग' समझा

जाना चाहिए। चट्टानों का परतों को खोल-खोलकर भूमि के साथ अपने परिचय को बढाना, यह भी नवीन दृष्टिकोण का अंग है। इस प्रकार एक बार जो नवीन चक्षुष्मत्ता प्राप्त होगी, उससे साहित्य में नव सृष्टि की बाढ़ सी आ जायगी।

भूमि के भौतिकरूप से ऊपर उठकर उस भूमि पर बसनेवाले जन को हम देखते हैं। जो मानव यहाँ अनन्तकाल से रहते आए हैं उनकी जातियों का परिचय, उनका रहन-सहन, धर्म, रीति, रिवाज, नृत्य, गीत, उत्सव और मेलों का बारीकी से अध्ययन होना चाहिए। इस आँख को लेकर जब हम इस महादेश में विचरेंगे तब हमें कितनी अपरिमित सामग्री से पाला पड़ेगा? उसे साहित्यिक रूप में समेटकर प्रस्तुत करना एक बड़ा कार्य है। जीवन का एक-एक पक्ष कितना विस्तृत है और कितनी रोचक सामग्री से भरा हुआ है? भारतीय नृत्य और गीत की जो पद्धति हिमालय से समुद्र तक फैली है उसी के विषय में यदि हम छान-बीन करने लगें तो साहित्य और भाषा का भंडार कितना अधिक भरा जा सकेगा! उत्सव और जातीय पर्व, मेले और विनोद, ये भी जातीय जीवन के साथ परिचय प्राप्त करने के साधन हैं। इनके विषय में भी हमारा ज्ञान बढ़ना चाहिए और उस ज्ञान का उपयोग आधुनिक जागरण के लिए सुलभ होना चाहिए।

जन की सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन तीसरा सबसे प्रधान कार्य है। जनता का इतिहास, उसका ज्ञान, साहित्य और भाषा, इनका सूक्ष्म अध्ययन हिंदी साहित्य का अभिन्न अंग होना चाहिए। जनपदों में जो बोलियाँ हैं, उन्होंने निरंतर खड़ीबोली को पोषित किया है। उनके शब्द भंडार में से अनंत रत्न हिंदी भाषा के कोष को धनी बना सकते हैं। अनेक अद्भुत प्रत्यय और धातुएँ प्रत्येक बोली में हैं। हरएक बोली का अपना

अपना धातु पाठ है, उसका संग्रह और भाषा विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन होना आवश्यक है। प्राचीन कुरु जनपद के अंतर्गत मेरठ के आसपास बोली जानेवाली बोली में ही डेढ़ सहस्र धातुएँ हैं। उनमें से कितनी ही ऐसी हैं जो फिर से हिन्दी भाषा के लिए उपयोगी हो सकती हैं। बहुत सी धातुओं का संबंध प्राकृत और अपभ्रंश के धातुओं से पाया जायगा। कितनी ही धातुएँ ऐसी हैं जो जनपद विशेषों में ही सुरक्षित रह गई हैं। पश्चिमी हिन्दी में पवासना (सं० पयस्यति) और पूरबी में पन्हाना (प्रस्नुते) धातुएँ हैं जब कि दोनों ही संस्कृत के धातु-पाठ से संबंधित हैं। अनेक प्रकार के उच्चारणों के भेद भी स्थान-स्थान पर मिलेंगे, उनकी विशेषताओं की पहचान, उनके स्वरों की परख, भाषाशास्त्र का रोचक अंग है। एक बार जनपदीय कार्य-क्रम से जब हम प्रारंभ करेंगे तब भाषासंबंधी सब प्रकार का अध्ययन हमारे दृष्टिकोण के अंतर्गत आने लगेगा। प्रत्येक बोली का अपना-अपना स्वतंत्र कोष ही हमको रचना होगा। टर्नर ने जिस प्रकार नेपाली भाषा का महाकोष बनाकर हिन्दी शब्दों के निर्वचन का मार्ग प्रशस्त किया है, ग्रियर्सन ने कश्मीरी का बड़ा कोष रचकर जो कार्य किया है, उसी प्रकार का कार्य व्रज भाषा, अवधी, भोजपुरी और कौरवी भाषा के लिए हमें अवश्य ही करना चाहिए। तब हम अपनी बोलियों की महत्ता, उनकी गहराई और विचित्रता को जान सकेंगे।

जनपदीय कार्यक्रम इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर उसकी पूर्ति के लिए एक प्रयत्न है। इसका न किसी से विरोध है और न इसमें किसी प्रकार की आशंका है। इसका मुख्य उद्देश्य केवल हिन्दी भाषा के भंडार को भरना है। विविध जनपदों के साहित्यिक स्वतंत्र रीति से अपने पैरों पर खड़े होकर अपनी

शक्ति के अनुसार इस कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं।

हिंदी जगत् की संस्थाएँ नियमित व्यवस्था के द्वारा भी इसकी पूर्ति का उद्योग कर सकती हैं और जो सामग्री इस प्रकार संचित हो उसका प्रकाशन कर सकती हैं। श्रीरामनरेश त्रिपाठी के ग्राम-गीत संग्रह का कार्य अथवा श्रीदेवेन्द्र सत्यार्थी का लोक-गीतों के संग्रह का महान् देशव्यापी कार्य जनपदीय कार्यक्रम के उदाहरण हैं। निस्स्वार्थ सेवाभाव और लगन से इन तपस्वी साहित्यिकों ने भाषा के भंडार को कितना उन्नत किया है, और जनता के अपने ही जीवन के छिपे हुए सौंदर्य के प्रति लोक को किस प्रकार फिर से जगा दिया है, यह केवल अनुभव करने की बात है। वैसे तो कार्य अनंत हैं, पर सुविधा के लिए पाँच वर्ष की एक सरल योजना के रूप में उसकी कल्पना यहाँ प्रस्तुत की जाती है। इसका नाम जनपद कल्याणी योजना है। प्रत्येक व्यक्ति इसमें सुविधा के अनुसार परिवर्तन—परिवर्धन कर सकता है। इसका उद्देश्य तो कार्य की दिशा का निर्देश कर देना है।

जनपद कल्याणी योजना

वर्ष १—साहित्य, कविता, लोकगीत, कहानी आदि जनपदीय साहित्य के विविध अंगों की खोज और संग्रह। वैज्ञानिक पद्धति से उनका संपादन और प्रकाशन।

वर्ष २—भाषाविज्ञान की दृष्टि से जनपदीय भाषा का सांगोपांग अध्ययन, अर्थात् उच्चारण या ध्वनि विज्ञान, शब्दकोष, प्रत्यय, धातुपाठ, मुहावरे, कहावत और नाना प्रकार के पारिभाषिक शब्दों का संग्रह और आवश्यकतानुसार सचित्र सम्पादन।

वर्ष ३—स्थानीय भूगोल, स्थानों के नाम की व्युत्पत्ति और

उनका इतिहास, स्थानीय पुरातत्व, इतिहास और शिल्प का अध्ययन।

वर्ष ४—पृथ्वी के भौतिक रूप का समग्र परिचय प्राप्त करना, अर्थात् वृक्ष, वनस्पति, मिट्टी, पत्थर, खनिज, पशु, पक्षी, धान्य, कृषि, उद्योगधंधों का अध्ययन।

वर्ष ५—जनपद के निवासी जनों का संपूर्ण परिचय अर्थात् मनुष्यों की जातियाँ, लोक का रहन-सहन, धर्म, विश्वास, रीति-रिवाज, नृत्य-गीत, आमोद-प्रमोद, पर्व, उत्सव, मेले, खान-पान, स्वभाव के गुण-दोष, चरित्र की विशेषताएँ—इन सबकी बारीक छानबीन और पूरी जानकारी प्राप्त करके ग्रन्थ रूप में प्रस्तुत करना।

यह पंचविध योजना वर्षानुक्रम से पूरी की जा सकती है। अथवा एक साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में कार्यकर्ताओं की इच्छानुसार प्रारंभ की जा सकती है। परंतु यह आवश्यक है कि वार्षिक कार्य का विवरण प्रकाशित होता रहे। प्रत्येक जनपद अपने क्षेत्र के साधनों को एकत्र करके 'मधुकर', 'व्रजभारती' और 'बांधव' के ढंग के पत्र प्रकाशित करे तो और अच्छा है।

स्थानीय कार्यकर्ताओं की सूची तैयार होनी चाहिए और कार्य के संपादन के लिए विविध समितियों का संगठन करना चाहिए। उदाहरणार्थ कुछ समितियों के नाम ये हैं—

(१) भाषा समिति—जनपदीय भाषा का अध्ययन, वैज्ञानिक खोज और कोष का निर्माण। धातुपाठ, पारिभाषिक शब्दों का संग्रह इसी के अंतर्गत होगा।

(२) भूगोल या देशदर्शन समिति—भूमि का आँखों देखा भौगोलिक वर्णन तैयार करना। स्थानों के प्राचीन नामों

की पहचान, नदियों के सांगोपांग वर्णन तैयार करना।

(३) पशु-पक्षी समिति—अपने प्रदेश के सत्त्वों की पूरी जाँच पड़ताल करना इस समिति का कार्य होना चाहिए। इस विषय में लोगों की जानकारी से लाभ उठाना, नामों की सूची तैयार करना, अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तकों से नामों का मेल मिलाना आदि विषयों को अध्ययन के अंतर्गत लाना चाहिए।

(४) वृक्ष वनस्पति समिति—पेड़ पौधे, जड़ी बूटी, फूल, फल, मूल—सबका विस्तृत संग्रह तैयार करना।

(५) ग्रामगीत समिति—लोकगीत, कथा, कहानी आदि के संग्रह का कार्य।

(६) जन विज्ञान समिति—विभिन्न जातियों और वर्गों के लोगों के आचार विचार और रीति रिवाजों का अध्ययन।

(७) इतिहास-पुरातत्त्व समिति—प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व की सामग्री की छानबीन, उसका अध्ययन, एकत्र संग्रह और प्रकाशन। पुरातत्त्व संबंधी खुदाई का भी प्रबंध करना।

(८) कृषि उद्योग समिति—जनता के कृषि, विज्ञान, उद्योग धंधों और खनिज पदार्थों का अध्ययन।

इस प्रकार साहित्यिक दृष्टिकोण को प्रधानता देते हुए अपने लोक का रुचि के साथ एक सर्वांगपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करना इस योजना का उद्देश्य है।

साहित्य-क्षेत्र में विकेंद्रीकरण

ले०—श्रीबनारसीदास चतुर्वेदी

थोड़े से व्यक्तियों अथवा दो तीन संस्थाओं के हाथ में संपूर्ण शक्ति सौंपने के बजाय अधिक से अधिक मनुष्यों को सशक्त बनाना तथा सैकड़ों सहस्रों ऐसे केंद्र स्थापित करना, जहाँ से साधारण जनता प्रेरणा तथा स्फूर्ति प्राप्त कर सके इस नीति का नाम विकेन्द्रीकरण है।

भय और आशङ्काएँ—विकेंद्रीकरण के आंदोलन से कितने ही व्यक्तियों को आशङ्का हो गई है और अनेक उससे भयभीत भी हो गये हैं। ये आशङ्काएँ निराधार नहीं हैं, क्योंकि अभी तक उक्त नीति का विधिवत् स्पष्टीकरण नहीं किया गया, और भय भी स्वाभाविक ही है, क्योंकि जो लोग सारी ताकत अपने हाथ में रखकर सर्वेसर्वा बने रहना चाहते हैं, विकेंद्रीकरण से उनकी नीति पर ही कुठाराघात होता है।

विकेंद्रीकरण की व्यापकता—विकेंद्रीकरण का सिद्धांत अत्यंत व्यापक है और राजनैतिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में भी उसके उपयोग की चर्चा चलती रहती है। स्थूल रूप से हम यह कह सकते हैं कि विकेंद्रीकरण का सिद्धांत डिक्टेटरी के सोलह आने विरुद्ध है, चाहे वह डिक्टेटरी लेनिन की हो या हिटलर की, गांधीजी की हो या वायसराय की, श्रद्धेय टंडनजी की हो या बाबू श्यामसुंदरदासजी की।

संसार में दो प्रकार की मनोवृत्तियाँ पाई जाती हैं, एक तो उन लोगों की जो 'तन मन धन गुसाईंजी के अर्पन' करने की नीति में विश्वास रखते हैं और दूसरे वे, जो मनुष्यों को अधिक से अधिक स्वाधीनता देने के पक्षपाती हैं। जहाँ तक

मनुष्य की स्वाधीनता का प्रश्न है रूस के समाजवादी तथा जर्मनी के नाजी संप्रदाय दोनों ही अपने दल के सिद्धांतों के लिए स्वाधीनता का बलिदान चाहते हैं। विकेंद्रीकरण वस्तुतः अराजक-वाद के मौलिक सिद्धांतों में से है. और जब तक मानव समाज में भेड़ियाधसान के प्रति घृणा और अपने अंतःकरण तथा विवेक को सर्वोच्च स्थान देने की प्रवृत्ति बनी रहेगी तब तक विकेंद्रीकरण का सिद्धांत अजर-अमर रहेगा। थोड़े दिन के लिए उसकी लोक-प्रियता भले ही घट जाय पर चिरकाल तक इस भावना को दबाया नहीं जा सकता।

व्यक्तिगत विरोध बनाम सैद्धान्तिक मतभेद—आजकल हमारे साहित्य-क्षेत्र में जो झगड़े चला करते हैं उनके मूल में प्रायः व्यक्तिगत विरोध की भावना होती है। हमें इन विवादों को उच्चतर धरातल पर लाना है। प्रश्न यह नहीं है कि प्रयाग के च. अ. ज्ञ. महाशय भले हैं या बुरे अथवा काशी के क. ख. ग. योग्य हैं अथवा अयोग्य। सवाल यह है कि क्या कोई भी आदमी अनियंत्रित प्रभुता पाकर अपना दिमाग ठिकाने रख सकता है? महाकवि तुलसीदासजी ने "प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं" कह-कर अपनी स्पष्ट राय इस प्रश्न पर दे दी थी, जो तीन सौ वर्ष बाद भी ज्यों की त्यों ताजी और युक्ति-संगत बनी हुई है। पहले तो अपने गले में रस्सी डालकर उसे अल्पसंख्यक आदमियों को सौंप देना और फिर हाय-तोबा मचाना, यह काम बुद्धिमानों का नहीं है। जब अबोहर की साहित्य परिषद् में पं० रामचंद्रजी शुक्ल के स्वर्गवास के विषय में भी प्रस्ताव नहीं रक्खा जा सका—जब वैधानिक विडम्बना ने शिष्टाचारपूर्ण कर्तव्य की इतिश्री कर दी—तभी हम समझ गये थे कि हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की बीमार असाध्य हो चली है और जड़-मूलसे उसका इलाज करने की ऊ

रचनात्मक भावना—विकेंद्रीकरण ही इस बीमारी का एक मात्र इलाज है। सम्मेलन का विधान भले ही जनसत्तात्मक ढँचे पर व्यवहारतः वह अल्पसंख्यक आदमियों के हाथ में संपूर्ण शक्ति सौंप देता है। भारत-जैसे महाद्वीप में फैली हुई राष्ट्रभाषा हिंदी की शक्ति को दो-तीन स्थान में केंद्रित करने का प्रयत्न ही हास्यास्पद है।

कुछ लोग यह समझे हुए हैं कि विकेंद्रीकरण की भावना केवल विनाशात्मक है। वे जबरदस्त गलती कर रहे हैं। क्या कोई भी विवेकशील व्यक्ति इस बात का विरोध कर सकता है कि काशी तथा प्रयाग की तरह के सैकड़ों सहस्रों साहित्यिक तथा सांस्कृतिक केंद्र इस भारत-भूमि में हों? काशी तथा प्रयाग दोनों ही स्थानों में उच्चकोटि के विश्वविद्यालय विद्यमान हैं और उन्हीं दोनों स्थलों पर अपनी समस्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक शक्ति को केंद्रित कर देना बिलकुल वैसा ही है जैसे हम सब लोग रुपये कमा-कमाकर सेठ रामकृष्णजी डालमिया और श्रीयुत घनश्याम दासजी बिड़ला को सौंप दें।

विराट् केंद्रीय उपवन—क्या यह मुनासिब होगा कि दिल्ली के आसपास हजार-पाँच सौ वर्गमील का एक बगीचा बना दिया जाय और संपूर्ण भारतवर्ष के उपवनों में हल चलवा दिये जावें? यह लेख हम एक उपवन में बैठे हुए लिख रहे हैं। अभी अभी एक मालिन फूल तोड़कर मंदिरों की भेंट के लिए ले गई है, थोड़ी दूर पर रहँट चल रही है, क्यारियों में पानी दिया जा रहा है, सामने गुलाब और गेंदा के फूल खिल रहे हैं, पपीते लटक रहे हैं, आमों में बौर आ रहा है और लंबे-लंबे बाँस सीमाओं को घेरकर उपवन की श्री-वृद्धि कर रहे हैं।

इसमें संदेह नहीं, यदि किसी प्रकार इन सबको ट्रान्सफर करके

दिल्ली भेज दिया जावे तो श्रीयुत इन्द्रजी तथा श्रीयुत मुकुट-जी को बड़ी सुविधा हो जायगी और उनका काफी मनोरंजन भी होगा, पर हम लोगों के घाटे का अंदाज तो लगाइए! केंद्रीकरण के एक समर्थक महोदय ने हमें लिखा था कि सर्वोत्तम कलापूर्ण कृतियाँ अमुक कलामंदिर में रख दीजिये, जिसे देखना होगा वह वहाँ जाकर देख आवेगा! इस तर्क से हम भारतवर्ष की समस्त मूर्तियों को न्यूयार्क के कलाभवन के सुपुर्द कर सकते हैं!

जनपदीय कार्यक्रम

जनपदीय कार्यक्रम तथा जनपदीय संस्थाओं की महत्ता इसी में है कि वे इस प्रकार के केंद्र अधिक से अधिक जनता के समीप ही कायम करना चाहते हैं। ब्रजमंडल में ब्रजभाषा महाविद्यालय की स्थापना करना और ब्रजभाषा की पुरानी पोथियों को ब्रज-मंडल के ही संग्रहालय में रखना उचित है अथवा उन्हें वहाँ से सैकड़ों मील दूर अलमारियों में बंद कर देना? जो लोग यह विश्वास करते हैं कि सर्वश्री श्रीनाथसिंहजी, निर्मलजी, पद्मकांतजी और वाचस्पतिजी प्रयाग में बैठे बैठे इस अखिल हिंदी जगत् की शक्तियों का विधिवत् नियंत्रण कर सकते हैं, उन्हें सचमुच अकल का अजीर्ण हो गया है और उन्हें किसी आयुर्वेद पंचानन की दवा खानी चाहिए। उपर्युक्त चारों व्यक्तियों ने अपने-अपने ढङ्ग पर साहित्य की प्रशंसनीय सेवा की है, पर यह काम उनके बूते का नहीं है। इनके स्थान पर यदि टंडनजी, संपूर्णानंदजी, श्रीनारायणजी तथा दयाशंकरजी नियुक्त कर दिये जायँ तो वे भी इसे संतोषजनक ढंग पर नहीं निभा सकेंगे। वास्तव में हिंदी की दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हुई शक्ति का नियंत्रण किसी एक केंद्रीय स्थल से कदापि नहीं किया जा सकता।

हमारे यहाँ ऐसे ऐसे विचारशील व्यक्ति विद्यमान हैं, जो दिल्ली में एक पावरहौस (बिजलीघर) खोलकर वहाँ से लाखों ग्रामों को रोशनी पहुँचाने के स्वप्न देख सकते हैं। नवलगढ़ के श्रीयुत मत्स्येंद्रजी की गणना उन्हीं स्वप्नदर्शियों में की जानी चाहिए क्योंकि वे प्रत्येक ग्राम की साहित्यिक शक्ति का सीधा संबंध सम्मेलन से करना चाहते हैं।

हमें कोई आपत्ति नहीं, वे अपने असंभव प्रयत्न में लगे रहें। हमारा कर्तव्य तो यह है कि अपने क्षुद्र दीपकों और लालटैनों के द्वारा झोपड़ियों तथा भवनों तक प्रकाश पहुँचावें।

व्यर्थ की आशङ्का—जनपदीय कार्यक्रम से सम्मेलन कमजोर हो जायगा, यह विघटन की नीति हिंदी जगत के लिए अत्यंत भयंकर सिद्ध होगी, यह भाषा संबंधी पाकिस्तान है, इत्यादि इत्यादि कुतर्क करनेवालों से हमारा एक प्रश्न है।

यदि राजस्थानी साहित्य सम्मेलन की नींव सुदृढ़ आधार पर रक्खी जाती है, 'अवध साहित्य परिषद्' की स्थापना हो जाती है, व्रजभाषा के लिए एक महाविद्यालय कायम हो जाता है, 'बुंदेलखण्डी विश्वकोष' प्रकाशित हो जाता है, भोजपुरी ग्राम-गीतों का संग्रह हो जाता है और कमाऊँ तथा गढ़वाल के पार्वत्य प्रदेशों में साहित्यिक जाग्रति हो जाती है तो इससे केंद्रीय सम्मेलन का क्या अहित होगा? अथवा क्या पुराने तीर्थों के पण्डों का यह कर्तव्य ही है कि नवीन तीर्थों के निर्माण का वे विरोध ही करें?

गम्भीर विवेचन—आवश्यकता है गम्भीरतापूर्वक इस प्रश्न पर विचार करने की; साँपनाथों की जगह नागनाथों की भर्ती कर देने से यह प्रश्न हल नहीं होने का। मुख्य प्रश्न यह है कि आप संस्था को अधिक महत्व देते हैं या मनुष्य को? यदि आप

संस्था को अधिक महत्त्व देते हैं तो संपूर्ण हिंदी जगत् की समस्त साहित्यिक तथा सांस्कृतिक निधियों को एकत्र करके काशी प्रयाग ले जाइये और फिर घर पर बैठकर रामनाम का अखण्ड जाप कीजिये।

इसके बजाय यदि आप मनुष्य को महत्त्व देते हैं तो समस्त हिंदी जगत् में काशी प्रयाग जैसे सैकड़ों सहस्रों केंद्र कायम कीजिये। इन केंद्रों की सामूहिक शक्ति से पुरानी संस्थाओं का अंततोगत्वा हित ही होगा, अहित नहीं।

विकेंद्रीकरण प्रत्येक मनुष्य की, चाहे वह इस समय क्षुद्र ही जँचे, सम्भावना में विश्वास करता है और नित्य नवीन साहित्यिक तीर्थों के निर्माण में भी उसकी मौलिक भावना निम्न-लिखित श्लोक से भली भाँति प्रकट हो सकती है।

घृतमिव पयसि निगूढं भूते भूते च वसति विज्ञानम्।
सततं मन्थयितव्यं मनसा मंथानदण्डेन॥

अर्थात्—जिस तरह दूध में घी छिपा हुआ है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी में विज्ञान विद्यमान है। मनरूपी मथनिया से उसका निरंतर मंथन करके उसे निकालना हमारा कर्तव्य है।

हिंदी विश्वविद्यालय-योजना

लें०—सरदार राव बहादुर माधवराव विनायक किबे

किसी भी विश्वविद्यालय में शिक्षण के दो अंग होते हैं—(१) सांस्कृतिक (२) व्यावसायिक। इनके उपांग बहुत से हैं। यह आवश्यक नहीं है कि ये दोनों अंग उपांगों सहित पूर्ण हों, इतना ही नहीं ये दोनों अंग एक ही विश्वविद्यालय के हों। भारतवर्ष में तो अनेक विश्वविद्यालय होते हुए भी औरों की आवश्यकता है ही, परंतु ऐसों की भी आवश्यकता है जो आपस में संबंधित होकर इन उपांगों को संभूयसमुत्थान की प्रणाली से पूर्ण करें। फिर देशी भाषा द्वारा ऐसे उच्च शिक्षण देनेवाले विश्वविद्यालय हों, यह कहना ही क्या ?

परंतु उसमें अनेक अड़चनें हैं। व्यावसायिक शिक्षण के तो ऐसे विश्वविद्यालय देशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षण देने वाले उपयुक्त भी हो सकते हैं। परंतु इस विषय पर जितना ध्यान देना चाहिए उतना नहीं दिया जाता। विश्वविद्यालय सांस्कृतिक शिक्षण देनेवाला हो, ऐसी ही प्रथा पड़ गई है। भारतवर्ष के अधिकांश प्रदेश पर परकीय सत्ता होने से पर-भाषा का यहाँ महत्त्व है और वही शिक्षण का माध्यम है। देशी राज्य असंगठित होने से और तीन-चार छोड़कर उनकी व्याप्ति एवं राज्य व्यवस्था छोटी एवं बिखरी हुई होने से, वहाँ भी सांस्कृतिक क्या, सभी शिक्षण अँगरेजी के माध्यम द्वारा ही होते हैं। वहाँ प्राचीन विद्यालयों के कई स्थान थे, वे अब मृतवत् हो गए हैं। हैदराबाद, मैसूर और त्रावनकोड़ में विश्वविद्यालय स्थापित किए गए, परंतु पहले को छोड़कर शेष दोनों में देशी-भाषा संपूर्णतया माध्यम नहीं बनी है। हैदराबाद राज्य की भूमि और

लोकसंस्थाएँ पर्याप्त होने से वहाँ का शिक्षण एक भारतवर्षीय भाषा द्वारा दिया जाता है। और वह अब प्रयोगावस्था के परे है। वहाँ के उर्दू द्वारा पढ़े हुए पाश्चात्य वैद्यक के स्नातक अब शाही फौज में लिए जाने लगे हैं। कई ब्रिटिश भारतवर्षीय विश्वविद्यालयों ने भी अपने शिक्षण-क्रम में देशी भाषा द्वारा शिक्षा देने की प्रथा धीरे-धीरे बढ़ाना शुरू कर दी है। लेकिन उनमें जो व्यावसायिक शिक्षण के महान् केंद्र (Technical Institutes) बन रहे हैं, उनमें शिक्षण देशी भाषा के माध्यम से देने की प्रथा शुरू नहीं होती। वहाँ अभी अँगरेजी माध्यम है। इससे उनका फायदा अनेक लोग नहीं उठा सकते। पूरे देश में व्यावसायिक शिक्षण का देशी भाषा में ही होना आवश्यक है।

ऐसा होते हुए भी सांस्कृतिक शिक्षा देनेवाले विश्वविद्यालयों की भी आवश्यकता है। परंतु, ऊपर जो कारण बताए गए हैं उनके कारण उनमें अँगरेजी माध्यम होना आवश्यक हो जाता है। इतना ही नहीं, जिन शिक्षण संस्थाओं का माध्यम पूर्णतया अँगरेजी है उनको भी उसमें जगह देना कई कारणों से आवश्यक हो जाता है। अभी तो इतना ही होना शक्य मालूम पड़ता है कि ऐसे विश्वविद्यालय बनें जिनसे संबंधित कुछ ऐसे विद्यालय (Colleges) हों जो विशिष्ट भाषा में पूर्ण शिक्षा दें जैसे हिंदी, मराठी, अँगरेजी आदि। इन्हीं बातों पर ध्यान रखकर इंदौर राज्य के विधिमंडल में एक कानून का मसविदा पेश किया गया है।

उसकी मुख्य-मुख्य बातें ये हैं कि उसके जो अधिकारी होंगे जैसे Lord Rector, Chancellor उनके क्रम से महाकुलाधीश, प्रधान ऐसे ही नाम रखे गए हैं। इस विश्वविद्यालय को भिन्न-भिन्न परीक्षा लेकर या सम्मानीय पदवियाँ देने का अधिकार होगा। इतना ही नहीं, स्वयं विद्यालयों को स्थापित करावे

जैसे प्रस्तुत विश्वविद्यालयों में अधिकारी और समितियाँ होती हैं वैसी ही बनाई जायँ और उनका काम चलाया जाय। इस विश्वविद्यालय का सब कार-भार नियमानुसार चलेगा। यह प्रथमतः होल्कर राज्य से मान्य होने के बाद इसके विधान में यह योजना रखी गई है कि अन्य रियासतें इसमें सम्मिलित हो सकें और ऐसा होने पर उनको भी अधिकार में भाग दिया जावेगा। यह विश्वविद्यालय शीघ्र ही अस्तित्व में आ सकता है। इसमें सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक दोनों अंग होंगे और इस प्रकार यह एक मार्गदर्शक संस्था होगी।

विदेशों में हिंदी

[काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्वर्णजयंती और विक्रम द्विसहस्राब्दी महोत्सव के प्रथम दिवस के सभापति श्रीस्वामी भवानीदयाल संन्यासी के अभिभाषण का कुछ अंश ।]

देश में एक ओर से दूसरे छोर तक, आर्यप्रांत से लेकर द्रविड़ प्रदेश तक हिंदी का जो व्यापक प्रचार हो रहा है, आपके सामने उसकी गाथा गाना मानों दिनकर को दीपक दिखाना है। इसकी तो आप मुझसे कहीं अधिक जानकारी रखते हैं। मैं तो आज इस पवित्र मंच से उन प्रवासी भारतीयों की ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ जो एक अच्छी संख्या में भारत से बिछुड़कर समुद्र पार उपनिवेशों और विदेशों में जा बसे हैं और जो आपकी सहानुभूति और सहायता के सर्वथा सुपात्र हैं। आपके वे पच्चीस-तीस लाख प्रवासी भाई अपने ढङ्ग से नवीन बृहत्तर भारत बनाने में व्यस्त हैं। बृहत्तर भारत को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—प्राचीन और अर्वाचीन। प्राचीन बृहत्तर भारत का निर्माण हुआ था—आपके देश के धुरंधर धर्माचार्यों, दिव्यद्रष्टा दार्शनिकों, विज्ञ विधान-वेत्ताओं, रणधीर राजनीतिज्ञों, सूक्ष्म शिल्पियों और वाणिज्य-कुशल व्यवसायियों द्वारा और उसके अंतर्गत मैक्सिको, मिश्र, अबीसीनिया, कौंच, शंख, कुश, सिंहल, श्याम, सुमात्रा, जावा, बाली, ब्रह्मा, बर्नियो, मलय, कम्बोज (कम्बोडिया), लम्बक, लङ्का प्रभृति प्रदेशों की परिगणना होती थी। आज भी उन देशों और द्वीपों में पुरातनकाल के ऐसे प्रासादों के भग्नावशेष विद्यमान हैं, जो आर्य संस्कृति और शिल्पकारी की साक्षी दे रहे हैं।

पर वर्तमान बृहत्तर-भारत का निर्माण भिन्न प्रकार से हुआ

है। इसके सिरजनहार हैं—आपके देश के साधारण श्रमजीवी, कङ्गाल किसान और वित्त-विहीन व्यवसायी। सन् १८३३ में इङ्गलेण्ड में दासत्व प्रथा का अंत हो गया किंतु गीता की वाणी वृथा कैसे जाती? अतएव अगले ही साल सन् १८३४ में भारत की कोख से उसका पुनर्जन्म हुआ—शर्तबंदी मजदूरी के रूप में। विधि की कैसी विडंबना है! असभ्य हबशी तो दासता के बंधन से मुक्त हुए किंतु भारत की सभ्य संतान, राम और कृष्ण के वंशज, अकबर और शेरशाह की औलाद पराधीनता-रूपी पाप का फल भोगने के लिए उनकी जगह गुलाम के रूप में विदेशों के बाजार में बेचे गये। परतंत्रता का ऐसा कटु फल कदाचित् ही किसी अन्य राष्ट्र को चखना पड़ा हो। सभी मुख्य-मुख्य नगरों में ईस्ट इंडिया कम्पनी की ओर से गुलाम भर्ती करने के अड्डे बने, भोले भाले भाइयों और बहनों को फँसाने के लिए आरकाटी नियुक्त किये गये और कलकत्ते से इन अभागे नर-नारियों को पशुवत् लादकर जहाज पर जहाज खुलने लगे। गुलामी के इस व्यापार से संसार में भारत का बड़ा अपमान और उपहास हुआ।

लगभग नब्बे वर्ष तक भारत में गुलामी का व्यवसाय चलता रहा और इस बीच में मोरिशस में ढाई लाख, डमरारा, ट्रिनीडाड और नेटाल में डेढ़ डेढ लाख, फिजी में एक लाख, सुरीनाम में चालीस हजार, जमैका में बीस हजार तथा ग्रनेडा में पाँच हजार भारतीय अर्द्ध गुलामी का पट्टा लिखा कर पहुँच गये। इस गुलामी का नाम प्रवासी भाइयों की बोली में "गिरमिट" है और गुलामों का "गिरमिटिया"। इन गिरमिटिया भारतीयों की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधोगति की कथा इतनी करुणाजनक, मर्मस्पर्शी और विस्तृत है कि यदि पृथ्वी को

पत्र और समुद्र को स्याही बनाकर लिखने बैठें तो भी पार पाना कठिन है। उनकी स्थिति का यथावत् वर्णन करने के लिए वाल्मीकि और व्यास जैसे महान् काव्यकारों की आवश्यकता है; मैं तो केवल उनकी भाषा-संबंधी समस्या की कुछ चर्चा करके ही संतोष करूँगा।

गिरमिट की गाँठ में बँधे थे केवल हिंदी भाषी और मद्रासी। इनके पीछे-पीछे विशेषतः गुजराती और साधारणतः अन्य कुछ प्रांतवासी स्वतंत्र-रूप से व्यवसाय करने के विचार से वहाँ जा पहुँचे। इस प्रकार हिंदुस्थान के भिन्न-भिन्न प्रांतों के मनुष्यों का वहाँ जमावड़ा हो गया। उनमें कोई हिंदी बोलता था तो कोई गुजराती, किसी की बोली तामिल थी तो किसी की तैलगू, कुछ मलयालम-भाषी थे तो कुछ कनाड़ी। एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते थे, इससे बड़ा कष्ट होने लगा और उनके सामने विचार-विनिमय का विकट प्रश्न उपस्थित हुआ। कब तक पड़ोसी के सामने मौनव्रत धारण किये रहते, कहाँ तक संकेत से काम चलाते? निदान उन्होंने बड़ी सुगमता से इस प्रश्न को हल कर लिया—इस संदिग्ध स्थिति की समाप्ति कर डाली। उनका यही निर्णय हुआ कि मातृभाषा के होते हुए भी पारस्परिक व्यवहार के लिए भारतीयों को एक ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सभी प्रांत के लोग सहज ही बोल और समझ सकें और वह भाषा होनी चाहिये भारत के भाल की बिंदी हिंदी। न कहीं सभा-सम्मेलन की आयोजना हुई, न किसी ने हिंदी की उपयोगिता पर वक्तृताएँ दीं और न तो इस विषय पर सार्वजनिक चर्चा ही हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक भारतीय ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया और इसे कार्यान्वित करने में अपना कल्याण समझा। वास्तव में हिंदी अपनी माधुरी और

सरलता के प्रताप से प्रवासी-भारतीयों की राष्ट्रभाषा बन गई। नेटाल में तो मद्रासियों की संख्या अधिक है और हिंदी-भाषियों की उनसे बहुत कम; पर वहाँ भी प्रत्येक मद्रासी को हिंदी सीखना अनिवार्य हो गया। कोई तो अच्छी हिंदी बोल लेते हैं और कोई टूटी-फूटी बोली से काम चलाते हैं पर बोलते हैं सभी। यह ध्यान रखना चाहिए कि जिन जिन उपनिवेशों में हमारे देशवासी गिरमिट लिखाकर गये, वे एक दूसरे से हजारों कोस दूर हैं, कोई प्रशांत महासागर के तट पर है तो कोई हिंद महासागर के किनारे; कोई अमेरिका के निकट है तो कोई अफ्रिका के दक्षिणीय भाग में; किंतु सर्वत्र ही प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को पारस्परिक व्यवहार के लिए अपनाया।

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र-मथन से जहाँ विष निकला था वहाँ अमृत भी निकल आया। उसी प्रकार गिरमिट की गुलामी से जहाँ हमारी गहरी गिरावट हुई वहाँ उससे अनेक उलझनें भी सुलझ गईं। जिस प्रकार अपढ़-कुपढ़ प्रवासी भाइयों ने जात-पांत का प्रपंच हटाया, छुआछूत का भूत भगाया, बाल-विवाह का कलङ्क मिटाया, देवियों को परदे से स्वतंत्र बनाया और हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी—सभी को साम्प्रदायिक शैतान से बचाकर उन पर भारतीयता का रङ्ग चढ़ाया उसी प्रकार उन्होंने राष्ट्रभाषा का प्रश्न भी हल कर लिया। यह उस समय की बात है जब कि भारत में राष्ट्रभाषा की चर्चा भी नहीं चली थी; न तो ऋषि दयानंद ने आर्यभाषा की आवाज उठाई थी और न महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा की पुकार मचाई थी।

पर खेद की बात है कि वृहत्तर भारत में यह स्थिति स्थायी नहीं हो सकी। अगली पीढ़ी के प्रवासियों की मनोवृत्ति बदलने लगी। उनमें से जिनको पादरियों की पाठशालाओं में पढ़ने का

अवसर मिला ; उन्होंने अंग्रेजी को अपनाना आरंभ किया। आपस में अँग्रेजी-आलाप करना अहोभाग्य समझा जाने लगा और हिंदी में वार्तालाप करना अशिक्षित होने का लक्षण। फिर भी स्त्रियों और अपढ़ भाइयों से व्यवहार करने के लिए उनको भी झख मारकर हिंदी सीखनी ही पड़ती थी। पर दूसरी पीढ़ी में जो कोर-कसर रह गई थी वह तीसरी और अब चौथी पीढ़ी में बिलकुल पूरी हो गई। अँग्रेजी बोलनेवालों की संख्या जितनी बढ़ती गई, हिंदी की आवश्यकता उतनी ही घटती गई। अब तो यहाँ तक नौबत पहुँच गई है कि भाई-बहन में, पति-पत्नी में और पिता-पुत्र में भी अँग्रेजी छँटने लगी है। यह मानसिक-दासता का दारुण दृश्य है किंतु हम इसके लिए प्रवासियों पर कहाँ तक दोषारोपण कर सकते हैं, जब कि खास भारत दास्य-मनोवृत्ति से मुक्त नहीं हो पाया है। यहाँ के बड़े-बड़े विद्वान् अँग्रेजी में बोलते हैं, लोकप्रिय लेखक अँग्रेजी में लिखते हैं, अच्छे से अच्छे अखबार अँग्रेजी में निकलते हैं और उच्च शिक्षा का माध्यम भी अँग्रेजी है। क्या दुनियाँ में दासता का ऐसा दृष्टांत और कहीं मिल सकता है ?

दक्षिण अफ्रिका के मुट्ठी भर बोअरों ने अपनी भाषा की रक्षा और उन्नति के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर दिया है। अनेक प्रयत्न करने पर भी वे अँग्रेजी के मोहजाल में नहीं फँसे। उन्होंने वहाँ एक नवीन राष्ट्र निर्माण का अनुष्ठान आरंभ किया है उसका नाम रखा है—"अफ्रिकान"। वे भली भाँति जानते हैं कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र का निर्माण कहाँ ? अतएव डच भाषा में कुछ फेर-बदल कर उन्होंने इस नवीन राष्ट्र के लिए एक नवीन भाषा की सृष्टि की है जो "अफ्रिकान" के नाम से प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रिका में प्रत्येक सरकारी सेवक के लिए चाहे वह अँग्रेज

हो अथवा और कोई, अफ्रिकान भाषा जानना अनिवार्य है। वहाँ की यूनियन पार्लियामेंट में सभी राष्ट्रवादी सदस्य अफ्रिकान में भाषण करते हैं। इस भाषा को जाने बिना पार्लियामेंट की कार्यवाही समझना कठिन है। वे तो यहाँ तक अँग्रेजों को उपदेश देते हैं कि यदि अँग्रेज अफ्रिका में आबाद रहना चाहते हैं तो उन्हें इङ्गलेण्ड और इंग्लिश की मोहमाया छोड़ देनी चाहिए—उनसे नेह-नाता तोड़ लेना चाहिए और अब 'अफ्रिकान' कहलाना चाहिए तथा अफ्रिकान भाषा को अपनाना चाहिए। मातृभाषा पर उनका कितना अटल अनुराग है उसका एक उदाहरण दिये बिना मैं नहीं रह सकता। उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्ष में बोअर-अँग्रेज-युद्ध के समय कुछ बोअर बंदी बनकर हिंदुस्थान में आये थे। एक बंदी बोअर ने अपनी माता को एक पत्र लिखा और यहाँ के बंदीघर के विधान के अनुसार उसे अँग्रेजी में पत्र लिखना पड़ा। बोअर माता ने अपने पुत्र को जो उत्तर दिया था वह प्रत्येक भारतीय के लिए मनन और हृदयङ्गम करने योग्य है। वह यह है—"पुत्र ! तुम्हारा पत्र पाकर जहाँ हर्ष हुआ वहाँ विषाद भी। हर्ष तो इसलिए कि तुम अच्छे हो और विषाद का कारण यह है कि आज तुम अपनी मातृभाषा को भूल गये तो कल अपनी माता को भी भूले बिना नहीं रहोगे। छिः छिः तुमने क्या किया ? पत्रांकन के प्रलोभन में पड़कर माता की कोख लजाई, मातृभूमि की मर्यादा मिट्टी में मिलाई और बोअर वंश की बदनामी कराई।"

इन बोअरों के आत्म-सम्मान और स्वदेशाभिमान का मुझ पर प्रचुर प्रभाव पड़ा था। इनसे ही मुझे उपनिवेशों में हिन्दी प्रचार करने की प्रेरणा मिली थी और मैं अपनी भाषा की थोड़ी-बहुत सेवा कर सका था। एक बार तो मैंने यहाँ तक संकल्प कर लिया

था कि स्वदेश में सबसे हिंदी में संलाप करूँगा, सभाओं में हिंदी में संभाषण करूँगा; प्रवासियोंकी परिस्थिति पर हिंदी में पुस्तकें रचूँगा और अखबारों के लिए हिंदी में लेख लिखूँगा। इस संकल्प को मैंने बारह वर्ष तक निभाया भी, पर भारत की सामयिक स्थिति ने मुझे अंग्रेजी का आश्रय लेने के लिए बाध्य कर दिया। मैंने देखा कि मेरी नीति और प्रवृत्ति से प्रवासी बंधुओं के हित की हानि हो रही है; मेरी पुकार एक संकुचित सीमा की दीवार से टकराकर रह जाती है, मेरा आंदोलन देशव्यापी नहीं होने पाता है और इसलिए मुझे विवश होकर अंग्रेजी की शरण लेनी पड़ी।

आज से ठीक तीस साल पहले मैंने प्रवासी भाइयों में हिन्दी प्रचार का आंदोलन आरंभ किया था। ट्रांसवाल और नेटाल प्रदेश के प्रायः सभी छोटे बड़े नगरों और गाँवों में हिंदी प्रचारिणी सभाओं और हिंदी पाठशालाओं की स्थापना की थी। दक्षिणीय अफ्रिका में हिंदीसाहित्य सम्मेलन का सूत्रपात किया था, जिसके दो वार्षिकाधिवेशन बड़े समारोह से संपन्न हुए थे। जनता में जीवन ज्योति जगाने के लिये "हिंदी" नामक साप्ताहिक अखबार भी निकाला और बहुत बड़ी आर्थिक हानि उठाते हुए भी उसे अनेक वर्षों तक चलाया। हिंदी में छोटी-बड़ी कई पुस्तकें भी लिखीं, जो भारत में प्रकाशित होकर उपनिवेशों में प्रचारित हुईं। इसके बाद दुर्भाग्यवश मैं राजनीति के दलदल में जा फँसा, गङ्गा को छोड़कर गड्ही में जा गिरा। यद्यपि हिंदी मेरी आँखों से कभी ओझल नहीं हुई तो भी जितना चाहिए उतना समय फिर मैं नहीं दे सका। मेरा सारा समय नेटाल इण्डियन कांग्रेस की सेवा में बीतने लगा, मेरी सारी शक्ति राजनीतिक खटपट में खर्च होने लगी।

फिर भी मैंने जो हिंदी-प्रचार का आंदोलन उठाया था वह

दक्षिण अफ्रिका की सीमा लाँघकर अन्य उपनिवेशों में भी पहुँच गया। पोर्ट लुईस से "मोरिशस इंडियन टाइम्स" हिंदी और अँग्रेजी में साप्ताहिक रूप से निकला। उसमें मेरी "हिंदी" के प्रायः सभी लेख उद्धृत होते हैं। कुछ काल प्रवासियों में प्रकाश फैलाकर वह अंतर्हित हो गया। जब "आर्यपत्रिका" और "आर्यवीर" हिंदी के अखाड़े में उतरे तो "सनातन धर्मार्क" भी खम ठोक कर उनसे भिड़ पड़ा, किंतु यह द्वंद्व युद्ध टिकाऊ नहीं हो सका। "सनातन धर्मार्क" तो सुरधाम सिधार गया; "आर्य-पत्रिका" को आर्यत्व से अरुचि हो गई, अतएव उसने जनता को जगाने के लिए "जागृति" का जामा पहन लिया। "आर्य वीर" किसी प्रकार अभी तक आत्मरक्षा कर रहा है। वहाँ की सभी आर्य-शिक्षण-संस्थाओं में हिंदी पढ़ाई जाती है। वहाँ अनेक लेखक और कवि हैं; उनके कुछ ग्रंथ छपे भी हैं। मोताई लॉग की हिंदी प्रचारिणी सभा विशेष रूप से हिंदी का प्रचार कर रही है और हर्ष की बात है कि पारसाल मोरिशस में हिंदी साहित्य सम्मेलन भी स्थापित हो गया है जिसकी ओर से 'हिंदी परिचय परीक्षा' की भी व्यवस्था हुई है।

फिजी में पहले पहल "इण्डियन सेटलर्स" नामक पत्र निकला था; उसका हिंदी अंश लियो में छपता है, पर वह जीवित नहीं रह सका, बाल्यकाल में ही कालका कलेवा बन गया। उसके बाद अनेक अखबार रङ्गमञ्च पर आये और अपना-अपना अभिनय दिखाकर लोप हो गये। "स्कूल जर्नल" और "भारत पुत्र" हिंदी में विद्यार्थियों को बोध देकर चल बसे। "वैदिक संदेश" धर्म की धवल ध्वजा फहराकर, "वृद्धि" बुद्धि-विवेक बढ़ाकर और "राजदूत" राजभक्ति का रहस्य बताकर प्रवासियों से बिदा हो गये। केवल "फिजी समाचार" ही दीर्घजीवी हो सका। वह

अनेक वर्षों से फिजी प्रवासी भाइयों की सेवा में सन्नद्ध है और साप्ताहिक रूप से नियमपूर्वक निकल रहा है। कुछ दिनों से "शांति दूत" भी हिंदी की सेवा कर रहा है और कदाचित् किसानों का भी कोई अखबार निकला है, जिसकी चर्चा सुनी तो है पर दर्शन से अभी तक वंचित हूँ। फिजी के लटोका स्थान में आर्यसमाज का एक गुरुकुल है और सूवा आदि प्रमुख नगरों में आर्य पाठशालाएँ भी हैं; उनके उद्योग से वहाँ हिंदी का अच्छा प्रचार हुआ और हो रहा है। अब तो सरकारी स्कूलों में भी हिंदी पढना अनिवार्य हो गया है।

नेटाल में महात्मा गांधी के "इंडियन ओपिनियन" मे कुछ काल हिंदी को आश्रय मिला था, पर पीछे से ग्राहकों की कमी कहकर उसे निकाल दिया गया। "धर्मवीर" नामक साप्ताहिक चार साल चलकर बंद हो गया। उसने हिंदी प्रचार में यथेष्ट भाग लिया था। "इंडियन ओपिनियन" के हिंदी-विभाग और "धर्मवीर" के संपादन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। इसके बाद मैंने अपनी साप्ताहिक "हिंदी" निकाली। कई वर्षों तक उसका संचालन और संपादन किया। उसका दक्षिण अफ्रिका के अतिरिक्त अन्य सभी उपनिवेशों और भारतमें भी पर्याप्त प्रचार था; किन्तु वह प्रवासी भारतीयों के दुःख-दावानल में दग्ध हो गई। अब नेटाल से एक छोटी सी मासिक पत्रिका हिंदी में निकलती है जिसका नाम "राइसिंग सन्" है; किंतु यह ऐसी रद्दी और भद्दी पत्रिका है कि सार्वजनिक जीवन में इसका कोई स्थान ही नहीं है। कई सभाएँ हिंदीप्रचार का अच्छा काम कर रही हैं। सन् १९२८ में जब भारतीय शिक्षा कमीशन नेटाल मे बैठा था तो मैंने इस बात का प्रबल प्रयत्न किया था कि सरकारी पाठशालाओं में हिंदी जारी हो जाय और इसमें सफलता की सर्वथा संभावना थी; किंतु

वहाँ के तत्कालीन राजदूत माननीय श्रीनिवास शास्त्री बाधक बन गये और उनके विकट विरोध से मेरा सारा परिश्रम निष्फल गया। शास्त्रीजी को यही धुन सवार थी कि प्रवासी भारतीयों को पश्चिमीय रहन-सहन. आचार-विचार और व्यवहार तथा अँग्रेजी भाषा का अनुगामी बनाना चाहिए, पर यह सोचना भूल गये कि पश्चिमीय संस्कृति और शिक्षा के अंध-अनुकरण से भारतीयता अक्षुण्ण कैसे रहेगी ? फूल रहेगा—सुगंधशून्य; शरीर रहेगा—आत्माविहीन। भाषा बिना राष्ट्र कहाँ ? नीर बिना नदी कैसी ; मूल बिना शाख कहाँ ? यदि मेरी योजना कार्यान्वित हो जाती तो नेटाल में हिंदी की जड़ जम जाती। चंदे पर चलनेवाली संस्थाओं का भविष्य संदिग्ध ही रहता है। मैं अपनी असफलता पर हृदय मसोस कर रह गया। अब तो हिंदी प्रेमियों के उत्साह और उद्योग से जो कुछ काम हो रहा है उसी पर संतोष करना पड़ता है।

मोरिशस, फिजी और नेटाल से डमरेरा, ट्रिनीडाड, सुरीनाम और जमैका की अवस्था नितांत भिन्न है। सुरीनाम में हिंदी का थोड़ा-बहुत व्यवहार होता भी है किंतु ट्रिनीडाड, जमैका और डमरेरा के शिक्षित भारतीयों ने हिंदी को उसी प्रकार त्याग दिया है जिस प्रकार चीनियों ने चोटी को। डमरेरा से "इण्डियन ओपिनियन" और ट्रिनीडाड से "ईस्ट इंडिया पेट्रियट" आदि उनके अखबार अँग्रेजी में ही निकलते हैं; पाठशालाओं में केवल अँग्रेजी की शिक्षा मिलती है। सभा-समितियों की कार्यवाहियाँ अँग्रेजी में होती हैं और यहाँ तक कि घर में परिवार से भी अँग्रेजी में बातचीत चलती है। हिंदी वहाँ के अपढ़-कुपढ़ों के व्यवहार में आती है; शिक्षितों का उससे कोई संबंध नहीं रहा। वहाँ के शिक्षित भाई अपने चमड़े का रङ्ग नहीं बदल

सके, अन्यथा वे 'इंडियन' कहलाना भी पसंद नहीं करते। इंडियन होते हुए भी उनमें भारतीयता का कोई चिह्न दृष्टिगोचर नहीं होता। इसमें अपराध हमारा ही है। भारत ने उनको भुला दिया था, उन्होंने भारत को भुला दिया। अब भी अधिक अबेर नहीं हुई है। यदि वहाँ हिंदी प्रचार की समुचित व्यवस्था की जाय तो उनकी अवस्था सुधर सकती है। यदि हमारी उपेक्षा-वृत्ति बनी रही तो वे भारतीयता से सदा के लिए जुदा हो जायँगे।

मैंने आपके समक्ष अब तक केवल उन्हीं उपनिवेशों की चर्चा की है, जहाँ हमारे देशवासी पाँच साल का पट्टा लिखाकर कुली-कबाड़ी के रूप में गये थे। इनमें हिंदी भाषी और मद्रासी भाइयों के सिवा भारत के अन्य प्रांतवासियों की संख्या नगण्य ही है। इनके अतिरिक्त और भी अनेक ऐसे उपनिवेश हैं जहाँ लाखों भारतीय स्वतंत्र-रूप से जा बसे हैं और अपनी व्यवसाय - बुद्धि एवं क्रियाशीलता से अत्यंत समृद्धिशाली बन गये हैं। बृहत्तर भारत के उन सपूतों ने अपने व्यवहार से मातृभूमि का बड़ा उपकार किया है। केनिया, युगाण्डा, जंजिबार, टंगेनिक्या, मोजम्बिक, रोडेसिया, ट्रांसवाल, केप, रियूनियन, मेडागास्कर आदि ऐसे उपनिवेश हैं जहाँ प्रवासी भारतीयों का स्थायी बसेरा और अनेक प्रकार के कारबार हैं। इनमें अधिकांश गुजराती हैं और शेष हैं पंजाबी और सिंधी। इनकी ओर से गुजराती और अंग्रेजी में अनेक अखबार निकलते हैं जिनमें मोम्बासा का "केनिया डेली मेल", जंजिबार के "जंजिबार वॉइस" और "समाचार", दार-स्सलाम के "टंगेनिक्या ओपिनियन", "टंगेनिक्या हेरल्ड" और "अफ्रिका सेंटिनल", डरबन का "इंडियन व्यूज" तथा फिनिक्स नेटाल का "इंडियन ओपिनियन" विशेषरूप से विख्यात हैं।

जोहांसवर्ग के गांधी विद्यालय और पाटीदार पाठशाला, सैलिस्बेरी का हिंदू स्कूल, लॉरेंसो मार्किस का वेद-मंदिर-विद्यालय; दारस्सलाम, जंजिबार और नैरोबी की आर्य पाठशालाएँ आदि ऐसी अनेक संस्थाएँ हैं जिन पर प्रत्येक भारतीय गौरव से मस्तक ऊँचा कर सकता है। इनमें विशेषतः गुजराती में शिक्षा दी जाती है; पर साधारणतः विद्यार्थियों को हिंदी का बोध भी कराया जाता है। आर्यसमाज की शिक्षा-संस्थाओं में तो आर्यभाषा अनिवार्य ही है किंतु अन्य पाठशालाएँ भी हिंदी की ओर से उदासीन नहीं हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन भाइयों का मातृभूमि से ममत्व बना हुआ है। जहाँ हिंदी भाषियों और मद्रासियों ने स्वदेश से संबंध ही नहीं रखा, उनकी संतान के लिए हिंदुस्थान आज विरान बन गया है; सहस्रों जन्म-प्रवासियों को अपने बाप-दादे के जिले और गाँव तक का पता नहीं है और वे अपने पूर्वजों की इस नीति की निंदा और प्रवृत्ति पर पश्चात्ताप कर रहे हैं, वहाँ गुजरातियों ने भारत को पल भर के लिए भी नहीं बिसारा, वे बराबर यहाँ आते जाते रहे और अपने परिवार एवं पुरजन से प्रीति बढ़ाते रहे। इस पुण्य-प्रसंग पर प्रवासियों से मेरी तो यही प्रार्थना है—

"कहीं रहो, भारत के रहना, भूल न जाना अपना देश।
कुछ भी करना छोड़ न देना प्रिय मित्रो! निज भाषा, वेष॥"

और आपसे मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करूँगा कि आपके पचीस लाख प्रवासी भाई लावारिस माल की तरह इधर उधर पड़े हैं, कोई उनको खोज-खबर लेनेवाला नहीं है। इसलिए वे अपनी भाषा को छोड़ रहे हैं, भारतीयता से नाता तोड़ रहे हैं। यह नहीं भूलना चाहिए कि ये प्रवासी भारतीय विदेशों में भारत के प्रतिनिधि-स्वरूप हैं। उनके आचार-विचार और व्यवहार को देखकर

संसार के लोग भारतवर्ष के विषय में अपनी धारणा बनाते हैं—अपनी सम्मति स्थिर करते हैं। आपको ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि आपके प्रवासी भाई इस महान् देश के योग्य प्रतिनिधि सिद्ध हों। वे आप पर कलंक नहीं लगावें, आपकी सुकीर्ति बढ़ावें। उनकी सभी व्याधियों का एक ही उपचार है और वह है उनमें हिंदी का प्रचार। इससे उनमें भारत के लिए भक्ति उत्पन्न होगी और आर्य संस्कृति के लिए श्रद्धा। इसी से उनको अपने इतिहास का ज्ञान होगा और पूर्वजों के प्रति सम्मान बढ़ेगा। इसी से उनकी भारतीयता बच सकेगी। इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है। आशा है कि आप विदेशों में हिंदी प्रचार के लिए कोई योजना बनावेंगे और उसे कार्यान्वित कर दिखावेंगे।

———

योजना की रूपरेखा

ले०—कालिदास कपूर

भाषा का रूप—हिंदी भाषा के प्रचार और साहित्य के निर्माण की योजना बनाना प्रमुख संस्थाओं के प्रतिनिधियों का काम होगा। इस ग्रंथ में इस योजना के संबंध में कुछ संकेत ही दिये जा सकते हैं।

जीवित भाषा का कोई रूप स्थायी नहीं रह सकता। उसका रूप परिवर्तन होता रहता है। तो भी समयानुसार उसके रूप का नियंत्रण करते रहना आवश्यक है। इस संबंध में फुटकर विचारों की भरमार से आवश्यक अंश ही लेने का अवसर है।

देवनागरी वर्णमाला जितनी वैज्ञानिक है उतनी कोई और नहीं। परंतु कालगति ने इस वर्णमाला के भीतर कुछ वर्णों को अनावश्यक कर दिया है और आवश्यक वर्णों में नये संकेत बढ़ाकर नये स्वरों और व्यंजनों को व्यक्त करने की आवश्यकता बढ़ा दी है। जो वर्ण अब अनावश्यक जान पड़ते हैं वे हैं—ङ, ञ, ष, ऋ, ॠ, ऌ। ङ और ञ का काम अनुस्वार से चल सकता है। ष और श में अब कोई भेद नहीं रह गया है। क्ष, ग्य और रि का प्रयोग ऋ, ॠ और ऌ की जगह किया जा सकता है। परंतु इन वर्णों का निकालना उतना आवश्यक नहीं है जितना नये स्वरों और व्यंजनों को जगह देना। अंग्रेजी भाषा में ए और इ के बीच तथा ओ और आ के बीच जो स्वर हैं उनके लिए देवनागरी में कोई स्वर नहीं है। ओ और आ के बीच के स्वर को आ के ऊपर अर्धचंद्र लगाकर (ऑ) व्यक्त करने लगे हैं। उसी प्रकार क्यों न ए और इ के बीच के स्वर को व्यक्त किया जाय? रोमनलिपि के Best का देवनागरी में बेस्ट रूप

हो सकता है। फारसी और अरबी में जिस स्वर को ع से व्यक्त करते हैं उसको देवनागरी में स्वर अथवा व्यंजन के नीचे विंदु लगाकर व्यक्त करने लगे हैं। इस प्रकार अ़, क़, ख़, ग़, ज़, फ़ द्वारा फारसी और अरबी के प्रत्येक शब्द को तत्समरूप में व्यक्त करने की सुविधा मिल जाती है। अंग्रेजी का एक व्यंजन रह जाता है जिसका रूप हमें Measure में मिलता है। इसको मेज़र द्वारा व्यक्त नहीं कर सकते; यदि झ के नीचे विंदु लगा दें तो काम चल सकता है। तब इस अंग्रेजी शब्द को मेझ़र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

कुछ विद्वानों का विचार है कि कोई भी विदेशी शब्द हों, उनके तत्सम रूप को हिंदी में स्थान नहीं मिलना चाहिए, तद्‌-भव रूप में ही उन्हें हिंदी में व्यक्त होना चाहिए। इस मतभेद पर कुछ समय के लिए विद्वानों का सम्मिलित सर्वमान्य निर्णय हो जाना चाहिए। परंतु देवनागरी की वर्णमाला को विदेशी भाषाओं के शब्दों को तदनुरूप व्यक्त करने के योग्य बनाने में कोई मतभेद नहीं हो सकता, क्योंकि विदेशी शब्दों को तद्भव रूप में व्यक्त करने के निर्णय होने पर भी विदेशी पारिभाषिक शब्दों को देवनागरी वर्णमाला द्वारा व्यक्त करने की आवश्यकता तो बनी ही रहेगी।

यहाँ तक हुआ विदेशी भाषाओं के संपर्क में वर्णमाला के सुधार का प्रश्न। हिंदी के भीतर भी शब्दों को व्यक्त करने में नियंत्रण की आवश्यकता जान पड़ती है। कारक का प्रयोग शब्द के साथ किया जाय या अलग? एक पक्ष है साथ में प्रयोग करने का। इसके प्रमुख समर्थक हैं 'विशाल भारत' के संचालक। दूसरा पक्ष है सर्वनाम के साथ कारक लगाने का। संस्कृत नियमों के अनुस्वार पंचम वर्ण का प्रयोग किया जाय या अनुस्वार से

ही काम चलाया जाय ? द्विवेदीजी और उनकी 'सरस्वती' का मत पंचमवर्णों के पक्ष में है। नागरी प्रचारिणी सभा अनुस्वार के पक्ष में है। अनुस्वार के संबंध में एक मत है आवश्यकतानुसार चंद्रबिंदु लगाने के पक्ष में, दूसरा मत है अनुस्वार से ही काम निकालने के पक्ष में। जिन शब्दों के अंत में या, ये, यी, यो का प्रयोग किया जाता रहा उनकी जगह आ, ए, ई और ओ लें या 'य' व्यंजन का ही बोल बाला रहे। समझौते का एक ढंग बराबर का हिस्सा बाँट करने के पक्ष में हो सकता है। यो और यो का अस्तित्व रहे, परंतु ये और यी की जगह ए और ई को दे दी जाय। नागरी प्रचारिणी सभा ने इस नियम का पालन भी प्रारंभ कर दिया है। परंतु सर्वमान्य निर्णय की आवश्यकता है।

इस संबंध में एक निवेदन आवश्यक है। विद्वद्वर काका कालेलकरजी तथा उनके पक्ष के अन्य विद्वान् जो लिपि में क्रांतिकारी सुधार करना चाहते हैं उनका समर्थन करनेवाले हिंदी संसार में अधिक नहीं हैं। उन्हें अपने मत के प्रकट करने का अधिकार अवश्य है, परंतु अपने 'सुधरे' रूप में स्थायी अथवा सामयिक साहित्य का प्रकाशन करना उचित नहीं जान पड़ता।

अंग्रेजी के संपर्क में आने के पहले हिंदी में विराम चिह्न बहुत कम थे, परिच्छेद (Paragraphing) की व्यवस्था भी न थी, व्यस्तवर्णन (in direct narration) नहीं था और कर्मवाच्य का प्रयोग बहुत सीमित था। विराम चिह्नों में पूर्ण विराम तो अपने पुराने रूप में है यद्यपि कई विद्वान् अब अंग्रेजी के ढंग पर मात्रा न लगाकर बिंदु से काम लेने लगे हैं—परंतु उसे अब अंग्रेजी के अन्य विराम चिह्नों ने पूर्ण रूप से घेर लिया है। कामा (,) सेमीकोलन (;) कोलन (:) डैश (—)

हाइफेन (-) , साइन आफ एक्सक्लेमेशन (!) साइन आफ इंटरोगेशन (?) इनवर्टेड कामाज (" ")—सभी को हिंदी ने अपना लिया है। और तो सब आवश्यक से हो गये हैं, परंतु इनवर्टेड कामाज के विषय में मतभेद हो सकता है। अंग्रेजी में इनकी आवश्यकता है क्योंकि अंग्रेजी में दो प्रकार के वर्णन (narrations) है। सरल (Direct) और व्यस्त (Indirect) प्रश्न यह है कि हिंदी में व्यस्त वर्णन नहीं है। कुछ लोग अंग्रेजी ढंग पर व्यस्त वर्णन को हिंदी में व्यक्त करने लगे हैं । यदि यह उचित है तब तो इस विराम-चिह्न की आवश्यकता है ; नहीं तो जो काम स्वदेशी 'कि' से चल सकता है उसके लिए विदेशी विराम-चिह्न का क्यों प्रयोग किया जाय ?

हिंदी में कर्मवाच्य के प्रयोग को भी सीमित रखने की आवश्यकता है। अंग्रेजी के वाक्यानुरूपों को हिंदी में जगह देने का पाप अधिकांश में उन वैयाकरणियों के मत्थे है जिनकी पाठ्य-पुस्तकें हमारे स्कूलों में पढ़ाई जा रही हैं। इस संबंध में भी नियमन और नियंत्रण की आवश्यकता है।

साहित्य-निर्माण—ललित साहित्य का निर्माण योजना बनानेवालों के बस की बात नहीं है। तुलसी, प्रेमचंद और 'प्रसाद' का पुनर्जन्म तो हिंदी के सौभाग्य से ही हो सकता है। परंतु व्यावहारिक साहित्य योजना-निर्माताओं के बस की बात अवश्य है और हिंदी-साहित्य को सर्वांगीण बनाने तथा भाषा के प्रचार के नाते इसकी आवश्यकता भी है । इस व्यावहारिक साहित्य के कुछ अंग ऐसे हैं जिनका ज्ञान जनसाधारण के लिए अधिक आवश्यक है। इनका निर्माण पहले होना चाहिए। कुछ ऐसे हैं जो विद्वानों के मतलब के ही हैं । इनका निर्माण कुछ

समय के लिए स्थगित रह सकता है। व्यावहारिक साहित्य में जिन विषयों पर प्रामाणिक ग्रंथों की आवश्यकता है वे हैं, इतिहास, नीति, भूगोल, कृषि, व्यापार, अर्थशास्त्र, भूगर्भ विज्ञान, स्वास्थ्य और भोजन। इन विषयों पर कुछ ऐसे ग्रंथ होने चाहिए जिनका क्षेत्र विश्वव्यापी हो, जो मौलिक सिद्धांत की ही व्याख्या करें। बाकी ऐसे हों जिनका क्षेत्र भारत तक ही सीमित रहे। जनसाधारण के लिए सीमित क्षेत्र के ग्रंथ अधिक उपयोगी होंगे। परंतु सैद्धांतिक ग्रंथों को पढ़े बिना भारतीय जनसाधारण को इन विषयों का सच्चा ज्ञान नहीं हो सकता। इन विषयों पर ग्रंथ निर्माण का कार्य तुरंत प्रारंभ होना चाहिए। भारतीय इतिहास, भूगोल, कृषि, व्यापार और अर्थशास्त्र तो ऐसे विषय हैं जिन पर किसी भारतीय विद्वान् का स्वदेशी हिंदी की अवहेलना करके विदेशी अंग्रेजी में ग्रंथ लिखना देश के स्वतंत्र होने पर उतना ही हास्यास्पद होगा जितना किसी अंग्रेज विद्वान् का हिंदी में अपने देश के विषय में लिखना। इस संबंध में इंडियन हिस्टारिकल कांग्रेस की ओर से जिन विद्वानों ने संभवतः अंग्रेजी में ही भारतीय इतिहास लिखने का संकल्प किया है उन्हें चेतावनी देना आवश्यक है।

पुरातत्त्व, प्राचीन विदेशी भाषाएँ और उनका साहित्य, रसायन, गणित, सौर-विज्ञान, वनस्पति-शास्त्र, जीव-विज्ञान, चिकित्सा, कला, कल-विज्ञान, शिल्प—ये विषय ऐसे हैं जिनमें सर्वोच्च शिक्षालयों के विद्यार्थियों को हिंदी में लिखे ग्रंथों की आवश्यकता है, परंतु इन विषयों में ग्रंथ-निर्माण-कार्य कुछ समय के लिए स्थगित रह सकता है।

भारतीय जनसमाज अब उस ज्ञान-भंडार का स्वाद चखने का उत्सुक है जो अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य विदेशी भाषाओं में बंद

है। वह उन विदेशों के सामाजिक जीवन के विषय में जानना चाहता है, जिनसे उसका संपर्क देश के स्वतंत्र होने पर निश्चित है। इन देशों के सामाजिक जीवन का ज्ञान हमें अभी तक अंग्रेजी आँखों से मिल सका है। आवश्यकता है कि हमें अपनी आँखों से अपने पड़ोसी देशों के सामाजिक जीवन का अनुभव हो। हिंदी-साहित्य के इस अंग की पुष्टि तभी हो सकती है जब हिंदी के विद्वान् नवयुवक निर्दिष्ट विदेश का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वहाँ की जीवित भाषा सीखें, फिर वहाँ जाकर यथेष्ट समय तक रहें, और वहाँ के निवासियों से घुलमिलकर उनके इतिहास, उनके सामाजिक जीवन, उनकी राजनीतिक समस्याओं पर मौलिक लेख तथा ग्रंथ लिखें। अभी युद्ध की समाप्ति तक, इन विदेशों में जाना तो संभव नहीं है; परंतु इसकी तैयारी करना संभव है और आवश्यक है। क्यों न अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन के अतिरिक्त अन्य विदेशी भाषाओं की पढ़ाई का प्रबंध देश के विश्वविद्या-लयों में किया जाय? स्पेनी का प्रचार नई दुनिया में संयुक्त राज्य के दक्षिण सर्वत्र है; रूसी उत्तरी योरप और एशिया को घेरे हुए है; बर्मी, मलय, चीनी और जापानी का पूर्वी एशिया में प्रचार है; पुश्तो और आधुनिक फारसी तथा अरबी का उसी प्रकार प्रचार पश्चिमी एशिया में है। इन भाषाओं की पढ़ाई अभी से प्रारंभ कर देना चाहिए। तभी तो शांति स्थापित होते ही हम विदेशों से विद्वानों का विनिमय कर सकेंगे।

प्रचार—जब तक युद्ध का ढिंढोरा पिट रहा है तब तक भाषा के प्रचार के संबंध में विशेष उपयोग नहीं हो सकता। कागज की मँहगी, छपाई की कठिनाइयाँ, यातायात की रुकावटें—सभी प्रचार में बाधक हैं। तो भी प्रचार पर विचार करने में कोई हर्ज नहीं है।

इस समय रेडियो और बोलते चित्रपट द्वारा भाषा का प्रचार सबसे सरल साधन है, क्योंकि बेपढ़े-लिखे भारतीय जनसमाज का—जिनकी संख्या पढ़े-लिखों से पंद्रह गुनी है—भी इनसे मनोरंजन होता है। हिंदी के दुर्भाग्य से और सरकारी हित के विपरीत रेडियो की नीति हिंदी के पक्ष में नहीं है। सरकारी हित की हत्या यों होती है कि जिन विचारों का प्रचार रेडियो की हिंदुस्तानी द्वारा किया जाता है वे भाषा के श्रोताओं की समझ के बाहर होने के कारण अपने उद्देश्य में असफल रहते हैं। यह माना जा सकता है कि फ़ारसी-अरबी गर्भित हिंदी—जिसे रेडियो के संचालक और राष्ट्रीयता के कुछ पुजारी हिंदुस्तानी कहते हैं और जो वास्तव में उर्दू है—से भी हमारी भाषा का मार्ग अहिंदी भाषी प्रांतों में खुलता है; परंतु इन प्रांतों के निवासी विशेष रूप से बंगाल, महाराष्ट्र और मद्रास में संस्कृत से फारसी, अरबी की अपेक्षा अधिक परिचित हैं। इसलिए यदि रेडियो के संचालक सरल हिंदी का प्रयोग करते तो हिंदी का भला होता और सरकारी नीति का भी प्रचार होता, परंतु वर्तमान परिस्थिति में रेडियो के संचालकों पर जन-मत का प्रभाव पड़ना असंभव है।

बोलते चित्रपट से हिंदी को अधिक आशा है। इनके संचालक व्यवसायी हैं। अपने लाभ के लिए यद्यपि कभी-कभी कुछ संचालक भारतीय संस्कृति की हत्या कर डालते हैं, परंतु जन-साधारण की रुचि सरल हिंदी की ओर होने के कारण इन्हें अपने चित्रपटों में हिंदी का प्रयोग करना पड़ता है। इस हिंदी को जितने भारतीय पसंद करते हैं उतना किसी और भाषा को नहीं। इसलिए जितना लाभ इस भाषा के चित्रपटों से होता है उतना लाभ अन्य भाषा के चित्रपटों से नहीं होता। इस अधिक

लाभ के कारण देश के सर्वोत्तम कलाकार हिंदी के चित्रपट बनाने में सहयोग देते हैं। इनकी कला के प्रेमी हिंदी कम समझते हुए भी इन चित्रपटों को देखने जाते हैं और इस प्रकार हिंदी, लिखना नहीं तो, समझना और बोलना तो सीख ही लेते हैं। यों हिंदी-प्रचारक संस्थाओं को चित्रपट व्यवसाय की संगठित संस्था से सहयोग करना और उसे उचित परामर्श देना आवश्यक हो जाता है।

चित्रपट व्यवसाय की संस्था के समान हिंदी पुस्तक प्रकाशकों की संस्था भी संगठित होनी चाहिए और उनके सहयोग से जगह-जगह पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित होने चाहिएँ। देश के कृषि प्रधान होने के कारण बिखरी जनता में प्रचार करना बहुत कठिन हो जाता है। परंतु इस बिखरी जनता ने जो अपने सम्मेलन के साधन बना लिए हैं उनका प्रचार-संस्थाओं को उपयोग करना चाहिए। जिले में प्रति सप्ताह कई बाजार लगते हैं। बाजार में पुस्तकालय और वाचनालय को अवश्य पहुँचना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक जिले में, प्रांत में छोटे-बड़े मेले हुआ करते हैं। इन मेलों में जिले अथवा प्रांत की संस्थाओं को हिंदी-सम्मेलन के अधिवेशन करने चाहिएँ, उनके साथ पुस्तक-पत्र-प्रदर्शिनी के अतिरिक्त व्याख्यान, संगीत, चित्रपट और नाटक द्वारा मनोरंजन के साधन भी प्रस्तुत होने चाहिएँ।

इस संबंध में पं० बनारसीदासजी चतुर्वेदी के इस प्रस्ताव पर विचार करना आवश्यक है कि वर्ष में एक बार किसी अच्छी ऋतु में, यथासंभव वसंत के अवसर पर, सांस्कृतिक सप्ताह मनाया जाय जिसमें साहित्यिक तीर्थों पर मेले हों, साहित्यिक खोज पर लेख पढ़े जायँ, व्याख्यान हों, रेडियो, चित्रपट और रंगमंच से मनोरंजन में सहायता ली जाय। प्रस्ताव चित्ताकर्षक अवश्य है,

परंतु इसको कार्यात्मक रूप देने में एक कठिनाई है। वह यह कि स्कूलों और कालेजों में इस समय जितनी निरर्थक छुट्टियाँ दी जा रही हैं वे जब तक घटाई नहीं जातीं, नियमित नहीं की जातीं, तब तक सांस्कृतिक सप्ताह मनाने के लिए समय नहीं मिल सकता और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के सहयोग के बिना ऐसा सप्ताह मनाया भी नहीं जा सकता। इस संबंध में एजुकेशन पत्रिका के 'हालीडेज़ एंड टाइमिंग्ज़' (Holidays and Timings) नामक विशेषांक द्वारा बहुत कुछ आंदोलन हो चुका है। परंतु जब तक देश में राष्ट्रीय शासन स्थापित नहीं होता तब तक इस आवश्यक सुधार की आशा करना व्यर्थ है।

प्रयाग और काशी हिंदी के केंद्रीय संग्रहालयों की उत्तरोत्तर उन्नति हो, परंतु इनके अतिरिक्त अन्य नगरों में भी जहाँ हिंदी साहित्य की जड़ थोड़ी-बहुत जम गई हो संग्रहालय होने चाहिएँ। इनमें अप्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह हो, प्रकाशित पुस्तकों का पुस्तकालय हो और पत्र-पत्रिकाओं का वाचनालय हो। जहाँ चलित पुस्तकालय स्थापित न हो सकें वहाँ इसी संग्रहालय से देहात के हिंदी प्रेमियों को पुस्तकें उधार देने की व्यवस्था होनी चाहिए।

इस देश के इनेगिने पढ़े-लिखे भी अपढ़ जनता के रंग पर पुस्तक-प्रेमी नहीं हैं। उन्नतिशील देशों में निजी पुस्तकालय भले घर का आवश्यक अंग समझा जाता है। पुस्तकें, पढ़ने के लिए नहीं तो सजावट के लिए ही, पुस्तक-प्रेम दिखाने के लिए, संग्रह की जाती हैं। यहाँ हम किसी के घर जाकर निजी पुस्तकालय के अभाव को नहीं टोकते। पैसा पास होते हुए भी पुस्तक अथवा पत्र-पत्रिका के लिए पैसा खर्च करना फजूल समझते हैं। अपढ़ जनता से प्राप्त यह कुप्रवृत्ति पढ़े-लिखे लोगों में तो घटना

ही चाहिए। क्यों न देश के नवयुवक जहाँ अन्य फैशनों का प्रचार करते हैं वहाँ पुस्तकालय बनाने के व्यसन का प्रचार करें। यों वे साहित्य की एक अनन्य सेवा के पुण्यभागी हो सकेंगे।

पुस्तकों—विशेषरूप से कम दाम की छोटी पुस्तकों—के प्रचार में डाक के नियम भी बहुत बाधक होते हैं। यदि चार आने की पुस्तक कोई देहाती मँगाना चाहे तो उसको लगभग आठ आने डाकमहसूल के देना पड़ते हैं। कम पढ़े निर्धन देहातियों के लिए सस्ती और हलकी पुस्तकें ही चाहिएँ और प्रकाशक इन्हें सस्ता बेचकर भी ग्राहक के पास सस्ता पहुँचा नहीं सकते। डाक के नियमा को पुस्तको के पक्ष में संशोधित करना कठिन है; परंतु इन्हीं नियमों के सहारे प्रकाशक और ग्राहक के सहयोग से डाकखर्च की कठिनाई यों पार की जा सकती है कि पत्रिका के रूप मे पुस्तकमाला का मासिक प्रकाशन हो, प्रकाशक को वार्षिक चंदा मिल जाया करे और ग्राहक को प्रतिमास की निश्चित तिथि के भीतर एक पुस्तक मिल जाया करे। १२ पुस्तकों पर डाकखर्च वर्ष के भीतर वी० पी० पोस्ट द्वारा चंदा देकर भी बारह आने से अधिक न होगा।

भारत के अहिंदी प्रांतों में हिंदी प्रचार के लिए जो संस्थाएँ काम कर रही हैं उनका उल्लेख इस ग्रंथ में संगृहीत है। हमें विश्वास है कि ये प्रांतीय संस्थाएँ प्रांतीय भाषाओं का सहयोग प्राप्त करके ही अपने उद्देश्य की पूर्ति कर रही हैं। इन संस्थाओं के उद्योग से अथवा इनके द्वारा प्रांतीय जीवन से संबंधित पुस्तकों और पत्रिकाओं का सरल हिंदी में प्रकाशित करना इनका मुख्य कार्य होना चाहिए। हिंदी का विशेष महत्त्व उसकी देवनागरी-लिपि में है जो संस्कृत के लिए सर्वमान्य है। यों संस्कृत के नाते देवनागरी-लिपि का थोड़ा-बहुत प्रचार देश के भीतर और बाहर

सभी जगह है। इस लिपि में प्रांतीय भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों का प्रकाशन भी इन संस्थाओं का कार्य हो सकता है। अभी तक हिंदी को संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी के शब्दभांडार का सहारा रहा है, क्यों न प्रांतीय भाषाओं के शब्दभांडार के उपयोगी रत्नों को हम हिंदी में आदरणीय स्थान दें। यह काम भी ये संस्थाएँ बहुत खूबी से कर सकती हैं।

विदेशों में अभी तक हिंदुस्तानी के नाम से उर्दू का ही प्रचार हो रहा है यद्यपि फारसी-लिपि के कारण विदेशी पाठकों के लिए हमारी भाषा का पढ़ना-लिखना बहुत कठिन हो जाता है। संस्कृत का प्रचार योरप में उनके आर्यजातीय होने के कारण और चीन तथा जापान में बौद्धधर्म के नाते फारसी तथा अरबी से कहीं अधिक है। इसलिए देवनागरी-लिपि में हिंदी का इन विदेशों में प्रचार करना फारसी-लिपि में उर्दू का प्रचार करने की अपेक्षा अधिक सरल है। यह प्रचार यों हो सकता है कि विदेशी भाषाओं के विद्वानों को हम अपने विश्वविद्यालयों में जगह दें, उनसे उनकी भाषा और साहित्य का परिचय प्राप्त करें और अपने हिंदी विद्वानों को हम बदले में उनके विश्वविद्यालयों में भेजें।

इस विद्वान्-विनिमय के अतिरिक्त भावी भारत की स्वतंत्र शासन-संस्था का प्रमुख कार्य विदेशों में भारतीय संस्कृति-प्रचार के केंद्र स्थापित करना होगा। ये केंद्र प्रचार का कार्य उस देश की भाषा के साथ इस देश की राष्ट्रीय भाषा द्वारा भी करेंगे। यदि संयुक्त राज्य और योरप के निवासी अपने धार्मिक मिशनों के बहाने बड़े-बड़े शिक्षालय और अस्पताल द्वारा प्रतिवर्ष करोड़ों रुपया खर्च करके अपनी संस्कृति का प्रचार इस देश में करते हैं, तो क्या हमें प्रत्येक प्रमुख देश के लिए प्रतिवर्ष लाखों रुपया भी खर्च करना आवश्यक न होगा ?

देश के सर्वोच्च शिक्षालय ही राष्ट्रीय संस्कृति, भाषा और साहित्य के प्रमुख केंद्र हो सकते हैं। दुर्भाग्यवश भारतीय विश्वविद्यालय ही विदेशी संस्कृति, भाषा और साहित्य के केंद्र इस समय तक बने हुए हैं जब राष्ट्रीय भावों ने देश में बहुत कुछ उन्नति भी कर ली है। हिंदी साहित्य के पठन-पाठन का प्रबंध तो अब प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में हो गया है, परंतु उस्मानिया विश्वविद्यालय को छोड़कर जहाँ उर्दू ही पठन-पाठन का माध्यम है, कोई और विश्वविद्यालय नहीं है जिसमें देशी भाषा को शिक्षा के माध्यम बनने का पद मिला हो। हिंदू-विश्वविद्यालय तक, जिसे देश के राष्ट्रीय विद्यालय का पद प्राप्त है, इस ओर अभी अग्रसर नहीं हो सका है।

परिस्थिति आशाजनक अवश्य है। हिंदीप्रेमी रावबहादुर सरदार माधवराव विनायक किबे की हिंदीविश्वविद्यालयविषयक योजना के सफल होने पर देश को उस्मानिया-विश्वविद्यालय की बराबरी का एक विश्वविद्यालय सर्वोच्च कक्षाओं में हिंदी माध्यम का पथ-प्रदर्शन कर सकेगा। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति और प्रयाग-विश्वविद्यालय के अध्यक्ष विद्वद्वर अमरनाथ झा विश्वविद्यालय में देशी भाषा को माध्यम बनाने में प्रयत्नशील हैं। यदि एक ओर हिंदी-विश्वविद्यालय स्थापित हो जाय और दूसरी ओर हिंदू-विश्वविद्यालय और प्रयाग-विश्वविद्यालय भी राष्ट्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में निर्णय कर लें तो हिंदी को अपना राष्ट्रीय स्वत्व प्राप्त करना सरल हो जायगा।

इस संबंध में यह निश्चय करना आवश्यक है कि शिक्षा के लिए विदेशी भाषा का अंत होना है। इस विदेशी भाषा की जगह प्रांतीय भाषाएँ लें प्रारंभिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षा

के लिए और राष्ट्रीय भाषा सर्वोच्च शिक्षा के लिए । राष्ट्रभाषा कौन हो—हिंदी हो या उर्दू ?

हिंदुस्तानी का अभी अस्तित्व साहित्य में है नहीं और, यदि है तो यह नहीं निश्चित है कि उसकी लिपि कौन हो—देवनागरी, फ़ारसी अथवा रोमन । इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुमत देवनागरी-लिपि में हिंदी के ही पक्ष में है। परंतु भावी भारत में हमें सांस्कृतिक स्वतंत्रता की रक्षा करना है। हम यह जानते हैं कि भारतीय समाज का यथेष्ट भाग फारसी-लिपि में उर्दू के पक्ष में है। संभव है कि समय पाकर इस समाज के समझदार सदस्य हिंदी के पक्ष में हो जायँ, परंतु अभी उनकी सांस्कृतिक स्वतंत्रता के नाते हिंदी के साथ उर्दू को राष्ट्रभाषा भी मानना पड़ेगा ।

यह विचार करना आवश्यक है कि प्रारंभिक शिक्षा और निम्न-श्रेणियों की माध्यमिक शिक्षा भी हिंदी-उर्दू की खिचड़ी हिंदुस्तानी द्वारा दी जा सकती है, परंतु ऊँची कक्षाओं में दो भाषाओं द्वारा शिक्षा देना कठिन है । प्रस्ताव यह है कि सर्वोच्च शिक्षा के लिए पाठकों का बहुमत हिंदी के पक्ष में हो तो हिंदी माध्यम का प्रबंध किया जाय और उर्दू के पक्ष में हो तो उर्दू का। प्रत्येक ऊँची श्रेणी के शिक्षालय को बहुमत की जाँच करके एक ही माध्यम का प्रबंध करना चाहिए;-तभी सुचारुरूप से शिक्षा दी जा सकेगी।

हिंदी और उर्दू का बहुत कुछ फासिला लिपि का तो है ही, ऊँची कक्षाओं में पारिभाषिक शब्द भी इस फासिले को बढ़ा देते हैं। यदि पारिभाषिक शब्दों को संस्कृत से एक ओर और फारसी अरबी से दूसरी ओर लेने के बदले दोनों भाषाएँ अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों का सहारा लें तो इनका पारस्परिक भेद बहुत कम किया जा सकता है और अवश्यंभावी मेल की अवधि बहुत निकट लाई जा सकती है ।

सर्वोच्च कक्षा तक पहुँचने के पहले जहा राष्ट्रीय भाषा द्वारा शिक्षा देना अनिवार्य हो, यह नियम होना चाहिए कि माध्यमिक शिक्षा की कम से कम तीन सर्वोच्च कक्षाओं में राष्ट्रीय भाषा के एक रूप—हिंदी अथवा उर्दू—का पढ़ना अनिवार्य हो। जिन पाठकों की मातृभाषा हिंदी या उर्दू ही हो वे उर्दू पढ़ें, हिंदी पढ़ें या कोई और देशी भाषा पढ़ें। यों पाठक सर्वोच्च शिक्षालय तक पहुँचते-पहुँचते राष्ट्रीय भाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हो सकेंगे।

अभी हमारे शिक्षा-क्रम पर अंग्रेजी का अखंड राज्य है, परंतु यदि भारत को पूर्ण रहना है और स्वतंत्र होना भी है तो राष्ट्रीय भाषा हिंदी का शिक्षाक्रम पर आधिपत्य होना भी निश्चित है।

सेवियों की समस्या—अब भारतीय समाज के उन सदस्यों की समस्याओं पर विचार करना है जो सब कुछ कठिनाइयाँ और कष्ट सहते हुए वीरता के साथ हिंदी की सेवा कर रहे हैं—उसे राष्ट्रीय स्वत्व प्राप्त कराने में प्रयत्नशील हैं।

सबसे पहले उन सेवियों का उल्लेख करना है जो हिंदी के शिक्षक हैं, जो प्रारंभिक शिक्षालय से विश्वविद्यालय तक हिंदी-भाषा और साहित्य पढ़ाने पर अपना पेट चलाते हैं। इनके वेतन पर विचार करना है और इनकी योग्यता पर भी।

हमारी परतंत्रता का यह परिणाम है कि विदेशी अंग्रेजी के शिक्षकों को स्वदेशी भाषाओं के शिक्षकों से कहीं अधिक वेतन दिया जाता है, समाज में कहीं अधिक उनका मान भी है। किसी भी स्वतंत्र देश में स्वदेशी भाषा के शिक्षकों की विदेशी भाषा के शिक्षकों के सामने इतनी अवहेलना नहीं की जाती। हिंदू विश्वविद्यालय जैसी हमारी राष्ट्रीय संस्थाएँ परतंत्रता के इस परिणाम से मुक्त नहीं हैं। हिंदू-विश्वविद्यालय में अन्य विश्व-

विद्यालयों की अपेक्षा शिक्षकों की वेतन-मात्रा कम है। यह उतनी बुरी बात नहीं है जितनी यह कि इस पथ-प्रदर्शक विश्व-विद्यालय में भी सबसे अधिक भाग्यहीन हिंदीविभाग के अध्यापक ही हैं। जो दशा हिंदी अध्यापकों की विश्वविद्यालयों में है, वही—उससे हीन—उनकी उन माध्यमिक शिक्षालयों में है जहां अंग्रेजी शिक्षा दी जाती है। यद्यपि हिंदी की एम० ए० परीक्षा पास करने में उतना ही समय लगता है, उतने ही रुपये खर्च होते हैं जितने अंग्रेजी का एम० ए० पास करने में, तो भी हिंदी के एम० ए० को अंग्रेजी के एम० ए० का आधा वेतन भी नहीं मिलता। और खूबी यह है कि राष्ट्रीय हिंदी का यह निरादर होता है बहुत कुछ उनके हाथों से, उनके नेतृत्व में जो राष्ट्रीयता का दावा करते हैं।

स्वतंत्र राष्ट्रीय शासन की शिक्षायोजना का प्रमुख अंग यह होना चाहिए कि देशी भाषा के शिक्षक का वेतन और मान विदेशी भाषा के शिक्षक के मुकाबले किसी प्रकार कम न हो।

हिंदीशिक्षक का वेतन बढ़ना तो आवश्यक है ही; उसकी तैयारी पर अधिक ध्यान देना है। प्रारंभिक शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि हिंदीभाषा और साहित्य का समुचित ज्ञान होने के अतिरिक्त उन्हें संस्कृत और हिंदी के साथ उन्नतिशील देशी भाषा का ज्ञान होना चाहिए। उन्हें हिंदी पढ़ाने के सिद्धांत और विधि की भी यथेष्ट शिक्षा मिलनी चाहिए। माध्यमिक कक्षाओं के हिंदीशिक्षकों को उपयुक्त तैयारी के साथ किसी विदेशी भाषा से भी परिचित होना चाहिए। सर्वोच्च कक्षाओं के हिंदी-शिक्षकों के लिए बच्चों को पढ़ाने के सिद्धांत सीखना आवश्यक नहीं है परंतु माध्यमिक कक्षा के शिक्षकों की तैयारी प्राप्त करके उनमें साहित्य की आलोचना और उसके निर्माण की क्षमता होना चाहिए। सर्वोच्च कक्षा का वह हिंदी-अध्यापक किस काम

का जो ऊँची डिग्री प्राप्त करके भी ऊँची श्रेणी का ग्रंथ निर्माण नहीं कर सकता, अपने शिष्यों को अपनी ही कृति से प्रभावित नहीं कर सकता। हिंदी को विश्वविद्यालय में जगह मिलने पर—निम्न ही सही—हिंदी-जगत् को आशा हुई थी कि इनके अध्यापक हिंदी-साहित्य की अभिवृद्धि में यथेष्ट सहायता दे सकेंगे। यह आशा अभी तक पूरी नहीं हुई है। परंतु सर्वोच्च हिंदी-शिक्षकों की मानवृद्धि के लिए—और वेतनवृद्धि के लिए भी—यह आवश्यक है कि वे उपर्युक्त सेवा करने के योग्य हों और करें।

वर्तमान परिस्थिति में साहित्य-निर्माण का कुछ काम उन सेवियों से चलता है लिखना ही जिनकी जीविका का साधन है। पारिश्रमिक, पुरस्कार अथवा बिक्री पर रायल्टी से आय लेखक को तभी अच्छी होगी। जब उसकी कृति सरकार द्वारा शिक्षालयों के लिए मंजूर हो जाय। इन कृतियों से आय जो कुछ हो इनका साहित्यिक महत्त्व नहीं के बराबर है। शिक्षालय के बाहर पुस्तकों की खपत कम होने के कारण महत्त्वपूर्ण साहित्यिक निर्माण ऐसे ही महानुभावों की फुरसत का काम रह जाता है जिन्हें जीविका के अन्य साधन प्राप्त हैं और जिन्होंने साहित्यिक सेवा को अपना व्यसन बना लिया है।

हमारे कृषि-प्रधान देश की विभूतियों के बीज देहात में बिखरे पड़े हैं। इन्हें ढूँढ़कर एकत्र करना, इनकी सिंचाई और सेवा करना और फिर इनकी 'हासिल तैयारी' पर इनसे राष्ट्रीय सेवा का काम लेना भावी भारत की राष्ट्रीय योजना का प्रमुख अंग होगा। इस समय देहात के जमींदार घरानों में फुरसत तो बहुत कुछ है परन्तु या तो वहाँ साहित्यिक बीज-वपन ही नहीं हुआ है या यदि कुछ शिक्षा प्राप्त विद्वान् देहात में रहते हुए साहित्यिक सेवा करना चाहते हैं तो उन्हें समुचित साधन नहीं प्राप्त होते।

इन देहाती साहित्यिकों को साधनों की आवश्यकता है—पुस्तक और परामर्श। ग्रामीण साहित्य-सेवियों की सेवा के लिए जिन केंद्रीय पुस्तकालयों की स्थापना हो उनमें अधिक पुस्तकों का होना उतना आवश्यक नहीं है जितना आवश्यक पुस्तकों की एक से अधिक—कम से कम पांच—प्रतियों का होना। एक केन्द्रीय पुस्तकालय साइकिलिस्ट कर्मचारियों द्वारा १५ मील तक लगभग ७०० वर्ग मील देहात की सेवा कर सकता है। यह विचार करने की बात है कि इन पुस्तकालयों में कौन पुस्तकें हों, उनका संचालन किस प्रकार किया जाय।

परामर्श की पूर्ति के लिए विलायती कास्स पांडेन्स कालेजों से मिलती-जुलती संस्थाएँ काम दे सकती हैं। विविध विषय के विद्वानों की संस्थाएँ, प्रयाग, काशी, लखनऊ, दिल्ली जैसे स्थानों में हों। जो लोग चिट्ठी पत्री द्वारा जिस विषय पर परामर्श चाहते हों उस विषय के विद्वान् उन्हें समुचित पारिश्रमिक लेकर चिट्ठी द्वारा सहायता दें, उनके लेखों का संशोधन करें, उनके प्रकाशन की भी व्यवस्था कर दें। कुछ समय तक ऐसी संस्थाओं में ऐसे ही विद्वान् सम्मिलित होने चाहिएँ जिन्हें प्रचार की लगन हो, पारिश्रमिक की परवाह न हो। प्रचार बढ़ने पर पारिश्रमिक पाकर काम करनेवाले विद्वानों द्वारा इन संस्थाओं को चलने में विशेष कठिनाई न होगी।

बहुत से लेखकों की तैयारी का प्रारंभिक काम पत्रकारी होता है। पत्र-पत्रिकाओं में सफलतापूर्वक लेख लिखने के बाद ही वे पुस्तक-निर्माण करने के योग्य होते हैं। परन्तु उन सेवियों की समस्या पर भी विचार करना आवश्यक है जो पत्रकार अथवा संपादक की हैसियत से ही सामयिक साहित्य की सेवा करते हुए जीविकोपार्जन करना चाहते हैं।

इस समय हिंदी पत्रकारों को वे सुविधाएँ प्राप्त नहीं हैं जो अँग्रेजी पत्रकारों को हैं। तार की खबरें अँग्रेजी में दी जाती हैं। अँग्रेजी में ही प्रमुख व्याख्यान होते हैं, वक्तव्य दिये जाते हैं, अँग्रेजी का स्टेनो टाइपिंग भी हिंदी के स्टेनो टाइपिंग से सरल है। कुछ समय तक कई प्रांतों में कांग्रेसी शासन-काल के भीतर हिंदी पत्रकारों की माँग और उपयोगिता बहुत कुछ बढ़ गई, परन्तु उनके शासन से अलग होने पर पत्रकारों की स्थिति फिर शोचनीय होगई है। उनकी आर्थिक उन्नति तो परिस्थिति के अनुकूल होने पर ही हो सकती है। परन्तु इस स्थिति में भी वे सुबोध ढंग पर खबरें और लेख देकर अपने काम को जनता के लिए अधिक उपयोगी बना सकते हैं।

विदेशों में—और अंग्रेजी के लिए इस देश में भी—खबरों और लेखों को प्राप्त करके उन्हें वितरण करने की जो संस्थाएँ हैं उनके द्वारा पत्रकारों और उनके सामयिक साहित्य को जो सहायता मिलती है, हिंदी में अभी तक उनके न होने के कारण वह इस भाषा के पत्रकारों को प्राप्त नहीं है। हिंदी के राष्ट्रीय पद तक पहुँचते-पहुँचते इन संस्थाओं का बनना और उनके पत्रकारों का संगठन भी आवश्यक होगा।

हिंदी सेवा ही जिन लेखक-लेखिकाओं की जीविका का साधन है उनके लिए पुरस्कार और पारिश्रमिक का प्रश्न गुरुतम महत्त्व का है। निर्माण और प्रचार का संबंध कारण-कार्य का है। निर्माण के पश्चात् ही निर्मित वस्तु का प्रचार होता है। प्रचार ही द्वारा निर्माता पुरस्कृत होता है और फिर पुरस्कार से ही निर्माण प्रोत्साहित होता है। इस साहित्यिक चक्र की गति हिंदी में अभी बहुत धीमी है। जो कुछ निर्माण और शिक्षा की मात्रा देश में है उसके देखते हुए भी प्रचार बहुत कम है।

इसलिए निर्माताओं के लिए पुरस्कार की मात्रा बहुत कम रह जाती है। बिक्री से जो लाभ होता भी है उसका बहुत कुछ अंश प्रकाशक के पास चला जाता है, लेखक के पास उसका बहुत कम भाग आ पाता है। यों लेखक-समुदाय के लिए पुरस्कार की मात्रा बहुत कम रह जाती है। पत्र-पत्रिकाओं के लेखकों को जो पुरस्कार मिलता है वह नहीं के बराबर है। पुस्तक-लेखकों को भी—यदि बिक्री जन साधारण की रुचि पर ही निर्भर हो बहुत कम पारिश्रमिक मिलता है। यदि अपनी कृतियों पर कुछ लेखक विशेषरूप से पुरस्कृत हुए हैं तो वे तभी जब उनका किसी प्रकाशन संस्था से घनिष्ठ संबंध रहा। यों फुटकल साहित्य-सेवी का लेखनी के ही सहारे जीविकोपार्जन करना असंभव सा हो गया है।

इस हीन परिस्थिति में लेखकों को साहित्यिक निर्माण की ओर आकृष्ट करने के लिए कतिपय साहित्यिक संस्थाओं के उद्योग से पुरस्कारों की योजना हुई है। इन पुरस्कारों का विवरण इस ग्रंथ में संगृहीत है। इनकी संख्या के बढ़ाने, नये विषयों पर पुरस्कार देने और पुरस्कार-निर्णय के नियमों को गुटबंदी के प्रभाव से बचाने की आवश्यकता है। योजना-निर्माता इस ओर भी ध्यान दें।

लेखक-समुदाय भी पारस्परिक सहयोग द्वारा प्रकाशक के हिस्से का लाभ आपस में बाँट सकता है। जिस प्रकार लेन-देन, क्रय-विक्रय के लिए सहयोग-समितियाँ हैं, उसी प्रकार लेखकों की सहयोगी प्रकाशन समितियाँ बन सकती हैं। इस ओर टीचर्स को आपरेटिव एज्युकेशनल जर्नल्स एंड पब्लिकेशंस लिमिटेड नामक संस्था के नाम से सफल उद्योग भी हो चुका है। यदि एक लेखक के लिए अपनी प्रकाशन संस्था स्थापित करना असंभव

सा है तो कई लेखकों का आपस में मिलकर सहयोगी प्रकाशन संस्था बनाना कठिन नहीं है। लेखक-समुदाय के लिए अपनी आर्थिक उन्नति के नाते यह उद्योग करना आवश्यक है।

यह मान्य है कि हिंदी की राष्ट्रीय योजना बहुत कुछ राजनैतिक परिस्थिति पर अवलंबित है। इस समय यह परिस्थिति अंधकार-मय अवश्य है, परन्तु भारत और उसकी राष्ट्रभाषा हिंदी का उज्ज्वल भविष्य बहुत निकट है। इसी विश्वास के सहारे इस ग्रंथ का निर्माण हुआ है और राष्ट्रीय योजना में हिंदीसेवियों के कार्यक्रम की रूप-रेखा दी गई है। प्रमुख हिंदी-सेवी संस्थाओं के सम्मिलित निर्णय की आवश्यकता है।

हिंदी-सेवी-संसार

(ज) खंड

परिशिष्ट एक

१. पिछले सम्मेलन के मुख्य प्रस्ताव
२. सम्मेलन के भूतपूर्व अधिवेशन
३. सम्मेलन के भूतपूर्व मंत्री

परिशिष्ट दो

अवशिष्ट-परिचय

परिशिष्ट एक

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

के

३१वें अधिवेशन हरिद्वार में स्वीकृत

मुख्य प्रस्ताव

प्रस्ताव १. सम्मेलन को यह जानकर अत्यंत खेद और क्षोभ होता है कि विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत एवं हिंदी अध्यापकों का वेतन और पद अन्य विषयों के अध्यापकों की अपेक्षा हीन है। अतः यह सम्मेलन भारत के समस्त विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के संचालकों से अनुरोध करता है कि वे इस हीनता और पक्षपात के भाव को दूर करें और हिंदी अध्यापकों का वेतन और पद अंग्रेजी आदि विषयों के अध्यापकों के समान ही रक्खें। प्रस्तावक—श्रीरामबालक शास्त्री; अनुमोदक श्रीरामधन शर्मा; समर्थक—डा० रामकुमार वर्मा; श्रीकालिदास कपूर।

प्रस्ताव २. सम्मेलन ने अपने अबोहर अधिवेशन में २७वें मंतव्य द्वारा अपनी स्थायी समिति को आदेश दिया था कि लिपि-सुधार-समिति का विवरण प्रांतीय सम्मेलनों, समाचारपत्रों तथा साहित्यिक संस्थाओं के पास विचारार्थ भेजे, और उनकी सम्मतियाँ आने पर लिपिसुधार समिति की बनाई योजना तथा आई हुई सम्मतियों पर विचार करे और अपने सुझावों सहित उस योजना को अगले अधिवेशन में उपस्थित करे। इस वर्ष विशेष परिस्थिति के कारण यह विषय स्थगित रक्खा जाय।— सभापति द्वारा।

प्रस्ताव ३. यह सम्मेलन भारत के विभिन्न प्रांतों तथा देशी राज्यों में फैले हुए साधु संतों का हिन्दी प्रचार में सहयोग प्राप्त करने के लिए पाँच सज्जनों की एक समिति नियुक्त करता है, जिसके संयोजक श्रीमहंत शान्तानंदनाथजी हों। प्रस्तावक— श्रीगंगाधर इंदूरकर, अनुमोदक—श्रीचंद्रशेखर वाजपेयी, समर्थक— श्रीइन्द्रेशचरणदास।

प्रस्ताव ४. सम्मेलन को यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ है कि हिन्दी के अनेक सेवकों को आर्थिक कष्ट के कारण जीवन यापन करना भी कठिन हो रहा है। यह सम्मेलन कार्य समिति को आदेश करता है कि वह सब स्थानों की स्थानीय संस्थाओं से ऐसे साहित्यिकों और साहित्य-सेवियों की सूची मँगावे और एक ऐसा सहायक कोष एकत्र करे जिससे साहित्य को प्रोत्साहन तथा सहायता दी जाय। प्रस्तावक—श्रीछबीलेलाल गोस्वामी; अनुमोदक—श्रीकन्हैयालालमिश्र 'प्रभाकर'; समर्थक—सर्वश्रीयश-पाल; गुलाबरायजी; हेमचंद्र जोशी; सीताराम चतुर्वेदी।

प्रस्ताव ५. यह सम्मेलन देश की म्यूनिसिपैलिटियों से विशेष कर तीर्थस्थानों की म्यूनिसिपैलिटियों से अनुरोध करता है कि वे मुहल्लों, लारियों आदि के नामों में तथा अपने अन्यान्य कार्यों में अधिकाधिक नागरी-लिपि और हिन्दी भाषा का प्रयोग करें। प्रस्ताव की प्रतिलिपि देश के प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की म्यूनिसिपैलिटियों के पास जोरदार शब्दों में भेज दी जाय। प्रस्तावक—श्रीगांगेय नरोत्तम शास्त्री; अनुमोदक—श्रीमनोहर-लालजी गौड़; समर्थक—श्रीकिशोरीदास वाजपेयी।

प्रस्ताव ६. यह सम्मेलन काशी विश्वविद्यालय के अधिकारियों को इसलिए बधाई देता है कि वहाँ इंटर कक्षाओं में सब विषय हिन्दी माध्यम से पढ़ाने तथा परीक्षा देने की व्यवस्था कर दी गई

है, और साथ ही यह सम्मेलन भारत के अन्य सभी विश्वविद्यालयों के अधिकारियों से साग्रह अनुरोध करता है कि वे एम० ए० तक की शिक्षा हिन्दी माध्यम द्वारा देने की व्यवस्था करें। इसी के साथ सम्मेलन भी अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुए विश्वविद्यालयों को इस संबंध में कार्यक्रम दे। प्रस्तावक—श्रीवशिष्ठजी; अनुमोदक—श्रीरमेशचन्द्र जैतिली; समर्थक—श्रीयशपाल; श्रीमती सावित्री दुलारेलाल; डाक्टर रामकुमार वर्मा; श्रीगुलाबराय।

प्रस्ताव ७. इस सम्मेलन का यह विश्वास है कि भारतीय संस्कृति का निवास हमारे जनपदों में है, अतः यह सम्मेलन एक समिति की स्थापना करता है जो भारत के विभिन्न जनपदों की भाषा, पशुपक्षी, वनस्पति, ग्रामगीत, जलविज्ञान, संस्कृति, साहित्य तथा वहाँ की उपज का अध्ययन कराने की योजना उपस्थित करे। उस समिति में निम्नलिखित विद्वान् हों—सर्वश्री वासुदेवशरण अग्रवाल, लखनऊ; बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़; राहुल सांकृत्यायन, बिहार; चन्द्रबली पाण्डेय, काशी; अमरनाथ झा, प्रयाग; जैनेन्द्रकुमार, दिल्ली; देवेन्द्र-सत्यार्थी, लाहौर। इस समिति को अधिकार होगा कि वह आवश्यकतानुसार अन्य सदस्यों को भी सम्मिलित कर ले तथा जिस जनपद में वह काम करे वहाँ के भी चार सज्जनों तक को इस समिति में सम्मिलित कर ले।—प्रस्तावक—श्रीआनन्द कौशल्यायन; अनुमोदक—पंडित अमरनाथ झा।

प्रस्ताव ८. यह सम्मेलन निश्चय करता है कि बाबू पन्नालाल जी भल्ला रईस हरिद्वार, महंत शांतानंदनाथजी और महंत घनश्यामगिरि द्वा[illegible] प्रदत्त चाँदी के रुपयों से सभापति श्रीमाखनलालजी का तुलाद[illegible] हो, और इन रुपयों की निधि से बीसवीं

शताब्दी के स्वर्गीय साहित्यिकों के साहित्य का प्रकाशन हो; इस निधि का नाम 'हरिद्वार सम्मेलन निधि' होगा; इसकी देख-भाल लेखकों का क्रम और ग्रंथों के निर्माण का कार्य ११ सज्जनों की उपसमिति करे, जिनमें से ५ प्रतिनिधि प्रतिवर्ष सम्मेलन नियुक्त करेगा और दानियों की ओर से महंत शांतानंद-नाथ, महंत घनश्यामगिरि, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, पं० सीताराम चतुर्वेदी, पं० कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, आजीवन प्रनिनिधि होंगे तथा पं०माखनलाल चतुर्वेदी आजीवन प्रधान होंगे।

प्रस्ताव ६. अपने अधिवेशनों में सम्मेलन ने रेडियो विभाग का ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि उसकी भाषा, नीति हिंदी की दृष्टि से पक्षपातपूर्ण और हानिकर है और इस संबंध में आवश्यक सुधार करने के लिए कुछ सुझाव भी बतलाये थे। खेद का विषय है कि रेडियो विभाग के अधिकारी वर्ग ने इधर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और अपनी उर्दू पक्षपातिनी नीति पर ही अग्रसर होता रहा।

अतः सम्मेलन का यह अधिवेशन एक बार फिर भारत सर-कार के ध्वनिविक्षेप विभाग के अध्यक्ष से अनुरोध करता है कि वह हिंदी के साथ होनेवाले इस दैनिक अन्याय को शीघ्रातिशीघ्र दूर कर दे। सम्मेलन यह भी निश्चय करता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उक्त अध्यक्ष महोदय के पास निम्नलिखित सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल भेजा जाय।

पं० अमरनाथ झा, माननीय प्रकाशनारायण सप्रू, श्रीरामचंद्र शर्मा, दिल्ली।

सम्मेलन हिंदीभाषियों से भी अनुरोध करता है कि वे अपना असंतोष जताने के लिए व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से तब तक बराबर उद्योग करते रहें जब तक रेडियो विभाग हिंदी के

साथ अन्याय करना बंद न कर दे, और हिंदी को अपने विभाग में उचित स्थान न दे दे।

यह सम्मेलन यह भी निश्चय करता है कि समस्त भारत में एक दिन रेडियो भाषा विषय दिवस मनाया जाय और उसकी सूचना उक्त विभाग के अध्यक्ष तथा सम्मेलन को दी जाय।—सभापति द्वारा।

प्रस्ताव १०. यह सम्मेलन अपनी साहित्य समिति तथा नागरी प्रचारिणी सभा आदि संपन्न तथा कर्मठ संस्थाओं से अनुरोध करता है कि वे विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जानेवाले सभी विषयों के उपयुक्त ग्रंथ प्रकाशित करें। और इसके लिए विद्वानों तथा संस्थाओं से प्रतिनिधित्व माँगकर एक समिति बनाई जाय, जो यह निर्णय करे कि किस विषय पर कौन कौन से ग्रंथ किन किन विद्वानों के द्वारा लिखाए जायँ।—सभापति द्वारा।

प्रस्ताव ११. यह सम्मेलन, बोर्ड आफ सेकेंडरी एजूकेशन दिल्ली के इस निश्चय पर अत्यंत खेद प्रकट करता है कि नव प्रस्तावित वार्षिक योजना में ९वीं से ११वीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम हिंदी के स्थान पर अंग्रेजी रक्खा जाय। सम्मेलन उक्त बोर्ड से यह अनुरोध करता है कि वह अपने इस निश्चय को शीघ्र हटाकर हिंदी को ही शिक्षा का माध्यम बनाए रक्खें। प्रस्तावक—श्रीवेदव्रतजी; अनुमोदक—श्रीरामधन शर्मा।

प्रस्ताव १२. श्रीमंत ग्वालियर नरेश ने अपने राज्य के कानून ग्रंथों के लिए जिस हिंदी भाषा को स्वीकार कर लिया है उसका यह सम्मेलन स्वागत करता है, परंतु इधर राज्य के भीतर तथा बाहर की कुछ शक्तियाँ उस भाषा के विरुद्ध आंदोलन कर विपरीत वातावरण उत्पन्न कर रही हैं और दुर्भाग्य से इस अनुचित आंदोलन के प्रभाव में आकर राज्य ने भी कानूनी ग्रंथों की भाषा का संशोधन करने को एक उपसमिति बना दी है।

यह सम्मेलन ग्वालियर नरेश को विश्वास दिलाता है कि श्रीमंत की सरकार के कानूनी ग्रंथों की भाषा जो स्वीकार कर ली गई है, वह सर्वथा न्यायोचित तथा सामयिक है। उसमें किसी प्रकार के परिवर्तन तथा संशोधन को यह सम्मेलन सर्वथा अनावश्यक और अनुचित समझता है। ग्वालियर राज्य की लोकभाषा वही हिंदी है जिसका उपयोग वर्तमान कानूनी ग्रंथों में है। और उस भाषा में किसी भी अनुचित परिवर्तन से ग्वालियर राज्य तथा समस्त हिंदी संसार में क्षोभ फैलेगा। प्रस्तावक—श्रीअनोखेलाल अरझरे; समर्थक—श्रीसीताराम चतुर्वेदी।

प्रस्ताव १३. यह सम्मेलन हिंदी भाषी राज्यों की जनता से अनुरोध करता है कि हिंदी को राज्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए राजाज्ञा प्राप्त करने का यत्न करे अतएव ऐसे प्रतिनिधि-मंडल बनाए जायँ जो उस दिशा में उद्योग करें तथा प्रांतीय और अर्वाचीन हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए भी उनकी सहायता प्राप्त करें। प्रस्तावक—श्रीअनोखेलाल अरझरे; अनुमोदक—श्रीदयाशंकर दुबे।

प्रस्ताव १४. अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन इस कठिनाई को अनुभव करता है कि ग्रामीण लेखकों को उचित मार्ग प्रदर्शन और प्रोत्साहन पूर्ण रूप से नहीं मिल पाता, अतः सम्मेलन निम्नलिखित महानुभावों की एक समिति नियुक्त करता है, जो उस संबंध में आवश्यक योजना तैयार कर तीन तीन माह के भीतर उपस्थित करे—

पं० अमरनाथ झा, श्रीदेवेंद्रसत्यार्थी, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी। प्रस्तावक - श्रीमाहेश्वरीसिंह 'महेश'; समर्थक—श्री पं० बालकरामजी।

सम्मेलन के भूतपूर्व अधिवेशन
तथा उनके सभापति

संख्या	स्थान	सभापति	संवत्
प्रथम	काशी	महामना पं० मदनमोहन मालवीय	१९६७
द्वितीय	प्रयाग	पं० गोविंदनारायण मिश्र	१९६८
तृतीय	कलकत्ता	उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'	१९६९
चतुर्थ	भागलपुर	महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद)	१९७०
पञ्चम	लखनऊ	पं० श्रीधर पाठक	१९७१
षष्ठ	प्रयाग	रायबहादुर डॉ० श्यामसुंदरदास, बी० ए०	१९७२
सप्तम	जबलपुर	महामहोपाध्याय पाण्डेय रामावतार शर्मा, साहित्याचार्य	१९७३
अष्टम	इंदौर	कर्मवीर मोहनदास कर्मचंद गांधी	१९७४
नवम	बंबई	महामना पं० मदनमोहन मालवीय	१९७६
दशम	पटना	रायबहादुर पं० विष्णुदत्त शुक्ल	१९७७
एकादश	कलकत्ता	श्री डा० भगवानदास, एम ए०, डी लिट्	१९७७
द्वादश	लाहौर	पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, एम० आर० ए० एस०	१९७८

त्रयोदश	कानपुर	बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, एम० ए, एल-एल० बी०	१९७९
चतुर्दश	दिल्ली	पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	१९८०
पञ्चदश	देहरादून	पं० माधवराव सप्रे	१९८१
षोडश	वृन्दावन	पं० अमृतलाल चक्रवर्ती	१९८२
सप्तदश	भरतपुर	महामहोपाध्याय राय-बहादुर पं० गौरीशङ्कर हीराचंद ओझा	१९८३
अष्टादश	मुजफ्फरपुर	पं० पद्मसिंह शर्मा	१९८५
उन्नीसवाँ	गोरखपुर	श्रीगणेशशङ्कर विद्यार्थी	१९८६
बीसवाँ	कलकत्ता	श्रीबाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर', बी० ए०	१९८७
इक्कीसवाँ	झाँसी	श्रीकिशोरीलाल गोस्वामी	१९८८
बाईसवाँ	ग्वालियर	रावराजा पं० श्यामबिहारी मिश्र, एम० ए०	१९८९
तेईसवाँ	दिल्ली	महाराज सर सयाजीराव गायकवाड़, बड़ौदा	१९९०
चौबीसवाँ	इंदौर	महात्मा मोहनदास कर्मचंद गांधी	१९९२
पच्चीसवाँ	नागपुर	राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद	१९९३
छब्बीसवाँ	मद्रास	सेठ जमनालाल बजाज	१९९४
सत्ताइसवाँ	शिमला	पं० बाबूराम विष्णु पराडकर	१९९५
अट्ठाइसवाँ	काशी	पं० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी	१९९६
उन्तीसवाँ	पूना	श्रीसंपूर्णानंद	१९९७
तीसवाँ	अबोहर	पं० अमरनाथ झा	१९९८

सम्मेलन के भूतपूर्व

प्रधान मन्त्री

श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन	सं० १९६७—७७
प्रो० व्रजराज	,, १९७७—८०
पं० रामजीलाल शर्मा	,, १९८०—८५
पं० कृष्णकांत मालवीय	,, १९८५—८८
पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल	,, १९९०—९२
सरदार नर्मदाप्रसादसिंह	,, १९९२—९३
डा० बाबूराम सक्सेना	,, १९९३—९७
डा० रामप्रसाद त्रिपाठी	,, १९९८—

परिशिष्ट दो

अनिरुद्ध शास्त्री, एम० ए०—प्रसिद्ध विद्वान् एवं सुकवि ; ज०—१९०१ ; रच०—वीणापाणि, ज्योतिर्मयी, दोहावली, अभिनवमेघ; अप्र०—अभिनवशकुंतला ; प०—सदर बाजार, झाँसी।

अभयदेव—हिंदी-संस्कृत के अध्ययनशील आर्यसमाजी विद्वान्;कई महीने तक मासिक 'अलंकार' के संपादक रहे ; रच०—वैदिक विनय-तीन भाग, ब्राह्मण की गौ, तरंगित हृदय, वैदिक उपदेशमाला ; कई साल तक त्रैमासिक 'अदिति' के संपादक-प्रकाशक रहे ; प०—'अदिति'-कार्यालय, पो० बा० ८५, दिल्ली।

अमरसिंह ठाकुर, मेजर जनरल, रावबहादुर—आप स्व० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के प्रिय शिष्यों में से हैं और हिंदी की उन्नति में विशेष योग देते हैं, प०—अजयराजपुरा, जयपुर।

अमृतवाग्भव, आचार्य—सा०—संस्था०, श्रीस्वाध्यायसदन ; संस्कृत-साहित्य धर्मशास्त्र, न्याय तथा दर्शन आदि के सुयोग्य विद्वान् ; रच०—श्रीआत्मविलास, श्रीराष्ट्रालोक, श्रीपरशुरामस्तोत्र, श्रीसह्याद्रीप हृदय और श्रीपंचस्तवी ; इसके अतिरिक्त मत्स्यक्रांताशतक आदि अप्रकाशित गूढ़ साहित्यिक अप्र० रचनाएँ ; चि०—संस्कृत के अतिरिक्त आप हिंदी साहित्य के प्रेमी, वीतराग महात्मा और सफल उपासक भी हैं ; प०—सोलन, पंजाब।

आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय, एम० ए०, डी० लिट्०—प्राकृत साहित्य के प्रकांड विद्वान् एवं धुरंधर लेखक ; जैन सिद्धांत के कई वर्षों तक संपादक रहे ; आपने प्राकृत एवं पिशाची

भाषा की अनेक पुस्तकों का संपादन किया है जिनका इतिहासकारों में काफी सम्मान है; प०—अध्यापक, राजाराम कालेज, कोल्हापुर।

इन्द्रदेवसिंह रावत 'हरेश', सा० र०—प्रसिद्ध ग्राम-गीत-कार ; अप्र० रच०—किसानगीत, राष्ट्रगीत ग्राम्यगीत, वियोगी ; प०—श्रीमारवाड़ी विद्यालय, देवरिया, गोरखपुर।

इन्द्रलाल शास्त्री—प्रसिद्ध जैन धर्म प्रचारक एवं सुलेखक ; लगभग १६ वर्षों तक 'खंडेलवाल जैन हितेन्दु' का संपादन किया ; संपा० रच०—चरित्रसार, आचार-सार, नीति-सार; प०—जयपुर।

ईश्वरदत्त—वि० लं०, डाक्टर, पी-एच० डी०—अलंकार शास्त्र के प्रकांड पंडित एवं हिंदी अंग्रेजी आदि के सुप्रसिद्ध विद्वान् ; रच०—अरस्तू का रेचनवाद, काव्य द्वारा रोगनिवृत्ति, करुणरस और आनंदानुभूति ; प०—अध्यक्ष हिंदी विभाग, पटना कालेज, पटना।

ईश्वरीप्रसाद माथुर, बी० ए०—साहित्य प्रेमी लेखक ; ज०—१६०६, मेरठ; साप्ताहिक 'जयाजी प्रताप' के संपादकीय विभाग में काम किया ; रच०—जेबुन्निसा के आंसू, संगीत-सम्राट् तानसेन ; प०—लश्कर, ग्वालियर।

ईश्वरीप्रसादसिंह—प्रसिद्ध साहित्यसेवी विद्वान् ; साहित्य-आश्रम के संस्थापक ; कई वर्षों तक 'झारखंड' के प्रकाशक-संपादक रहे ; कई अप्रकाशित रचनाएँ ; प०—गुमला, रांची।

उग्रसेन—एम० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध जैनी लेखक ; रच०—धर्मशिक्षावली—चार भाग ; पुरुषार्थसिद्धयुपाय, रत्नकाण्ड श्रावकाचार, आप्तस्वरूप, नारीशिक्षादर्श, जीवंधर चरित ;

प०—सोहाना, रोहतक।

उदयराजसिंह, राजकुमार—प्रसिद्ध नवयुवक साहित्यिक एवं सहृदय कहानी-लेखक; रच०—नवतारा; प०—सूर्यपुरा, शाहाबाद, बिहार।

उदयसिंह भटनागर, एम० ए०—मेवाड़ के उदीयमान साहित्यसेवी; शि०—हिंदू विश्वविद्यालय, काशी; रच०—जौहर ज्वाला और अनेक लेख, कविताएँ तथा एकांकी नाटक; प्रि० वि०—इतिहास और प्राचीन साहित्य की खोज; प०—अध्यापक महाराजा कालेज, जयपुर।

उपेंद्रशंकरप्रसाद द्विवेदी, सूबादार—साहित्य-प्रेमी रईस व ताल्लुकेदार; ज०—१६१२; प्रकृतिवर्णन एवं हास्यरस की कविताएँ बड़ी कुशलता से करते हैं; कई सुंदर कविताएँ प्रकाशित हैं; प०—बोरधा, कालाकार, जिला होशंगाबाद, मध्य प्रांत।

उमादत्त मिश्र—संस्कृत और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान्; ज०—१६१६; रच०—सनातनधर्म साहित्य; गीता-धर्म और धर्म परित्याग; वि०—आपने आयुर्वेदाचार्य की उपाधि भी प्राप्त की है; प०—सनातन-धर्म संस्कृत कालेज, पाँड़े बाजार, आजमगढ़।

उमाशंकरराम त्रिपाठी 'उमेश':—गोरखपुर निवासी उदीयमान लेखक; ज०—१६२१; रच०—अप्र०—काव्य संग्रह; प्रि० वि०—कविता; प०—सरया, उनवल, गोरखपूर।

ऋषभचरण जैन—यशस्वी उपन्यासकार एवं गद्य-लेखक; 'सचित्र दरबार', 'चित्रपट' के संस्थापक; रच०—भाई, बिखरे भाग्य, कैदी, मास्टरजी, मोती, दिल्ली का व्यभिचार, गदरवाणी; व०—इस समय आप एक फिल्म-कंपनी के डाइरेक्टर हैं जिसके

द्वारा निर्मित कई चित्र काफी प्रसिद्ध हैं ; आपने 'मानवधर्म' का भी प्रचार किया है; प०—दरियागंज, दिल्ली।

एस० रामचंद्र शास्त्री, बी० ओ० एल०—अहिंदी प्रांत के हिंदी प्रेमी विद्वान् एवं सुलेखक; ज०—१६०५; तंजौर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की शिक्षा समिति के सदस्य ; रच०—हिंदुस्तानी व्याकरण, हिंदी व्याकरण, सरल हिंदी व्याकरण-तीनभाग; प्रि० वि०—भाषा विज्ञान, संगीत ; प०—लेक्चरर इन हिंदी, वीमेन क्रिश्चियन कालेज कैथेड्रल पोस्ट, मद्रास।

ओमप्रकाश भार्गव 'उमेश', बी० एस-सी०—कहानी-लेखक और कवि ; ज०—१६१४ ; शि०—लश्कर और विक्टोरिया कालेज, उज्जैन; रच०—तपस्विनी (कहा०), जेबुन्निसा के आँसू, हिमांचल के अंचल में ; प०—लश्कर, ग्वालियर।

कमलाप्रसाद वर्मा— प्रसिद्ध कवि, एवं सुलेखक ; ज०—१६ जनवरी १८८३ ; विहार-बंधु के भू० पू० संपादक; पटना सिटी सेवा-समिति के मंत्री ; रच०—भयानक भूल, कुलकलंकिनी, परलोक की बातें, अध्यात्मिक रहस्यों में सात्विक जीवन, रोम का इतिहास, राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद, निर्बल सेवा, करबला, हिमालय, कुछ भूलती-भागती यादें ; वि०—आपके 'करबला' काव्य पर २००) का पुरस्कार मिला है; प० — कमलाकुंज, गुलजार बाग, पटना।

कल्याणसिंह, रावराजा-बहादुर—आपने शासनभार ग्रहण करने के बाद अदालतों में नागरी लिपि को मुख्य स्थान दिया ; सदैव हिंदी की उन्नति में दत्तचित्त रहते हैं; प०—सीकर, राजपूताना।

कृष्णप्रकाश अग्रवाल, बी० एस-सी, एल-एल० बी०—इतिहास एवं साहित्य

के मननशील विद्वान्; ज०—१९१० ; रच०—मानव ; कई एकांकी नाटक, कविता-संग्रह अप्रकाशित हैं ; प०—बाँसमंडी, मुरादाबाद।

कांतिचंद्र सौनरिक्सा—विचारशील कहानी-उपन्यास लेखक और उत्साही पत्रकार ; कलकत्ते से अनेक बार साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किए ; अप्र० रच०—विविध दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रों में बिखरी सुंदर कहानियों के संग्रह ; वि०—आपकी श्रीमतीजी भी सुंदर कहानियाँ लिखती हैं ; प०—कलकत्ता।

काशीरामशास्त्री 'पथिक', सा० र०—प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक ; शि०—लाहौर ; आजकल आप सनातनधर्म कन्या महाविद्यालय में अध्यापक हैं ; रच०—"मुक्तिगान" तथा अन्य काव्य ग्रंथ ; प०—पोखरी ग्राम पोष्ट कैन्यूर, गढ़वाल।

के० गणपति भट्ट—अहिंदी प्रांत के हिंदी-प्रेमी प्रचारक ; ज०—२५ जनवरी १९२० ; लगभग चार साल से मैसूर में हिंदी साहित्य का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं ; प०—बेंगलोर।

के० नारायणाचार्य, सा० वि०—प्रसिद्ध राष्ट्रभाषाप्रचारक; मंत्री कर्नाटक संघ ; मधुगिरि हिंदी प्रचार संघ और मैसूर रियासत हिंदी प्रचार समिति के सदस्य ; रच०—'सुब्बणा' का हिंदी अनुवाद ; कई आलोचनात्मक लेख ; प०—मधुगिरि, दक्षिण।

गजाधर सोमानी—प्रसिद्ध पत्रकार, सुलेखक एवं मननशील विद्वान् ; दैनिक भारतमित्र के संपादक रहे ; श्रीसत्यनारायण पुस्तकालय के संस्थापक ; अनेक सामयिक लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ; प०—श्रीनिवास, काटनमिल, बंबई।

गणेशप्रसाद द्विवेदी, बी० ए०, एल-एल० बी०—

प्रसिद्ध एकांकी नाटककार एवं समालोचक; रच०—हिंदी साहित्य का गद्यकाल, दगा; कई आलोचनात्मक लेख-संग्रह; प०—प्रयाग।

गिरिजाकुमार माथुर, एम० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध कवि एवं गायक; ज०—१९१७; बुंदेलखंडप्रांतीय कवि परिषद् के सम्मानित सदस्य; प्रायः लखनऊ रेडियो स्टेशन से कविता-पाठ करते हैं; अनेक सुंदर कविताएँ प्रकाशित; प०—झाँसी।

गुंचीलाल तिवारी, सा० वि०—प्रसिद्ध हिंदी-प्रचारक; ज०—१८९८; रच०—शिक्षा-पद्धति, अच्छी बातें; प०—हरदा, मध्य-प्रांत।

गुरुप्रसाद टंडन, एम० ए०, एल-एल० बी०—श्रद्धेय श्रीपुरुषोत्तमदास टंडन के साहित्य-सेवी सुपुत्र; ज०—१९०६, प्रयाग; शि०—प्रयाग, लाहौर; द्विवेदी मेला प्रयाग के प्रबंध मंत्री रहे; कई वर्षों तक हिंदी साहित्य सम्मेलन के मंत्री रहे; रच०—ब्रजभाषा का साहित्य, मीराबाई का गीति काव्य; मैटिरियल फार हिस्टोरी आफ दि पुष्टि-मार्ग; वीररस की अनेक कविताएँ; प्रि० वि०—भक्ति साहित्य का अध्ययन एवं आलोचना; प०—प्रोफेसर, विक्टोरिया कालेज, ग्वालियर।

गुलाबचंद गोयल 'प्रचंड', सा० र०—प्रसिद्ध गद्य लेखक; ज०—२२ जुलाई १९२०; कई वर्ष तक 'नवयुवक' का संपादन; रच०—दीपिका; प्रि० वि०—गद्य-गीत; प०—२६ यशवंत रोड, इंदौर।

गोपालसिंह, ठाकुर लेफ्टिनेंट कर्नल, एम० बी० ई०—प्रसिद्ध साहित्यसेवी एवं सहृदय सुलेखक; ज०—१९०२ बदनोर; प्रताप पुस्तकालय के संस्थापकों में एक; अदालतों में हिंदी-प्रचार

पर विशेष जोर दिया है; रच०—जयमल वंशप्रकाश प्रथम भाग; आपके इस खोजपूर्ण ग्रंथ की काफी प्रशंसा हुई है; प०—चीफ आफ बदनोर, बदनोर, मेवाड़।

गोवर्द्धनलाल काबरा, शाह—हिंदी एवं संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् एवं सुलेखक; कई हिंदी संस्थाओं के सहयोगी हैं; अनेक विद्वत्तापूर्ण लेख यत्र-तत्र पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित; प०—कुचामनी हवेली, जोधपुर।

गौरीशंकरशर्मा—द्विवेदी युग के वयोवृद्ध कवि एवं सुलेखक; रच०—व्रतचारिणी, वीर हमीर, मेवाड़ के तीन रत्न; अनेक साहित्यिक लेख एवं कविताएँ; प०—गढ़ाकोटा, सागर।

गंगादयाल त्रिवेदी—प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार; युक्तप्रांतीय हिंदी पत्रकार सम्मेलन की कार्यकारिणी के उत्साही सदस्य; संपा०—साप्ताहिक 'हलचल', कन्नौज; अप्र० रच०—अनेक स्फुट निबंध-संग्रह; प०—कन्नौज।

घनश्यामदास यादव—प्रसिद्ध कवि एवं साहित्यप्रेमी विद्वान्; ज०—१९०९; अनेक भावपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित; कविपरिषद्; मोठ के सभापति हैं; प०—झाँसी।

चंद्रकिशोरराम 'तारेश'—बाल-साहित्य के प्रसिद्ध कवि और लेखक; ज०—१९१२; रच०—तारिका-कविताएँ; इसके अतिरिक्त अनेक सुंदर बालोपयोगी रचनाएँ यत्रतत्र प्रकाशित हुई हैं; प०—मुख्तार, समस्तीपुर कोर्ट, दरभंगा, बिहार।

चंद्रभानुसिंह जूदेव 'रज', दीवान बहादुर, कैप्टेन—व्रजभाषा के श्रेष्ठ सुकवि; रच०—प्रेम सतसई, नेहनिकुंज, भ्रममानलीला;

वि०—आपकी सरस कविता का विद्वत्समाज में काफी मान है ; प०—रूलिंग चीफ आव गरौली, बुंदेलखंड ।

चंद्रसिंह झाला 'मयंक'—प्रसिद्ध समालोचक एवं कवि ; ज०—१६०८ ; र०—भारतीय संगीत, उमर की काव्यकला, सौंदर्य-गर्विता पद्मिनी, उस पार ; कई साहित्यिक निबंध एवं कविताएँ ; प०—१२, खातीपुरा रोड, इंदौर ।

छोटेलाल शर्मा, 'भारद्वाज', सा० वि०—प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक ; ज०—१ जुलाई १६२६ ; र०—धारनरेश जगदेव, संकल्प, परीक्षा, रेखा ; प्रि० वि०—कहानी, काव्य ; प०—पहाड़गढ़ जागीर, ग्वालियर स्टेट ।

जगदीश, एम० ए०—प्रसिद्ध साहित्यसेवी, गद्यगीत-कार एवं राजनीतिज्ञ-विद्वान् ; ज०—११ मार्च १६०६ ; प्रदीप-प्रेस के संपादक ; मासिक 'प्रदीप' के संपादक-संचालक ; र०—ड्रामा, चेतना ; वि०—आजकल राजनीति-इतिहास पर दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिख रहे हैं ; प०—'प्रदीप' कार्यालय, मुरादाबाद ।

जगदीशनारायण तिवारी—हिंदी-संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक ; ज०—१८६८ ; उपन्यास तरंग-मासिक और सनातन धर्म-साहा० के भू० पू० संपा० ; र०—कृष्णोपदेश, अंतर्नाद, दुर्योधनवध, अधीर-भारत, गोविलाप, चरित्र-शिक्षण, शैतान की शैतानी, प्राथमिकविज्ञान, बाल रामायण, बाल भारत ; प०—प्रधान-हिंदी अध्यापक, सनातन धर्म विद्यालय, कलकत्ता ।

जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार ;

ज०—१९१७, जालौन; शि०—चंपाअग्रवाल हाई स्कूल मथुरा और डी० ए० वी० कालेज कानपुर; ले०—१९३७; संपादक—'जागृति' १९३९—४०, 'व्रजभारती' १९४०—४१, 'माया सीरीज' १९४१—४२; 'माया' और 'मनोहर कहानियाँ' के संपादकीय मंडल में भी रहे; १९४३ से 'मधुकर' झाँसी में काम कर रहे हैं; बुंदेलखंडी विश्वकोष के भी संपादक-मंडल में रहे; हिंदी-साहित्य-परिषद् मथुरा के सहायक और व्रज-साहित्य-मंडल के संयुक्त मंत्री रहे; प्रि० वि०—पत्रकार-कला, राज और समाजनीति; प०—टीकमगढ़ झाँसी।

जगदीशप्रसाद 'दीपक'—साहित्य-प्रेमी हिंदी लेखक, प्रचारक और पत्रकार; मासिक शांति के भूतपूर्व संपादक; संस्थापक 'मीरा'; प०—अमर प्रेस, अजमेर।

जयनाथ 'नलिन'—पंजाब के कहानी-लेखक और भावुक कवि; अप्र० रच०—विविध पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी कविताओं और कहानियों के दो संग्रह; प०—अमृतसर।

जयंतीप्रसाद वर्मा—उर्दू-फारसी के प्रसिद्ध हिंदी कवि; ज०—१८८९; पहले आप उर्दू-फारसी में कविता करते थे अब हिंदी में कविता करते हैं; कई भावपूर्ण कविताएँ प्रकाशित हैं; प०—झाँसी।

जीतमल लूणिया—कर्मठ साहित्य-सेवी, रईस, सुलेखक एवं मननशील विद्वान्; ज०—१८९५; हिंदी-साहित्य-मंदिर, सस्ता साहित्य मंडल, सस्ता साहित्य प्रेस के संस्थापक; सार्वजनिक वाचनालय एवं रात्रिपाठशाला के जन्मदाता; हिंदी-साहित्य कुल और जैन नवयुवक मंडल के सभापति; ओसवाल पत्र के संपादक;

मालवमयूर, 'त्यागभूमि' का कई वर्षों तक संपादन किया ; रच०—नागपुर की कांग्रेस, कराची की कांग्रेस, स्वतंत्रता की झनकार, नवयुवको स्वाधीन बनो, वि०—कई बार आप म्युनिसपल कमिश्नर रहे; प०—ब्रह्मपुरी, अजमेर।

झबुरीरामचरण पहाड़ी—गोवादी प्रसिद्ध साहित्यिक ; ज०—१९०२ ; अ० भा० गोशुभचिंतक मंडल, गया के मंत्री ; पाक्षिक 'गोशुभचिंतक' के प्रकाशक ; गोसंबंधी अनेक भावपूर्ण रचनाएँ ; प०—मैखलोटगंज, गया।

दामोदर 'युगल जोड़ी', सा० र०—गाजीपूर निवासी सुप्रसिद्ध वीर रस के लेखक तथा उदीयमान कवि; ज०—१९१० ; र०—'रघुचरित', 'पण' और 'प्रियतम की वीणा'; इसके अतिरिक्त अन्य अप्रकाशित काव्य-संग्रह तथा ग्रंथ ; वि०—मुख्य कार्य साहित्य सेवा तथा स्थानीय सभाओं में सहायता दान ; प०—आलमगंज, दिलदार नगर, गाजीपूर।

दामोदरदास खत्री—हिंदी के वयोवृद्ध प्रसिद्ध कवि; ज०—१८८१ ; भक्तिरस की अनेक कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं ; प०—हेडमास्टर, मिडिल स्कूल, मऊरानीपुर, झाँसी।

दुर्जनसिंह राजा—साहित्य-प्रेमी, हिंदी के अधिकारों के समर्थक और अध्ययनशील विद्वान् ; सा०—स्थानीय साहित्यिक और सार्वजनिक संस्थाओं के सहायक और प्रतिष्ठित सदस्य ; रच०—श्रीमद्भगवद्गीता-सिद्धांत ; अप्र०—विभिन्न सामयिक विषयों पर लिखे लेख ; प०—जागीरदार, पो० जावली, अलवर।

देवीदयाल दुबे—सुप्रसिद्ध हिंदी लेखक ; ज०—१९०६ ; कांग्रेस के भूतपूर्व

संपादक ; रच०—गाँधीयुग का अंत, जाग्रत स्वप्न ; प०—संपादक 'जनमत', इटावा।

देवीसिंह ठाकुर, साहब—आप हिंदी के विशेष प्रेमी हैं और कई पुस्तकों की रचना की है ; सदैव हिंदी की उन्नति में दत्तचित्त रहते हैं ; प०—चौमू, जयपुर, राजपूताना।

धन्यकुमार जैन—लब्ध-प्रतिष्ठ अनुवादक, प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक ; बंगला के श्रेष्ठ उपन्यासकार, शरत और कवींद्र रवींद्र की अधिकांश पुस्तकों का आपने अनुवाद किया जो काफी समादृत हैं; इस समय 'परवार बंधु' के सहकारी संपादक हैं, कई वर्षों तक आप 'विशालभारत' के सहयोगी संपादक रह चुके हैं; प०—कटनी, मालवा।

नरोत्तमप्रसाद नागर—प्रसिद्ध यथार्थवादी कहानी लेखक एवं उपन्यासकार ; उच्छृंखल, चकल्लस, दरबार आदि के भूतपूर्व संपादक ; 'उच्छृंखल-प्रकाशन' के संचालक; वर्तमान संपादक 'अभ्युदय,साप्ता० ; रच०—गृहस्थी के रोमांस, एकमातावत, दिन के तारे, शुतरमुर्ग पुराण ; अनेक कहानी एवं लेख-संग्रह; प०—इंडियन प्रेस, प्रयाग।

नलिनी मोहन सान्याल, एम० ए०, भाषा-तत्त्वरत्न—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, भाषा विज्ञान के पंडित और प्राचीन हिंदी कविता के आलोचक; शि०—कलकत्ता विश्वविद्यालय से, आपने साठ वर्ष की अवस्था में हिंदी में एम० ए० पास किया ; रच०—समालोचना-तत्त्व, भक्तप्रवर सूरदास, भाषा-विज्ञान ; अप्र०—अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलोचनात्मक लेखों के दो-तीन संग्रह; प०—नदिया, बंगाल।

नवमीलाल देव, वैद्यरत्न—प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी वैद्य एवं हिंदी के उत्साही प्रचारक; ज०—१८७७; रच०—गाँधी

गौरव, खादी महत्त्व, दयानंद महिमा; अप्र०—सुलभ चिकित्सा, भारतीय न्यायदर्शन; सार्वजनिक हिंदी पुस्तकालय के जन्मदाता; प०—डाल्टनगंज, पलामू।

नाथसिंह ठाकुर, कैसरे-हिंद—साहित्य-प्रेमी, संस्कृत के अध्ययनशील विद्वान् और हिंदी के अधिकारों के समर्थक; ज०—अजमेर ; रच०—संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथों के सार-रूप विस्तृत वैद्यक ग्रंथ; वि०—स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं के हिंदी-प्रचार-प्रसार कार्य के उत्साही समर्थक हैं ; प०—कावेड़ा, अजमेर।

नारायणसिंह यादव, बी० ए०; राजस्थान के उत्साही हिंदी प्रेमी ; माधव विद्यार्थिगृह के भू० पू० अध्यक्ष ; 'क्षात्रधर्म' के भू० पू० संपादक-संचालक ; रच०—भक्तशिरोमणि शबरी, क्या भागवत अश्लील है ? प०—करौली, राजपूताना।

पतंजलि 'हर्ष' आयुर्वेदोपाध्याय—हिंदी के अधिकारों के समर्थक और उसके प्रचार-प्रसार में संलग्न ; ज०—१९१६ ; सा०—अनेक संस्थाओं के उत्साही कार्यकर्त्ता ; हिंदी-प्रचार में संलग्न; प०—बदायूँ।

फुंदनलाल खत्री 'भैरव'—भक्तिरस के प्रसिद्ध कवि; ज०—१८६२ ; भगवद्भक्ति संबंधी अच्छी कविताएँ लिखी हैं ; प०—प्रधानाध्यापक, तालबेहट, झाँसी।

बदरीदत्त झा, ए० एम० एम० हिंदी-अँगरेजी के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं सुकवि ; ज०—१९०८ ; 'सुधानिधि' का कई वर्षों से संपादन कर रहे हैं; आयुर्वेद संबंधी अनेक पुस्तकें एवं कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं ; प०—प्रोफेसर, बुंदेलखंड आयुर्वेदिक कालेज, झाँसी।

बद्रीप्रसाद 'ईश'—मध्यप्रांतीय प्रसिद्ध कवि और

साहित्य-प्रेमी लेखक; जo—१८८८ ; रच०—राधिका-बत्तीसी, दुख-विनाशन कृष्ण-विनय, ज्योतिप-तरंग, राज-नीति-प्रकाश, सुधार-सुधा-तरंगिणी, फाग रामायण, संगीत भजन-माला, संग्रह रामायण, सर्वजाति-सुधार ; आदि लगभग दो दरजन ग्रंथ; अप्र०-आपके अप्रकाशित ग्रंथों की संख्या भी लगभग इतनी ही है ; प०—बरौदा, पना-गर, जबलपुर।

बांकेलाल अग्रवाल, बी० ए०—प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक ; ज०—१८६८ ; व्रजभाषा एवं खड़ी बोली में लिखे हुए आपके दोहे काफी प्रसिद्ध हैं ; प०—अध्यापक, मेकडानल हाई स्कूल, झाँसी।

बाबूलाल तिवारी, सा० र०—प्रसिद्ध कवि और सुलेखक ; ज०—१६१५ ; बुंदेलखंड नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक ; आपको श्रीधरस्वर्णपदक मिला है : कई सुंदर रचनाएँ प्रकाशित हैं; प०-गाँधी टपरा, झाँसी।

बालाप्रसाद दुबे 'बंधु', सा० वि०—प्रसिद्ध कवि और सुलेखक ; रच०—शिवाजी, झंकार, दर्पण, काँटे, ईर्ष्या ; कई अप्रकाशित कविताएँ ; प०—शिवपुरी, ग्वालियर।

भगवानदास अवस्थी, एम० ए०—हिंदी साहित्य के सफल अनुवादक, कहानी-कार एवं उपन्यास लेखक; ज०—१८६५ ; भू० पू० संपादक अभ्युदय; मैनेजिंग डाइरेक्टर 'ज्ञानलोक' लिमिटेड, प्रयाग; रच०—भोला कूटनी-तिज्ञ, वस-वर्षा में प्रेम-व्यापार, रूपजाल, प्रेमी विद्रोही, दुनियाँ का चक्कर दस दिन में; कई अनुवादित ग्रंथ प०—ज्ञानलोक, दारागंज, प्रयाग।

भवानीप्रसाद तिवारी, एम० ए०—अत्यंत सफल कवि और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता ; सा०—नगर काँग्रेस-कमेटी के सभापति ; रच०—अंजना

की आलोचना ; अप्र०—दो-तीन सरस कविता-संग्रह ; प०—अध्यक्ष प्रभात-प्रेस, जबलपुर ।

मक्खनलाल दम्माणी—बाल-साहित्य के उदीयमान लेखक और हिंदी के उत्साही प्रकाशक ; ज०—१९११ ; र०—बालिका शिक्षक (६ भाग), मनोहर कहानियाँ, अनोखी कहानियाँ ; प्रि० वि०—हिंदी-साहित्य व गणित ; वि०—चाँद प्रिंटिंग प्रेस के संस्थापक हैं ; प० — प्रकाशक, कोटगेट, बीकानेर ।

मनसुखराय मोर—प्रतिभा-संपन्न व्यापारी एवं सहृदय हिंदी-प्रचारक; र०—गृहस्थधर्म-टैक्ट ; वि०—आपने श्रीलक्ष्मीधर वाजपेयी की 'धर्मशिक्षा' और स्वामी शिवानंद की ब्रह्मचर्य ही जीवन है ; पुस्तकें स्वयं छपाकर मुफ्त वितरित की हैं ; प०—नवलगढ़, जयपुर ।

मनोहरलाल बजाज—प्रसिद्ध नवयुवक कहानी-कार; ज०—१९१६ ; पहले उर्दू में कहानियाँ लिखा करते थे ; अनेक कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं; प०—गलीखाई वाली, अमृतसर ।

मुरलीधराचार्य 'तिलक'—प्रसिद्ध विद्वान् और अध्ययनशील लेखक ; स०—१९०४; रंगनाथ-प्रेस के संचालक हैं ; १९३० से 'भिवानी-इतिहास' लिख रहे हैं ; 'श्रीरंगनाथ' नामक साप्ताहिकपत्र के संपादक हैं ; म्युनिसिपल कमेटी के भूतपूर्व सदस्य; श्रीरंगनाथ संस्कृत पाठशाला के संचालक; रंगनाथ पुस्तकालय और औषधालय के संस्थापक; कई पुस्तकों का संपादन किया है; प०—भिवानी, पंजाब ।

मोहनलाल झा 'मोहन'—प्राचीन परिपाटी के प्रसिद्ध कवि ; ज०—१८६६ ; भू० कवि मंडल, नगरा के कोषाध्यक्ष हैं; अनेक सुंदर कविताएँ

प्रकाशित हैं; प०—नगरा, प्रेमनगर, झाँसी।

मोहनलाल शांडिल्य 'मोहन', शास्त्री—ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि; ज०—१९०३; ले०—१९१८; रच०—गजेंद्रमोक्ष; प०—हिंदी अध्यापक, एम० एस० बी० हाई स्कूल, कालपी।

यमुना कार्थी, बी० ए०, एम० एल० ए०—प्रसिद्ध पत्रकार एवं राष्ट्रसेवी; कलकत्ते के दो तीन हिंदी दैनिकों के प्रधान सपादक रह चुके हैं; इस समय साप्ताहिक 'हुंकार' के प्रधान संपादक हैं; प०—पटना।

रघुवीरशरण मित्र—प्रसिद्ध कवि एवं राष्ट्रसेवी; ज०—१९१६; हिंदी साहित्य समिति मेरठ के प्रधान मंत्री; रच०—परतंत्र-काव्य; अप्र०—दो-तीन कविता-संग्रह; प०—२३२ सदर, मेरठ।

रमाशंकर शुक्ल 'रसाल', डाक्टर, एम० ए०, डी० लिट्०—अध्ययनशील विद्वान्, अलंकार शास्त्र के प्रकांड पंडित और साहित्य के इतिहासकार; रच०—हिंदी-साहित्य का इतिहास (दो संस्करण); वि०—अलंकार-शास्त्र पर आपको डी० लिट्० की उपाधि मिली; प०—अध्ययन, हिंदी-विभाग, विश्वविद्यालय, प्रयाग।

रमेशदत्त शर्मा, बी० ए०, एल-एल० बी०—सुप्रसिद्ध हिंदी विद्वान्; ज०—१९०८; रच०—हिंदूयुग का इतिहास, कई कहानियाँ एवं कविताएँ; प०—जमुनिया बाग, फैजाबाद।

राजरानी चौहान—प्रसिद्ध महिला कवयित्री; ज०—१९१०; अनेक भावात्मक एवं ललित कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित; वि०—आपके पिता भी ब्रजभाषा के एक अच्छे कवि थे; प०—झाँसी।

राजाराम रावत 'पीड़ित'—प्रसिद्ध कवि एवं नाटककार ; ज०—१६१५ ; कई काव्य-ग्रंथ एवं नाटक लिखे हैं जो अप्रकाशित हैं ; प०—हेडक्लर्क, टाउन एरिया, चिरगाँव, झाँसी।

रामगोविंद शास्त्री—साहित्य के अध्ययनशील विद्वान्, कुशल लेखक और यशस्वी संपादक ; मासिक 'गंगा' के भूतपूर्व संपादक ; प०—ग्राम कूसी, दिलदार नगर, गाजीपुर।

रामदत्तराय—साहित्य-प्रेमी विद्वान् अध्ययनशील लेखक और प्रसिद्ध पत्रकार ; 'वंगवासी' के भूतपूर्व संपादक; प०—ग्राम कमसड़ी, टीका-दौरीनागपुरा, गाजीपुर।

रामनरेशसिंह 'राय'—उत्साही हिंदी प्रचारक और लेखक ; ज०—मार्च १६१२; सा०—कई वर्षों तक नागरी-प्रचारिणी सभा, गाजीपुर के उपमंत्री रहे ; रच०—कानून-संबंधी एक पुस्तक, सुदामा-चरित्र ; प०—लाइब्रेरियन, सिविलबार एसोसिएशन, गाजीपुर।

रामनाथगुप्त, बी० ए०—उदीयमान लेखक और साहित्य-प्रेमी ; ज०—दिसंबर १६१२ ; फतहपुर ; शि०—गवर्नमेंट हाई स्कूल फतहपुर और डी० ए० वी० कालेज कानपुर ; सा०—'स्वाधीन भारत' बंबई, 'राजस्थान' व्यापार, 'अजमेर' और 'प्रताप' के संपादकीय मंडल में रहे ; हिंदी साहित्य समिति; के भूत० मंत्री ; प०—कानपुर।

रामनारायण उपाध्याय—प्रसिद्ध ग्रामगीत लेखक ; ज०—१६१८ ; ग्रामीण वाचनालय के संचालक ; रच०—युग के प्रश्न ; पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित कई सुंदर रचनाएँ; प०—कालमुखी, खंडवा, सी० पी०।

रामप्रसाद त्रिपाठी डाक्टर, एम० ए०, पी-एच०

डी०—इतिहास के अध्ययनशील विद्वान् और साहित्य-प्रेमी लेखक; अनेक वर्षों से साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री और उसकी प्रत्येक योजना में सक्रिय सहयोग देते हैं; युक्त प्रांत के 'बोर्ड आव हाई स्कूल एंड इंटर एज्युकेशनल' की हिंदी कमेटी के संयोजक हैं; प०—विश्वविद्यालय, प्रयाग।

रामस्वरूप शास्त्री—अध्ययनशील साहित्य-प्रेमी, विद्वान् लेखक और संस्कृत के प्रकांड पंडित; अप्र० रच०—'न्याय और वैशेषिक', 'वेदांत-परिज्ञान', 'वैष्णव धर्म और भक्ति' इत्यादि महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक लेखों के दो-तीन संग्रह; प०—अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, मुसलिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़।

रामेश्वर, बी० ए०, एल-एल० बी—प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक; ज०—१६१२; बाल्यकाल से ही सरस कविता कर रहे हैं; अनेक कविताएँ प्रकाशित; प०—वकील, उरई।

रामेश्वरदयाल द्विवेदी 'ओंकार', एम० ए०—प्रसिद्ध कवि एवं सुलेखक, ज०—१६०४; अनेक कविताएँ पत्रों में प्रकाशित; अप्र० रच०—कुंदमाला-अनुवाद; प०—अध्यापक, एम० एस० वी० हाई स्कूल, कालपी।

रामेश्वरदयाल दुबे, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध विद्वान् एवं राष्ट्रभाषा-सेवी; ज०—जुलाई १६११; १६३१ से आप राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति के प्रमुख कार्यकर्ता, परीक्षा मंत्री एवं सहायकमंत्री हैं; रच०—अभिलाषा, निःश्वास, भारत के लाल, दो भाग; इनके अतिरिक्त समिति के लिए कई पुस्तकों का संपादन किया; प०—वर्धा।

लक्ष्मीनारायण मित्तल 'अमौलिक', सा० र०—व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि;

बुंदेलखंड प्रांतीय कविपरिषद् के सदस्य हैं; अनेक भावपूर्ण और ललित कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं; प०—मजिस्ट्रेट, झाँसी।

लालप्रद्युम्नसिंह, सरदार, रईस—प्रसिद्ध हिंदी प्रेमी रईस और सुलेखक; ज०—१७ दिसंबर १८७७; रच०—नागवंश; दर्शन, प्रद्युम्नसंग्रह, देहली दरबार, धर्मवंश, अश्रुदल; प०—खैरागढ़ राज्य।

वचनेश मिश्र 'वचनेश'—व्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि; एवं हास्यरसाचार्य; ज०—१८७३; भू० पू० संपादक हिंदुस्तान, सम्राट्; रच०—शबरी, गोपालहृदय विनोद, शांत समीर, खून की होली—नाटक; ध्रुव चरित्र; अप्र०—अनेक काव्य ग्रंथ; वि—आपने इस वृद्धावस्था में भी एक वृहद्ग्रंथ 'छंदोगद्य' लिखा है जो अपने विषय का अनूठा है; प०—मिस्सू कूँचा, फर्रुखाबाद।

व्रजमोहन तिवारी, एम० ए०, एल० टी०—प्रसिद्ध कवि, अध्ययनशील आलोचक और साहित्य-प्रेमी विद्वान्; ज०—१९०२; रच०—झलक (कवि०), वीरों की कहानियाँ, सरस कहानियाँ—चार भाग; अप्र०—दो-तीन आलोचनात्मक लेख और कविता-संग्रह; वि०—अंग्रेजी में भी सुन्दर काव्य-रचना करते हैं; प०—अध्यापक, अंग्रेजी विभाग, कान्यकुब्ज कालेज, लखनऊ।

विष्णुदत्त मिश्र 'तरंगी'—प्रसिद्ध लेखक, साहित्यप्रेमी और कुशल पत्रकार; स्थानीय हिंदी प्रचार-समिति के डाइरेक्टर; प०—६२ रामनगर, नई दिल्ली।

विश्वबंधु शास्त्री—एम० ए०, एम० ओ० एल०—कर्मनिष्ठ समाजसेवी, सुप्रसिद्ध विद्वान् और सुलेखक; विद्यार्थी जीवन में सर्वप्रथम रहे और कई पदक प्राप्त किए; डी०

ए० वी० कालेज, लाहौर के अनुसंधान और ग्रंथ प्रकाशन के अध्यक्ष; रच०—अर्थ प्रतिशाख्य, आर्योदय वेदसंदेश चार भाग, वेदसार; इनके अतिरिक्त अनेक सुंदर संपादित पुस्तकें; वि०—आप वेदों के सर्वांग-संपूर्ण विश्वकोष के संपादन-प्रकाशन में लगे हैं; यह ग्रंथ लगभग बीस हजार पृष्ठ का है; प०—अध्यक्ष, विश्वेश्वरानंद वैदिक अनुसंधानालय सभा, शिमला।

शिवनारायण उपाध्याय—मध्यप्रांतीय तरुण कहानीकार; ज०—१९२२; रच०—रोज की कहानी; प०—कालमुखी, खंडवा, मध्यप्रांत।

शिवनारायण द्विवेदी—लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार, सुलेखक तथा प्रसिद्ध विद्वान्; अर्ध-साप्ताहिक 'सावधान' के संचालक-संपादक; रच०—चीन का संघर्ष, आनेवाली दुनियाँ, रूसी राज्यक्रांति, ईरान की कायापलट, आधुनिक अफगानिस्तान; प०—रायपुर, सी० पी०।

शिवराम श्रीवास्तव—'मणींद्र', बी० ए०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध कवि एवं लेखक; ज०—१९११; उरई हिंदी साहित्य संघ के संरक्षक; अनेक सुन्दर कविताएँ प्रकाशित हुई हैं; प०—वकील, उरई।

शुकदेवराय, सा० वि०—प्रसिद्ध कहानी-लेखक एवं पत्रकार; कई कहानियाँ एवं पठनीय लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित; इस समय साप्ताहिक 'हुंकार' के सहयोगी संपादक हैं; प०—पटना।

शंभुप्रसाद बहुगुणा, एम० ए०—उदीयमान लेखक और आलोचक; अप्र० रच०—विविध पत्रों में प्रकाशित दो आलोचनात्मक लेख-संग्रह; प०—लखनऊ।

श्रीरंग चैतन्य प्रकाश—राष्ट्रभाषा प्रेमी

प्रसिद्ध लेखक एवं सहृदय विद्वान् ; मासिक 'मित्र' और साप्ताहिक 'समाज सेवक' के कई वर्षों तक सहायक संपादक रहे ; हिंदी प्रचारिणी सभा, राजसाही बंगाल के मंत्री ; एक पुस्तकालय तथा दो हिंदी प्रचारक पाठशालाएँ भी स्थापित की हैं ; प०—करसियाँग , दार्जिलिंग ।

स्वरूपनारायण पुरोहित, एम० ए०, एल-एल० बी०—हिंदी के सुलेखक, सुवक्ता और सफल अनुवादक; मोपासाँ की रचनाओं का आपने बड़ी कुशलता से अनुवाद किया ; प०—सीकर, राजपूताना ।

सत्यनारायण पांडेय, एम० ए०—प्रसिद्ध आलोचक, विद्वान् साहित्य-सेवी और सुलेखक ; स्थानीय साहित्य सभा के जन्मदाता और सभापति ; प०—अध्यापक, हिंदी विभाग, सनातनधर्म कालेज, कानपुर ।

सरोजकुमारी ठाकुर, एम० ए०, सा० र०—प्रसिद्ध कवयित्री एवं कहानी लेखिका; कई भावात्मक कविताएँ एवं कहानियाँ प्रकाशित हैं ; प०—बालाबाई का बाजार लश्कर, ग्वालियर ।

संतोषसिंह, बी० ए०, दीवान बहादुर, सरदार—रच— संप०—गीतासागर, रामायणपुष्पांजलि, मांडूक्योपनिषद्, भक्तिसुधा ; प०—सीनियर अफसर, सीकर, राजपूताना ।

हरिहरप्रसाद 'रसिक'—वयोवृद्ध हिंदी प्रेमी सुलेखक ; कई सुंदर रचनाएँ हैं जिनमें गद्यविनोद, प्रेमप्रवाह, रसिक-कवितावली आदि मुख्य हैं ; प०—विपिन विद्यालय, बेतिया, चंपारन ।

हरिहर मिश्र, बी० एस० सी०, एल-एल० बी०—प्रसिद्ध कवि, कहानीकार एवं उपन्यास लेखक ; ज०—१६०६; अनेक सरस रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं ; प०—झाँसी ।

सरकारी संस्थाएँ

पटना—विश्वविद्यालय में अब से पंद्रह वर्ष पूर्व हिंदी को शिक्षा केवल रचना के रूप में दी जाती थी; धीरे-धीरे पूर्ण रूप से हिंदी-शिक्षा दी जाने लगी; १९३६ में बी० ए० तक हिंदी-शिक्षा का प्रबंध हुआ; तत्पश्चात् पटना परीक्षा कालेज में एम० ए० में भी हिंदी की पढ़ाई होने लगी; इस समय हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो० श्रीधर्मेन्द्र ब्रह्मचारी प्रो० श्रीविश्वनाथप्रसाद एवं प्रो० जगन्नाथराय शर्मा हिंदी की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं।

मुसलिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़ में हिंदी की पढ़ाई १९३२ से प्रारंभ हुई; उर्दू के साथ एफ० ए० और एम० ए० के परीक्षार्थियों को हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है; प्रो० रामस्वरूप शास्त्री हिंदी के अधिक प्रचार के लिए प्रयत्न शील हैं।

मैसूर विश्वविद्यालय में मिडिल कक्षा से लेकर बी० ए० तक हिंदी भाषा की शिक्षा वैकल्पिक रूप से दी जाती है; १९३८ से हिंदी भाषा का यहाँ प्रवेश हुआ; बी० ए० में जो विद्यार्थी वैकल्पिक विषय में उर्दू लेते हैं उन्हें अनिवार्य रूप से हिंदी लेनी होती है; १९४२ में दो, १९४३ में सात और १९४४ में ६ विद्यार्थियों ने बी० ए० हिंदी लेकर पास की; इस समय श्री ना० नागप्पा एम० ए० और श्री जी० सच्चिदानंद बी० ए० लेक्चरर हैं।

हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग—आवश्यक पुस्तकों के अनुवाद कराने के उद्देश्य से १९२९ में प्रस्तावित और १९२७ में स्थापित; प्रमुख मौलिक रचनाओं को पुरस्कृत करना और साहित्य-सेवा को प्रोत्साहन देना, उत्तम लेखकों

को संस्था का सदस्य चुनना, एक बड़ा पुस्तकालय संचालित करना आदि भी इसके उद्देश्य हैं ; प्रति वर्ष अनेक विद्वानों द्वारा साहित्यिक विषयों पर व्याख्यान दिलाए जाते हैं ; कई महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन भी एकेडमी की ओर से हुआ है; 'हिंदुस्तानी' नामक तिमाही पत्रिका संस्था द्वारा प्रकाशित होती है।

गैर सरकारी संस्थाएँ

कन्यागुरुकुल, ६० राजपुर रोड, देहरादून में हिंदी शिक्षा का समुचित प्रबंध है ; प्रारंभ से ही हिंदी के माध्यम द्वारा प्राचीन वेदशास्त्र, उपनिषद्, गीता, धर्मशिक्षा आदि की शिक्षा दी जाती है ; गुरुकुल में २०० आश्रमवासिनी छात्राएँ हैं जिन्हें अनिवार्य रूप से हिंदी की शिक्षा दी जाती है।

काशीविद्यापीठ का जन्म वस्तुतः हिंदी साहित्य की उन्नति के लिए ही सन् १९२० को हुआ था ; आरंभ से ही सब कक्षाओं में हिंदी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है ; हिंदी के सुयोग्य अध्यापक श्रीसत्यदेव शास्त्री के सुप्रबंध से हिंदी-शिक्षा का क्रमिक विकास हो रहा है ; प्रकाशन समिति की ओर से अब तक लगभग बीस पठनीय साहित्यिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

गुरुकुल-विश्वविद्यालय, वृंदावन में सन् १८९८ से ही हिंदी के माध्यम द्वारा शिक्षा दी जाती है ; विश्वविद्यालय में पहली कक्षा से लेकर सबसे ऊँची कक्षा तक हिंदी पढ़ना अनिवार्य है ; अधिकारी श्रेणी तक हिंदी में इंटरमीडिएट स्टैंडर्ड से अधिक ऊँची शिक्षा का प्रबंध है ; महाविद्यालय विभाग में

प्राचीन और आधुनिक साहित्यशास्त्र, भाषा विज्ञान, हिंदी व्याकरण के इतिहास, डिंगल पिंगल आदि की पढ़ाई का समुचित प्रबंध है; मौलिक निबंध में उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी को विषय निर्देश सहित वाचस्पति की उपाधि दी जाती है; श्रीधर अनुसंधान विभाग द्वारा शोधपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन भी होता है।

गुरुकुलविश्वविद्यालय, कांगड़ी में हिंदी के माध्यम द्वारा उच्चतम शिक्षा दी जाती है; रसायन, भौतिक, विद्युत् आदि अनेक दुर्गम विषयों के लिए समुपयुक्त परिभाषिक शब्दों का संग्रह किया है; अनेक सामयिक विषयों के साथ हिंदी पत्रकार-परीक्षा की शिक्षा भी यहाँ दी जाती है; सूर्यकुमारी ग्रंथमाला और स्वाध्याय-मंजरी का प्रकाशन भी चालू है।

देवघर, हिंदीविद्यापीठ ने भी हिंदी की उन्नति के लिए काफी परिश्रम किया है; हिंदी की कई उच्चकोटि की परीक्षाएँ संचालित हैं; हिंदी के माध्यम द्वारा अनेक औद्योगिक विषयों की शिक्षा दी जाती है; साहित्य महाविद्यालय की ओर से पहली कक्षा से लेकर उत्तमा परीक्षा तक हिंदी की अनिवार्य शिक्षा दी जाती है।

महिलाविद्यापीठ, प्रयाग प्रायग में हिंदी के माध्यम द्वारा स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार करने का प्रयत्न किया जाता है; परीक्षा संस्था के रूप में विद्यापीठ द्वारा कई परीक्षाओं का संचालन किया जाता है जिनमें हिंदी भाषा अनिवार्य है; पहली कक्षा से लेकर एम० ए० तक हिंदी पढ़ाने का सुचारु प्रबंध है; विद्यापीठ के अंतर्गत विद्यापीठ कालेज और ट्रेनिंग कालेज भी हैं; वस्तुतः महिलाओं में हिंदी का प्रचार करने में विद्या-

पीठ का सराहनीय प्रयत्न है।

हिंदी - विद्याभवन, सीकर—श्रीयुत पं० मुरलीधर पुजारी द्वारा १९२६ में हिंदी प्रचारार्थ स्थापित, सम्मेलन और पंजाब की हिंदी परीक्षाओं की पढ़ाई का यहाँ प्रबंध है जिससे अनेक विद्यार्थी लाभ उठाते हैं; सरकार का सहयोग भी प्राप्त है; श्रीहनुमत्प्रसाद पुजारी इस समय संचालक हैं।

प्रकाशक

प्रभात साहित्य-कुटीर, आजमगढ़—साहित्यिक ग्रंथों का प्रकाशन; 'संदेश' पत्र निकलता है; प्रकाशित पुस्तकों में श्रीगुरुभक्तसिंहजी की 'नरजहाँ' विशेष प्रसिद्ध है।

मारवाड़ी साहित्य-मंदिर, भिवानी, पंजाब—मारवाड़ी समाज में सत्साहित्य के प्रचार के लिए अप्रैल १९४२ में स्थापित; प्रकाशित पुस्तका में व्यापारिक तार-शिक्षा और स्वास्थ्य-निधि मुख्य हैं; मंदिर की ओर से मारवाड़ी गौरव नामक एक बृहत् प्रकाशन किया जा रहा है; श्रीफतहचंद गुप्त व्यवस्थापक हैं।

पुरस्कार

एकेडमी पुरस्कार—प्रयाग की हिंदुस्तानी एकेडमी की ओर से ५००) का प्रमुख पुरस्कार प्रायः प्रति दूसरे वर्ष सर्वश्रेष्ठ हिंदी-रचना पर दिया जाता है; १००) का एक पुरस्कार साहित्यके विद्यार्थी की सदा सुन्दर रचना के लिए भी निश्चित है। स्व० श्रीप्रेमचंद, पं० रामचंद्र शुक्ल, प्रो० रामदास गौड़ आदि को ५००) का पुरस्कार मिला था। इस वर्ष भी इन पुरस्कारों के लिए रचनाएँ भेजी गई हैं।

—:०:—

श्रीपुच्छरत पदक

(हिंदीरत्न में प्रथम रहनेवाले को दिया जाता है)

पंजाब के प्राचीन हिन्दीसेवी, अमृतसर के प्रमुख साहित्यिक हिन्दी परीक्षाओं के प्रचारक, अनेक संस्थाओं के संस्थापक वयोवृद्ध ख्यातनामा श्रीमान् पं० जगन्नाथजी पुच्छरत साहित्य-भूषण की चिरकालिक अनुपम (ठोस) निःस्वार्थ साहित्य सेवाओं के उपलक्ष्य में श्रीपुच्छरतजी के सम्मानार्थ पंजाब यूनिवर्सिटी की "हिन्दीरत्न" परीक्षा में सर्वप्रथम रहनेवाले छात्र वा छात्रा को "गोल्डन-मेडल" (सुनहला-तमग़ा) अर्थात् "स्वर्ण-लिप्त" "पुच्छरत पदक" दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

साहित्य सदन,

चावल मंडी, अमृतसर

विद्यामंदिर की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

१. हिंदी-सेवी-संसार।

२. साहित्य-समीक्षावली।

३. बालोपयोगी पाक्षिक पत्र 'होनहार'।

४. बाल-शतक-माला।

५. सामयिक-साहित्य की बिक्री।

विशेष विवरण के लिए

व्यवस्थापक को लिखिए